सिनबाद सीरीज़ की दूसरी किताब
सिनबाद और सिकंदर का
मकबरा
जल्द ही
स्क्रीन पर
दिखाई देगा
केविन मिसल

Table of Contents

□□□□□□ □□□

□□□□□□□□□□

□□□□ □□ □□□□ □□□

□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□

□□□□□□

□□□□□□ 1

□□□□□□ □□

□□□□□□ 3

□□□□□□ 4

□□□□□□ 5

□□□□□□ 6

□□□□□□ 7

□□□□□□ 8

□□□□□□ 9

□□□□□□ 10

□□□□□□ 11

□□□□□□ 12

□□□□□□ 13

□□□□□□ 14
□□□□□□ 15
□□□□□□ 16
□□□□□□ 17
□□□□□□ 18
□□□□□□ 19
□□□□□□ 20
□□□□□□ 21
□□□□□□ 22
□□□□□□ 23
□□□□□□ 24
□□□□□□ 25
□□□□□□ 26
□□□□□□ 27
□□□□□□ 28
□□□□□□ 29
□□□□□□ 30
□□□□□□ 31
□□□□□□ 32
□□□□□□ 33
□□□□□□ 34
□□□□□□ 35
□□□□□□ 36
□□□□□□ 37
□□□□□□ 38
□□□□□□ 39
□□□□□□ 40
□□□□□□ 41
□□□□□□ 42
□□□□□□□□□□□□
□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□

[redacted]
[redacted]

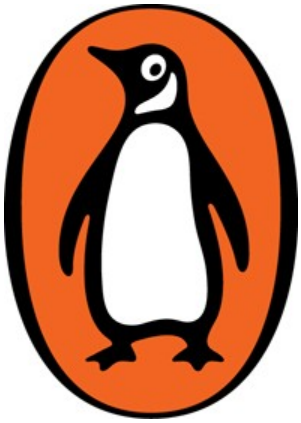

केविन मिसल

सिंदबाद और सिकंदर का मकबरा

पेंगुइन बुक्स

□□□□□□□□□□

□□□□□□ 1
□□□□□□ □□
□□□□□□ 3
□□□□□□ 4
□□□□□□ 5
□□□□□□ 6
□□□□□□ 7
□□□□□□ 8
□□□□□□ 9
□□□□□□ 10
□□□□□□ 11
□□□□□□ 12
□□□□□□ 13
□□□□□□ 14
□□□□□□ 15
□□□□□□ 16
□□□□□□ 17
□□□□□□ 18
□□□□□□ 19
□□□□□□ 20
□□□□□□ 21
□□□□□□ 22
□□□□□□ 23
□□□□□□ 24
□□□□□□ 25
□□□□□□ 26
□□□□□□ 27
□□□□□□ 28
□□□□□□ 29
□□□□□□ 30
□□□□□□ 31
□□□□□□ 32
□□□□□□ 33
□□□□□□ 34

□□□□□□□ 35
□□□□□□□ 36
□□□□□□□ 37
□□□□□□□ 38
□□□□□□□ 39
□□□□□□□ 40
□□□□□□□ 41
□□□□□□□ 42
□□□□□□□□□□□□□
□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□
□□□□□□□□□□

पेंगुइन बुक्स

सिंदबाद और सिकंदर का मकबरा सेंट स्टीफंस कॉलेज से स्नातक केविन मिसल एक टेडएक्स वक्ता और राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त लेखक हैं। उनकी बेस्टसेलर श्रृंखला, कल्कि त्रयी को संडे गार्जियन ने '2017 की पौराणिक घटना' बताया था। उन्होंने नरसिम्हा त्रयी, रावणपुत्र मेघनाद और कर्ण भी लिखी हैं, जिनकी कुल मिलाकर 200,000 प्रतियां बिक चुकी हैं। केविन ने हबहॉक्स नाम से अपनी मार्केटिंग एजेंसी भी स्थापित की है, जो लेखकों और प्रकाशकों को सेवाएं प्रदान करती है। जब लोगों को पता चलता है कि उन्होंने यह सब पच्चीस साल की उम्र में हासिल कर लिया है, तो उनके चेहरे पर आने वाली खुशी को देखकर उन्हें बेहद आनंद आता है। केविन गुरुग्राम में एक पुस्तकालय में रहते हैं, जिसे वे प्यार से 'मेरा कमरा' कहते हैं। जब वे पढ़ने या लिखने में व्यस्त नहीं होते हैं, तो उन्हें फिल्में देखना और अपने सोशल मीडिया हैंडल (इंस्टाग्राम: kevin_9695 और ट्विटर: kevin_missal) पर अपने पाठकों से बातचीत करना पसंद है।

केविन मिसल द्वारा लिखित पेंगुइन पत्रिका में भी उपलब्ध है।
सिंदबाद और इसराफिल का तुरही

[illegible]
[illegible]
[illegible]

एक
सिंदबाद ने अपने जीवन में कई लापरवाह कारनामे किए थे। लेकिन जो वह अभी करने की योजना बना रहा था, उसके मुकाबले कुछ भी नहीं था।
‘क्या तुम्हें इस बात का पूरा यकीन है?’ हुसैन ने सिंदबाद की खून से लथपथ उंगलियों पर पट्टियाँ बाँधते हुए गुस्से से पूछा। ‘इसे करने के लाखों और तरीके हैं, फिर भी तुमने वो तरीका चुना है जिससे तुम्हारी जान को खतरा है। मेरा मतलब है, एक इंसान के हाथों पिटना... तुम अपने ही समुदाय के हाथों मारे जाने वाले पहले राक्षस शिकारी बनोगे।’
सिंदबाद एक हारे हुए मुक्केबाज की तरह दिख रहा था, उसकी नाक लाल थी और चेहरा दागदार था। वह एक सराय में आयोजित शारीरिक शक्ति प्रतियोगिता में भाग ले रहा था—एक तरह की मुक्केबाजी।
वह यहाँ क्यों था? अच्छा सवाल है।
‘क्या तुमने शर्त लगाई?’ सिंदबाद ने हुसैन और बगदाद जेल के जेलर के बीच होने वाली शर्त के बारे में पूछा। ‘हमारे पास यहाँ एक ही मौका है। हमने वहाँ सबको अपना सम्मान दिला दिया है। अगर जेलर को हम पर भरोसा नहीं होता तो वह भी हम पर शर्त नहीं लगाता। लेकिन चूंकि हमने साबित कर दिया है कि हम नीच लोगों का एक समूह हैं—’
हुसैन ने उसकी बात बीच में ही काट दी। ‘जब से हम यहाँ आए हैं, तुम मुझसे लगातार सट्टा लगाने को कहते रहे हो, और तुम जानते हो कि मुझे जुआ खेलना कितना पसंद है। लेकिन बताओ, इससे हमें क्या फायदा होगा? और अगर तुम शर्त जीत भी जाओ, तो फिर क्या करोगे?’
लोग अब शोर मचा रहे थे, उस छोटे से अर्धवृत्त में जहाँ वे खड़े थे, चिल्ला रहे थे। सिंदबाद अब तक पाँच मुकाबले जीत चुका था और एक और मुकाबले के लिए तैयार था।
मैं उनकी गाड़ी में बैठता हूँ।

और इससे क्या फायदा होता है?
“हमने जिस छोटे से चोर बौने को जादू से प्रकट किया था, उसने मुझे बताया कि जेलर ने गाड़ी के फर्श के नीचे एक गुप्त कमरा बना रखा है। वहीं जेल के सीवर गेट की चाबी है।” सिंदबाद ने बेफिक्री से मुस्कुराते हुए कहा। “तो, हम जेल में घुसते हैं और इदरीस के पति को रिहा कर देते हैं। आसान है।”
हुसैन ने पट्टी को थोड़ा ज़्यादा ही कसकर खींचा। 'क्या आपको नहीं लगता कि अगर आप यह आखिरी लड़ाई जीत जाते हैं, तो वह हमें गाड़ी सौंपने से पहले चाबी अपने साथ ले जाएगा?'
'बेशक वह करेगा।'
हुसैन उसे घूरता रहा।
‘लेकिन मेरे पास इसके लिए एक योजना है,’ सिंदबाद मुस्कुराया।
‘यह क्या है?’ हुसैन कराह उठा। वह खेल में देर से आया था, और ऐसा लग रहा था कि सिंदबाद ने पहले ही सब कुछ तय कर लिया था।
सिन्बाद ने जेलर की ओर इशारा किया, जो अपनी खूबसूरत साथी, पिशाच अशरफियाह की मीठी बातों में फँसकर मसखरे की तरह मुस्कुरा रहा था—अशरफियाह जादू से उसे रिझाने की कोशिश कर रही थी। जेलर मोटा था, उसके गाल लाल थे और वह देखने में ऐसा लग रहा था मानो आलस्य नामक पाप का शिकार हो।
‘ओह, मैं समझ गया,’ हुसैन ने सिर हिलाते हुए कहा। ‘उसे शराब पीने के लिए मना लो और इससे पहले कि वह चाबी लेने के बारे में सोचे, तुम बहुत दूर जा चुके होगे।’
'मेरे प्रिय मित्र, आपको योजना बैठकों में अधिक बार भाग लेना चाहिए।'
‘अरे, छोड़ो भी! तुमने ये योजना कुछ घंटे पहले ही बनाई थी, जब मैं शौचालय में था, मेरी सात प्रेम जिंदगियों की खातिर। और साफ-साफ बता दूं, इस बड़ी योजना से पहले, तुम्हारे दिमाग में ये अद्भुत विचार आया था कि तुम उस खूनी 'हाउस ऑफ विजडम' में सेंध लगाओगे और ध्यान भटकाओगे ताकि इदरीस जेल में घुसकर अपने पति को बचा सके।’ हुसैन ने आंखें घुमाईं।
युवा राक्षस शिकारी ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'यह तब की बात है जब मैंने बौने को बुलाया था ताकि मुझे सारी ज़रूरी जानकारी मिल सके। जादू करना वाकई काम आता है, जानते हो? अब'—वह मुड़कर उस छोटे से अखाड़े की ओर देखने लगा जहाँ चिकने-चुपड़े आदमी और आकर्षक युवतियाँ घेरा बनाकर शोर मचा रही थीं—'मैं

यह लड़ाई जीतना चाहता हूँ। उम्मीद है पिछली बार की तरह कोई बेचारा बूढ़ा लुटेरा न हो।'
हुसैन ने आह भरी। 'तुम्हें पता है, ये सब करके तुम सफीना का दिल नहीं जीत पाओगे। हम सब जानते हैं कि तुमने ये योजना क्यों चुनी। इससे तुम हीरो जैसे दिखते हो।'
सिन्बाद ने अपनी आँखें सिकोड़ीं और अविश्वास भरी निगाहों से हुसैन को घूरा। 'उसका दिल जीतना? वो... वो है जिसे पसंद है—'
'सच में?'
'ओह हां। वह मुझे पसंद करती है।'
लेकिन सिंदबाद जानता था कि हुसैन क्या इशारा कर रहा है। हुसैन उसके सबसे करीबी और सच्चे दोस्तों में से एक था। दरअसल, अपने मालिक की हत्या करने के तुरंत बाद जब सिंदबाद को बसरा के नीच कस्बे में निर्वासित किया गया था, तब हुसैन ही उसका इकलौता दोस्त था। हुसैन को उसके मन की बातें काफी हद तक पता थीं और वह आम तौर पर दयालु स्वभाव का था। कई कारणों से, सिंदबाद ने हुसैन को छोड़कर किसी भी इंसान पर भरोसा नहीं किया था, क्योंकि वह उन्हें अविश्वसनीय और चालाक मानता था।
‘ठीक है,’ हुसैन ने शांत भाव से कहा। ‘उसने तुमसे कहा कि वह “सिर्फ दोस्त रहना चाहती है”, लेकिन क्या तुम भूल गए कि यह बात कहने के तुरंत बाद मैंने कप्तान के लॉज में उसके लगातार रोने की आवाजें सुनी थीं?’
सिन्बाद ने कंधे उचकाए। ‘यह मेरे बारे में नहीं था। यह किसी और की वजह से था…’ वह बुदबुदाया। ‘उसने बहुत कुछ झेला है। और एक शिष्ट पुरुष होने के नाते, मैं समझता हूँ कि उसके साथ सिर्फ दोस्त बनकर रहना ही समझदारी है… इस समय उसके मन में बहुत कुछ चल रहा है। सच कहूँ तो, मैं हैरान और स्तब्ध हूँ कि मेरी सबसे अच्छी दोस्त और प्रिय साथी मुझे इस तरह से आंकेगी। मैं कभी नहीं—’
‘वैसे वह यहाँ नहीं है, इसलिए आप भाषण को रहने दीजिए,’ हुसैन ने झट से उसे चुप करा दिया।
सिन्बाद के पेट में एक अजीब सी बेचैनी हो रही थी—एक ऐसी भावना जिसे वह किसी से साझा नहीं करना चाहता था। 'आह, मैं यह नहीं कहूंगा कि मैं निराश नहीं हूं। लेकिन यह मिशन? यह हमारे प्यारे दोस्त इदरीस के लिए है।'

सिन्बाद कंधे झुकाए अखाड़े में वापस आ गिरा। वह आगे बढ़ा, उसकी निगाहें अशरफिया पर टिकी थीं, जो अभी भी जेलर के साथ छेड़छाड़ कर रही थी।
काले बालों और पन्ना जैसी आँखों वाली अशरफियाह, सिंदबाद की पसंदीदा शख्सियत थी। एक तरह की पिशाचनी और जादूगरनी, वह किसी भी चीज़ या किसी भी व्यक्ति को अपने वश में कर सकती थी, यहाँ तक कि एक धोखेबाज़ साँप को भी। उसकी एकमात्र कमी यह थी कि सैकड़ों वर्षों के अपने जीवन में वह कभी भी किसी के साथ मिलजुलकर काम नहीं कर पाई थी—लेकिन कुछ महीने पहले सिंदबाद ने उसे परिवार और ऐसे दोस्तों का महत्व समझाया जो वास्तव में उसकी परवाह करते हैं, और यह भी कि यह हमेशा अकेले रहने की बजाय उसे सशक्त बना सकता है। उनके नए समूह के बाकी सदस्य—इदरीस, सफीना, प्रेसा और मार्कस—मोटल में वापस आ चुके थे।
सिंदबाद अखाड़े की ओर बढ़ा। अब एक नया उद्घोषक था, जिसने चिल्लाकर कहा, 'हम आज शाम के सितारे, चार लड़ाइयों के विजेता, उस शख्स का स्वागत करते हैं जिस पर अगर आप दांव लगाएंगे तो आपको दस गुना मुनाफा होगा - महान, साहसी सिंदबाद नाविक!'
सिंदबाद रुका और फिर उद्घोषक से लिपट गया। 'अह, ये है... सिंदबाद, दुनिया को बचाने वाला, रोक को मारने वाला, दानवों का शिकार करने वाला नाविक।' ‘बच्चे, मुझे इतना पैसा नहीं मिलता कि मैं ये सब कह सकूँ,’ उद्घोषक ने गुस्से में कहा।
निराश होकर सिंदबाद अखाड़े में दाखिल हुआ, उसकी निगाहें सामने टिकी थीं, जहाँ से उसका नया प्रतिद्वंदी आने वाला था। कौन होगा? सिंदबाद ने अपने माथे से काले बाल हटाते हुए मन ही मन सोचा। वह पहले ही सबसे बड़े और खतरनाक दुश्मनों से लड़ चुका था, और अगर अब किस्मत उसके खिलाफ गई, तो उसे सबसे बुरे दुश्मन से लड़ना पड़ेगा।
चाहे जैसी भी चुनौती हो, वह तैयार था। आखिरकार, वह छह फीट से अधिक लंबा, तगड़ा और ताकतवर शरीर वाला लड़का था।
उद्घोषक ने अपना गला साफ किया। 'देवियों और सज्जनों, मैं एक देर से आने वाले प्रतिभागी को आमंत्रित करता हूँ—द हंटर।'
सब चुप हो गए।
शिकारी? समुद्र और समुद्री शैवाल के नाम पर, सिंदबाद को उम्मीद थी कि वह कोई विशालकाय, डरावना आदमी न हो, जिसने कंकाल का वेश धारण किया हो। इसलिए

नहीं कि वह उसे हरा नहीं पाएगा, बल्कि इसलिए कि यह बहुत ही घिसा-पिटा विचार होगा।
भीड़ में से शिकारी प्रकट हुआ, जिससे सिंदबाद की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई।
सिन्बाद ने दबी आवाज़ में गुर्राते हुए एडम्स चिल्ड्रन के पूर्व मुखिया को देखा, जो कि वैम्पायर जाति को मिटाने के लिए समर्पित चरमपंथी वैम्पायर शिकारियों का एक पंथ था। उनकी पिछली मुलाकात बिल्कुल भी सुखद नहीं रही थी क्योंकि सिन्बाद को पता चल गया था कि उसी ने उन्हें धोखा दिया था। शिकारी मुस्कुराया। 'नमस्कार, पुराने दोस्त।'
‘भाई केन।’

दो
'तुम हो,' सिंदबाद ने फुसफुसाते हुए कहा, दर्शकों की चीख-पुकार और नारे उसके कानों में गूंज रहे थे।
भाई केन हँसा। 'मैंने सुना था कि तुम यहाँ खिलाफत से छिप रहे हो। विडंबना है ना? तुमने दुनिया को बचाया, फिर भी तुम्हें समुद्री डाकू और अपराधी करार दिया जा रहा है।'
‘खैर, मैंने अपनी पूरी कोशिश की,’ सिंदबाद ने अपने जबड़े भींचते हुए कहा, ‘लेकिन मुझे लगता है कि हमेशा ऐसा नहीं होता। फिर भी, इसमें एक अच्छी बात भी है। इस सारी बदनामी ने तुम्हें मेरे पास ला खड़ा किया।’
केन ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'क्या तुम्हें डर नहीं लगता कि खलीफा के सैनिक तुम्हें पकड़ लेंगे, क्योंकि तुम अपना असली नाम इस्तेमाल कर रहे हो?'
‘सबको लगता है कि मैं अभी भी समुद्र में हूँ, और भला कोई भी शराबखाने के शराबी बेवकूफों की बात पर यकीन नहीं करेगा, है ना? वो भी बगदाद शहर से मीलों दूर स्थित शराबखाने की। सिर्फ एक मूर्ख ही इस पर यकीन करेगा—ओह! और आप यहाँ हैं।’
केन ने दांत पीसे, धुंधली रोशनी में उसके लाल होंठ और भी ज़्यादा उभर रहे थे। "बात फैल जाती है, मेरे प्यारे दोस्त। दरअसल, मैं कुछ निजी काम से बगदाद में ही था," उसने बचाव करते हुए कर्कश स्वर में कहा, "और जब मैंने यह अफवाह सुनी कि यहाँ के इस स्थानीय शराबखाने में मेरा प्यारा दोस्त ठहरा हुआ है, तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ।"
‘मुझे यह मानना मुश्किल लग रहा है कि महज़ एक संयोग आपको यहाँ ले आया। और हम तो दोस्त भी नहीं हैं।’ सिंदबाद घूमकर खड़ा हो गया, और उसका भाई केन भी ऐसा ही करने लगा।

वह आधा पिशाच होने के बावजूद जवान दिखता था। उसके खुरदुरे, दुबले-पतले चेहरे पर उसकी आँखें दृढ़ थीं।
‘मुझे लगता है कि मौत के करीब पहुंचने का अनुभव दो लोगों को एक दूसरे के करीब ला सकता है, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?’ केन ने कहा।
'हाँ, वैसे, मुझे नहीं पता कि तुम ये सब बातें किन अजीब किताबों में पढ़ते हो।'
‘लड़ो! लड़ो! लड़ो!’ किसी ने चिल्लाकर कहा। ‘बातचीत बंद करो!’
केन अचानक तेज़ी से मुक्का मारने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन सिन्बाद ने उसे भांप लिया और कोहनी से रोकते हुए पेट पर वार करके उसे तुरंत नॉकआउट कर दिया। दर्द से कराहते हुए केन ने सिन्बाद की जांघ पर घुटने से ज़ोरदार प्रहार किया, जिससे वह घुटनों के बल गिर पड़ा। आधे पिशाच ने सिन्बाद के चेहरे पर घूंसा मारा, जिससे वह खून थूकते हुए गिर पड़ा।
'सिन्दाबाद, तुम्हारी वजह से मुझे भयानक घाव सहने पड़े। मेरे ही उन साथियों ने मेरा पीछा किया जिन्होंने मेरी सच्चाई जान ली थी—कि मैं आधा पिशाच हूँ! तुम्हारी वजह से मैं इतने लंबे समय से भटकता रहा और मदद की तलाश करता रहा, और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ... जब तक कि मुझे एहसास नहीं हुआ... कि मुझे तुम्हें मारना होगा।'
उसने सिंदबाद के पेट में लात मारी।
और तुम यहाँ जो भी योजना बना रहे हो, मैं तुम्हें बेनकाब करने आया हूँ। उसने बार-बार लात मारी।
लेकिन सिंदबाद का सब्र टूट चुका था। उसने केन का पैर पकड़ा और उसे मरोड़ दिया। आधा पिशाच भी ज़मीन पर गिर पड़ा, तभी सिंदबाद तेज़ी से आगे बढ़ा और उसे बांहों से जकड़ लिया, उसकी गर्दन पर दबाव डालते हुए बोला, 'इस बार मैं तुम्हें मरवा ही दूंगा।'
‘मैं इतना आसान नहीं हूँ,’ केन ने कर्कश स्वर में कहा।
उसने सिंदबाद की बांह को इतनी ज़ोर से और बेरहमी से काटा कि सिंदबाद को लगा जैसे उस आधे पिशाच के नुकीले दांत उसकी त्वचा को छेद रहे हों। एक तेज़ दर्द उसके शरीर में दौड़ गया। वह छटपटाते हुए पीछे हटा, उसकी बांह से खून बह रहा था। सौभाग्य से, और आम धारणा के विपरीत, पिशाच किसी को भी सिर्फ़ काटने से अपना नहीं बना सकते। इसके लिए पहले आपको मारा जाना चाहिए और फिर पिशाच के खून से पुनर्जीवित किया जाना चाहिए।

केन ने अपने मुंह से खून पोंछा और सिंदबाद पर झपटा, जो करवट लेकर एक तरफ गिर गया।
‘तुम्हें कैसे पता चला कि मैं यहाँ हूँ?’ सिंदबाद कराह उठा। उसे इसका पता लगाना ही होगा।
‘मेरा मालिक संभावित बाधाओं पर नजर रखता है।’ केन फिर से लड़ने के लिए तैयार होकर खड़ा हो गया। ‘वह नहीं चाहता था कि मैं यहाँ आऊँ, लेकिन मुझे तुम्हारा ठिकाना पता चल गया और मुझे अपना बदला लेना ही पड़ा।’
नियोक्ता?
“और मुझे लगा था कि तुम अकेले घूम रही हो,” केन ने आगे कहा। “छी, छी!” वह अशरफिया की ओर देखते हुए हँसा, जिसका चेहरा पीला पड़ गया था। वह कभी उसके बहुत करीब थी, लेकिन उसने अपने स्वार्थ के लिए उसे धोखा दिया था।
उसने सिंदबाद की ओर देखा। ‘जानते हो, मेरे जैसे लोग मेरे मालिक जैसे लोगों को ढूंढ लेते हैं, या इसका उल्टा भी हो सकता है। मेरे मालिक को आभास था कि मैं तुमसे और तुम्हारी इस बेढंगी टीम से लड़ने के लिए काफी ताकतवर हूँ।’ उसने मुँह बनाया और एक मुक्का मारा, लेकिन इस बार सिंदबाद घुटनों के बल बैठ गया और उसके पेट में सिर से टक्कर मार दी। कैन के मुँह से एक धीमी सी कराह निकली और वह खाँसने लगा, साँस लेने की कोशिश कर रहा था।
‘तुम्हारा यह मालिक कौन है?’ सिंदबाद ने फिर पूछा।
काश मैं तुम्हें बताने को तैयार होता। लेकिन अगर तुम्हें लगता है कि तुम जानते हो कि तुम क्या कर रहे हो, तो वह पहले ही कर चुका है। वह एक माहिर रणनीतिकार है, एक गुप्त खिलाड़ी है, एक ऐसा आदमी है जो अंधेरे में काम करता है और उसके इरादे तुम्हारे खून से भी कहीं गहरे हैं।
‘यह तो वाकई एक शानदार परिचय है।’
केन ने कर्कश हंसी हंसते हुए कहा, 'उसे लंगड़ा शैतान कहते हैं।'
सिन्बाद ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'हाँ, उस भयानक नाम के बाद से सब कुछ बिगड़ता चला गया।'
‘सिनबाद द सेलोर से बेहतर,’ केन गुर्राया।
'मेरे पास तो व्यक्तित्व है। जब मैं तुम्हें हरा दूं, तो वापस जाकर अपने मालिक को बताना कि मैंने दुनिया को बचाया। मैं बिल्कुल नहीं चाहता कि कोई अजीब से नाम वाला दुश्मन मेरी जासूसी करने की कोशिश करे।'

केन ने सिंदबाद पर झपट्टा मारा, उसे जमीन पर गिरा दिया और उसके चेहरे पर वार किया, तभी एक भाला उसकी गर्दन पर जा लगा।
वह एक तरफ गिर पड़ा, उसके मुंह से झाग निकल रहा था। एक पल के लिए भीड़ में सन्नाटा छा गया, फिर सब लोग घबराकर इधर-उधर भागने लगे।
सिंदबाद ने भाले को घूरते हुए अपनी निगाहें कस लीं; उसे यकीन था कि यह जहर में डूबा हुआ है और इसका निशाना केन की गर्दन की नस है। उसकी नज़रें कमरे में चारों ओर घूम रही थीं, यह जानने के लिए कि इसे किसने चलाया। तभी एक नकाबपोश साया बाहर भागा। चमकीले लाल बालों के गुच्छों ने सिंदबाद का ध्यान खींचा।
सिन्बाद चीखती-चिल्लाती भीड़ के बीच से उस आकृति का पीछा करते हुए भागा। हुसैन और अशरफिया भी उसके पीछे-पीछे गए। वह सराय से बाहर निकला, लेकिन वह आकृति गायब हो चुकी थी।
सिन्बाद ने आह भरी। 'हे भगवान, मुझे लगता है हमारे दोस्त ने जल्दबाजी में बहुत कुछ कह दिया।' मालिक स्पष्ट रूप से उसके अस्तित्व की जानकारी को गुप्त रखना चाहता था।
‘मैं देवताओं में विश्वास नहीं करती, मेरी प्रियतमा,’ अशरफिया ने कहा, ‘लेकिन उन्हीं की कृपा से वह घिनौना आदमी मर गया।’
‘उम्म... हमारे पास एक और समस्या है, सिंदबाद,’ हुसैन ने आगे कहा। ‘चूंकि आपने तकनीकी रूप से कैन को नहीं हराया, इसलिए मैं शर्त हार गया।’
‘लेकिन जेलर इतना नशे में है कि वह हमें दे देगा,’ अशरफिया ने हुसैन को दिलासा देते हुए कहा। ‘चिंता मत करो। वह इतना नशे में है कि मुझे लोरेटा कहकर बुला रहा है।’
हुसैन ने उस कोने की ओर इशारा किया जहाँ लाल गालों वाला हट्टा-कट्टा जेलर सराय से खींचकर उस महत्वपूर्ण गाड़ी में ले जाया जा रहा था जिस पर उनकी नज़र थी। 'तो फिर उसके इतने संयमित पहरेदार उसे घर जाने में मदद क्यों कर रहे हैं?'
सिंदबाद ने तेवर चढ़ाए। 'मेरे पास एक योजना है।'
'यह क्या है?'
उन्होंने यह बात पहले भी कही थी और वे इसे फिर से कहेंगे। 'मैं इसका हल निकाल लूंगा।'

तीन
‘अच्छा!’ हुसैन ने अपने हाथ ऊपर उठा लिए। ‘आप तात्कालिक उपाय के तौर पर क्या करने की योजना बना रहे हैं?’
लोग अब भी चीखते-चिल्लाते और दहशत में सराय से बाहर भाग रहे थे। वहाँ मौजूद किसी ने भी अपनी आँखों के सामने ऐसी भयावह मौत होते नहीं देखी थी।
लेकिन सिंदबाद के लिए यह रोज़ की बात थी।
हुसैन ने आगे कहा, 'गाड़ी आपकी सोच से कहीं ज्यादा दूर जा रही है।'
‘ठीक है, ठीक है! मैं कोई रास्ता ढूंढ रहा हूँ।’ सिंदबाद की नज़र सामने लकड़ी के खंभों से बंधे घोड़ों पर पड़ी। ‘मुझे लगता है मैं पुराने तरीके से ही आगे बढ़ूंगा,’ उसने कहा।
‘पुराने जमाने की चीजें उबाऊ होती हैं।’ अशरफिया मुस्कुराई और उंगलियां चटकाते हुए बोली।
अचानक एक धुंधली सी आकृति सराय से बाहर निकली। वहां मौजूद सभी लोगों और मौज-मस्ती कर रहे शराबी लोगों की निगाहें उस पर टिक गईं।
यह एक कालीन था—एक उड़ने वाला कालीन।
'क्या यह कालीन हवा में तैर रहा है?' सिंदबाद ने फारसी कालीन को घूरते हुए अविश्वास से पूछा।
ऐसा लगा मानो कालीन ने उसकी बात सुन ली हो, क्योंकि वह अचानक हिल गया। ‘क्या कालीन ने अभी-अभी मुझे हाथ हिलाकर इशारा किया?’ हुसैन ने पूछा। कालीन खिलखिलाकर हंसने लगा, हिलने लगा और उसका एक कोना ऊपर उठकर एक काल्पनिक मुंह जैसा दिखने लगा। ‘क्या... क्या वह मुझे पसंद करती है?’
अशरफिया ने आंखें घुमाईं। ‘मैंने इसे सजीव बना दिया। सोचा कि यहां से निकलने से पहले इसे चुरा लूं,’ उसने समझाया। ‘यहां तक कि निर्जीव वस्तुओं में भी आत्मा होती है, एक इतिहास होता है। अगर आप जादू के ज़रिए उनमें

प्रवेश करें, तो आप उन्हें उनके सजीव रूप में लौटने के लिए कह सकते हैं।
ऐसा करना उस वस्तु की इच्छा पर निर्भर करता है।’
‘और इसने जीवित रहना चुना?’ हुसैन ने अचरज से पूछा।
‘हाँ। और इसे तुम प्यारे लगते हो।’ उसने आँख मारी।
सिंदबाद के पास इस तरह की बातों के लिए समय नहीं था। 'धन्यवाद!' उसने कालीन से कहा और उस पर कूद पड़ा। 'चटाई में चलो!'
कालीन ने अपने फूलों वाले सिरे के एक किनारे से अभिवादन किया और फिर हुसैन, अशरफिया और सराय को पीछे छोड़ते हुए गाड़ी की ओर तेजी से बढ़ने लगा।
रात अभी जवान लग रही थी, बादल आसमान में नीचे लटके हुए थे और तारे सिंदबाद पर खूब चमक रहे थे।
‘अरे, जल्दी करो! और तेज़!’
और कालीन शहर की अंधेरी गलियों में झूलता हुआ चला गया। सिंदबाद की निगाहें चारों ओर दौड़ रही थीं—वह जानता था कि उसकी कोई योजना नहीं थी।
मैं कर सकता हूँ। मैंने कई बार तात्कालिक उपाय अपनाए हैं।
हालांकि इस बार यह पहले से कहीं ज़्यादा डरावना था। एक तो वह ऐसे कालीन पर था जिसके किनारे या हैंडल नहीं थे; वह कभी भी लुढ़क कर बेहद तेज़ी से गिर सकता था। सिंदबाद ने किनारों को जितना हो सके कसकर पकड़ लिया।
‘बस थोड़ा और करीब। बस थोड़ा और!’
रथ पूरी तेज़ी से आगे बढ़ रहा था, आगे खड़े दोनों पहरेदार घोड़ों को चाबुक मार रहे थे। जैसे ही वह थोड़ा करीब पहुँचा, वे उसकी ओर मुड़े, उनके मुँह खुले रह गए और आँखें चौड़ी हो गईं। एक ने घोड़ों की लगाम पकड़ रखी थी, जबकि दूसरे ने तलवार निकाली और सिंदबाद पर वार किया...
जिसने लापरवाही से तलवार की दूसरी, नुकीली धार को खींचा और गाड़ी के करीब लौटते हुए उसे एक तरफ घुमा दिया। लड़ाई के दौरान हाथ पर लिपटे कपड़े की बदौलत तलवार की धार उसकी त्वचा को भेद नहीं पाई।
तलवार का एक और वार उसकी ओर बढ़ा, लेकिन इस बार सिंदबाद ने बचने के बजाय हमलावर की कलाई पर लात मार दी। तलवार उसके हाथ से गिरते ही वह चीख उठा। यही उसका मौका था—सिंदबाद ने झपट्टा मारकर तलवार पकड़ ली और उसे पहरेदार पर चला दिया, जिससे उसकी बांह पर गहरा घाव हो गया और वह गाड़ी से गिर पड़ा। लगाम पकड़े हुए दूसरे पहरेदार ने अंदर खड़े एक आदमी को आवाज़ दी, जो तलवार लेकर बाहर भागा आया।

‘तुम कौन हो?’ वह चिल्लाया, और गाड़ी के ऊपर चढ़कर, कूदकर बाहर निकला और कालीन का किनारा पकड़ लिया, साथ ही लगातार ब्लेड को घुमाता रहा।
सिंदबाद ने गार्ड की ओर तेजी से बढ़ते हुए अपना संतुलन खो दिया।
‘मैं एक ऐसे आदमी को जानता था जो कालीन पर भी यही करतब दिखा सकता था,’ गार्ड ने कहा। ‘वह अपने साथ एक लैंप रखता था, और वह बिलकुल बेवकूफ था।’
वे दोनों चलती हुई कालीन पर संतुलन बनाए रखते हुए, तलवारों से लड़ते हुए गाड़ी के खिलाफ दौड़ लगा रहे थे।
‘खैर, मुझे यकीन है कि उसके पास सुनाने के लिए कोई कहानी होगी, लेकिन मेरी कहानियाँ ज़्यादा अच्छी हैं।’ सिंदबाद मुस्कुराया और जैसे ही वह आदमी करीब आया, सिंदबाद तेज़ी से एक तरफ हट गया और उसकी पीठ पर घूंसा मारा। फिर उसने पहरेदार को कालीन से धक्का दिया, लेकिन फिसलते समय वह कालीन के किनारे से टकरा गया और कालीन फट गया। कालीन तुरंत झटका खाकर जंगली घोड़े की तरह उछलने लगा।
सिंदबाद कराह उठा। 'बस इसी की कमी थी।' वह सांत्वना के शब्द चिल्लाने लगा, लेकिन कालीन टिमटिमाते तारों की ओर, रथ से दूर उड़ गया।
‘गलत दिशा! गलत दिशा!’
यह उल्टा-सीधा और दाएं-बाएं घूमने की कोशिश कर रहा था, जबकि सिंदबाद ने इसके किनारों को कसकर पकड़ रखा था, इसे बेताब होकर थामे हुए था और उस जीवन को बचाने की कोशिश कर रहा था जिसे वह बेहद प्यार करता था।
‘मुझे खेद है! ऐसा दोबारा नहीं होगा।’ जब माहौल शांत हुआ तो उसने कालीन पर थपथपाया और फिर से गाड़ी की ओर बढ़ने लगा, जो बगदाद के द्वार के करीब पहुँच रही थी।
वह रथ को उस दुर्गम शहर तक नहीं पहुँचने दे सकता था—वह पकड़ा जाता और सबके सामने खूनी जादुई कालीन का इस्तेमाल करने के लिए दंडित होता। सिंदबाद को गुंबदनुमा किले, महल और मस्जिदें, और बगदाद का खूबसूरत क्षितिज दिखाई दे रहा था, जिसमें लंबी मीनारें और ईंटों की दीवारें थीं, जो गहरे लाल, नीले और पीले रंगों के मोज़ेक से सजी थीं।
मैं करीब हूं।
सिंदबाद गाड़ी तक पहुँच गया। अब साहस दिखाने का समय था। 'बहुत-बहुत धन्यवाद। अब आप आराम कर सकते हैं,' उसने कालीन को हल्के से थपथपाते हुए कहा। वह गाड़ी की ओर कूदा और लड़खड़ाते हुए ज़मीन पर गिरा। वह खुले हुए

दरवाज़े से लिपट गया। जैसे ही वह लटका, उसका शरीर ज़मीन से ऊपर उठ गया और गाड़ी के साथ-साथ घिसटता चला गया।
मोटे-ताज़े जेलर को अब जाकर समझ आया था कि क्या हो रहा है, और वह अब होश में आने की कोशिश कर रहा था। जैसे ही दरवाज़ा फिर से खुला, जेलर ने सिंदबाद को देखा और ज़ोर से चीख पड़ा। वह गाड़ी से ऐसे कूदा जैसे उसने साक्षात शैतान को देख लिया हो और धड़ाम से ज़मीन पर गिरा।
क्या मैं इतनी बदसूरत दिखती हूँ?
सिंदबाद का इरादा चाबी लेकर वही करने का था, लेकिन लगाम पकड़े पहरेदार उस दरवाजे के करीब आ गया जिससे सिंदबाद बेढंगे तरीके से लटका हुआ था। उसने मुस्कुराते हुए अपनी घुमावदार तलवार से दरवाजे पर वार करना शुरू कर दिया। सिंदबाद ने उसके हमलों से बचते हुए झटक कर केबिन के अंदर छलांग लगा दी। पहरेदार ने तलवार से वार करते हुए केबिन के अंदरूनी हिस्से को छेदने की कोशिश की, लेकिन सिंदबाद ने खुद को बचा लिया।
‘अरे, तुम मुझे पकड़ नहीं सकते!’ वह हंसते हुए चिल्लाया, लेकिन तभी तलवार उसके कुर्ते के कपड़े से टकराई और उसे फाड़ डाला। सिंदबाद ने निराशा से अपना चेहरा बिगाड़ा और जर्जर झोपड़ी के छेदों को पार करते हुए आगे बढ़ गया। उसने तंबू के ऊपरी हिस्से के कपड़े का एक टुकड़ा पकड़ा और उसे ज़ोर से नीचे खींच लिया, जहाँ पहरेदार था। सिंदबाद के हाथ में तलवार थी, और अब दोनों एक-दूसरे को लात मारते हुए लड़ने लगे।
‘तुम्हारे स्वामी ने तुम्हें मरने के लिए छोड़ दिया है,’ सिंदबाद चिल्लाया।
‘नहीं, मैंने उसे ऐसा करने के लिए कहा था।’ गार्ड फिर मुस्कुराया और गाड़ी से कूद गया।
असमंजस में पड़े सिंदबाद ने आगे देखा और घोड़ों को बगदाद की दीवारों की ओर बढ़ते हुए पाया।
यात्राओं के प्रति प्रेम के लिए धन्यवाद!
सिंदबाद ने रथ के आगे की खड़ी सीढ़ियों को पकड़ा और ऊपर कूद गया। उसने घोड़ों की लगाम पकड़ी और उन बेकाबू जानवरों को शहर की दीवारों से दूर ले गया।
लेकिन तभी उसे कुछ टूटने की आवाज़ सुनाई दी। पहिए फिसल गए और घोड़ों को बांधने वाली भारी रस्सियाँ ढीली पड़ गईं, जिससे गाड़ी ढलान पर लुढ़कने

लगी। सिंदबाद ने गाड़ी से जितना हो सके दूर छलांग लगा दी, ठीक इससे पहले कि वह घोड़ों के साथ लुढ़कती हुई नीचे की ओर चली जाए। वह सूखी घास और झाड़ियों के ढेर पर गिर पड़ा, धूल, मलबा और...
सूअर।
‘शहर के बगल में खेत कौन रखता है भला?’ गंदगी देखकर वह कराह उठा।
यह एक छोटा सा फार्म जैसा लग रहा था जिसमें सूअर, कुछ मजदूर और एक घर था, जो अब पूरी तरह से खंडहर में तब्दील हो चुका था क्योंकि गाड़ी सीधे उससे टकरा गई थी।
कम से कम मैं खिलाफत के चंगुल से तो बच गया।
सिंदबाद जमीन पर शांति से लेटा हुआ था, इस बात से निराश था कि यह महान साहसिक यात्रा बेहतर ढंग से क्यों नहीं गुजरी। तब तक किसान ने सिंदबाद को देख लिया था, जबकि सिंदबाद के बगल में बैठा सूअर गुर्रा रहा था और उसका चेहरा चाट रहा था।
किसान ने अपने घर और खेत की ओर इशारा करते हुए चिल्लाकर कहा, 'तुम्हें इसके लिए भुगतान करना ही होगा!'
सिन्बाद ने सिर हिलाया। 'हाँ, ज़रूर, ज़रूर।' उसने अपने पैरों पर संभलने की कोशिश की, और सूअर को थपथपाते हुए अपने शरीर से धूल और कीचड़ पोंछा। 'तुम ही हो जो मुझे इतनी दयालुता से देखते हो।'
किसान की चीखों को अनसुना करते हुए वह जर्जर हो चुकी गाड़ी की ओर बढ़ा। उसे इस बात की खुशी थी कि घोड़े इस मुसीबत से बच गए थे—वे रेगिस्तान की ओर भाग गए होंगे। गाड़ी में बिखरे सामान को खंगालते हुए उसने टूटे हुए टुकड़ों से सावधानी से खुद को बचाया। उसने कई तख्तों पर दस्तक दी, तब जाकर उसे वह चाबी मिली जिसकी उसे तलाश थी।
सिंदबाद ने राहत की सांस लेते हुए मलबे से बाहर कदम रखा, लेकिन किसान उसे कोसता रहा।
'जी हां, चिंता मत करो। जैसे ही कोई मुझे कई बार दुनिया को बचाने के लिए भुगतान करेगा, मैं तुम्हें वह पैसा दिलवा दूंगा।'
अब उसे बस यही सोचना था कि कस्बे में वापस कैसे जाना है। उसे वापसी के लिए एक घोड़ा बचाकर रखना चाहिए था, लेकिन चूंकि वह ऐसा नहीं कर सका, इसलिए वह दूर देखता रहा, जबकि वह प्यारा सा सुअर उसे चाटता रहा।

लेकिन जब उसने दर्जनों घोड़ों को अपनी ओर सरपट दौड़ते देखा तो उसकी सारी योजना धराशायी हो गई। उसे इस बात पर प्रसन्न होना चाहिए था कि जरूरत के समय घोड़े मौजूद थे, लेकिन उन पर सवार लोग थे, जिनमें से एक अब्बासिद खिलाफत का रेशमी झंडा लहरा रहा था। झंडा आसानी से पहचाना जा सकता था—काला रंग, जिसके बीच में सुनहरा चाँद बना था। काफिले के ठीक पीछे एक बहुत गुस्से में भरा मोटा आदमी पहरेदारों पर चिल्ला रहा था, 'यह वही है! यह वही है! यह अपने उड़ने वाले कालीन और काले जादू से मेरी गाड़ी चुराने की कोशिश कर रहा था,' जेलर चिल्लाया। 'इसका नाम सिंदबाद नाविक है।'
सिंदबाद ने आह भरी। उसने इन पहरेदारों को द्वार से ही लाया होगा।
उसने हेलमेट और कवच पहने हुए आदमियों को देखा और कहा, 'यह तो असल में सिंदबाद है, दुनिया को बचाने वाला, रोक का वध करने वाला, राक्षसों का शिकार करने वाला... अरे, मैं खुद को ही क्यों बेवकूफ बना रहा हूँ?' उसे पता था कि वह जेल जा रहा है, शायद उसी जगह जहाँ इदरीस का पति कैद था। 'यह तो बस नाविक सिंदबाद है।'

चार
सिंदबाद कई बार जेल जा चुका था, और लाशों की सड़ती हुई गंध, चिकनी दीवारों और बदबूदार पाइपों के अलावा, वह वास्तव में उस समय की सराहना करता था जो उसे आत्मनिरीक्षण के लिए मिलता था।
युवा नाविक के लिए जीवन बहुत तेज़ी से बदल रहा था। कल ही उसने इदरीस के पति को बचाने की योजना बनाई थी और अब वह खुद कैद में था। और कुछ ही महीने पहले उसने दुनिया को बचाया था, लेकिन दुर्भाग्य से, इसके बारे में किसी को पता तक नहीं चला। उसे कम से कम निनुर्ता गिल्ड या हंटर्स गिल्ड (जैसा कि आम लोग इसे कहते थे) के राक्षस-शिकारी कट्टरपंथियों से तो यही उम्मीद थी कि वे उसकी सराहना करेंगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।
इसके विपरीत, उन्होंने उसे गद्दार करार दिया और उस पर राजद्रोह तथा खिलाफत के विरुद्ध जाने का आरोप लगाया। वास्तव में, निनुर्ता गिल्ड ने तो यहाँ तक कह दिया कि दुनिया को बचाने का सारा मामला झूठ था। यह सब एक धोखा था। यह वास्तविक नहीं था। यहाँ तक कि खिलाफत के भविष्यवक्ता ज़ारका, जिसने इसकी भविष्यवाणी की थी, को भी झूठा करार दिया गया।
यह सब इसलिए हुआ क्योंकि गिल्ड ने इस बारे में कुछ नहीं किया, बल्कि वे आराम से बैठे रहे और मदीरा पीते रहे।
लोग उस गिरोह का सम्मान करते थे, इसलिए संक्षेप में कहें तो, सिंदबाद को समाज से बहिष्कृत कर दिया गया; वह अब एक सेइड (यानी शिकारी) नहीं रहा। वह अब एक नाविक, एक अपराधी और सबसे बुरी बात, एक समुद्री डाकू बन गया था!
लेकिन कुछ महीने पहले उसने जो यात्रा की थी, वह उसके लिए कई खुलासे लेकर आई थी, खासकर उसके आसपास के लोगों के बारे में। जिन दोस्तों से वह मिला था, वे अब उसके परिवार जैसे बन गए थे। उसकी प्रेमिका भी उसके जहाज पर थी, और भले ही वह उससे दूरी बनाए हुए थी, कम से कम वह अभी भी जीवित थी। जब उसने इस बारे में सोचा, तो शायद दूरी बनाए रखना ही बेहतर था, क्योंकि वह एक प्रलयकारी

यंत्र थी, जो एक असली शैतान—शैतान—के अंग से जन्मी थी, जिसे आमतौर पर भोर का देवता इब्लिस कहा जाता है।
सिन्बाद ज़मीन पर लेटा हुआ था, ऊपर टपकती लाल ईंटों की छत को देख रहा था और उसके दिमाग में विचारों का सैलाब उमड़ रहा था। उसे भागना ही था। वह जानता था कि उसका दल उसे बाहर निकालने की योजना बना रहा है, लेकिन उसे खुद भी कोई योजना बनानी थी।
उसने सुराग ढूंढने के लिए अपने दिमाग की गहराइयों तक छानबीन की, तभी अचानक एक भूली-बिसरी याद उसके दिमाग में कौंध गई। पिछली बार जब सिंदबाद ने अपने दुश्मन को मारा था, उससे ठीक पहले, काले पंखों वाले अज़राएल, यानी पतित देवदूत ने सिंदबाद से कहा था कि वह उसके माता-पिता के बारे में जानता है। बचपन में ही निनुर्ता गिल्ड में शामिल हो जाने और फिर याददाश्त खो देने के कारण, सिंदबाद निश्चित रूप से जानना चाहता था कि उसके माता-पिता कौन थे। वे अब कहाँ हैं? वे क्या कर रहे हैं? क्या वे जीवित भी हैं?
लेकिन इससे पहले कि वह इन सवालों पर विचार कर पाता, हाथीदांत की कवच पहने पहरेदार ने उसकी कोठरी की जाली पर दस्तक दी।
‘मनोरंजन का समय!’ उसने चिल्लाकर कहा।
‘यह क्या है?’
'तभी तुम कुछ देर के लिए अपनी उस खूनी कोठरी से बाहर निकलते हो।'
‘मुझे यहाँ कब तक रहना होगा?’ सिंदबाद ने पूछा। ‘क्या मुझे निष्पक्ष सुनवाई का मौका नहीं मिलेगा, क्या मुझे खिलाफत की अदालत में आमने-सामने बातचीत करने का अवसर नहीं मिलेगा?’
उन्होंने हमसे कहा कि जब तक वे आपके बारे में चर्चा पूरी नहीं कर लेते, तब तक इंतजार करें।
ओह, बढ़िया। चर्चा करना कभी अच्छा नहीं होता।
सिन्बाद कोठरी से बाहर निकला और अपने से दोगुने कद के कैदियों की कतार में शामिल हो गया, जो सभी उसे घूर रहे थे। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ा, उसने अपने जबड़े भींच लिए, उसकी आँखें अमीर को ढूँढ़ रही थीं। जहाँ तक उसे पता था, इदरीस का पति एक साधारण आदमी जैसा दिखता था, लेकिन उसकी त्वचा पीली, दाँत नुकीले और आँखें सुनहरी थीं—शायद किसी स्ट्रिगोई या पिशाच जैसा। सिंदबाद ने गौर किया कि यह कोई साधारण जेल नहीं थी, बल्कि राक्षसों को रखने की जगह थी। यहाँ हवा में एक ऐसा जादू था जो चुड़ैलों और सरदारों के जादू को

दूर भगाता था। यहाँ बौने और वेयरवोल्फ भी थे, लेकिन जेल के कपड़ों में। यहाँ शरारती किस्म के बौने भी थे, और नन्ही परियाँ भी थीं जिन्हें और भी छोटी जंजीरों से जकड़ा गया था।
ऐसा प्रतीत होता था कि सिंदबाद को भी एक राक्षस माना जाता था, भले ही वह इंसान था, शायद इसलिए कि वह एक पूर्व सेइड था, एक ऐसा व्यक्ति जो सामान्य मानवीय क्षमताओं से परे काम करने में सक्षम था।
उसे अपने दिवंगत गुरु के शब्द याद आए। 'हम इतने लंबे समय तक राक्षसों का शिकार करते रहते हैं कि अंत में हम खुद ही राक्षस बन जाते हैं...।' सिन्बाद मनोरंजन क्षेत्र की ओर टहलते हुए बढ़ा, जो एक खुला मैदान था जहाँ मेजें और कुर्सियाँ रखी थीं। खुली छत से रोशनी छनकर आ रही थी। संगमरमर की दीवारों के सामने पहरेदार कतार में खड़े थे। सिन्बाद ने देखा कि उनमें से अधिकतर सेइड थे, जिन्होंने गहरे लाल रंग के लंबे चोगे पहने थे जिन पर तरह-तरह के मंत्र खुदे हुए थे, उनके हाथों में लाठियाँ थीं और उन्होंने टोपियाँ पहन रखी थीं। उनके चेहरों पर जमे डरावने, पत्थर जैसे भाव के कारण उन्हें नज़रअंदाज़ करना या उनसे उलझना नामुमकिन था।
अपनी स्थिति को कुछ समय के लिए स्वीकार करते हुए, सिन्बाद ने यह पता लगाने का फैसला किया कि क्या अमीर जेल में बंद है। अन्य कैदियों ने कंधे उचकाए, सिर हिलाया या कुछ बुदबुदाए, लेकिन आखिरकार किसी ने कोने में बैठे एक व्यक्ति की ओर सिन्बाद का इशारा किया। वह चुपचाप दीवार से टेक लगाकर सिर झुकाए बैठा था। उससे एक भयानक आभा निकल रही थी।
सिन्बाद उसके पास पहुंचा और झिझकते हुए बोला, 'उम्म... मैं सिन्बाद हूं, इदरीस का दोस्त।'
उस आदमी ने ऊपर देखा, उसकी पीली आँखें भावहीन थीं। 'इदरीस... इदरीस?' उसने फुसफुसाते हुए कहा। उसकी त्वचा फटी हुई थी और होंठ सूखे थे। उसके मुँह के किनारे से लार टपक रही थी।
नहीं!
ऐसा लग रहा था मानो उसके दिमाग को बिजली के झटके लगे हों जिससे वह बेसुध हो गया हो। उस आदमी की बेजान आँखें और बेसुध हरकतें देखकर सिंदबाद ने घबराकर निगल लिया। सिंदबाद ने सोचा, वह ज़रूर बहुत खतरनाक रहा होगा। वे तुम्हें तब तक बिजली का झटका नहीं देते जब तक तुम विद्रोह न करो या हद पार न करो। मुझे पता है आप क्या सोच रहे हैं। यह निराशाजनक है।

सिंदबाद ने उस ओर मुड़कर देखा जहाँ से आवाज़ आई थी, तो पाया कि उसके पीछे एक वेयरवोल्फ खड़ा है। वह लंबा था, उसके शरीर पर गहरे रंग के बाल थे और नुकीले कान थे, और वह केवल अपने पिछले पैरों पर ही चल रहा था। वेयरवोल्फ उन भेड़ियों जैसे नहीं थे जैसा कि मिथकों में उन्हें दर्शाया जाता है। वास्तव में, वे जंगली भी नहीं थे, बल्कि काफी उन्नत और बुद्धिमान प्रजाति थे। सिंदबाद को हमेशा किसी वेयरवोल्फ से मिलने की बहुत खुशी होती थी। ‘क्या आप उसे जानते हैं?’ उसने पूछा।
‘बेशक। वो मेरा दोस्त है।’ वेयरवोल्फ का लहजा इतना परिष्कृत था कि लगता था मानो उसका संबंध रोमन वंश से हो। ‘कम से कम पहले तो था, जब तक भागने की कोशिश में उसका दिमाग खराब नहीं हो गया। ये जगह बहुत भयानक है। हर नया दिन तुम्हारा आखिरी दिन हो सकता है।’
सिन्बाद ने अपने होंठ सिकोड़ लिए और अपनी बाहों को सीने पर मोड़ लिया। 'क्या तुम्हें लगता है कि वह वापस आ सकता है?'
'शायद। हो सकता है। इसे बहुत उपचार की आवश्यकता है, वास्तव में दुर्लभ उपचार की।'
सिन्बाद ने सोच-समझकर सिर हिलाया।
‘मैंने आपको “इदरीस” नाम लेते सुना,’ वेयरवोल्फ ने कहा, ‘छुपकर सुनने के लिए क्षमा चाहता हूँ, लेकिन मैं समझ गया कि आप किसके बारे में पूछ रहे हैं। एमिर हमेशा उसके बारे में बात करता रहता था।’ उसने उस आदमी की ओर इशारा किया। ‘वह उसके लिए यह जगह छोड़ना चाहता था। वह मुझे उनकी कहानी सुनाता था: कैसे वह उसका शिकार करने आई थी, लेकिन उसे उससे प्यार हो गया और उसे भी उससे। कितना प्यारा और खूबसूरत प्रेम प्रसंग था! वे चुपचाप, छुपकर रहते थे, लेकिन एक दिन इदरीस ने सोचा कि गिल्ड को बताना ही बेहतर होगा। आखिर क्या बुरा हो सकता था? लेकिन हुआ। उसे कोई चोट नहीं आई, लेकिन वह पकड़ा गया और जेल में डाल दिया गया। गिल्ड टालमटोल करता रहा और उससे अपने गंदे काम करवाता रहा... समय के साथ यह ब्लैकमेल में बदल गया।’
सिन्बाद ने दांत पीसे। 'मुझे नहीं पता कि उसने ऐसा क्यों किया। उसे बस चुप रहना चाहिए था।'
'उम्मीद। उसे अपनी जनता में, सरकार में उम्मीद थी।'
सिन्बाद ने अपना सिर हिलाया। उम्मीद की कोई गुंजाइश नहीं थी। वह अमीर से बात करने के लिए घुटनों के बल बैठ गया, लेकिन तभी कोई वहां आ गया।

‘देखो देखो, यहाँ कौन है?’
फिर नहीं।
सिंदबाद ने पीछे मुड़कर आह भरी, उसे एहसास हुआ कि उसके दुश्मनों की लंबी सूची में से ही कोई उसे जान से मारना चाहता होगा। लेकिन एक बड़े, डरावने आदमी के बजाय, उसने गुस्से से भरे बौनों का एक समूह देखा। वे सभी लगभग चार फीट लंबे थे और उनकी घनी कद्दू के रंग की दाढ़ियाँ थीं।
‘नमस्ते,’ सिंदबाद ने जबरदस्ती मुस्कुराते हुए कहा। ‘मैं आपको कैसे जानता हूँ?’
बीच में खड़े बौने ने चीखते हुए कहा, 'तुम्हें मैं याद नहीं हूँ, है ना? मैं तुम्हारा सबसे बुरा सपना हूँ।'
'ज़रूर हैं आप। लेकिन मुझे माफ़ करना, मुझे याद नहीं है।'
‘तुम और तुम्हारे आका ने हमारे चंदन की तस्करी के कारोबार में घुसपैठ की और मेरे दोस्तों की हत्या कर दी।’
‘ओह, क्या हमने ऐसा किया था?’ सिंदबाद को ज़रा भी समझ नहीं आ रहा था कि वह किस बारे में बात कर रहा है। ‘मुझे उस याद से कोई चेहरा याद नहीं आ रहा है।’ ‘और वो कहता है, उसने दुनिया को बचा लिया!’ बाकी बौनों में ठहाके लग गए। ‘हम तुम्हें भूनकर खा जाएंगे।’
सिंदबाद ने आह भरी; मिथकों में बौनों को महान सुनार, चांदी के कारीगर और कवचकार बताया गया है, लेकिन उनमें उनकी नरभक्षी प्रकृति का उल्लेख जानबूझकर नहीं किया गया है।
‘हमें अकेला छोड़ दो, छोटे लोगों,’ वेयरवोल्फ ने कहा। ‘हम कोई नुकसान नहीं पहुंचाएंगे।’
‘अरे, कुत्ते! ये दो बिना बालों वाले लोगों के बीच की बात है, इसलिए दफा हो जाओ, फर वाले।’
सिंदबाद को उम्मीद थी कि वेयरवोल्फ गुस्सा हो जाएगा, लेकिन उसने सिर हिलाया और चुपचाप चला गया।
‘तुम्हें पता है, तुम्हें असभ्य होने की ज़रूरत नहीं है। तुम हमेशा—’ बोलने वाले बौने के बगल में खड़ा सबसे छोटा बौना, अपने नुकीले दांतों से सिंदबाद पर झपटा, मानो उसे निगलने को तैयार हो। सिंदबाद बच निकला और उसे घूंसा मारा, जिससे वह बौना गिर गया। अब बाकी दो बौने भी उस पर झपटे और उसकी

टांगों को काटने लगे। सिंदबाद दर्द से चीख उठा; उसने लात मारकर उन्हें दूर धकेल दिया। उसकी मुट्ठियां कई दिशाओं में चल रही थीं।
क्या किस्मत है! मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मुझे एक भयानक जेल में नरभक्षी बौनों से लड़ना पड़ेगा!
सिंदबाद ज़मीन पर गिर पड़ा, क्योंकि बौने उसके चारों ओर जमा होने लगे और उसे नाश्ता समझकर चटकारे मारने लगे। उसने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं, हमले के लिए खुद को तैयार किया, लेकिन तभी उसे एक ज़ोरदार गड़गड़ाहट सुनाई दी। हवा का एक झोंका जादू की तरह सभी बौनों को उड़ा ले गया।
उसने ऊपर देखा तो उसे एक दुबला-पतला आदमी दिखाई दिया, जिसे पहचानना आसान था, लंबे चेहरे और नुकीली नाक वाला। उसकी पतली मूंछें और लंबे कान थे, जिनमें सोने के छल्ले लटक रहे थे। उसने बहुरंगी, माणिक जड़ा हुआ गाउन पहना हुआ था। इस बार उसके हाथ में एक छड़ी थी, जिसके ऊपर एक चमकता हुआ गोला टिका हुआ था। यही वह आदमी था जिसने सिंदबाद को दुनिया को बचाने का आखिरी मिशन सौंपा था।
‘सिनबाद, आपसे दोबारा मिलकर खुशी हुई। आपको स्वयं खलीफा हारून अल-रशीद ने बुलाया है,’ जाफर ने कहा।
खलीफा?
ओह, यह तो दिलचस्प होने वाला है।

पाँच
सिन्बाद, खलीफा हारून अल-रशीद के वज़ीर और बरकामिद परिवार के मुखिया जाफ़र के साथ चल रहा था। सिन्बाद को उससे एक शक्तिशाली ऊर्जा का संचार महसूस हो रहा था। वे घोड़े पर सवार होकर जेल से निकले और फिर एक बग्घी में बैठकर लाल ईंटों के भट्ठे से बने एक छोटे किले तक पहुँचे।
जाफर ने कहा, 'जो कुछ भी हुआ, उसके लिए मैं माफी मांगता हूं।'
‘आखिर हुआ क्या?’ सिंदबाद ने शरमाते हुए पूछा।
‘मेरी वजह से तुम्हारे हाथों में हथकड़ी लगी है। वरना तुम्हें हीरो माना जाता।’
‘अच्छा, ठीक है।’
मैंने खलीफा को समझाने की कोशिश की, लेकिन वह कुछ नहीं कर सका। खलीफा शासन के प्रमुख केंद्रों में उस गिरोह का काफी दबदबा है, और दुनिया को बचाने का जिम्मा सौंपने के बावजूद उसने तुम्हें अपराधी करार दिया। उन्हें विश्वास ही नहीं था कि बचाने लायक कुछ बचा भी है। उन्हें अब भी विश्वास नहीं है कि इब्लिस हमले की योजना बना रहा है और अवसरों की तलाश में है।
‘यह कैसे संभव है? तुरही उनकी आंखों के सामने से चोरी हो गई,’ सिंदबाद ने क्रोध से कहा।
‘ये सब मिथक हैं, जैसा कि लोग कहते हैं। वे तो बिल्ली जैसी आंखों वाली महिला पर भी विश्वास नहीं करते। उन्हें पता ही नहीं कि वह जीवित है,’ जाफ़र ने कहा। ‘उनका मानना है कि वह मर चुकी है... लेकिन मुझे यकीन है कि वह कहीं न कहीं है। अगर तुम उसे ढूंढ लो, सिंदबाद, तो उसका सिर जरूर लाना।’
सिन्बाद ने विनम्रता से मुस्कुराते हुए, सोच-समझकर शब्द चुने। उन्हें यह पता नहीं चलना था कि दल की एक सदस्य स्वयं शैतान की बेटी थी—वही कुख्यात बिल्ली जैसी आंखों वाली लड़की।

‘अगर वे सिर्फ उस भोली-भाली लड़की के लगातार खतरे को लेकर चिंतित हैं तो वे नासमझ हैं। तुम्हें पता है, मैं भी कभी ऐसा ही भोला-भाला था जब मैं संघ में था। सेइड की उपाधि के साथ यही आता है,’ सिन्बाद ने उदास होकर मुस्कुराते हुए कहा।
‘सुनो, बच्चे। हमारा तुम्हें मारने का कोई इरादा नहीं है,’ जाफ़र ने कहा। उसकी आवाज़ में निराशा और बेबसी झलक रही थी। ‘अच्छी बात ये है कि सिंदबाद नाविक को कोई नहीं जानता। सब सोचते हैं कि तुम कोई अनजान लड़का हो जो दुनिया के अंत के बारे में बेमतलब की बातें कर रहा है।’
‘क्या? यह तो अच्छा हिस्सा नहीं है,’ सिंदबाद चिल्लाया।
जाफ़र मुस्कुराया। 'बुरी बात ये है कि गिल्ड को ये महसूस होने लगा है कि खलीफ़ा कमज़ोर पड़ रहा है। वो मुझ और भविष्यवक्ता ज़ारका के प्रभाव में है, और उन्हें लगता है कि वो आगे चलकर समस्या बन सकता है। यही राजनीति है। यही हमारा काम है। जबकि तुम्हारा काम अलग है।'
इससे पहले कि वह कुछ पूछ पाता, दरवाजे खुल गए और सिंदबाद ने अपने सामने लगभग तीस साल के एक व्यक्ति को एक बड़ी मेज पर रखे चार्ट और नक्शे देखते हुए देखा। उसने पगड़ी नहीं पहनी थी, बस एक कुर्ता था जिस पर एक प्रतीक चिन्ह बना था और छाती पर एक लंबी केसरिया कमरबंद लिपटी हुई थी। घनी दाढ़ी ने उसके सुंदर चेहरे के कुछ हिस्से को ढक रखा था। एक आकर्षक अरब लड़का। लेकिन उस दिखावे के पीछे इस देश का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति छिपा था— अब्बासिद खिलाफत का उत्तराधिकारी, स्वयं खलीफा—हारून अल-रशीद।
सिंदबाद ने खलीफा के बारे में अक्सर सुना था, लेकिन सौभाग्यशाली कुछ ही लोगों ने उन्हें देखा था। वे शायद ही कभी अपने किले से बाहर निकलते थे। वे कभी बाहर नहीं घूमते थे; अन्यथा, उनके हजारों प्रशंसक और एक लाख हत्यारे उन पर हमला करने के लिए घात लगाए बैठे होते। हारून अल-रशीद ने अरब की धरती पर कला, संस्कृति, व्यापार नीतियों का विस्तार और सैन्य अनुशासन को अभूतपूर्व रूप से बढ़ावा दिया था, और हाउस ऑफ विजडम की नींव रखी थी, जो दुनिया का सबसे बड़ा पुस्तकालय था।
फिर भी, उस संगठन ने उसे अपने शिकंजे में ले रखा था क्योंकि वह एक प्राचीन संगठन था, और परंपरा के अनुसार, चाहे वह संगठन कितना भी शक्तिशाली या शक्तिहीन क्यों न हो, वह कभी भी सीधे खिलाफत के अधीन नहीं आता था। वह एक स्वतंत्र इकाई थी, जिसकी एक रहस्यमय, आध्यात्मिक उपस्थिति थी।

जैसे ही हारून ने सिंदबाद की ओर देखा, उसकी निगाह जाफ़र पर पड़ी। 'कृपया उसे रिहा कर दीजिए।'
जाफ़र ने ताली बजाई और सिंदबाद की रस्सियाँ खुल गईं, जिससे वह अपनी कलाईयों की मालिश कर सका। 'आह,' सिंदबाद कराह उठा।
'क्या तुम्हें बहुत कसकर बांधा गया था?' हारुन ने पूछा।
'नहीं, मैंने लोगों को रिहा होने के बाद ऐसा करते हुए देखा है।'
हारून ने सिर हिलाया। 'खैर, आपसे मिलकर खुशी हुई, सिंदबाद। आपकी वजह से ही हम सांस ले पा रहे हैं।'
सिंदबाद को विश्वास नहीं हो रहा था कि धरती का सबसे ताकतवर आदमी उसकी तारीफ कर रहा है।
‘पिछली बार जब हमने तुम्हें मिशन पर भेजा था, तो गिल्ड अनिच्छुक था, इसलिए उन्होंने तुम्हारे साथ केवल एक सैनिक, इदरीस को भेजा था। लेकिन दुर्भाग्य से, तुम सफल हो गए, और अब वे तुम्हें अपराधी मानते हैं। यहाँ तक कि इदरीस भी। वे अपने ही एक सदस्य को धर्म परिवर्तन कराने के लिए तुम्हें फाँसी देना चाहते हैं। और सच कहें तो, सिंदबाद, तुम्हें भी कई मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा।’ खलीफा ने अपने दस्तावेजों को पलटा, एक कागज़ का टुकड़ा निकाला और पढ़ना शुरू किया। ‘तुमने अपने गुरु की हत्या की। ऐसा लगता है कि बशरा में सेइद के रूप में तुमने जो काम मुफ्त में किया, उसके लिए तुम्हें पैसे मिले। तुमने गिल्ड की अनुमति के बिना एक यूनानी देवता का आह्वान किया। तुमने ओमान में पिशाचों के साथ हंगामा खड़ा किया। और तुम प्रतिष्ठित चीनी योद्धा तिएन शेंगदोंग की हत्या में भी शामिल हो।’
सच कहूँ तो, वह एक नंबर का बेवकूफ था—
हारून ने हाथ उठाया। 'अपना बचाव करने की कोई ज़रूरत नहीं है। जैसा कि आप देख सकते हैं, आप यहाँ समर्थकों के साथ हैं। मैं बस आपके गुनाहों की सूची बना रहा हूँ ताकि आप उन्हें दोहराएँ नहीं।'
'ओह, मैं कुछ करने की योजना नहीं बनाता। दुर्भाग्य से, चीजें मेरे साथ घटित होती हैं।'
हारुन खिलखिलाकर हंस पड़ा।
‘महामहिम, मुझे पूरा यकीन है कि आपने मुझे यहाँ मेरे अतीत के कारनामों के बारे में गपशप करने के लिए नहीं बुलाया है...’

हारून ने सिर हिलाया। 'मैं फिर से आपकी सहायता लेने की योजना बना रहा हूँ।' वह अपनी मेज से एक चर्मपत्र लेकर उठा और उसे सिंदबाद को सौंप दिया। 'यह मुझे मेरे एक सैन्य पोत ने दिया है। यह उमय्यद समुद्री लुटेरों पर हमला करने की कोशिश कर रहा था।'
सिंदबाद ने उसे पढ़ा। उसमें एक आदमी के बारे में लिखा था। एक बहुत ही अजीब आदमी के बारे में।
‘दुर्भाग्यवश, मेरे एक दर्जन बेड़ों के विनाश से बचकर निकलने वाला केवल एक ही व्यक्ति था।’ हारुन रुका। ‘एक दर्जन, हाँ। इस व्यक्ति, या जो भी वह था, के पास अपना बेड़ा था, लेकिन मनुष्यों का नहीं। राक्षसों का। नेफिलिमों और तरह-तरह के विचित्र जीवों का। उन्होंने उमय्यद समुद्री डाकुओं के बेड़े पर भी कब्जा कर लिया था।’
‘नेफिलिम? इब्लिस की सेना।’ सिंदबाद को शांग्री-ला में उनके साथ हुई अपनी लड़ाई याद आ गई।
हारून ने सिर हिलाया। 'यह आदमी लंगड़ाकर चलता था, और उसके आस-पास एक अजीब सा माहौल था... उसने जीवित बचे व्यक्ति को सता दिया, जिसकी पूछताछ के तुरंत बाद दिल का दौरा पड़ गया।'
‘लंगड़ाकर चलता था?’ सिंदबाद ने अपनी निगाहें सिकोड़ीं, उसे भाई केन के साथ हुई बातचीत याद आ गई। ‘लंगड़ा... लंगड़ाकर चलता था... बिलकुल!’
‘क्या हुआ?’ हारुन ने उलझन में पूछा।
‘मैं…उम्म, कुछ नहीं।’ सिंदबाद ने इस बारे में ज़्यादा कुछ नहीं कहा, लेकिन वह जानता था कि लंगड़ा शैतान ही भाई कैन के पुनरुत्थान और हत्या के साथ-साथ खलीफ़ा के बेड़े के विनाश के पीछे था। ‘तुम्हें क्या लगता है कि उसने तुम लोगों पर हमला करने की कोशिश क्यों की?’ उसने पूछा।
क्योंकि वह अरब देश के नक्शे खोज रहा था।
‘यह अजीब बात है। वह इन्हें किसी भी मानचित्रकार से प्राप्त कर सकता था।’ 'वह जगह नहीं जहां हमारे महत्वपूर्ण लोगों के गुप्त ठिकाने हैं,' हारुन ने विशेष रूप से बताया।
‘अरे, महत्वपूर्ण। हम किस तरह के महत्वपूर्ण की बात कर रहे हैं?’ ‘शोधकर्ता, वैज्ञानिक, लेखक, आविष्कारक...’ हारून ने समझाया। ‘मैंने खुद नक्शे पर उनके संभावित ठिकाने अंकित किए और अपने सबसे कुशल आदमियों को समुद्र पार भेजकर उनकी गतिविधियों का पता लगाने का आदेश दिया। किसी तरह इस

लंगड़े आदमी को यह जानकारी मिल गई। इसी बीच, मेरे आदमियों ने उमय्यद समुद्री लुटेरों का पता लगा लिया, जो हमसे बदला लेने के लिए हमारे पीछे पड़े थे, और इसी मुठभेड़ के दौरान वह लंगड़ा राक्षस वहाँ आ गया। उसने उमय्यदों की मदद की, नक्शे ले लिए और सारे जहाज जला दिए।’
'वह तुमसे इसलिए नफरत करता है क्योंकि तुम गिल्ड का समर्थन करते हो,' सिन्बाद ने समझाया।
हारून ने सिर हिलाया। 'बचे हुए व्यक्ति के अनुसार, उसने यह सब महज़ खुशी के मारे किया। मुझे नहीं पता कि हम किस तरह के शैतान से निपट रहे हैं, लेकिन वह किसी बुरी आत्मा के वश में लग रहा है।'
सिन्बाद ने सिर हिलाया। 'क्या मैं सूची देख सकता हूँ?'
कुछ देर चुपचाप बातचीत सुनने के बाद जाफ़र ने बीच में दखल देते हुए कहा, 'दुर्भाग्यवश, हम इसकी अनुमति नहीं दे सकते। सुरक्षा कारणों से।' सिंदबाद ने आंखें घुमाईं। 'बेशक।'
हारून अपने तोते के पास गया, जो एक ऊंचे डंडे पर बैठा था, और उसे दाना चुगने लगा। रुककर उसने कहा, 'बगदाद से 500 मील दूर नाज़िर नाम का एक छोटा सा कस्बा है। हमारे आदमियों ने कबूतरों के ज़रिए मुझे सूचना दी है कि नाज़िर और इस कस्बे के बीच के कई कस्बों में अजीबोगरीब राक्षसी दर्शन हुए हैं।' तो आपको लगता है कि वह नाज़िर के पास जा रहा है?
हारुन ने सिर हिलाया।
'और ऐसा क्यों है?'
उसने जाफ़र से नज़रें मिलाईं। ‘एक अहम शख्स है जिसे हमने छुपाने और बचाने की कोशिश की है, जिसके पास अहम जानकारी है... अहम सूचना है। मैंने उसे बचाने के लिए सूचना भेजी है, लेकिन देखो, मेरे आदमी जादू और राक्षसों के सामने कुछ भी नहीं हैं। वे दुश्मन को सिर्फ़ तब तक रोक सकते हैं जब तक तुम वहाँ नहीं पहुँच जाते। गिल्ड मुझे पसंद नहीं करता, इसलिए मैं उनकी मदद नहीं माँग सकता। तुम ही मेरे इकलौते विकल्प हो... और उम्मीद भी।’ हारून सिंदबाद के पास गया। वह इतना करीब खड़ा हुआ कि युवा सिंद खलीफ़ा की बादाम जैसी आँखें देख सका; वे कोमल और सौम्य थीं।
‘जिस आदमी की मैं रक्षा कर रहा हूँ, वह संकट की स्थिति में छिपना जानता है। नाज़िर से पाँच मील दूर एक घाटी है और’—उसने स्थान का विवरण देते हुए एक और कागज़ निकाला—‘तुम उसे वहाँ पा सकते हो।’ उसने शाही फरमान भी सौंप

दिया, जिस पर उसके हस्ताक्षर और खून से छपी आधिकारिक मुहर थी। ‘उसे बताना कि मैंने तुम्हें भेजा है। उसकी रक्षा करना, लेकिन उससे भी बढ़कर, उसके पास मौजूद ज्ञान की रक्षा करना। उस पागल शैतान के मन में कुछ षडयंत्र है और वह गलत मकसद से जानकारी की तलाश में है।’
सिंदबाद के पास राजसी फरमान था; जिसके तहत उसे अरब के सभी बंदरगाहों, कस्बों और शहरों में यात्रा करने की अनुमति थी। असल में, उसे कुछ भी करने की खुली छूट मिली हुई थी, और बदले में उसे खिलाफत की सेवा करनी थी। एक शानदार समुद्री डाकू होने का यही तो हाल था!
सिंदबाद ने ऊपर देखा। 'मुझे बदले में कुछ चाहिए।'
‘क्या?’ हारून ने सिंदबाद के कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा। ‘सोना? चांदी? औरतें? ज़मीन?’
'सुनने में तो लुभावना लग रहा है, लेकिन मैं चाहता हूं कि कैदी को रिहा किया जाए। उसे गलत तरीके से दोषी ठहराया गया है... वह एक पिशाच है।'
हारुन की भौंहें तन गईं। 'मुझे यह समझाना होगा कि मैं एक पिशाच को क्यों जाने दे रहा हूँ, लेकिन यह मुझ पर छोड़ दो।'
‘और साथ ही,’ सिंदबाद ने आगे कहा, ‘मैं चाहता हूं कि यह फरमान हमारे मिशन के पूरा होने के बाद भी जारी रहे, ताकि हम निरंतर निगरानी में रहने के बजाय स्वतंत्र रूप से जी सकें।’
हारून ने अनिच्छा से सिर हिलाया। 'जब तक मैं जीवित हूँ, सिंदबाद, यह नियम लागू रहेगा।'
यह बात सिंदबाद को बिल्कुल भी तसल्ली देने वाली नहीं लगी, लेकिन वह इसे स्वीकार करने को तैयार था। उसे दुनिया को बचाने का एक और मौका मिलेगा। हालांकि उसे पता नहीं था कि किन आदर्शों या खुशी के लिए, वह यह फिर से कर रहा था। वह कमरे से निकलने लगा, तभी अचानक पीछे मुड़ा और पूछा, 'उम, माफ कीजिएगा, लेकिन उस महत्वपूर्ण व्यक्ति का पीछा क्यों किया जा रहा है और उसे क्यों ढूंढा जा रहा है? और आखिर वह इतना महत्वपूर्ण है क्यों?' हारून ने एक बार फिर जाफ़र की ओर देखा। 'वह एक शोधकर्ता हैं, एक प्रकार के लेखक हैं। उमारा इब्न ज़ैद। वह शोधकर्ताओं के एक लंबे परिवार से आते हैं, और वह एक ऐसे विषय का अध्ययन कर रहे थे जिसे सैकड़ों वर्षों से गुप्त रखा गया था - कुछ ऐसा जिसके बारे में कहा जाता है कि वह गायब हो गया है।'
और वह क्या है?

जब हारून ने कहा, 'अलेक्जेंडर महान का मकबरा,' तो सिंदबाद लगभग हांफने ही वाला था।

छह
रात खत्म हो जानी चाहिए थी। लेकिन यह सिंदबाद के जीवन की सबसे लंबी रातों में से एक बन गई।
जब उसे चुपके से महल से बाहर ले जाया गया और आवश्यक दस्तावेज तथा यात्रा के लिए एक घोड़ी दी गई, तब वह विचारों में डूबा हुआ था।
उसने मैसेडोनिया के राजा सिकंदर के बारे में सुना था। सर्वथा शक्तिशाली शासकों में से एक, सिकंदर की मृत्यु मात्र बत्तीस वर्ष की आयु में हो गई थी। उसकी प्रजा उसे देवता मानती थी, मानो वह पूरी दुनिया को जीत लेता। अपनी रणनीति और तीक्ष्ण बुद्धि के कारण उसने कभी कोई युद्ध नहीं हारा था। किंवदंती के अनुसार, सिकंदर को विष देकर मार डाला गया था, लेकिन वर्षों की खोज के बावजूद, उसका शरीर समय के साथ गुम हो गया। किसी को नहीं पता था कि उसका अंतिम दफन स्थान कहाँ है।
ऐसे राजा के बारे में सुनना, किताबों में उसके बारे में पढ़ना एक बात थी, लेकिन यह जानना कि कोई उस आदमी की कब्र की तलाश में होगा, बिल्कुल अलग बात थी। सिंदबाद ने गहरी साँस ली और कहानियों को याद करने की कोशिश की। किंवदंती के अनुसार, कब्र में कई रहस्य और प्राचीन ज्ञान छिपा था, जिसकी अब लंगड़ा शैतान बेसब्री से खोज कर रहा था।
इब्लिस अपने किसी लेफ्टिनेंट को यूं ही किसी बेकार काम पर नहीं भेजेगा।
सिंदबाद ने अपनी घोड़ी पर सवार होते हुए सोचा, इसके पीछे कोई न कोई गुप्त मकसद जरूर होगा।
अब उसने शहर के द्वारों के पास आसमान को छूती हुई एक विशाल मीनार देखी।
मानो कोई प्रकाशस्तंभ हो।
जब सिंदबाद मीनार को देखते हुए सोच में डूबा हुआ था, तभी अचानक उसने देखा कि कोई उसके शिखर पर खड़ा है और धधकती लाल आँखों से उसे घूर रहा है। ऐसा लग रहा था मानो उसकी आँखों से कोई अजीब सी ऊर्जा निकल रही हो।

जैसे ही उसने उसे देखा, सिंदबाद जान गया कि वह कौन है।
सिंदबाद के पलक झपकते ही वह आकृति गायब हो गई। ठीक उसी क्षण उसके आगे की सड़कें और उसके पीछे का रास्ता काले धुएं से भर गया।
सिन्बाद ने आकाश के लोहे से बनी अपनी थोकचा तलवार को म्यान से बाहर निकाला, और अपने ऊपर भेजे गए किसी भी राक्षस को नष्ट करने के लिए तैयार हो गया।
लेकिन यह किसी दुश्मन ने नहीं भेजा था। यह एक दोस्त ने भेजा था।
'मुझे तुम लोग कभी पसंद नहीं आए,' सिंदबाद ने जोर से कहा, जिससे उसकी आवाज अब खाली हो चुकी सड़क पर गूंज उठी।
घोड़ी धीरे-धीरे चलने लगी। अपनी तलवार को सीने से लगाए सिंदबाद को ऐसा लग रहा था मानो वह घने जंगलों से गुजर रहा कोई वीर योद्धा हो। दुर्भाग्यवश, वह पूरब में रहता था और वहाँ रेत की भरमार थी—
‘मुझे तुमसे सवाल करना होगा,’ एक फुसफुसाहट सुनाई दी। ‘जवाब दो और तुम्हें छोड़ दिया जाएगा।’
उस आवाज़ में तीखापन था। कोई भी आम आदमी उसे सुनकर बेहोश हो जाता या जान बचाकर भाग जाता, लेकिन सेइड ऐसा नहीं करते थे, क्योंकि वे इस तरह की आवाज़ को अच्छी तरह जानते थे। एक इफ्रित—आग, काँच और मिट्टी से बना जिन्न। वे इच्छा पूरी करने वाले जिन्न नहीं थे, जैसा कि कहानियों में अक्सर बताया जाता है। बल्कि, अगर उन्हें बांधकर वश में कर लिया जाए, तो वे अच्छे प्रश्नकर्ता और खोजी बन जाते थे, यहाँ तक कि गुलाम भी, जिनके पास रूप बदलने की शक्तियाँ होती थीं। उनके पास मौलिक ऊर्जाओं को उत्पन्न करने और नियंत्रित करने की शक्तियाँ भी थीं।
बेझिझक पूछें। मैं हर सवाल का जवाब दे सकता हूं।
‘खलीफा आपसे क्यों मिलना चाहते थे?’
‘मैं इसका जवाब नहीं दे सकता। मुझे पता है कि आप गिल्ड के साथ काम कर रहे हैं और—’
इससे पहले कि वह अपनी बात पूरी कर पाता, सिंदबाद को उसकी घोड़ी से खींच लिया गया। उसके सामने लाल लबादा पहने हुए व्यक्ति ने उसे हवा में बहुत ऊपर उछाल दिया, उस भयावह मीनार के पार, और फिर वह लुढ़कते हुए नीचे आ गिरा। सिंदबाद पहरेदार मीनार की चोटी पर जा गिरा।
‘ठीक है, इसकी कोई ज़रूरत नहीं थी!’ सिंदबाद ने अपनी कमीज़ से धूल झाड़ते हुए चिल्लाकर कहा।

इफ्रित अब साफ दिखाई दे रहा था। उसकी लाल आँखें चमक रही थीं, और उसका चेहरा दुबला-पतला था—खैर, चेहरे का जो हिस्सा बचा था। उसका जबड़ा नहीं था, बल्कि उसकी जगह माणिक-लाल रंग की चिंगारियों का एक बड़ा समूह गायब हिस्से को ढक रहा था। आमतौर पर, इफ्रित मृत मानव शरीरों में पाए जाते थे, इसलिए यह ज़रूर कोई ऐसा व्यक्ति रहा होगा जिसने अपने चेहरे का आधा हिस्सा उड़ा दिया हो। ‘क्या मैं दोबारा पूछ सकता हूँ?’ इफ्रित ने अपने आग उगलते पंजे आगे बढ़ाए। ‘मुझे बताओ कि तुम्हें क्यों बुलाया गया था?’
‘बस सामान्य बातचीत।’
'तुम जानते हो कि मैं तुमसे सच निकलवा सकता हूँ।'
'यह उतना डरावना नहीं लगता जितना आप सोचते हैं।'
इफ्रित ने सिंदबाद पर झपट्टा मारा, जो नीचे की मंजिल पर कूद गया और लुढ़क गया। वह एक सीढ़ी के सामने गिरा और तेजी से नीचे उतरने लगा, तभी इफ्रित पतले, काले धुएं से निकलकर उसके सामने प्रकट हो गया। सिंदबाद ने दोनों रेलिंग को कसकर पकड़ा, खुद को हवा में उछाला और हवा में लटके हुए ही राक्षस को लात मारी, जिससे वह लगभग गिर ही गया।
फिर उसने इफ्रित को चौकी की रेलिंग से धक्का देकर नीचे गिराने की कोशिश की, लेकिन वह प्राणी धुएं के एक झटके में गायब हो गया, और फिर उसके पीछे प्रकट होकर अपने लाल पंजों से हमला करने के लिए तैयार हो गया।
सिंदबाद ने ठीक समय पर अपनी तलवार से पंजों पर वार किया।
इस सारी हलचल ने सिंदबाद को बेचैन कर दिया था। उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था और उसका मुंह सूख गया था। आग उगलते हुए पंजे और गहरा अंधेरा उसके लिए असहनीय साबित हो रहा था।
वह प्राणी अचानक सिंदबाद से टकरा गया, जिससे वह किनारे से नीचे गिर पड़ा।
वह घने कोहरे में गिरने लगा, लेकिन इफ्रित उसे उठाकर मीनार की दूसरी मंजिल पर ले गया। इफ्रित ने अब उसका गला पकड़ रखा था और उसके नुकीले पंजे सिंदबाद की आंखों के ठीक बगल में थे।
'मुझे बताओ वरना मेरे क्रोध का सामना करना पड़ेगा,' इफ्रित ने ताना मारा।
‘मैं तुम्हें मुक्त कर सकता हूँ,’ सिंदबाद ने फुसफुसाते हुए कहा।
‘क्या?’ उस प्राणी को इसकी उम्मीद नहीं थी।
‘तुम गिल्ड के साथ काम करते हो, और मैं जानता हूँ कि वे तुम्हारे साथ या तुम्हारे जैसे किसी के साथ सही व्यवहार नहीं करते। वे तुम्हें

अपहरणकर्ता, हत्यारा और न जाने क्या-क्या बना देते हैं। और तुम लोग ऐसे नहीं हो। जिन्न हमेशा से दयालु शक्ति रहे हैं, जब तक कि दुष्ट राजा सोलोमन ने अपनी अंगूठी से तुम सबको वश में करने का फैसला नहीं किया।’ सिंदबाद ने उस प्राणी की आँखों में देखा। ‘और अब वह अंगूठी सभी इफ्रितों को नियंत्रित करती है। लेकिन जादू के ज़रिए, मैंने उसके मंत्र में कुछ कमियाँ ढूंढ ली हैं जिनसे तुम आज़ाद हो सकते हो। तुम अपनी दुनिया में वापस जा सकते हो, परिवार बसा सकते हो और कौन जाने, शायद एक... बेकरी भी खोल लो?’
इफ्रित ने सिंदबाद को अजीब सी दिलचस्पी से देखा। ‘गिल्ड मुझे जानकारी निकालने के लिए अलग-अलग जगहों पर भेजता है क्योंकि उनके पास नियम और कानून तो हैं, लेकिन मेरे पास नहीं। तुम्हें पता है कि जब मैं गायब हो जाता हूँ, तो मेरा शरीर भी गायब हो जाता है और साथ ही वे छोटे जीव भी जिन्हें मैं मारता हूँ? एकदम से! सब कुछ गायब हो जाता है। तुम्हें पता है कि गिल्ड मुझे सिर्फ इसलिए पसंद नहीं करता—कि मैं कोई निशान नहीं छोड़ता। गिल्ड मुझे इसलिए पसंद करता है क्योंकि मैं उनके लिए हत्या और यातना नहीं करता—मैं ये सब अपने लिए करता हूँ। देखो, छोटे आदमी, मुझे मारना और यातना देना अच्छा लगता है।’
वाह, बहुत बढ़िया, सिंदबाद ने सोचा। मैं एक मनोरोगी जिन्न से निपट रहा हूँ। सबसे बुरे किस्म के जिन्न से।
‘अब जल्दी बताओ वरना मैं तुम्हें बहुत धीरे-धीरे मार डालूंगा।’ उसने सिंदबाद का गला और भी कसकर दबा दिया।
‘ठीक है, ठीक है। उसका नाम इदरीस है।’
'क्या?'
‘तुमने ही मुझे बताने को कहा था’
‘मुझे बताओ क्या?’ उस प्राणी ने अविश्वास भरी निगाहों से उसकी ओर देखा। ‘यह वह जवाब नहीं है जो मैं ढूंढ रहा हूँ।’
‘मुझे पता है, बेवकूफ। तुम्हें पूछना चाहिए था कि तुम्हारे पीछे कौन खड़ा है।’
इफ्रित ने अपनी आँखें चौड़ी कीं और पीछे मुड़कर देखा, तो उसे बैंगनी बालों वाली, ओवरकोट पहने सेइड अपने भाले के साथ दिखाई दी। उसने इफ्रित के शरीर को चीरते हुए उसका सिर धड़ से अलग कर दिया, इससे पहले कि वह कुछ समझ पाता। उसका सिर धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा।

सिन्बाद अपने साथी को देखकर इतना खुश कभी नहीं हुआ था। इदरीस ने सिन्बाद की ओर हाथ बढ़ाया और उसे ऊपर खींच लिया।
‘और मैंने सोचा था कि मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देख पाऊंगा,’ सिंदबाद मुस्कुराया।
‘अशरफिया और हुसैन ने मुझे बताया था कि तुम्हें कहीं यहाँ लाया गया है। वे बगदाद के दूसरे छोर पर तुम्हारी तलाश कर रहे हैं, लेकिन सौभाग्य से मैं उनसे पहले यहाँ पहुँच गया। लगता है मैं हमेशा तुम्हारी जान बचा लेता हूँ,’ इदरीस मुस्कुराया।
‘मुझे लगता है कि यह हमारे भविष्य के कारनामों के लिए एक आदर्श बनेगा,’ सिन्बाद मुस्कुराया। ‘लेकिन उससे पहले, मुझे कुछ बातें बतानी हैं।’ ‘पूरी टीम को बता दो। वे सब बगदाद में तुम्हारी तलाश कर रहे हैं।’
‘पूरी टीम?’ उनकी भौंहें तन गईं।
“ओह हाँ, सफीना जाग गई है। और उसने एक बुरा सपना देखा है।” इदरीस ने चिंता से सिर हिलाया। “एक लंगड़े राक्षस के बारे में कुछ था।”

सात
सफीना के सपने हमेशा से ही एक समस्या थे।
सिन्बाद ने यह बात सफ़ीना को अपने जहाज़ पर लाने के शुरुआती महीनों में ही जान ली थी। सफ़ीना गहरी नींद में सो जाती और खुद से बातें करती, उसे तेज़ बुखार आता और वह ज़ोर-ज़ोर से रोती, समुद्र की लहरों के साथ हिलती रहती। जागने पर सफ़ीना हिचकिचाते हुए अपने देखे हुए अनुभवों के बारे में बताती। आमतौर पर वह अतीत की बातें करती, कि उसका जन्म कैसे हुआ, क्लिफ़ोथ—इब्लिस की भूमि—में क्या हो रहा था। वह उन सपनों में इब्लिस से भी बातें करती, लेकिन वे बातें अर्थहीन और निरर्थक लगतीं, ऐसे शब्दों से भरी होतीं जिन्हें कोई समझ नहीं सकता था। जब वह उसके बारे में बात करती—शैतान के बारे में—वह कांप उठती। वह कहती कि वह अंधकार का प्रतीक है—स्वयं प्रकाशहीन, हर चीज़ में घना काला। सफ़ीना कभी यह नहीं बता पाती थी कि वह कैसा दिखता था क्योंकि, जैसा कि वह कहती थी, वह 'बिना किसी विशेषता' का था। सफीना के मोटल के कमरे के कोने में, सभी लोग इकट्ठा थे। सिंदबाद ने उन्हें अपने साहसिक कारनामे की कहानी सुनाई। अंत में, सभी ने उसे मजे से देखा, खासकर सफीना ने, जिसकी मासूम बिल्ली जैसी आंखें झपकीं।
'ऐसा लगता है जैसे मुसीबतें हर समय आपका पीछा करती रहती हैं,' इदरीस ने कहना शुरू किया।
'बदकिस्मती जैसी बात है,' मार्कस ने कहा, जो एक विशालकाय अफ्रीकी योद्धा था और जहाज पर क्वार्टरमास्टर के रूप में अधिकांश चालक दल का नेतृत्व करता था।
‘खैर, मुझे नहीं लगता कि यह बदकिस्मती है,’ हुसैन ने कहना शुरू किया। ‘मुझे लगता है कि बदकिस्मती वह है, न कि इसका उल्टा।’

‘हाँ, अब जब मैं इस बारे में सोचती हूँ’—सफीना ने अपनी भौंहें उठाईं— ‘जब तक वह मेरे द्वीप पर नहीं आया था, मैं काफी संतुष्ट थी। अब देखो मेरी जिंदगी कितनी बदल गई है।’
‘ठीक है, तुम्हें पता है क्या—’ सिन्बाद ने झल्लाकर कहने की कोशिश की, लेकिन प्रेसा, जो बदज़ुबान युवा चीनी रसोइया से भविष्यवक्ता बनी थी, बोल पड़ी।
‘वोडे माया! यह लड़का! यह हमारे लिए बुरा है। हमें इससे छुटकारा पाना चाहिए।’
‘अरे! तुम्हें पता है, मैंने ये सब इसलिए शुरू नहीं किया था कि तुम सब मेरे खिलाफ हो जाओ।’ सिंदबाद झुंझलाते हुए उठ खड़ा हुआ। ‘मैं तो बस अपनी महानता के बारे में बात करना चाहता था। और ये बदकिस्मती नहीं है। हम खतरनाक काम करते हैं, तो मुसीबतें तो आएंगी ही। ये तो तर्कसंगत है!’
वे सभी चुपचाप, अपनी बाहों को सीने पर बांधे हुए, उसे देखते रहे। सिंदबाद ने आह भरी। उसे अपनी टीम से ज्यादा समर्थन नहीं मिल रहा था। 'ठीक है, तो बताओ तुम क्या करना चाहते हो।'
मार्कस ने कहना शुरू किया, 'हम दुनिया को फिर से बचाएंगे, बस यही बात है!' 'हाँ, लड़के, दुनिया को अभी हमारा जादू देखना बाकी है।'
अशरफिया ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है, प्रिये।' हुसैन घबराया हुआ लग रहा था।
‘मुझे लगता है कि इस बार आप खतरे को कम आंक रहे हैं,’ सफीना ने अंत में कहा। ‘पता नहीं क्यों, लेकिन मुझे ऐसा लग रहा है कि हम किसी ऐसे व्यक्ति से निपट रहे हैं जो हमसे पांच कदम आगे है।’
‘आप यह बात इतने यकीन से कह रहे हैं। क्यों?’ अशरफिया ने पूछा।
‘क्योंकि…’ सफीना थोड़ी देर रुकी। ‘क्योंकि मेरे सपने आम सपनों जैसे नहीं थे। मैं तो इधर-उधर घूमती भी थी।’
‘घूमना-फिरना? कहाँ?’
उसने पलकें झपकाईं। 'मुझे याद नहीं है... और मुझे याद करने से थोड़ा डर भी लग रहा है।'
‘चिंता मत करो, प्रिये। मेरे पास एक उपाय है। मैंने हाल ही में यह जादू सीखा है,’ अशरफिया ने शरारती अंदाज़ में कहा। ‘मैं तुम्हारे सपनों को साकार

कर सकती हूँ। तुम्हें इसे याद रखने की भी ज़रूरत नहीं है, लेकिन हम इसे देखेंगे। क्या तुम इसमें शामिल होना चाहोगे?’
सफीना डर के मारे सिंदबाद की ओर मुड़ी।
उन्होंने धीरे से कहा, 'अगर आपको असहज महसूस हो रहा है तो आपको यह करने की जरूरत नहीं है।'
सफीना ने सिर हिलाया। 'नहीं, ठीक है। अगर हम सब सपने को देख सकें तो शायद हम सारी कड़ियों को जोड़ पाएंगे।'
सिन्बाद ने सिर हिलाया। वह मन ही मन लंगड़े शैतान के बारे में और अधिक जानने की उम्मीद कर रहा था, लेकिन उसे यह भी डर था कि इस प्रक्रिया में सफीना को चोट न पहुँच जाए। लेकिन साथ ही, उसे अशरफिया पर पूरा भरोसा भी था। सफीना बिस्तर पर लेट गई, और जैसे ही उसने अपनी आँखें बंद कीं, सब उसके ऊपर झुक गए। सिंदबाद ने अपने होंठ सिकोड़ लिए, तभी अशरफिया ने अपनी उंगलियाँ हिलाईं। उनसे चिंगारियाँ निकलने लगीं और देखते ही देखते सफीना गहरी नींद में सो गई।
‘एक तरह का एनेस्थेटिक,’ अशरफिया ने कहा। ‘ठीक है, प्यारे बच्चों, अब जो कुछ भी तुम देख रहे हो, वह असली हो भी सकता है और नहीं भी। याद रखो, यह एक सपना है... या फिर एक बुरा सपना भी हो सकता है।’
समूह ने एकमत होकर सिर हिलाया।
‘और हम सभी को उस सपने—या बुरे सपने—का सामना अकेले ही करना होगा। इसलिए जब हम उसके मानसिक महल में प्रवेश करेंगे, तो हम अकेले ही होंगे,’ पिशाच ने समझाया। ‘डरो मत। लक्ष्य हर बात पर विश्वास करना नहीं है।’
हुसैन ने चिंता से पूछा, 'क्या हम स्वप्नलोक में फंस सकते हैं?'
‘ओह, हाँ। बताओ, पीली महिला, अगर बहुत डर लगे तो क्या हम खुद को चुटकी काट सकते हैं?’ प्रेसा ने पूछा।
नहीं। मैं आप सबको वापस बुलाने से पहले पाँच मिनट का समय दूंगा। इससे ज़्यादा समय देने से समस्याएँ ही पैदा होंगी।
‘रुको, रुको! किस तरह की समस्याएं?’ इदरीस ने पूछा।
‘उम्म, एक कोमा में चला जाएगा।’
सिन्बाद ने अपनी निगाहें सिकोड़ीं। 'क्या? हम ऐसा नहीं चाहते।'

‘कोई भी कोमा में नहीं जाना चाहता, बेवकूफ। ऐसा तभी होगा जब तुम लापरवाह होगे। इसलिए लापरवाह मत बनो। बस।’ उसने कंधे उचकाए और अपने मंत्र बुदबुदाती रही।
बैंगनी रंग की चिंगारियां समूह के चारों ओर फैल गईं, झिलमिलाती हुई और उनके शरीरों पर रेंगती हुई एक वृत्त में आपस में लिपट गईं। अब यह उन्हें पूरी तरह से घेरने लगी, और फिर अचानक, चिंगारी उनके माथे के ठीक बीचोंबीच जा लगी।
सिंदबाद ने पलकें झपकाईं और खुद को कहीं और पाया। उसे पता नहीं था कि वह कहाँ है, लेकिन यह पृथ्वी जैसा नहीं लग रहा था। इस जगह पर एक अजीब सी ऊर्जा भी थी। सिंदबाद ने देखा कि वह अकेला एक सिंहासन के सामने खड़ा है। उसके चारों ओर बिखरे हुए कंकाल और ऑक्टोपस के टेंटेकल्स पड़े थे। आसमान लाल और नीले रंग का था, धुंधला और धुएँ से भरा हुआ। ऐसा लग रहा था मानो चारों ओर एक प्रलयकारी अंधकार छाया हुआ हो। मृत्यु की गंध भी थी।
सिंदबाद सिंहासन पर बैठे व्यक्ति को नहीं देख सका, उसे केवल उसकी धुंधली, झिलमिलाती हुई छाया दिखाई दी।
सिंहासन पर बैठे व्यक्ति से बात कर रहे दो एक जैसे दिखने वाले जीव थे— छोटे सींग, हरी त्वचा, लंबे जबड़े। यह किसी प्रकार का जानवर था।
उनमें से एक ने कहा, 'मेरे स्वामी, हमने लेफ्टिनेंटों की तलाश की है, लेकिन कोई भी हमारी मदद नहीं कर रहा है... ये रोने-धोने वाले मूर्ख। या तो वे हमारे उद्देश्य को झूठा समझते हैं या सोचते हैं कि यह एक मूर्खतापूर्ण प्रयास है।'
सिंहासन पर बैठे व्यक्ति की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई, लेकिन हवा में मौजूद काली ऊर्जा और अधिक सघन हो गई।
दूसरे दानव ने कहा, “और यह बात हमें और भी परेशान करती है कि तुम्हारे वफादार यहाँ रहते हैं लेकिन इस जगह को छोड़ नहीं सकते। हम फँस गए हैं। वरना हम तुम्हारा हुकुम मान लेते।”
मौन।
'आपकी क्या अपेक्षा है जो हम करें?'
अंततः, सिंहासन से एक भारी आवाज़ निकली। उसमें एक घातक तीखापन था, लेकिन साथ ही गहरे दर्द का भी एहसास हो रहा था। 'पृथ्वी पर मौजूद दलबदलुओं को

मेरे क्रोध का सामना करना पड़ेगा। लेकिन विकट समय में विकट उपाय ही आवश्यक होते हैं।'
‘आप किस बात का जिक्र कर रहे हैं, मेरे स्वामी?’ राक्षसों में से एक ने पूछा।
दूसरे ने अपनी निगाहें चौड़ी कर लीं। 'मुझे मत बताइए, मेरे स्वामी। नहीं... वह नहीं।'
‘वह?’ पहला वाला अभी भी असमंजस में था।
दूसरे ने कहा, 'सखर एक शक्तिशाली दानव है। सटीक कहें तो, एक महादानव।' लेकिन वो पागल है! वो सनकी और अप्रत्याशित है।
सिंहासन पर बैठे व्यक्ति ने कहा, 'शायद अभी हमें इसी की जरूरत है, है ना?' 'हम अब अजराइल जैसी कमजोर शक्तियों पर भरोसा नहीं कर सकते।'
‘लेकिन... लेकिन... वह परदे के बनने के बाद बना एक दानव है,’ पहले दानव ने कहा, जो दानवों और मनुष्यों के बीच की बाधा का जिक्र कर रहा था। भगवान निनुर्ता और अन्य देवताओं द्वारा बनाई गई इस बाधा ने इब्लिस और उसकी सेना को वहीं फंसा दिया था। ‘वह कमजोर और अपवित्र होगा। वह लंगड़ा और टूटा हुआ है। वह हमारे जैसा नहीं है!’
‘लेकिन वह हम सब से कहीं ज्यादा चतुर है,’ सिंहासन से आवाज आई। ‘तुम कभी नहीं जान सकते कि वह क्या सोच रहा है। उसे बता दो कि मुझे उसकी मदद की जरूरत है।’
'क्या आपको यकीन है?'
क्या आप सवाल करते हैं?
राक्षस पल भर में कांपने लगे और डगमगा उठे। 'नहीं, मेरे स्वामी।' वे गुस्से में वहां से चले गए।
‘बेटी, क्या तुम्हें नहीं लगता कि मैं सही कर रहा हूँ?’ सिंदबाद जानता था कि यह सवाल उसी के लिए है। इस समय वह सफीना था।
यह एक पुराना सपना था। सिंदबाद यह जानता था क्योंकि सखर पहले से ही आदेश का पालन कर रहा था।
सिन्बाद उसे जवाब देना नहीं चाहता था, लेकिन अनजाने में ही उसके मुंह से शब्द निकल गए। 'मेरे दिमाग से निकल जाओ।'

सिंहासन पर बैठा व्यक्ति हँस पड़ा। ‘यह संभव नहीं है। अब तुम मेरे ही अंग हो, और तुम सब कुछ देख पाओगे। लेकिन चिंता मत करो। तुम्हें और तुम्हारे दोस्तों को मेरी योजना का पता नहीं चलेगा।’
और सपने के टूटने से ठीक पहले, सिंदबाद ने एक भयानक फुसफुसाहट सुनी, 'जब तुम सखर से मिलोगे, तो तुम्हें पता चलेगा कि मैंने उसे इस काम में क्यों शामिल किया। अज़राएल ने तुम सबको कम आंका। उसके अहंकार ने उस पर हावी हो गया, जबकि सखर हमेशा अपने दुश्मनों का सम्मान और प्रशंसा करता है। वह जानता है कि वे क्या कर सकते हैं। वही मुझे मकबरे तक ले जाने का एकमात्र रास्ता है, और तुम ही मेरी मुक्ति की कुंजी हो, सिंदबाद।'
सिन्बाद ने अपनी आँखें खोलीं, उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था और साँसें तेज़ चल रही थीं। वे सभी कमरे में वापस आ गए थे और एक-दूसरे को खाली निगाहों से घूर रहे थे। अशरफिया का जादू रुक गया था। उसकी नाक से खून की एक पतली धार बह रही थी।
'कैसा रहा? क्या इससे फायदा हुआ?' उसने खून पोंछते हुए पूछा।
‘मुझे लगता है हम सबने एक पुराना सपना देखा,’ सिंदबाद ने कहा। ‘लेकिन यह देखने लायक था। लंगड़े शैतान को सखर कहते हैं, और वह एक तरह का दानव है। बहुत चालाक, जैसा कि इब्लिस भी कहता है।’
उन सभी ने कमजोर स्वर में सिर हिलाया। सिंदबाद उनकी आँखों में भय देख सकता था। उसका अपना भय भी उनकी आँखों में झलक रहा था।
उसने गहरी नींद में सो रही सफीना की ओर देखा। अशरफिया ने उसके गालों को सहलाते हुए कहा, 'उसे आराम की ज़रूरत है, मेरी जान। तुमने जो सपना देखा, वह उसके अवचेतन मन का सपना था जिसे मैंने देखा।'
‘लेकिन इब्लिस सपने के माध्यम से संवाद करने में सक्षम कैसे था?’ हुसैन ने कांपती हुई आवाज में पूछा।
इसका जवाब इदरीस ने दिया। 'मैंने इसके बारे में पढ़ा है। सपनों का आदान-प्रदान। इब्लिस और सफीना एक दूसरे के अंश हैं, इसलिए वे संवाद कर सकते हैं।'
प्रेसा ने पूछा, 'तो हम क्या करें? क्या हम इस भावना से लड़ें या नहीं?' ‘हमें ऐसा करना चाहिए,’ सिंदबाद ने उत्तर दिया। ‘हमें तुरंत नाज़िर नगर के लिए निकलना चाहिए और इस उमारा इब्न ज़ैद के बारे में पता लगाना चाहिए।’

उन सभी ने सिर हिलाकर सहमति जताई, हालांकि वे इस बारे में बहुत आश्वस्त नहीं लग रहे थे।
‘क्या हमें कुछ पैसे मिलेंगे?’ अशरफिया ने मीठी आवाज़ में पूछा। सिंदबाद ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'हम प्रतिष्ठा और आजादी हासिल करेंगे, और इसकी कोई कीमत नहीं लगाई जा सकती।'
‘ओह, मैं कर सकती हूँ। मुझे एक लाख दिरहम दे दो और मैं तैयार हूँ,’ अशरफिया ने जवाब दिया।
दरवाजे पर दस्तक हुई। हुसैन ने दरवाजा थोड़ा सा खोला।
'हाँ?'
‘हम्म।’ यह सराय मालिक की आवाज़ थी। ‘मुझे लगता है कि कुछ लोग आपसे मिलने आए हैं। वे किसी गिल्ड के लग रहे हैं और एक बिल्ली जैसी आँखों वाली महिला की तलाश कर रहे हैं, जिसे इस इलाके में देखा गया था। मैंने उनसे कहा, “अरे, मेरे पास यहीं एक बिल्ली जैसी आँखों वाली महिला है,” तो… उम्म… हाँ।’ सिंदबाद ने सबकी ओर घूरकर देखा और गले में अटकी हुई बात को निगल लिया। 'अरे वाह! फिर वही सब शुरू हो गया।'

आठ
हुसैन ने दरवाजा जोर से बंद कर दिया।
‘तुमने अभी ऐसा क्यों किया?’ सिंदबाद ने उलझन में पूछा।
‘क्योंकि गिल्ड को शक हो जाएगा कि वह यहाँ है!’ उसने घबराकर सफीना की ओर इशारा किया।
‘लेकिन सराय मालिक ने तो उन्हें बता ही दिया है! उन्हें तो पक्का पता चल ही गया होगा।’ सिंदबाद ने मन ही मन बड़बड़ाया। ‘तूफान और कौवों की कृपा से, मुझे नहीं पता कि मैं क्या करूं।’
‘मैं उनके सिर आपस में टकरा दूंगा, कैप्टन।’ मार्कस ने अपना हथौड़ा उठाया। ‘नहीं, नहीं, हम इसे शब्दों से सुलझा सकते हैं,’ सिंदबाद ने कहा। ‘केवल शब्दों से।’ वह इदरीस की ओर मुड़ा। ‘मेरी प्यारी जादूगरनी, क्या तुम मेरे लिए कुछ कर सकती हो?’
‘हां,’ इदरीस ने सिर हिलाते हुए कहा। ‘असल में नहीं। मेरा मतलब है, मुझे इस बात की चिंता है कि आप क्या पूछेंगे, इसलिए नहीं।’
सिन्बाद ने सिर हिलाया। 'लगता है मुझ पर किसी को भरोसा नहीं है!' वह अशरफिया की ओर मुड़ा, 'मैंने पिछले कुछ महीनों में देखा है कि तुम अपने टेलीपोर्टेशन मंत्र को निखार रही हो। क्या तुम नाज़िर के लिए एक पोर्टल खोल सकती हो?'
'मुझे बहुत खुशी होगी, प्रिये। दबाव में कुछ मंत्रों का अभ्यास करना हमेशा अच्छा लगता है।' उसने अपनी आँखें घुमाईं।
‘तो मैं और दबाव डालूंगा।’ मार्कस हथौड़ा लेकर आगे बढ़ा।
‘हूँ! ये तो मज़ाक था, बड़े आदमी!’ प्रेसा ने इस सब के बीच चिल्लाकर कहा। ‘ये हद से ज़्यादा हो रहा है। बस ये पोर्टल खोल दो और बात खत्म करो, वैम्पायर लड़की।’
अशरफिया ने कंधे उचकाए और अपनी आंखें बंद कर लीं, जादू करने के लिए तैयार।

‘इस बीच,’ सिंदबाद ने कहा, ‘मैं नीचे जाकर स्थिति को शांत करता हूँ और हमें भागने के लिए कुछ समय देता हूँ।’
उसने सीढ़ियों के दरवाजे खोले लेकिन उसे सराय का मालिक नज़र नहीं आया। जब वह नीचे वाली मंजिल पर उतरा, तब उसने सराय के मालिक को दीवार के सहारे झुका हुआ देखा।
‘तुम काफिरों ने बहुत उत्पात और विद्रोह मचाया है, और अब एक आतंकवादी को पनाह दे रहे हो? तुम हमारे देश को बदनाम कर रहे हो।’ यह एक जानी-पहचानी आवाज थी।
अब दो आदमी सिंदबाद के पास आए, उनकी कमर में तलवारें लटक रही थीं, और वे उसे देखकर मजे ले रहे थे। सिंदबाद को अतीत के एक सेइड की याद आ गई।
‘ज़ाहिर, तुम्हें देखकर अच्छा लगा।’
चार साल बीतने के बावजूद ज़ाहिर के बिखरे बाल, तूफ़ानी भूरी आँखें, उसका हमेशा बना रहने वाला गुस्सा और हमेशा फूलती नाक में कोई बदलाव नहीं आया था। लेकिन एक चीज़ जो हमेशा सबसे अलग दिखती थी, वह थी उसके दाहिने गाल पर मौजूद बड़ा सा तिल।
'तिल पर बाल उग आए हैं - मेरा मतलब तिल से है,' सिंदबाद ने व्यंग्यपूर्वक, बिना किसी भावना के कहा।
जब सिंदबाद मास्टर रीस से शिक्षा प्राप्त करता था, तब ज़ाहिर एक उपद्रवी और दबंग लड़का था। उसे अक्सर धक्का-मुक्की की जाती थी और उससे छोटे-मोटे काम करवाए जाते थे। इसी वजह से सिंदबाद को बचपन से ही ज़ाहिर नापसंद था। ‘तुम्हें यहाँ देखकर मुझे आश्चर्य नहीं हुआ, काफ़िर। तुम हमारे संघ के मूल सिद्धांतों के विरुद्ध जा रहे हो। क्या यह सब उसके लिए? तुम उस बिल्ली जैसी आँखों वाली औरत को यहाँ छिपा रहे हो, है ना? पिछली बार की तरह। तुमने तो उसके लिए अपने गुरु की भी हत्या कर दी थी।’
'हां, काफी समय हो गया है। लेकिन आप गलत हैं... अब हम उतने करीब नहीं हैं।' ‘सिनबाद, तुम यहाँ किसी की मदद नहीं कर रहे हो। वह गिल्ड के साथ रहने के लायक है।’
‘ठीक है। ताकि तुम्हारे लोग उसे हथियार के रूप में इस्तेमाल कर सकें?’ ‘साझा शत्रु के विरुद्ध।’
मुझे खेद है, लेकिन वह कोई वस्तु नहीं है। वह एक इंसान है।

ज़ाहिर ने अपना सिर हिलाया और तलवार लेकर आगे बढ़ा। लेकिन सिंदबाद ने पहले ही भांप लिया और सैद के पेट में ज़ोरदार लात मारकर उसे एक तरफ धकेल दिया। वह लड़खड़ाते हुए सीढ़ियों से ऊपर भागा, सफ़ीना के कमरे में वापस गया, दरवाज़ा ज़ोर से बंद किया और उस पर झुक गया। कमरे में चमकीले नीले और बैंगनी रंग की चिंगारियों का एक बादल मंडरा रहा था, जो रुक-रुक कर चटक रही थीं। उसे याद आया कि अशरफ़िया ने उसे एक बार बताया था कि यह सब लोहे और गंधक से बना है, जो मौलिक ऊर्जा के साथ मिश्रित है।
वहाँ अशरफ़िया के सिवा कोई नहीं बचा था। वह एक द्वार को पकड़े खड़ी थी, जिसे अब सिंदबाद का इंतज़ार करते हुए देखा जा सकता था। वह एक गोलाकार, धुंध से भरा छेद था, जिसमें से गहरे बैंगनी, नीले और हरे रंग के बादल चटक रहे थे और चमक रहे थे।
‘जल्दी करो! मैं अब और नहीं रोक सकती।’ अशरफिया के माथे पर पसीने की बूँदें आ रही थीं, उसकी उंगलियाँ चमक रही थीं और चटक रही थीं। ‘अब पोर्टल विस्थापन की स्थिति आ रही है,’ वह चीखी।
‘इसका क्या मतलब है?’ सिंदबाद चिल्लाया, और उसने अपनी पीठ दरवाजे से सटा ली, जिसे सेइड्स लात मार रहे थे और धक्का दे रहे थे।
'क्या तुम वाकई अभी यह जानना चाहते हो, पागल कहीं के?' उसने अविश्वास भरी निगाहों से उसकी ओर देखा।
‘इससे मेरा ध्यान बँट सकता है! फिलहाल मेरे पास कोई उपाय नहीं सूझ रहा।’ सिंदबाद ने मुस्कुराने की कोशिश की और उस दरवाजे की ओर इशारा किया जिसे वह अपने पूरे शरीर के वजन से धकेल रहा था।
‘तुम पागल हो। तुम्हें पता है ना? खैर, अगर इससे महाराज को प्रसन्नता हो तो ठीक है। इस दुनिया का हर स्थान एक पोर्टल से जुड़ा हुआ है। एक महान जादूगरनी होने के नाते, मैं पहले से मौजूद पोर्टलों तक पहुँच सकती हूँ, जो वैसे तो केवल सम्योजन के बाद ही दिखाई देते हैं। लेकिन कभी-कभी, अगर जादूगरनी पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित न हो, मेरी तरह नहीं, तो पोर्टल आपस में टकराने लगते हैं और इसी से विस्थापन होता है। जिसका मतलब, तुम्हारे जैसे मूर्ख के लिए, कई क्षेत्रों में तेजी से कई पोर्टल खुलना है, और उन्हें नियंत्रित करना मुश्किल है!’
तभी तलवार की नोक लकड़ी के दरवाजे से निकलकर सिंदबाद के पैरों के ठीक बीचोंबीच आ गिरी।

सेइड परिवार दरवाजा तोड़ने के करीब ही था।
‘भागो! अभी!’
‘तुम्हारा क्या ख्याल है?’ सिंदबाद ने अशरफिया से पूछा।
मैं तुम्हारे पीछे आऊंगा। क्या तुम आज मुझसे सब कुछ पूछने की योजना बना रहे हो, बेवकूफ, या तुम यहाँ से चले जाओगे?
‘ओह, मेरे मुंहासे फोड़ दो, हाँ!’ सिंदबाद दहाड़ते हुए द्वार की ओर दौड़ा। लेकिन ज़ाहिर और उसका साथी अचानक दरवाज़ा तोड़कर अंदर आ गए, जिससे वह अचंभित रह गया।
‘वह कहाँ है?’ ज़ाहिर ने द्वार को हैरानी से देखा। ‘अरे, जवाब देने की ज़रूरत नहीं है।’ वह उसकी ओर बढ़ने लगा।
आह! अशरफियाह अब और बर्दाश्त नहीं कर सकी। पोर्टल फट गया, और देखते ही देखते उनके चारों ओर एक साथ कई पोर्टल खुलने लगे। सिंदबाद और दोनों आदमी सदमे से कांप उठे।
‘जब तक मैं इन्हें बंद करता हूँ, तुम इनका ध्यान भटकाओ,’ अशरफिया ने सिंदबाद से चिल्लाकर कहा।
‘क्या हम यहाँ से जा नहीं सकते? शायद इनमें से किसी एक में कूद जाएँ?’
'अगर हम चले गए, तो मूर्ख, समय और स्थान का पूरा ताना-बाना खुद ही नष्ट हो जाएगा।'
‘और यह इससे भी बदतर होगा?’ सिंदबाद हँसते हुए दूसरे सेइड पर झपटा, उसे लगभग बेहोश कर दिया, तभी ज़ाहिर ने अपने भारी कंधों से उसे धक्का दिया। सिन्बाद ने ज़ाहिर के कॉलर पर झपट्टा मारा और उसे पकड़कर खींच लिया, जिससे वह उसके बगल में ही खुले एक पोर्टल के अंदर चला गया।
उन्होंने खुद को एक तूफानी रेगिस्तान के बीच पाया, और पोर्टल उनके सामने लटका हुआ था।
‘आखिर ये क्या हो गया?’ ज़ाहिर चीखा और मुँह से रेत थूकते हुए बोला। ‘मुझे उस पर हमला करने दो, तुम बदतमीज़—’
सिंदबाद ने अपनी तलवार निकाली। 'क्यों न हम लड़ें?'
ज़ाहिर ने भी ऐसा ही किया। 'खुशी से।'
उन्होंने आपस में भिड़ंत शुरू कर दी। उनके प्रशिक्षण के इतिहास को देखते हुए, उनकी चालें अनुमानित थीं, और चोट लगने पर उनमें से प्रत्येक दर्द से कराह उठा।

अंत में, ज़ाहिर ने अपनी तलवार को इस तरह ताना कि उस पर से रेगिस्तान की तेज़ धूप की किरणें परावर्तित हों। प्रकाश की तेज़ किरण सिंदबाद के चेहरे पर पड़ी, जिससे वह एक पल के लिए अंधा हो गया। ज़ाहिर ने सिंदबाद पर हमला किया, जिसने अंधाधुंध ही उसे पीछे धकेल दिया। दोनों अब पोर्टल से होते हुए वापस मोटल पहुँच गए, जहाँ अशरफ़िया अभी भी द्वार बंद करने में व्यस्त थी। ज़ाहिर ने तुरंत अपनी तलवार सिंदबाद के गले पर रख दी, लेकिन सिंदबाद मुड़ गया और तलवार लकड़ी की दीवार के आर-पार चली गई।
'तुम मुझसे भाग नहीं सकते,' ज़ाहिर गुस्से से बोला। 'मैं हमेशा से तुमसे बेहतर सेइड रहा हूँ, तुम रोने वाले बच्चे।'
सिन्बाद ने अपने होंठ सिकोड़ लिए, उसे याद आया कि कैसे गिल्ड उसे लगातार कोसता रहता था। वह हमेशा इससे कहीं बढ़कर कुछ बनना चाहता था, महान बनना चाहता था। शायद माता-पिता के चले जाने के बाद उसे परित्याग का डर सता रहा था, उसने सोचा। 'शायद...' सिन्बाद ने देखा कि अब सिर्फ एक ही पोर्टल बंद करना बाकी था। 'लेकिन तुम मुझसे ज्यादा समझदार नहीं हो।'
उसने ज़ाहिर के पेट में लात मारी और आखिरी द्वार की ओर छलांग लगाई, ठीक उसी समय अशरफिया ने उसे बंद कर दिया।
वे खुद को रेत के टीलों के बीच पाए, ठीक उसी जगह की तरह जहाँ वह और ज़ाहिर उतरे थे। लेकिन वहाँ गहरी घाटियाँ थीं और कोई भयंकर रेगिस्तानी तूफान नहीं था।
सिन्बाद की निगाह सबसे पहले प्रेसा पर पड़ी। समूह के अधिकांश लोग उस घाटी की ओर देख रहे थे जहाँ उमारा रही होगी।
उन्होंने पूछा, 'वे क्या कर रहे हैं?'
'हमारा एक समस्या है।'
सिन्बाद और अशरफिया ने एक-दूसरे की ओर देखा।
हमने खलीफा के नक्शे पर निर्देशांकों का पता लगाया। लेकिन ऐसा लगता है कि उमारा लापता है, और उसके छिपने की जगह को तहस-नहस कर दिया गया है।

नौ
सिंदबाद को उल्टी आ गई।
उसकी मुट्ठी बंद होने के बावजूद रेत उसके हाथों से फिसल रही थी और उसकी दृष्टि धुंधली हो गई थी।
हुसैन ने हंसते हुए पूछा, 'टेलीपोर्टेशन पर उसने इतनी देर से प्रतिक्रिया क्यों दी?' 'अंदर आते ही मुझे दो बार उल्टी आ गई।'
'हां, हां, हम यही तो सुनना चाहते हैं, लड़के—तुमने कितनी बार उल्टी की है,' प्रेसा ने आंखें घुमाते हुए कहा।
‘मुझे यह जानना अच्छा लगेगा,’ मार्कस ने बीच में कहा। ‘इससे मुझे कम घिन आएगी।’
‘क्या यह उस भावना के बिल्कुल विपरीत नहीं है जो आपको महसूस करनी चाहिए?’ अशरफिया ने मासूमियत से पूछा।
‘मेरे दोस्तों!’ सिंदबाद चिल्लाया। ‘तुम लोग उल्टी करने की बात कर रहे हो तो मुझे और भी ज्यादा उल्टी करने का मन कर रहा है, इसलिए कृपया चुप रहो।’ ‘हमेशा की तरह बदतमीज़।’ प्रेसा गुस्से में पैर पटकते हुए उस गुफा की ओर चली गई जहाँ सफीना जाग उठी थी और मलबे में खोजबीन कर रही थी।
इदरीस सिंदबाद के बगल में घुटनों के बल बैठ गया और उसकी पीठ थपथपाते हुए बोला, 'कैसा महसूस कर रहे हो?'
‘देखते हैं... इस बार हम पर एक बड़ा खतरा मंडरा रहा है। दुनिया के अंत से भी बदतर,’ सिंदबाद हँसते हुए बोला। ‘लेकिन गंभीरता से कहूँ तो, मैं बस यह जानना चाहता था कि क्या आपको इस बात से कोई आपत्ति नहीं है कि हम अमीर की मदद नहीं कर सके।’
इदरीस ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'उह, मैं नहीं। आपने जो कहा उससे लगता है कि अमीर बहुत दर्द में है, और मैं खुद को असहाय महसूस कर रही हूँ, सिंदबाद। मुझे नहीं पता कि क्या करूँ। लेकिन जेल की दीवारें अभेद्य हैं, और हम

फिलहाल भगोड़े हैं। हम अभी कुछ नहीं कर सकते। आपने खलीफा से कहा था कि आप हमारी मदद के बदले अमीर को रिहा करवाना चाहते हैं और इसके लिए मैं वास्तव में आपकी आभारी हूँ।'
सिन्बाद ने आह भरी। 'मुझे लगा था कि अमीर के बारे में सुनने के बाद आप शहर में ही रुकना चाहेंगे।'
इदरीस ने कंधे उचकाते हुए खड़े होकर सिन्बाद को अपना हाथ बढ़ाया। 'मैं इंतज़ार करने वालों में से नहीं हूँ, लेकिन मैं करूँगी। हम उसे हर हाल में बाहर निकालेंगे।'
उसने उसका हाथ पकड़ लिया। ‘मैंने खलीफा से यह भी कहा है कि अगर अमीर को जेल से नहीं निकाला जा सकता, तो हमारे लौटने तक उसे एकांत कारावास में रखा जाए। इस तरह वह सुरक्षित रहेगा। लेकिन, उसकी अचेत अवस्था को देखते हुए, मैं सोच रहा हूँ कि उसे कैसे बाहर निकाला जाए... अगर खलीफा ऐसा नहीं कर सकता। इस समय गिल्ड बहुत शक्तिशाली है।’
इदरीस ने अपने होंठ सिकोड़ लिए। "मुझे लगता है कि हम जादू का इस्तेमाल नहीं कर सकते," इदरीस ने उदास होकर कहा। "हम विज्ञान का भी इस्तेमाल नहीं कर सकते। इसलिए हम जो सबसे अच्छा कर सकते हैं, वह है प्रेम की सहायता से उसे पुकारना।"
‘प्यार?’ वह अनजाने में ही मुस्कुरा दिया।
मुझे पता है, मुझे पता है। यह घिसा-पिटा है।
लेकिन मीठा।
‘तुम्हारी प्रेमिका कैसी है?’ इदरीस ने पूछा।
वह मेरी बात पर ध्यान नहीं देता।
शायद उसे किसी से बात करने की जरूरत है।
‘लेकिन फिर वो सीधे-सीधे ऐसा क्यों नहीं कह देती? ये तो बहुत आसान है,’ सिंदबाद ने चिढ़ते हुए कहा।
‘महिलाएं सब कुछ बोलती नहीं हैं। वे अपने कार्यों से दिखाती हैं। यह बात मैं भी जानता हूं और मैं इतना सभ्य नहीं हूं,’ यह कहकर इदरीस वहां से चले गए।
सिंदबाद ने अपनी तलवार पर फिर से तख़्ता कसी और अपने कुर्ते के किनारे से उसे पोंछा। अब वह दुविधा में था—क्या वह सफ़ीना के पास जाकर बातचीत शुरू करे या शीत युद्ध को जारी रहने दे।

वह अपने सामने वाली गुफा की ओर चला। उसने मन ही मन खलीफा और अपने पिशाच मित्र को धन्यवाद दिया। नक्शे पर दिए गए निर्देशांकों के कारण पोर्टल सही जगह पर खुला था, अन्यथा किसी अज्ञात स्थान पर सटीक टेलीपोर्टेशन लगभग असंभव था। अशरफिया ने एक बार समझाया था, 'पोर्टल खोलने वाले को उस स्थान का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए, जैसे सटीक निर्देशांक, या उस स्थान की स्पष्ट छवि उसके मन में होनी चाहिए, तभी वह टेलीपोर्ट हो सकता है।'
अब सिंदबाद छोटी, नीची छत वाली गुफा में चला गया। वह गुफा एक आधे टूटे हुए दीपक की हल्की रोशनी से जगमगा रही थी। लेकिन उगता हुआ सूरज धीरे-धीरे उस जगह को प्रकाश से भर रहा था।
मार्कस और अशरफिया बाहर खड़े थे, जबकि इदरीस, प्रेसा, हुसैन, सफीना और सिन्बाद अंदर थे। अंदर पहले से ही काफी भीड़ हो रही थी।
उनके चारों ओर किताबें, चित्र, लेख और रिपोर्टें बिखरी पड़ी थीं। सिंदबाद की नज़र एक तगड़े आदमी के चित्र पर पड़ी। इसका शीर्षक था 'धुल-अल-क़रनायन'। ‘वह कौन हो सकता है?’ हुसैन ने पूछा।
‘वह जिसके दो सींग हैं,’ इदरीस ने कहा। ‘हमने एक विदेशी योद्धा के बारे में मिथक पढ़े हैं जिसने माजूज देश के दुष्ट याजूज के खिलाफ काकेशस में महान दीवार का निर्माण किया था। कहा जाता है कि वह कोई और नहीं बल्कि सिकंदर महान था।’
कुछ नोट्स देख रही सफीना ने कहा, 'उमारा स्कैंडिनेविया की भूमि की खोज कर रही थी, और कुछ अन्य भूमि का भी उल्लेख है लेकिन उन्हें काट दिया गया है... यह सखर हमसे पहले यहाँ पहुँच गया है। मुझे उसके बारे में बुरा आभास हो रहा है... हमें इब्लिस को जल्द से जल्द रोकना होगा।'
सिन्बाद को यह आभास हो गया था कि यह मामला अमीर को बचाने से ज्यादा इब्लिस को बचाने का है।
‘राशिदुन खिलाफत, अलेक्जेंड्रिया और इसके बारे में जानकारी है... इसके बारे में... फिलिप तृतीय। वह कौन है?’ सफीना ने पूछा।
‘हाँ, मुझे इसके बारे में पता है,’ हुसैन ने बीच में ही कहा। ‘सिंबाद से मिलने से बहुत पहले बसरा में मेरा एक दोस्त था, जो एक लेखापाल था और मुझे सिकंदर महान के उत्तराधिकारी और सौतेले भाई के बारे में बताता था। वह एक तरह का विक्षिप्त व्यक्ति था, एक सनकी।’

सिन्बाद ने एक टूटे हुए तारे की तस्वीर उठाई, जिसके चारों ओर उत्कीर्ण निर्देशांक प्रतीत हो रहे थे। 'यह क्या है? कोई चमत्कारी पत्थर?' हुस्यान ने कहा, 'इस चित्र में पत्थर विभाजित दिखाई देता है... मानो वह टूटा हुआ हो।'
इदरीस ने सिर हिलाया। 'जो भी हो, हमें यह जानना ज़रूरी है कि उमारा कहाँ है, इससे पहले कि लंगड़ा शैतान उसे मार डाले।'
हुसैन ने आंखें घुमाते हुए कहा, 'उसे उस नाम से मत बुलाओ। मुझे वह नाम बेहद मूर्खतापूर्ण लगता है।'
सिन्बाद ने अपनी हंसी दबाई और प्रेसा को इशारा किया, 'क्या तुम भविष्यवक्ता से मिलने के लिए तैयार हो?'
‘उफ़, ठीक है। लेकिन मुझे एक निजी सामान चाहिए,’ उसने चीनी भाषा में लंबा भाषण देने से पहले कहा। सिंदबाद भविष्यवक्ता के शांत होने का इंतज़ार करता रहा। वह जानता था कि प्रेसा भविष्य देख सकती है, लेकिन केवल पहेलियों के रूप में। लेकिन हाल ही में, जैसे-जैसे उसकी क्षमताएं बढ़ी थीं, उसने अपनी शक्तियों पर अधिक नियंत्रण प्राप्त कर लिया था और इसलिए, वह चुनिंदा भविष्य भी देख सकती थी।
“मुझे एक लॉकेट मिला है जो शायद उन्हीं का है,” सफीना ने कहा। उसने लॉकेट उठाया और खोला, जिसमें एक युवती की तस्वीर थी। “लगता है ये उनकी बेटी है,” कहते हुए उसका गला भर आया।
‘या फिर उनकी पत्नी।’ हुसैन ने तस्वीर देखने के लिए उनके कंधे के ऊपर से झाँका। ‘जैसा कि आप जानते हैं, हम अजीब समय में जी रहे हैं।’
सफीना ने इसे प्रेसा को सौंप दिया, जिसने अपनी आंखें बंद कर लीं और पूरी एकाग्रता से काम करने लगी।
सिन्बाद ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'क्या हम इसे सामूहिक रूप से कर सकते हैं?'
प्रेसा ने गुस्से में उसे कुछ अपशब्द कहे, लेकिन उसने अपनी हथेलियाँ आगे बढ़ा दीं, जिन्हें मार्कस और अशरफिया को छोड़कर सभी ने थाम लिया, क्योंकि वे गुफा की रखवाली कर रहे थे।
सिंदबाद ने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं, लेकिन उसने अपने आस-पास के दृश्य को बदलते हुए देखा। यह शायद भविष्य का दृश्य था, जहाँ खूबसूरत ताड़ के पेड़ों से घिरे एक नखलिस्तान पर सूरज डूब चुका था। वहाँ एक बूढ़ा आदमी

घुटनों के बल बैठा था, जिसकी दाढ़ी सफ़ेद थी और चेहरा ज़ख्मों से भरा था, और वह रो रहा था। एक खंजर उसकी गाल के पास तनी हुई थी।
‘मुझे इससे ज्यादा कुछ नहीं पता। मैंने आपको सब कुछ बता दिया है। मैं-मैं- मैं... कृपया मुझे चोट मत पहुँचाओ,’ वह रोते हुए बोला।
काले लबादे ओढ़े गंजे आदमी, जिनके चेहरे पीले और बाल रहित थे, उसे घूर रहे थे। बीच में एक लबादा ओढ़े हुए व्यक्ति था, जिसके लबादे के किनारों से उसके बाल जैसे कुछ गुच्छे निकले हुए थे।
‘तुम जानना चाहते थे कि वंडरस्टोन कहाँ हैं और मैंने... मैंने तुम्हें बता दिया।’
लेकिन आपको कितना यकीन है?
मैंने वहां यात्रा नहीं की है, लेकिन मेरे द्वारा भेजे गए दूतों ने वादा किया है कि उन्होंने पत्थर देखे हैं और मैं उन पर विश्वास करता हूं। ‘हम्म, सुनी-सुनाई बातें,’ महिला की आवाज़ आई। ‘तो फिर बताओ, क्या मुझे तुम्हें एडमिरल के पास ले जाना पड़ेगा?’
'जी हां। एडमिरल को मेरी मदद की बहुत जरूरत है।'
क्या तुम सिर्फ जीवित रहने के लिए ऐसा कह रहे हो?
‘नहीं-नहीं। मुझे सचमुच ऐसा विश्वास है।’
लेकिन, आप देखिए, मैं ऐसा नहीं करता।’ नकाबपोश आकृति ने उस आदमी का गला काट दिया, जिससे वह खून बहने से मर गया।
सिन्बाद अचानक वर्तमान में लौट आया। समूह ने गहरी सांस ली और एक-दूसरे की ओर देखा। प्रेसा की नाक से खून बहने लगा था, जैसा कि ऐसी घटना के बाद हमेशा होता था।
‘मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं बेहोश हो जाऊंगी,’ उसने धीरे से कहा।
‘वह उमारा को जान से मारने ही वाला है,’ सफीना फूट पड़ी। ‘मैं इस तरह की और मौतें नहीं देख सकती।’
‘यह पुरुष नहीं है।’ सिंदबाद ने सिर हिलाया। ‘यह स्त्री है। यह लाल बालों वाली महिला है।’
‘कौन?’ इदरीस ने पूछा।
‘वह जिसने भाई केन की हत्या की।’

दस
'मुझे लगता है कि हमें इस बारे में बात करनी चाहिए,' सिंदबाद ने सफीना से कहा जब वे ताड़ के पेड़ों के पीछे दुबके हुए थे।
सिन्बाद और उसकी टीम ने पास के एक फार्म से खच्चर खरीद लिए थे और नखलिस्तान का पता लगा लिया था। सौभाग्य से, प्रेसा के माध्यम से उन्होंने जो दृश्य देखा था, वह अभी तक घटित नहीं हुआ था। सिन्बाद ने उमारा को मारने से पहले ही लाल बालों वाली महिला पर घात लगाने की योजना बना ली थी। सिन्बाद और सफीना पेड़ों के पीछे छिप जाएंगे, जबकि बाकी लोग कुछ मील दूर अपने खच्चरों पर बैठकर दूरबीन से देखते रहेंगे।
सफीना ने अपनी निगाहें उस पर टिका दीं। 'क्या बात कर रहे हो?'
‘तुम्हें पता है, वो बातचीत।’
उसने आह भरी। 'मुझे सच में नहीं पता।'
‘तुम्हारे साथ क्या चल रहा है? तुम कुछ अलग-थलग से लग रहे हो और हम मुश्किल से ही बात करते हैं।’
‘इस बारे में कुछ कहने को नहीं है। मैं बस उन दिनों को याद नहीं करना चाहती जब मैं इब्लिस के वश में थी, ठीक है?’
सिन्बाद चुप था। उसे उसकी आवाज़ में संयम महसूस हो रहा था। 'मुझे लगा कि आपसे आपका हालचाल पूछना ही सही रहेगा।'
‘इसके लिए धन्यवाद, लेकिन मैं ठीक हूँ,’ उसने सहज भाव से जवाब दिया। ‘मुझे बस थोड़ा आराम चाहिए। इतने सालों तक इब्लिस की सेवा करने के बाद, मैं अपनी भावनाओं को यूँ ही बंद नहीं कर सकती। तुम मुझसे यह उम्मीद नहीं कर सकते, सिंदबाद। मैंने भयानक काम किए हैं, घिनौने काम किए हैं, और मुझे लगता है... मुझे नहीं पता...’
‘आप खुलकर बोल सकते हैं। मेरा मतलब है, मुझे पता है कि आप नहीं चाहते कि हम फिर से प्रेमी बनें, लेकिन हम दोस्त तो बन ही सकते हैं।’

‘हम कभी प्रेमी नहीं थे। हे भगवान, सिंदबाद, हम तो बच्चे थे।’
'खैर, यह भावना एकतरफा नहीं है। मुझे लगता है कि काफी हद तक प्यार था।' ‘हम एक दूसरे का सम्मान करते थे और एक दूसरे की परवाह करते थे, लेकिन यह प्यार नहीं है।’
‘और तुम्हें कैसे पता कि प्यार क्या होता है?’ उसने गुस्से से कहा। उसने फिर आह भरी। 'क्योंकि मैं एक बार प्यार में पड़ी थी...।'
सिंदबाद का दिल बैठ गया। 'तुम्हारा मतलब क्या है कि तुम थे? मुझे लगा कि मैं तुम्हारे जीवन का प्यार था।'
‘यह आत्ममुग्धता है।’
‘यह सच है,’ उसने गुस्से से कहा। ‘कौन था? क्या तुम अपने बुरे कामों में व्यस्त नहीं थे? रोमांस के लिए तुम्हें समय कब मिला?’
'इब्लिस के प्रभाव में रहते हुए मेरी मुलाकात बहुत अच्छे लोगों से हुई। और संयोग से मेरी मुलाकात एक मछुआरे से भी हुई।'
‘एक मछुआरा?’
उसने बचाव करते हुए कहा, 'वह एक अच्छा आदमी था। लेकिन हम अलग हो गए।'
‘उसके साथ क्या हुआ?’
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मैं तुम्हारे साथ उसके बारे में बात नहीं करना चाहती।'
‘सात तूफानों और सात नरकों की कसम,’ सिंदबाद ने मन ही मन बड़बड़ाया। ‘और मैं यहाँ सारी महिलाओं से दूर रह रहा था।’
'सच में?'
'ओह, हाँ। मैं बसरा की सभी महिलाओं को रिझा सकता था, लेकिन मैंने वफादार रहना चुना।'
मैंने आपसे ऐसा करने के लिए कभी नहीं कहा।
‘मुझे इस पर विश्वास नहीं हो रहा।’ सिंदबाद ने आंखें घुमाईं। ‘ठीक है। मैं अब आपको परेशान नहीं करूंगा।’
‘बच्चे जैसा व्यवहार मत करो।’
लेकिन मैं उनमें से एक हूँ!
जब वे जोर-जोर से झगड़ रहे थे, तब सिंदबाद को घोड़ों के खुरों की आवाज सुनाई नहीं दी। अचानक उन्हें पानी और पेड़ों के पार से किसी की आवाज सुनाई दी, एक महिला पुकार रही थी, 'क्या वहाँ कोई है?'

सिंदबाद और सफीना असमंजस में पड़कर रुक गए।
‘अगर हम पकड़े जाते तो क्या योजना थी?’ सफीना ने फुसफुसाते हुए पूछा।
सिन्बाद ने पेड़ के पीछे से झाँककर प्रेसा के सपने में दिखाई देने वाले दृश्य को देखा—एक बूढ़ा व्यक्ति घुटनों के बल बैठा था और काले वस्त्र पहने योद्धाओं का एक समूह था। वे नेफिलिम थे, पतित स्वर्गदूतों की संतानें।
‘हमें उनकी आवाज क्यों नहीं सुनाई दी?’
‘क्योंकि हम बहस कर रहे थे!’ सिंदबाद ने गुस्से में कहा।
‘तो फिर योजना क्या है? अगर हम पकड़े भी गए तो यह कोई खास घात लगाकर हमला करने जैसा नहीं होगा।’
‘मेरे पास एक योजना है,’ सिंदबाद ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘उन्हें बता दो कि हम यहाँ हैं।’
‘यह कोई योजना नहीं है। यह तो आत्महत्या है।’
'नहीं, ऐसा नहीं है। याद है मैंने तुमसे कहा था कि तुम्हें अपनी शक्तियों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए क्योंकि तुम्हें नहीं पता कि तुम कितने लोगों को नुकसान पहुंचा सकते हो?'
'हाँ।'
खैर, इसे भूल जाइए। अब इनका इस्तेमाल कीजिए।
लाल बालों वाली महिला की आवाज फिर से गूंजी, 'बाहर आओ, बाहर आओ, तुम जहां भी हो!'
‘मैं हूँ!’ सिंदबाद चिल्लाया और पेड़ के पीछे से हाथ ऊपर उठाते हुए बाहर निकला। उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि उसके लबादे के पीछे एक मुस्कान छिपी हुई है।
‘अरे, तुम हो! स्वागत है, स्वागत है। मुझे पहले से ही अंदाजा था कि तुम बहुत मुसीबत खड़ी करोगी। और तुम भी!’ महिला ने सफीना को देखते ही कहा, जो उनके छिपने की जगह से बाहर निकली थी। ‘मुझे तुम्हें देखते ही मार डालने का आदेश दिया गया था।’
सिन्बाद ने नाक सिकोड़ी। 'इतनी जल्दी नहीं। हमारे पास बैकअप है।'
वह अपने दल के आने का इंतज़ार करता रहा, लेकिन कोई नहीं आया। चारों ओर सन्नाटा छा गया। एक गिद्ध उनके ऊपर से गुज़रा। लाल बालों वाली महिला ने उन्हें हैरानी से देखा। एक अजीब सी खामोशी छा गई।

‘उम, क्या कोई आने वाला है?’ उसने पूछा।
'किसी को तो आना ही था,' उसने आंखें घुमाते हुए बुदबुदाया।
‘कोई बात नहीं। जब तक हम इंतज़ार करते हैं, मैं तुम दोनों को मार डालूँगी।’ वह औरत पानी में कूद पड़ी। ‘बूढ़े आदमी को यहाँ से निकालकर जहाज़ में ले जाओ,’ उसने नेफिलिमों पर चिल्लाते हुए कहा।
सिन्बाद जानता था कि इंतज़ार करने का कोई मतलब नहीं है, इसलिए उसने सफ़ीना से फुसफुसाकर कहा कि वह नेफ़िलिम को पकड़ ले। उसने सिर हिलाया और नखलिस्तान के चारों ओर दौड़कर नेफ़िलिम की ओर बढ़ी। फिर, अपनी सारी शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए, उसने अपने चारों ओर की रेत को हवा में उठाकर नुकीले कांटे बना दिए, जो नकाबपोश आकृतियों की ओर उड़ने लगे। वे कांटों को रोकने की कोशिश करते हुए भागने लगे, क्योंकि हर कदम पर नए कांटे बन रहे थे।
‘मुझे तुम्हें भी तब मार देना चाहिए था जब मैंने उस बेवकूफ पिशाच को मारा था,’ लाल बालों वाली महिला ने पानी में खुद को घसीटते हुए कहा, उसके हाथ में तलवार थी। सिंदबाद भी पानी में उतर गया, उसकी पैंट भीग गई। ‘लेकिन एडमिरल तुम्हें मरा हुआ नहीं देखना चाहते। कितनी बेवकूफी है!’
‘सखर? लंगड़ा शैतान? तुम उसे एडमिरल कहते हो?’ वह हँस पड़ा। ‘दिन-ब-दिन उसके नाम और भी हास्यास्पद होते जा रहे हैं।’
उस महिला ने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि उसने अपनी तलवार सिंदबाद पर चलाई, जिसे सिंदबाद ने मुस्कुराते हुए रोक दिया।
‘आप अपने दुश्मन को जानते हैं। हैरानी की बात यह है कि वह भी आपको जानता है।’
‘मुझे बताइए, मेरी महिला, वह मुझे मरा हुआ क्यों नहीं देखना चाहता?’
उनका कहना है कि बिना बाधाओं के कोई भी मिशन व्यर्थ है, और वे आपको एक योग्य प्रतिद्वंद्वी मानते हैं।
सिंदबाद हँस पड़ा। 'अरे, बस करो तुम।'
उनकी तलवारें आपस में टकराईं।
‘तुम मुझसे जीत नहीं सकते, लड़के। मैं तेज़ हूँ।’ वह साँप की तरह फुर्ती से घूमी, उसके पीछे मुड़ी और अपनी तलवार आगे बढ़ा दी। सिंदबाद को लगा जैसे उसका कुर्ता फट गया हो। ‘मैं ज़्यादा ताकतवर हूँ।’ एक मुक्का तेज़ हवा के

बीच से गुज़रा और उसकी छाती पर लगा। सिंदबाद पानी में गिर गया। ‘और मैं हर तरह से तुमसे बेहतर हूँ।’
अब वह उसके ऊपर झुकी हुई थी, उसकी तलवार उसकी छाती पर टिकी हुई थी।
‘सच है, सिवाय एक बात के।’ सिंदबाद मुस्कुराया। ‘मैं ज़्यादा बुद्धिमान हूँ।’
‘क्या?’ वह उलझन में दिखी।
एक हथौड़ा हवा में उड़ता हुआ आया और उसके चेहरे पर जा लगा, जिससे उसके मुंह से खून बहने लगा और वह गहरे पानी में गिर पड़ी। सिंदबाद मुस्कुराया; उसने अपने दोस्तों को खच्चरों पर सवार होकर उसकी ओर बढ़ते हुए देखा था, लेकिन उसने दुश्मन को इसका कोई आभास नहीं दिया था।
जब सिन्बाद मरकुस का हथौड़ा हाथ में लेकर नखलिस्तान से बाहर निकला, तो उसने देखा कि अधिकांश नेफिलिम मर चुके थे, जिन्हें सफीना ने मार डाला था। बचे हुए लोगों का इदरीस और अशरफिया पीछा कर रहे थे।
सूरज की तेज गर्मी उन पर पड़ रही थी और वे सब राहत की सांस लेते हुए एक-दूसरे को देखकर हंसने लगे। सिंदबाद ने हथौड़ा वापस मार्कस को दे दिया।
'बढ़िया थ्रो।'
‘क्या वह मर गई है?’ मार्कस ने पूछा।
‘उसे ऐसा ही होना चाहिए, वरना वह इंसान नहीं है। घात लगाकर हमला करने की योजना मेरी उम्मीद के मुताबिक कामयाब नहीं हुई, लेकिन सब ठीक हो गया। हमेशा की तरह।’ सिंदबाद ने मुड़कर देखा तो उमारा समूह से भागती हुई, रेत पर लड़खड़ाती हुई चल रही थी।
“बूढ़े, अगर तुम्हें लगता है कि तुम इस मौसम में बच जाओगे, तो तुम मर जाओगे,” मार्कस ने जोर से चिल्लाकर कहा। “हमारे पास खाना और पानी है और हमने बचने के लिए एक छोटा सा किला बना लिया है। इसलिए वापस आ जाओ। अभी।” लेकिन उमारा दौड़ती रही।
अशरफिया ने अपनी भौंहें उठाईं। 'मुझे उसे पकड़ने दो।' उसने हवा में ही बैंगनी चिंगारियों का एक फंदा बनाया और उसे उस आदमी पर फेंक दिया। ‘बहुत खूब। चलो बच्चों, काम पर लग जाओ, क्योंकि हमारे पास सवाल हैं। बहुत सारे सवाल।’

ग्यारह
सिंदबाद ने अपने दल को किले में तैनात कर रखा था। भीषण लड़ाई के बाद उन्हें तनाव से राहत की जरूरत थी।
हुसैन अपने प्रिय वाद्य यंत्र, जिसका नाम एफ्रोडाइट था, ऊद बजा रहे थे, जबकि बाकी लोग अपने खच्चरों को चारा खिला रहे थे, जिसके बाद उन्होंने भुना हुआ बकरी का मांस और चिकन खाया।
सिंदबाद को उमारा का विश्वास जीतना था, और उसे जादुई फंदे से वापस लाने के कारण वे उमारा की नजरों में गिर गए थे। उसने बूढ़े को खूब खाना-पानी दिया और उसके बोलने का इंतजार करने लगा।
यह किला एक निगरानी बुर्ज था, और उन्होंने इस क्षेत्र में कई वीरान किले देखे थे, जो पिछली सरकार, उमय्यद खिलाफत के समय से ही वीरान पड़े थे। उस खिलाफत के समाप्त होने के बाद से, ये स्थान निर्जन किलों में तब्दील हो गए थे। यहाँ कई लोग मारे गए थे, और जो बच गए थे वे घबराकर भाग गए थे।
आज रेत बहुत खुरदरी थी, हवाएँ तेज़ चल रही थीं और आसपास पक्षियों का कोई नामोनिशान नहीं था। बस वे थे, रेगिस्तान और सरीसृप, जो घात लगाने के लिए तैयार थे।
सिंदबाद ने उमारा को किले के एक कमरे में बंद कर दिया था। रात होते-होते कमरे में आग जल रही थी।
'मैं तुम्हें यह दसवीं बार बता रहा हूं—हम अच्छे लोग हैं,' सिन्बाद ने कहा।
और यह दसवीं बार है जब मैं तुमसे कह रहा हूँ—मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, दोस्त।'
उमारा ने चश्मा पहना हुआ था और उसके बर्फ जैसे सफेद बाल जूड़े में बंधे थे।
उसकी घनी, उलझी हुई दाढ़ी थी।

‘हम सही काम करने की योजना बना रहे हैं। ये चमत्कारी पत्थर जो भी हों, जिनकी तलाश ये एडमिरल की सेना कर रही है, हम उन्हें छीनकर खलीफा को वापस सौंपने की योजना बना रहे हैं ताकि वे सुरक्षित रहें।’
‘वे जहां हैं वहां सुरक्षित हैं। उन्हें वहां से ले जाने से और भी गंभीर समस्याएं पैदा हो जाएंगी,’ बूढ़े लेखक ने कहा।
सिन्बाद ने अपनी आँखें घुमाईं। उसके सामने अशरफिया और इदरीस थे, जो उमरा से सच उगलवाने के लिए उसे यातना देने को तैयार थे।
मार्कस भी अपने हथौड़े के साथ तैयार था।
लेकिन सिंदबाद कूटनीति का सहारा लेना चाहता था। उसके पास कुछ ऐसा था जिससे वह बूढ़े व्यक्ति का विश्वास जीत सकता था। उसने अपने थैले में से वह पांडुलिपि निकाली और उसे उमारा को सौंप दिया।
'यह क्या है?'
बस इसे पढ़ लीजिए।
मैं ऐसा नहीं करना चाहता, दोस्त।
इससे हमारे बारे में आपके सारे संदेह दूर हो जाएंगे।
‘तुमने मुझे बांध दिया है। तुमने जादुई फंदा इस्तेमाल किया! तुम्हारे बारे में मेरे संदेह स्पष्ट हो गए हैं।’
इदरीस उसके बगल में घुटनों के बल बैठ गई और अपनी चाकू उसकी गर्दन के पास ले आई। 'इसे पढ़ो, वरना ये तुम्हारे आखिरी शब्द होंगे।'
उम, अह...
‘हाँ, शुक्र मनाओ कि हमने तुम्हें बचा लिया, प्यारी,’ अशरफिया ने झल्लाकर कहा। ‘हम आमतौर पर लोगों को समय नहीं देते।’
उमारा ने अपने सामने लाए गए दस्तावेज़ को देखते हुए धीमी आवाज़ में बुदबुदाया, 'मैं समझ गया। खलीफ़ा। ठीक है, ठीक है, बस उस चाकू को हटा दो।' ‘धन्यवाद।’ सिंदबाद ने इदरीस की ओर मुस्कुराते हुए सिर हिलाया, जिसने प्रतियोगिता से नाम वापस ले लिया था। ‘मुझे पता है कि हम नायकों जैसे नहीं दिखते, लेकिन आपके पास हमसे बेहतर कोई विकल्प नहीं है।’
‘वीरों!’ उस आदमी ने बड़बड़ाते हुए कहा। ‘मैंने खलीफा को वही बताया है जो मैंने तुम्हें बताया है। चमत्कारी पत्थरों को हासिल करना एक बुरा विकल्प है। लेकिन खलीफा उन्हें अपने प्राचीन कलाकृतियों के संग्रहालय के लिए चाहता है।’

सिंदबाद बूढ़े आदमी के बगल में घुटनों के बल बैठ गया और धीरे से बोला, 'क्या आप चाहते हैं कि हम उन्हें पकड़ें या उन खूंखार हत्यारों को जिनसे आप अभी मिले हैं?'
उमारा सोचने लगी। 'तुम सही कह रहे हो। तुम लोग हीरो जैसे बिल्कुल नहीं दिखते। तुम लोग डाकुओं, लुटेरों, निकम्मों के झुंड जैसे दिखते हो—'
‘हमें पता है, हमें पता है। हम हारने में माहिर हैं।’ हुसैन ने भी अपनी बात जोड़ते हुए कहा, ‘लेकिन हमें बताओ, ये अद्भुत पत्थर क्या हैं? मुझे इनके बारे में जानने की बहुत उत्सुकता है।’
‘हे भगवान! तुम सब मूर्ख हो!’ उमारा ने आह भरी। ‘ठीक है। तो, क्या तुम्हें पता है कि मैसेडोन के सिकंदर का क्या हुआ?’
हुसैन ने बीच में दखल दिया। 'उसे जहर दिया गया था, है ना?'
कुछ हद तक। सिकंदर की मृत्यु का कोई खास महत्व नहीं है, लेकिन उसके बाद जो हुआ वह दिलचस्प है। जैसा कि आप सभी जानते हैं, सिकंदर की असमय मृत्यु हो गई, बत्तीस वर्ष की आयु में। अगर उसकी मृत्यु न हुई होती, तो वह पूरी दुनिया पर विजय प्राप्त कर लेता। कुछ लोग कहते थे कि उस पर ईश्वर का हाथ था, कुछ कहते थे कि उसने अपनी आत्मा शैतान को बेच दी थी। दोनों ही मामलों में, वह एक क्रूर व्यक्ति था। जिसने दुनिया पर कब्ज़ा करने के लिए हज़ारों लोगों, फारसियों और अन्य लोगों की हत्या की। फिर उसने अपने क्षत्रपों, अपने गवर्नरों को पूरी दुनिया में अपने लिए शासन करने के लिए नियुक्त किया। लेकिन उसकी मृत्यु से सदमा और आश्चर्य का माहौल छा गया।
सिंदबाद ने ध्यान से सुना। यह सब सुनकर वह भयभीत तो हुआ, लेकिन साथ ही यह भी सोचने लगा कि इतने सारे लोगों से लड़ने के लिए एक महानतम इंसान को किन-किन मुश्किलों से गुजरना पड़ता होगा। एक नेता का अभिशाप!
अरब लोग सिकंदर को धुल-अल-क़रनायन कहते थे, वह व्यक्ति जिसने दुष्ट याजूज और माजूज के विरुद्ध लोहे की दीवार बनाई थी। इससे अरबों को निश्चित रूप से लाभ हुआ। सिकंदर ने अरबों के लिए लड़ाई भी लड़ी, जिसके फलस्वरूप उसे जीवन का जल दिया गया।
‘जीवन का जल?’ सिंदबाद चौंक गया।
उमारा ने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। ‘उसका एक भाई था। एक सनकी किस्म का आदमी, फिलिप तृतीय, जो सिकंदर के मृत्युशय्या पर था। कहा जाता है कि सिकंदर ने विष दिए जाने से कुछ ही दिन पहले फिलिप से कहा था कि वह एक विशेष

स्थान पर दफनाया जाना चाहता है। उसने फिलिप से कहा था कि उसकी जान को खतरा है।’
'क्यों?'
मुझे नहीं पता। इसका संबंध जीवन के जल से था।
‘हां। वही। मैं उसके बारे में जानना चाहता हूं,’ सिंदबाद ने बेताब होकर विनती की।
‘उम, हाँ, वो क्या है?’ अशरफिया ने पूछा।
‘मुझे अपनी कहानी पूरी करने दो, मूर्खों! जीवन का जल वह विशेष जल है जो उपयोगकर्ता को लगभग हर काम करने की असीम शक्ति देता है... मानो वह कुछ भी कर सकता हो। ईश्वर बनने की शक्ति।’ बूढ़े आदमी की आँखों में भय झलक रहा था। ‘और सिकंदर के पास वह जल था। उसे वह कैसे मिला, यह कोई नहीं जानता। कुछ लोग कहते हैं कि वह स्वयं शैतान से या देवताओं से मिला था। कुछ अन्य कहते हैं कि इसे नश्वर अरबों ने बनाया था और उसे यह उपहार में दिया था क्योंकि उसने उन्हें बचाया था। लेकिन, खैर, इतिहास कहता है कि सिकंदर वह जल इसलिए चाहता था ताकि वह स्वयं पर विजय प्राप्त कर सके और अधिक शक्तिशाली बन सके—एक मानव देवता। वह इसे पीना भी चाहता था, लेकिन अंतिम क्षण में, ऐसा लगता है, उसे जल की शक्ति से डर लग गया। इसलिए उसने अंततः इसे नहीं पिया। उसकी जल्द ही मृत्यु हो गई। जीवन का जल उसके निर्जीव शरीर पर उसी बोतल में सुरक्षित रखा हुआ था जिससे वह पीने वाला था, जब उसे उसकी कब्र में रखा गया।’
क्या लोगों को पता था कि उसके पास जीवन का जल है?
उमारा ने सिर हिलाया। “इसका कोई रिकॉर्ड नहीं है, लेकिन फिलिप को कुछ गड़बड़ होने का एहसास था—लेकिन जीवन के जल के बारे में कोई ठोस जानकारी न होने के कारण, उसने सिकंदर के अंतिम संस्कार में भी मदद की, जब तक कि टॉलेमी ने उस पर हमला नहीं कर दिया, जो कभी उसका मित्र था और अब प्रतिद्वंद्वी बन गया था और सिकंदर की मृत्यु का जश्न मना रहा था। उसने शव को पकड़ लिया लेकिन फिलिप को जीवित छोड़ दिया। उसका मानना था कि सिकंदर का सौतेला भाई मूर्ख था और उसके जैसा महान व्यक्ति नहीं था, इसलिए शव पर उसका कोई अधिकार नहीं था।”
‘तो क्या वह दोस्त था या नहीं?’ हुसैन ने कहानी में मग्न होकर पूछा। “दोनों ही बातें सही हैं। इतिहास बहुत उलझा हुआ है।” उमारा ने आह भरी। “टॉलेमी के शासनकाल में यह मकबरा सबसे लंबे समय तक राजधानी

अलेक्जेंड्रिया में रहा और सैकड़ों साल बाद अरबों के आक्रमण तक वहीं रहा। फिर राशिदुन खिलाफत के सैनिक आए और एक सेनापति को इस महान मकबरे के बारे में पता चला। कुछ सूत्रों के अनुसार, राशिदुन ने वास्तव में जीवन का जल प्राप्त करने के लिए ही सेना भेजी थी। खैर, सेनापति उसे अपने गृहनगर ले आया, हालांकि यह ठीक-ठीक कोई नहीं जानता कि वह जगह कहाँ है। किंवदंती है कि उन्होंने मकबरा खोलने की कोशिश की, लेकिन जैसे ही उन्होंने खोला, उन पर एक श्राप लग गया। बहुत से लोग मारे गए... हर कोई जो इससे जुड़ा हुआ था।”
‘तो फिर वंडरस्टोन्स का क्या रोल है?’ सिंदबाद ने पूछा।
‘अहा, हाँ। फिलिप की बात पर वापस आते हैं। लोग उसे पागल समझते थे क्योंकि वह काला जादू करता था। लेकिन वह अपने भाई से सच्चा प्यार करता था और जानता था कि टॉलेमी कभी भी अपने भाई के अवशेषों को किसी और को नहीं देगा। वह जानता था कि जीवन का जल गलत हाथों में पड़ने पर खतरनाक हो सकता है। इसलिए उसने एक चुड़ैल से सलाह ली और उससे किसी तरह मकबरे पर श्राप डलवा दिया। जो भी उसे खोलेगा, वह नष्ट हो जाएगा। शर्त यह थी कि केवल सबसे कुलीन व्यक्ति ही श्राप को हटा सकेगा और जीवन के जल का उपयोग अच्छाई के लिए कर सकेगा। तो कोई भी अनुमान लगा सकता है कि इसी श्राप के कारण सेनापति के गृहनगर का पतन हुआ। खैर, मकबरे का पता लगाने के लिए चमत्कारी पत्थरों का निर्माण किया गया था। ये पत्थर जादुई हैं; कहा जाता है कि इनमें मकबरे की आत्मा समाहित है। यह एक ही पत्थर था जिसे तीन भागों में बाँटकर पूरी दुनिया में फैला दिया गया ताकि खोजने वाले के लिए इसे ढूँढना मुश्किल हो।’
सिंदबाद ने पूछा, 'तो अगर तुम्हें वंडरस्टोन मिल जाएं, तो तीनों को मिला दो, तो तुम सिकंदर महान के विश्राम स्थल और बदले में जीवन के जल को ढूंढ पाओगे?'
'हां, तर्कसंगत रूप से। लेकिन ये पत्थर सबसे खतरनाक जगहों पर हैं, भयानक जगहों पर।' बूढ़ा आदमी सिहर उठा।
‘इस कहानी में कई खामियां हैं,’ इदरीस ने टिप्पणी की। ‘सबसे पहले तो, फिलिप ने जीवन के जल को दफनाने की अनुमति ही क्यों दी? उसने उसे सीधे क्यों नहीं ले लिया?’
मुझे नहीं पता। उनके निजी कागजात में ज्यादा कुछ नहीं लिखा है। हम इतना ही जानते हैं कि वे सचमुच नहीं चाहते थे कि उनके भाई के अवशेष मिलें। मेरा मानना है कि ऐसा इसलिए था क्योंकि वे अपने महान भाई के विश्राम स्थल को

अपवित्र नहीं होने देना चाहते थे और इसीलिए उन्होंने यह सारा नाटक रचा। या शायद वे सचमुच नहीं चाहते थे कि टॉलेमी को जीवन का जल अकेले मिले क्योंकि इससे वह मैसेडोनिया और शायद बाकी दुनिया पर भी विजय प्राप्त कर लेता। ‘बहुत खूब। मुझे लगता है यह जानकारी बहुत उपयोगी है। और अब अगर आप हमें पत्थरों के स्थान बता सकें तो...’ सिंदबाद ने कहना शुरू किया।
दरवाजे अचानक खुल गए। प्रेसा बुरी हालत में, पसीने से तरबतर होकर अंदर घुसी और बोली, 'रेत का तूफान! यहाँ रेत का तूफान आ गया है।'
सिंदबाद ने अपनी भौंहें उठाईं और दूसरों के साथ दरवाजे की ओर चल पड़ा। ऐसा लग रहा था मानो रेत की बड़ी-बड़ी लहरें किले पर हमला कर रही हों।
लेकिन सिंदबाद को रेत के तूफान से परेशानी नहीं थी। उसे तो किले में प्रवेश करने वाले व्यक्ति से परेशानी थी। भयंकर तूफान के बीच भी, वह लाल बालों वाली लटों से ढकी हुई आकृति को रात के उजाले में टिमटिमाते हुए देख सकता था। और उसके पीछे... पत्थर, बेसाल्ट और कोबाल्ट से बने जीव थे, जिनसे लावा की लाल नदियाँ बह रही थीं, और वे तलवारें और अन्य हथियार पकड़े हुए थे।
हुसैन ने कांपती आवाज में कहा, 'वह मरी नहीं है।'
‘इस बार मैं उसे और जोर से मारूंगा,’ मार्कस गुर्राया।
‘लेकिन अब वह नेफिलिम के साथ नहीं है,’ सिन्बाद ने गंभीरता से कहा। ‘वह ड्रॉगरों के साथ है।’

बारह
ड्रॉगर जीवित मृत थे। भूत, आत्माएं, प्रेतात्माएं, नरभक्षी... वे सब कुछ थे। वे सबसे असामान्य स्थानों पर पाए जाते थे, उन स्थानों पर जहां लोग मरते थे, उन स्थानों पर जहां समय के साथ भुला दिए गए सड़े-गले शव पड़े रहते थे।
यानी—यही जगह।
उस निगरानी मीनार पर बहुत से लोग मारे गए थे। सैकड़ों उमय्यद सैनिक।
अब ड्रॉगर उस लाल बालों वाली महिला के साथ चल रहे थे, जो मृत्यु से जीवित हो उठी थी, और यह संभवतः उसी का किया-धरा था।
सिंदबाद को अभी तक यह पता नहीं चल पाया था कि उसके पास कौन सी शक्तियां हैं, लेकिन वह जानता था कि वह काली जादू में माहिर है। उसके पास असाधारण गति और इतनी ताकत थी कि वह किसी इंसान को पल भर में मार सकती थी। अगर सिंदबाद ने नखलिस्तान में सूझबूझ न दिखाई होती, तो अब तक वह मर चुका होता। और अब उसने ड्रॉगरों को जीवित कर दिया था।
मरे हुओं को कैसे मारते हो? वे तो पहले से ही मरे हुए हैं! सिंदबाद ने मन ही मन बड़बड़ाया।
ड्रॉगर टूटे-फूटे मांस और हड्डियों, पत्थरों और लोहे से बने शरीर के साथ रेत के तूफान में चल रहे थे। वे पहेली के टुकड़ों की तरह चिपके हुए थे। उनका बाहरी शरीर उनके आसपास की उन चीजों का मिश्रण था जिन्हें वे आकर्षित करते थे। लेकिन सबसे भयानक बात यह थी कि यह मृतकों की आत्माओं से भी चिपक जाता था।
‘तुम यह कैसे करने की योजना बना रहे हो?’ इदरीस ने सिंदबाद से पूछा, जो एक पल के लिए अवाक रह गया।
‘उमारा की रक्षा करो क्योंकि हम उसे रेत के तूफान के कारण नहीं ले जा सकते,’ सिंदबाद ने सुझाव दिया। ‘क्योंकि अगर हम उसे ले गए तो हम सब मारे जाएंगे।’

‘या हम टेलीपोर्ट कर सकते हैं?’ इदरीस ने अशरफिया की ओर मुड़कर पूछा, जिसने अपना सिर हिला दिया।
'अभी माहौल बहुत अस्थिर है। यह बहुत खतरनाक है। रेत का तूफान गुजर जाए तो मैं यहां से कहीं दूर जाने का पोर्टल खोल सकता हूं।'
‘तो हमें समय चाहिए।’ सिन्बाद ने दांत पीसते हुए कहा। ‘प्रेसा और हुसैन, उमारा के साथ रहो। और हम बाकी लोग—चलो उनका सामना करते हैं।’
सिंदबाद कमरे से बाहर भागा, चबूतरे से कूदकर ज़मीन पर कलाबाज़ी खाते हुए, उसकी तलवार एक प्रकाशस्तंभ की तरह ऊपर उठी हुई थी। उसके आगे मुस्कुराती हुई लाल बालों वाली महिला अपनी चमकीली तलवार लहरा रही थी। वह अपने पीछे तेज़ी से उड़ती रेत की पृष्ठभूमि में शांत खड़ी थी।
सिन्बाद ने अपनी कमीज़ ऊपर खींची और उड़ती रेत से खुद को बचाने के लिए उसे अपने मुंह के चारों ओर लपेट लिया, जिससे उसका चेहरा ढक गया। उसकी नंगी छाती पर निनुर्ता संघ का प्रतीक चमक रहा था।
उसके पीछे मार्कस अपने हथौड़े के साथ, इदरीस अपने भाले के साथ, अशरफिया अपने हाथों से बैंगनी चिंगारियां निकालते हुए और सफीना अपनी जुड़वां तलवारों के साथ, अपनी बिल्ली जैसी चमकती आंखों के साथ खड़ी थी।
लाल बालों वाली महिला ने अपने लबादे का हुड नीचे खींच लिया। उसकी आँखें बेहद भूरी थीं, कुछ-कुछ सिंदबाद जैसी। वह सिंदबाद के अनुमान से कहीं अधिक उम्र की लग रही थी, लाल बालों में भूरे रंग की धारियाँ दिख रही थीं। उसके पीछे खड़े ड्रॉगर उत्तेजित होने लगे थे और वे सिंदबाद और उसके साथियों की ओर दौड़ पड़े।
‘क्या तुम इस रेत के तूफान का फायदा उठा सकती हो?’ सिंदबाद ने सफीना से पूछा।
‘मैं कोशिश करूंगा।’ ड्रॉगरों के चारों ओर की रेत उठी और विशालकाय हिंसक गोले बन गए जिन्होंने आने वाले जीवों पर हमला किया, जो उनसे टकरा गए। जैसे ही पहला लॉट गिरा, अशरफियाह बाकी ड्रौगरों की ओर दौड़ी, उसकी उंगलियों से बिजली की चिंगारियां निकल रही थीं और उसने उन जीवों को झटका दिया। वह उन पर कूद पड़ी, उसके तेज नुकीले दांत और नाखून उनके शरीर को चीरते हुए निकल गए।
एक कलाबाज की तरह, इड्रिस ने बड़ी कुशलता से अपनी तलवार से ड्रौगरों पर प्रहार किया, जबकि मार्कस ने अंधाधुंध अपने हथौड़े से उन पर वार किए।

ड्रौगरों के शरीर टुकड़े-टुकड़े हो रहे थे, उनके अवशेष—पत्थर और धातु— आसपास बिखर रहे थे।
लेकिन सिंदबाद की निगाह लाल बालों वाली स्त्री पर टिकी थी। वह उसकी ओर तेजी से बढ़ने लगा, उसका बलवान शरीर तूफान का सामना कर रहा था। स्त्री ने अपनी तलवार निकाल ली थी, और जैसे ही उनकी तलवारें टकराईं, दोनों पीछे हट गए और एक-दूसरे की धधकती आँखों में देखने लगे।
उनके पीछे रेत तेज़ी से उड़ रही थी। अगर किला न होता तो वे सब रेगिस्तान में समा जाते। तूफान के लिए किले में प्रवेश करने का एकमात्र रास्ता वही द्वार था जिसे उस महिला ने खोला था।
सिंदबाद अब उसका चेहरा करीब से देख सकता था; उसका जबड़ा टूटा हुआ था और उसके कुछ दांत गायब थे, लेकिन उसे इसकी परवाह नहीं थी।
‘तुम सच में बहुत परेशान करने वाले हो,’ उसने उसकी तलवार के वार को रोकते हुए कहा। उनके पैर मानो एक साथ चल रहे थे, उनकी आँखें एक-दूसरे से मिली हुई थीं।
सिन्बाद ने अपनी तलवार लहराई और लगभग उसके पेट पर वार कर ही दिया था, लेकिन वह नर्तकी की तरह पीछे हट गई। उसने खुद को उस स्त्री के शरीर से सटा लिया और उसे नीचे दबा दिया। 'मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि मुझे यह बात अक्सर सुनने को मिली है,' वह हांफते हुए बोला और फिर उठकर लड़ने के लिए तैयार हो गया। उसने आह भरी। 'और मैंने तो एडमिरल से सवाल ही कर लिया था! वह सही थे। आप वाकई एक ज़बरदस्त प्रतिद्वंद्वी हैं...' वह अचानक गायब हो गई और फिर सिन्बाद के पीछे प्रकट होकर अपनी तलवार उसके सीने में घोंप दी। सिन्बाद घुटनों के बल गिर पड़ा और उसने तलवार निकाल ली। वह दर्द से चीख उठा।
उसने चाकू उसकी ठोड़ी पर रख दिया। ‘…और इसीलिए मैं आज तुम्हें नहीं मारूंगी, मेरे प्यारे बेटे। हम जल्द ही मिलेंगे।’
‘उस एडमिरल को बता देना’—सिंदबाद ने अपने घाव को पकड़ते हुए कहा—‘मैं उसके पास आ रहा हूँ।’
'ओह, वह इंतजार करेगा। तब तक, इससे निपटो।'
वह?
सिन्बाद ने मुड़कर देखा कि वह किस ओर इशारा कर रही है। जिन ड्रौगरों को उसकी टीम ने नष्ट कर दिया था, वे हिलने-डुलने लगे थे। उनके शरीर के बिखरे

हुए हिस्से कांपने लगे और चुंबक की तरह एक-दूसरे की ओर खिंचने लगे, जिससे एक विशालकाय आकृति बन गई। वह विशालकाय ड्रौगर लगभग दस फीट लंबा था। उसके हर कदम से धरती कांप उठती थी।
सिंदबाद ने मुड़कर उस महिला की ओर देखा—वह गायब हो चुकी थी।
उसने खुद को संभाला और घाव के चारों ओर अपनी कमीज लपेटकर एक पट्टी बना ली।
ड्रॉगर गुर्राया।
इदरीस सिंदबाद के पास आया। 'तुम्हें चोट लगी है।' वह चिंतित लग रही थी।
‘हाँ, चलो पहले इस समस्या से निपटते हैं...’ तभी राक्षस ने सिंदबाद को पैरों से पकड़कर उल्टा लटका दिया।
'दूर हटो!' मार्कस चिल्लाया और राक्षस के विशालकाय पैरों पर हमला करने के लिए दौड़ पड़ा, जबकि अशरफिया ने अपने जादू का इस्तेमाल करने की पूरी कोशिश की - लेकिन कुछ भी काम नहीं कर रहा था।
सिन्बाद ड्रौगर के मुंह के ऊपर घात लगाए बैठा था। मैं किसी का भोजन बनकर नहीं मरूंगा! वह दर्द से कराहते हुए अपनी तलवार को दाएं-बाएं घुमा रहा था, लेकिन दस फुट का वह राक्षस अछूता रहा। उसने खुद को सीधा किया, उसके पेट का असहनीय दर्द उसे जकड़ रहा था, तभी उसकी तलवार ड्रौगर के हाथ से टकराई और उसकी एक उंगली कट गई।
यह सुनकर वह प्राणी गुर्राया और सिंदबाद का हाथ झटक दिया। सिंदबाद की तलवार उसके हाथ से छूट गई।
सिन्बाद धीरे-धीरे ड्रौगर के मुँह की ओर बढ़ रहा था। वह उसके सड़े हुए दाँत देख सकता था और उसकी गर्म साँस महसूस कर सकता था... तभी उसने सुना, 'जब मैं कहूँ तो अपनी आँखें बंद कर लो और खुद को दूर धकेल दो!'
वह उस आवाज को पहचानता था—वह सफीना की आवाज थी।
उसने रेगिस्तान की रेत को एक भयानक बवंडर में तब्दील कर दिया था, जो ड्रौगर की ओर अपना रास्ता बना रहा था।
आने वाले भयानक मंजर को देखकर सिंदबाद ने जैसे ही अपनी आंखें बंद कीं, तभी उसे 'अब!' की आवाज सुनाई दी।
सिन्बाद ने पूरी ताकत से उस हाथ पर लात मारी और खुद को उस प्राणी से दूर धकेल दिया, जिसके परिणामस्वरूप वह जमीन पर गिर पड़ा, जबकि बवंडर ने ड्रौगर और उसकी आत्माओं को अपनी चपेट में ले लिया। बवंडर ने उस जानवर और उसकी चीखों और विलापों को घेर लिया, उसे घुमाते हुए किले से दूर ले गया।

अचानक रेत का तूफान थम गया और ड्रौगरों की चीखें भी थम गईं।
सिन्बाद कराहते हुए लड़खड़ाकर खड़ा हुआ। सफीना रेत पर हांफती हुई लेटी थी, शक्ति के अत्यधिक प्रयोग से वह थक चुकी थी। सिन्बाद उसे गले लगाना चाहता था, लेकिन उसने खुद को रोक लिया और सिर हिलाकर इशारा किया, जिसे सफीना ने अनसुना कर दिया।
उसे पता ही नहीं चला कि उनके बीच हालात कब इतने खराब हो गए थे।
'चलो उस मुद्दे पर दोबारा बात न करें,' अशरफिया ने उनके बगल में आकर कहा।
वे सभी किले की ऊपरी मंजिल की ओर भागे। दरवाजे खुले हुए थे; हुसैन और प्रेसा कमरे के दोनों ओर दीवारों से टिके हुए थे, उनके चेहरे और बांहों पर चोट के निशान थे।
और उमारा गायब हो गई थी।
‘हमें अब उससे दोबारा निपटना नहीं पड़ेगा,’ सिंदबाद ने हार मानकर सिर हिलाते हुए कहा। ‘लाल बालों वाली औरत चली गई है, और अब उसे पता है कि चमत्कारिक पत्थर कहाँ हैं।’

तेरह
‘बाय फेट एंड फॉर्च्यून’ एक दुर्जेय जहाज था।
दो मस्तूलों वाले इस जहाज में एक विशाल कप्तान का लॉज, दो स्तरों के भूमिगत डेक और जलपरी की आकृति से बना एक ढांचा था। इस जहाज में लगभग 200 लोग रह सकते थे और जादुई लकड़ी के कारण यह किसी भी सामान्य जहाज से दस गुना अधिक तेज गति से चल सकता था।
रात के समय, बसरा के बंदरगाह पर जहाज बिल्कुल सुंदर दिख रहा था।
सिंदबाद और उसके साथी यहाँ टेलीपोर्ट हो गए थे, और हालाँकि उसने सोचा था कि उसे लाल बालों वाली महिला का जहाज़ देखने को मिल जाएगा, लेकिन उसका कोई निशान नहीं था। जब उसके साथी खाना खा रहे थे, जश्न मना रहे थे और शराब पी रहे थे, तब इदरीस क्वार्टरमास्टर के केबिन में बैठा उदास था कि वे हार गए हैं।
सिंदबाद डेक पर खड़ा था, किनारे से टेक लगाकर तारों भरे आकाश और सामने फैले गहरे, झिलमिलाते समुद्र को देख रहा था।
टिमटिमाते तारों को देखकर उसे अपने माता-पिता की याद आ गई। वह उनके बारे में बहुत कम जानता था—वे कौन थे, जीवित हैं या नहीं। उसने सोचा कि क्या वे ऊपर से देख रहे होंगे। उसे यह भी नहीं पता था कि उनके बारे में सोचना भी उचित है या नहीं—आखिरकार, वे शायद मर चुके होंगे या उनके दूसरे बच्चे भी होंगे और वे सिंदबाद को अपने जीवन में नहीं चाहते होंगे क्योंकि वे कभी उसे ढूंढने नहीं आए।
परिचित आवाज सुनकर सिंदबाद ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं:
मुझे उम्मीद है कि आप नाटकीय ढंग से क्षितिज की ओर नहीं देख रहे होंगे। ‘मैं बिल्कुल यही कर रहा था... हालांकि रात होने के कारण यह थोड़ा मुश्किल है,’ सिंदबाद हंसते हुए बोला।

हुसैन उसके बगल में खड़ा था। 'तुम्हें पता है, मैं तुम्हें तब से जानता हूँ जब तुम एक उदास, गंभीर और मग्न रहने वाले लड़के थे। अचानक से तुम इतने हंसमुख, चुटीले और व्यंग्य करने वाले इंसान बन गए हो। मुझे समझ नहीं आता कि क्या हुआ।'
‘कप्तान बनने के बाद आपको एहसास होता है कि आपका स्वभाव ही आपकी टीम का स्वभाव तय करता है,’ उन्होंने आह भरते हुए कहा। ‘मैं माहौल को खुशनुमा बनाए रखने की कोशिश करता हूं, ज्यादातर समय मजाक करता रहता हूं क्योंकि हमें गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अगर मैं तनावग्रस्त या भयभीत हो जाता हूं, तो टीम के बाकी सदस्य भी इसे महसूस करेंगे और इसका उन पर असर पड़ेगा।’
हुसैन ने सिर हिलाया। 'हमेशा बहादुरी का दिखावा करना कितना मुश्किल होगा।' सिंदबाद ने अपने बालों को आंखों से हटाया। 'एक बार दुनिया को बचाना आसान नहीं था। दूसरी बार तो यह आसान नहीं होने वाला।'
हुसैन मुस्कुराया। 'मुझे लगता है कि मुझे यहीं बसरा में रुकना चाहिए, जब तक आप बाकी का इंतजाम नहीं कर लेते।'
‘क्या?’ सिंदबाद अपने दोस्त को हैरानी से घूरने लगा। ‘क्यों?’
‘खैर, मेरे दोस्त, सच कहूँ तो मेरे पास योगदान देने के लिए कुछ खास नहीं है। मैंने इस बात को स्वीकार कर लिया है—इससे पहले कि तुम इसका खंडन करो,’ उसने अपना हाथ ऊपर उठाया। ‘देखो, सिंदबाद, हम दोनों जानते हैं कि मैं कोई खास मददगार नहीं हूँ... मैं उस बूढ़े मुंशी की रक्षा भी नहीं कर सका। उसकी बेटी-सह-पत्नी या जो भी हो, वह ज़रूर चिंतित होगी... और यह सब मेरी ज़िम्मेदारी है।’ हुसैन ने आह भरी। ‘मैं तो बस एक बोझ हूँ।’
‘हुसैन, कृपया। आप बिल्कुल भी हुसैन जैसे नहीं हैं। इस सबमें आपकी सबसे बड़ी भूमिका है।’
हुसैन हँसे। 'और वह कौन सी भूमिका है?'
‘तुम ही मेरे दोस्त हो। तुम्हारे सिवा मेरा कोई दोस्त नहीं है,’ सिंदबाद ने उदास होकर कहा।
‘यह सही नहीं है। आपके पास सफीना है।’
‘मुझे अब इसके बारे में कुछ नहीं पता,’ सिन्बाद ने रुकते हुए कहा। ‘ये क्रू मेंबर हमारा ख्याल रखते हैं, लेकिन ये वो लोग भी हैं जो सिर्फ अपना ही ख्याल रखना चाहते हैं।’

हुसैन कुछ कहने ही वाला था कि तभी दोनों की नजर मार्कस पर पड़ी।
‘क्या तुम हमारी बातें छुपकर सुन रहे हो?’ सिंदबाद ने पूछा।
‘नहीं। मैं बस यहाँ खड़ा हूँ,’ मार्कस ने भारी आवाज़ में कहा।
क्या आप किसी विषय पर बात करना चाहते हैं?
'जी हां, आपसे कुछ निजी बातें करनी हैं।'
सिंदबाद ने हुसैन की पीठ पर धीरे से थपथपाया और फिर कप्तान के कमरे की ओर बढ़ गया, जहाँ वह बैठ गया। पुराने लकड़ी के डेस्क पर समुद्री उपकरण, किताबें, कागज़ और डायरियाँ बिखरी पड़ी थीं।
‘तो, मैं आपकी कैसे मदद कर सकता हूँ?’ उसने गंजे योद्धा से कहा, जो सीधे हाथ आगे करके खड़ा था। उसने अफ़्रीकी डिज़ाइन वाली आस्तीन कटी हुई फ़्लैनल जैकेट पहन रखी थी।
‘क्या आप कुछ पीना चाहेंगे?’ सिंदबाद ने फिर पूछा।
‘मैं शराब नहीं पीता,’ उस आदमी ने कर्कश स्वर में कहा।
‘मैं समझ गया। तो?’
‘मैं जानता हूँ कि हम खतरे में हैं,’ मार्कस ने कहना शुरू किया। ‘वह इकलौता आदमी जो इदरीस के पति को छुड़ाने और दुनिया को बचाने में हमारी मदद कर सकता है, उसका अपहरण कर लिया गया है, और हमें नहीं पता कि वह कहाँ है। अगर खलीफा की क्षमादान न होती तो मैं ज़्यादा कुछ नहीं कहता। जैसा कि आप जानते हैं, मैं यहाँ एक जबरन भर्ती किए गए गुलाम के रूप में हूँ। बेशक, मुझे आपके और दल के साथ आज़ादी मिल गई है, लेकिन मैं खलीफा की अनुमति के बिना देश के इस हिस्से से भाग नहीं सकता या अपनी ज़मीन पर नहीं जा सकता। उन्होंने मुझे खरीदा है और केवल वही मुझे आज़ाद कर सकते हैं। इसलिए मुझे भी उस क्षमादान की उतनी ही ज़रूरत है जितनी यहाँ मौजूद हर किसी को।’
सिंदबाद ने सिर हिलाया।
‘मैं अपनी पत्नी और बेटी से अलग हो गया था। और मैं उनके पास वापस लौटने के लिए कुछ भी कर सकता था।’
'मार्कस, मुझे यह सुनकर बहुत दुख हुआ कि तुम किस दौर से गुजर रहे हो।' मार्कस ने हाथ हिलाते हुए कहा, 'इसलिए, मैं एक योजना प्रस्तावित कर सकता हूँ। यह जोखिम भरी है, लेकिन अगर हम इसे सही तरीके से करें, तो यह सफल होगी।' ‘मैं ध्यान से सुन रहा हूँ,’ सिंदबाद ने कहा।

‘याद है जब मैंने तुम्हें बताया था कि अफ्रीका में मैंने अनांसी के बेटे को अपने नंगे हाथों से हराया था?’
‘हां, मुझे याद है,’ सिंदबाद ने कहा।
“खैर, मैंने इसका जिक्र नहीं किया, लेकिन मैंने खुद मकड़ी राक्षस से लड़ाई की और उसे एक जार में कैद कर लिया जिसे मैंने लंबे समय से अपने पास छिपा रखा है। जैसा कि हम जानते हैं, वह राक्षस छल करने वाला देवता अनांसी है।” सिंदबाद ने सिर हिलाया। उसने उस देवता के बारे में सुना था जो अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मनुष्यों को ठगता, धोखा देता और छल करता था। उसका प्रतीक मकड़ी था, और कहा जाता था कि उसकी संतानों द्वारा बुने गए उसके जाले पूरी दुनिया और ब्रह्मांड में फैले हुए थे, और इसी तरह वह दूसरों के बारे में जानकारी प्राप्त करता था।
‘उसने मेरी बेटी को परेशान किया था, इसलिए मैंने उससे लड़ाई की। सत्ता में आने के लिए उसे लोगों को असहनीय पीड़ा देनी पड़ती है। मैंने उसे फंसा लिया,’ मार्कस ने कहा। ‘मैंने उसे फंसा लिया, लेकिन मुझे पता था कि मैं उससे छुटकारा नहीं पा सकता। क्या पता एक दिन किसी को वो जार मिल जाए और वो उसे बाहर निकाल दे? मैं ऐसा होने नहीं दे सकता था।’
तो इसमें अनांसी की क्या भूमिका है?
'उनके पास अतीत और वर्तमान, हर चीज़ की जानकारी है। उन्होंने पूरे ब्रह्मांड में मकड़ी के जाले बिछा रखे हैं और वे हमें इन अद्भुत पत्थरों को आसानी से ढूंढने में मदद कर सकते हैं। वे आखिरी उम्मीद थे, लेकिन अब मुझे लगता है कि वही हमारे पास एकमात्र विकल्प हैं।'
सिंदबाद ने एक पल सोचा। एक धोखेबाज से निपटना अच्छा विचार नहीं लग रहा था, लेकिन उसे कोई दूसरा विकल्प भी नज़र नहीं आ रहा था।
मार्कस ने आगे कहा, ‘मैं उससे निपट नहीं सकता। आपको धोखेबाज को ही मात देनी होगी क्योंकि वह बचने के लिए कुछ भी करेगा। इसलिए, मैं आपसे विनती करता हूँ, कृपया कुछ भी बुरा न होने दें। उसे आपको बेवकूफ न बनाने दें।’
‘उसकी चिंता मत करो।’ सिंदबाद मुस्कुराया। ‘मैं उसका मामला सुलझा लूंगा।’ मार्कस आश्वस्त नहीं लग रहा था।
‘क्या? तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं है?’
मैं इदरीस से कहूंगा कि वह तुम्हारे साथ चले।

सिन्बाद ने अपनी नाक फुला ली। 'मैं कप्तान हूँ, मार्कस। चाहे तुम्हें पसंद हो या न हो।'
‘बेशक, आप हैं, और मैं आपका बहुत सम्मान करता हूँ... लेकिन आप कभी-कभी बहुत उद्दंड हो जाते हैं।’ और फिर वह कमरे से बाहर निकल गया, अंतिम शब्द कहते हुए, ‘जब आप अनांसी से बात करना चाहें तो मुझे बता देना।’
मार्कस के जाने के बाद सिंदबाद कुछ देर तक लॉज में ही रुका रहा। वह खिड़की के पास गया और उसकी निगाहें लहरों से लहराते, अंतहीन समुद्र पर टिकी रहीं। जब उसने देखा...
दूर से देखने पर यह किसी प्रेत की तरह प्रतीत होता था, और अँधेरे पानी में धीरे-धीरे हिलता हुआ खड़ा था। मानो जादू से प्रकट हुआ हो। रात के अंधेरे में भी इसे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था क्योंकि यह हजारों खोपड़ियों और हड्डियों से बना था। यह प्राचीन प्रतीत होता था, गहरे रंग का था और भयावह दिखता था—मानो मनुष्यों के हृदय में भय उत्पन्न करने के उद्देश्य से बनाया गया हो।
सिंदबाद करीब से देखने के लिए दूरबीन लेने दौड़ा।
डेक पर दो लोगों के अलावा कोई नहीं था—एक लबादा ओढ़े हुए लाल बालों वाला व्यक्ति और दूसरा लंबा कोट, ढीली सफेद कमीज, पतलून और बूट पहने हुए। उसके चिकने बाल पीछे की ओर बंधे हुए थे और उसकी संगमरमर जैसी चिकनी त्वचा थी।
उसने एक हाथ में छड़ी पकड़ी हुई थी और उस पर सहारा लिए हुए था। वह सिंदबाद की ओर सीधे देखते हुए मुस्कुराया।
ऐसा लग रहा था मानो वह सिंदबाद को यह दिखाने के लिए ही इतनी दूर आया हो कि वह कोई मिथक नहीं है, कि वह यहीं मौजूद है।
निडर।
उसका मजाक उड़ाते हुए।
‘एडमिरल,’ सिंदबाद ने फुसफुसाते हुए कहा।

चौदह
‘यह एक बुरी योजना है।’
...यही बात सभी ने कही, सिवाय शांत और गंभीर स्वभाव वाले मार्कस के। सिंदबाद ने जहाज और छड़ी वाले आदमी को भूलने की कोशिश की। उसने सोचा, यह सब सच नहीं हो सकता। उसकी आँखें उसे धोखा दे रही थीं, लेकिन फिर अचानक—यह सब सच लगने लगा।
अशरफिया कोने में बाहें मोड़े, दीवार से टेक लगाकर बैठी थी और उसके चेहरे पर शिकन थी, जबकि इदरीस और हुसैन बार-बार दोहरा रहे थे कि यह कितना बुरा विचार था। सफीना बस सुन रही थी। सिंदबाद ने उससे मुश्किल से ही बात की थी, और उसे नहीं पता था कि वे कब बात करेंगे—या कभी ठीक से बात कर भी पाएंगे या नहीं।
‘तो इस नई योजना के लिए कोई वोट नहीं?’ सिन्बाद ने भोलेपन से पूछा।
‘नहीं!’ प्रेसा ने अपनी पूरी ताकत से चिल्लाते हुए कहा। ‘बेवकूफ लड़के, हम नहीं चाहते कि तुम एक डरावने चालबाज देवता को रिहा करो।’
मैं कप्तान हूं, बेवकूफ नहीं! और मैं ऐसा क्यों करूंगा?
'वह तुम्हें धोखा दे सकता है और तुम्हें पता भी नहीं चलेगा,' इदरीस ने ताना मारा।
‘मेरे बारे में आपकी क्या राय है? मैं होशियार हूँ, आप जानते ही हैं।’ अशरफिया ने धीमी आवाज़ में बुदबुदाते हुए कहा, 'नहीं, तुम बेवकूफ हो लेकिन बेहद भाग्यशाली हो।'
'जब कोई चीज एक बार मेरे पक्ष में होती है, तो वह भाग्य होता है। लेकिन जब वह कई बार होती है, तो वह भाग्य नहीं, बल्कि बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य होता है।'
हुसैन ने सिर हिलाया। 'नहीं। अभी भी किस्मत की बात है।'

सिंदबाद ने मेज पर हाथ पटकते हुए कहा, 'अगर आप लोगों ने ध्यान नहीं दिया है, तो हमारे पास वास्तव में ज्यादा विकल्प नहीं हैं। अनांसी ही हमारा सबसे अच्छा विकल्प है। हमारे पास ज्यादा समय नहीं है। सखर पहले ही हमसे आगे निकल चुका है।'
इदरीस ने मार्कस की ओर देखा। उसे घूरते हुए।
मार्कस ने कंधे उचकाए। 'मेरी तरफ मत देखो। मैंने तो बस सुझाव दिया था।' ‘क्या अनांसी को पता भी होगा कि चमत्कारिक पत्थर कहाँ हैं?’ इदरीस ने सोचा। मार्कस ने सिर हिलाया। 'उसके आस-पास हर जगह मकड़ियां हैं, इसलिए चिंता की कोई बात नहीं है। उसे दुनिया भर की सभी मकड़ियों से हर चीज के बारे में जानकारी मिलती रहती है।'
‘तो फिर क्या हम उनसे सीधे यह नहीं पूछ सकते कि सिकंदर का मकबरा कहाँ है? पत्थरों की चिंता क्यों करें?’ अशरफिया ने पूछा।
मार्कस ने सिर हिलाया। 'मकड़ियाँ उसे केवल उन स्थानों के बारे में जानकारी दे सकती हैं जो शापित नहीं हैं। मकबरा शापित है, इसलिए मकड़ियाँ उससे और किसी भी ऐसी जगह से दूर रहती हैं जहाँ काला जादू मौजूद हो।'
‘ठीक है। और तुमने उसे इस जार में रखा है?’ प्रेसा ने मेज पर रखे लोहे के शीशे से बने गहरे, अलंकृत बर्तन की ओर इशारा करते हुए पूछा। ‘अब, बड़े लड़के, क्या तुम्हें सिंदबाद की जगह यह नहीं करना चाहिए?’
‘वह मुझे मौके पर ही मार डालेगा,’ मार्कस हँसते हुए बोला। ‘लेकिन तुम्हारे साथ ऐसा नहीं होगा, सिंदबाद। वह कम से कम तुम्हारी बात तो सुनेगा।’ सिंदबाद ने अपनी आँखें घुमाईं।
‘और हम इसे कैसे करने की योजना बना रहे हैं?’ इदरीस ने पूछा।
‘मेरी चेतना को इसमें लगा दो।’ सिंदबाद ने अशरफिया की ओर देखा।
‘अरे, तुम मज़ाक कर रहे हो क्या?’ अशरफ़ियाह अचंभित थी। ‘तुम्हें पता है अगर मैंने ऐसा किया, तो तुम कोमा में जा सकते हो और मर सकते हो। लेकिन फिर तुम्हारे जैसे मूर्ख के लिए, कम से कम यह दर्द रहित मृत्यु का सुख तो होगा।’
‘उसका मतलब क्या है?’ हुसैन ने हैरानी से उससे पूछा।
जैसा कि मैंने तुम्हें बताया, हर निर्जीव वस्तु में आत्मा होती है। वे अपने आप में एक संसार हैं, और वह संसार किसी देवता की आत्मा से जुड़ा होता है। इसलिए यदि मैं सिंदबाद की आत्मा को छल करने वाले की आत्मा से जोड़ दूं,

तो वह उसके संसार में ही रहेगा। वह तभी बाहर निकल सकता है जब वह किसी तरह देवता को पराजित कर दे या देवता स्वयं उसे बाहर निकाल दे।
‘बहुत खूब, तो अब तुम मर सकते हो, कप्तान साहब,’ प्रेसा ने अचानक कहा। ‘खैर, कम से कम दर्द तो नहीं होगा।’ सिंदबाद मुस्कुराया, लेकिन किसी ने जवाब में नहीं मुस्कुराया। ‘चलो सब लोग, मुझे पता है यह सबसे पारंपरिक विचार नहीं है, लेकिन चलिए करते हैं। हमारे पास समय नहीं है और मैं सब संभाल लूंगा। मैं हमेशा संभाल लेता हूं, इसलिए मुझ पर भरोसा करो। मुझ पर भरोसा करो।’
‘ठीक है,’ इदरीस ने जवाब दिया।
हुसैन और बाकी सब चुप रहे। अशरफिया आगे बढ़ी और सिंदबाद के कान में फुसफुसाते हुए बोली, 'सावधान रहना, प्यारे।' वह पीछे हटी और लापरवाही से बोली, 'चलिए आपको इस मेज पर लिटा देते हैं, ठीक है?'
सिंदबाद ने सिर हिलाया, मेज से सब कुछ समेटा और लेट गया।
‘आप सब पीछे हट जाइए। यह थोड़ा अजीब होने वाला है,’ अशरफिया ने कहा। जैसे ही सिंदबाद ने अपनी आँखें बंद कीं, उसकी उंगलियों से बैंगनी और नीली चिंगारियाँ निकलने लगीं। जैसे ही उसने जार से ऊर्जा की पतली नीली पट्टियाँ निकालना शुरू किया और उन्हें सिंदबाद के सिर से जोड़ना शुरू किया, उनके ऊपर ऊर्जा का एक बादल फूट पड़ा। ठीक उसी समय, सारे कागज़, स्क्रॉल, नक्शे और पर्दे उनके चारों ओर गुस्से से फड़फड़ाने लगे।
कुछ समय तक सिंदबाद को कुछ भी महसूस नहीं हुआ, लेकिन फिर उसका शरीर झटका और ऐसा लगा जैसे बिजली के झटके उसके पूरे शरीर में दौड़ने लगे हों।
वह अब खड़ा था।
जहाज पर नहीं, बल्कि किसी अंधेरी जगह पर।
आसमान में बादल छाए हुए थे, पेड़ मुरझाए हुए थे, तालाब सूख चुके थे और सड़कें कीचड़ से भरी थीं। पेड़ों पर मकड़ी के जाले फैले हुए थे और सड़कों पर कंकाल बिखरे पड़े थे। पृष्ठभूमि में पहाड़ियाँ थीं, लेकिन ऐसा लग रहा था मानो उनमें कोई जीवन न हो। उसने अपने जीवन में कभी ऐसी निर्जीव जगह नहीं देखी थी, जहाँ जीवन का कोई नामोनिशान न हो।
सिंदबाद ने निर्जन परिदृश्य से गुजरते हुए, उसमें अपना रास्ता ढूंढते हुए सोचा, "जार के अंदर का हिस्सा काफी आरामदायक है।"

सिन्बाद कुछ दूर चला, तभी उसे जाले से ढके पेड़ों के तनों पर कुछ रेंगने की आवाज़ सुनाई दी, हालाँकि उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। सिन्बाद को इस बात का बुरा आभास हुआ।
उसने अपनी तलवार म्यान से बाहर निकाली।
अब कुछ और आवाजें भी सुनाई दे रही थीं—एक अजीब सी गुर्राहट और रेंगने की आवाज—लेकिन जब भी वह अपना शरीर घुमाता, उसे कुछ भी या कोई भी दिखाई नहीं देता था।
‘क्या तुम हो, अनांसी?’ उसने पूछा। ‘मैं तुमसे बात करने आया हूँ। मैं तुम्हारे लिए कोई खतरा नहीं हूँ।’ उसने अपनी तेज धार वाली तलवार की ओर देखा। ‘मेरा मतलब है, जब तक तुम मेरे लिए खतरा नहीं हो।’
अचानक कहीं से एक जाला उसकी ओर आया। सहज ही उसने अपनी तलवार से उसे चीर दिया।
‘अब शत्रुता दिखाने की जरूरत नहीं है, अनांसी।’
अपराधियों के प्रकट होने से पहले ही वह एक और जाले से बच निकला—वे मकड़ियां थीं, विशालकाय मकड़ियां। ये वैसी मकड़ियां नहीं थीं जो आपको घर की दीवार पर या जंगल में दिखती हैं। ये अजीबोगरीब जीव थे। सामान्य मकड़ियों की तरह इनके आठ पैर थे, लेकिन हर पैर के अंत में एक नुकीला पंजा था। इनके बड़े-बड़े दांत और उभरी हुई बड़ी-बड़ी आंखें एक डरावना माहौल बना रही थीं।
सिंदबाद की ओर पीछे से और भी जाले आए, जिनसे वह बचता रहा, लेकिन उनमें से कुछ ने उसके पैरों को जकड़ लिया और वह जमीन पर गिर पड़ा।
एक मकड़ी उसके ऊपर आकर बैठ गई, और सिंदबाद ने अपनी तलवार से उसके पिछले पैरों पर वार किया। गहरे घावों से हरा खून बहने लगा। जब वह अपने पैरों पर लिपटे जालों को फाड़कर खुद को ऊपर खींचने की कोशिश कर रहा था, तभी एक और मकड़ी पीछे से आई और बेरहमी से उसकी तलवार छीन ली।
ऊपर से एक और मकड़ी लटक रही थी, जो सिंदबाद को अपने जाल में लपेट रही थी। इससे पहले कि वह भागने के बारे में सोच भी पाता, वह एक ममी की तरह जाल में लिपट गया, केवल उसका चेहरा ही खुला रह गया, और वह उल्टा लटक गया। सिंदबाद ने हिलने की कोशिश की, लेकिन जाला इतना कसकर लिपटा हुआ था कि वह असहाय महसूस कर रहा था।
‘बेचारे इंसान, तुमने मेरे एक बच्चे को मार डाला। बहुत दुख की बात है।’

यह एक तीखी, धीमी आवाज थी।
सिन्बाद ने खुद को सीधा करने की कोशिश की और देखने लगा कि आवाज़ कहाँ से आ रही है। एक आकृति सिन्बाद के सामने खुले मैदान में आ गई। उसका निचला हिस्सा एक काली मकड़ी जैसा था, जिसकी आठ पतली टांगें आगे की ओर सरक रही थीं, लेकिन ऊपरी हिस्सा गहरे रंग की त्वचा वाले, गंजे सिर वाले एक इंसान का था, जिसकी आँखें धुंधली और गहरी थीं और कान लंबे थे। उसके सिर पर पंखों का मुकुट था।
‘मेरे कारागार में तुम्हारा स्वागत है, हे नश्वर प्राणी,’ आधे मकड़ी-आधे मनुष्य ने फुफकारते हुए कहा। ‘मैं भगवान अनांसी हूँ। तुम मुझसे मिलना चाहते हो? अब जल्दी करो, जल्दी करो और मुझे बताओ कि तुम क्या चाहते हो... वरना शायद मैं तुम्हें मजे के लिए जहर दे दूँ।’

पंद्रह
सिंदबाद उल्टा लटका हुआ था और उसका खून सिर की ओर दौड़ रहा था। उसे लग रहा था कि वह बेहोश हो जाएगा, लेकिन वह जानता था कि सब कुछ उसी पर निर्भर करता है। इसलिए उसने खुद को जगाए रखने की कोशिश की। उसने नीचे दिख रही आकृति को देखने की कोशिश की। अनांसी में कुछ गड़बड़ थी। सिंदबाद को डर और निराशा का एक अजीब सा एहसास हुआ।
‘आप जानते हैं, मुझे इस तरह यहाँ लटकाकर आप किसी की मदद नहीं कर रहे हैं,’ सिन्बाद ने कहा। ‘मैं यहाँ लड़ने नहीं आया हूँ, बस इतना ही कह रहा हूँ।’ देवता तेजी से आगे बढ़ा, उसके मकड़ी जैसे दोस्त सब फुफकारते और कर्कश आवाजें निकालते रहे।
तुम उस गंजे आदमी के बुरे दोस्त हो, है ना?
‘तुम्हारा मतलब मार्कस से है?’
‘हां, मार्कुस।’ अनांसी सिंदबाद के करीब आई। ‘मुझे तुम्हारा चेहरा पसंद नहीं है।’
'ऐसा कहने वाले आप पहले व्यक्ति नहीं हैं।'
और तुम बहुत बोलते हो।
‘क्या मुझे जवाब देना चाहिए—’ अनांसी गुर्राते हुए बोली और उसे तुरंत चुप करा दिया।
‘मैं इस कैद से बाहर निकलना चाहता हूँ। मुझे यह जगह बिल्कुल पसंद नहीं।’ वह प्राणी गुस्से और हताशा में दूर चला गया। ‘मैं इस पिंजरे से बाहर अपनी जिंदगी जीना चाहता हूँ। मैं कभी खुश था। लेकिन यहाँ... मैं अपने ही विचारों से घिरा हुआ हूँ और अपने ही अवचेतन मन में फंसा हुआ हूँ जिसने यह माहौल बनाया है।’
'ठीक है, मैं इस बारे में मार्कस से बात करूंगा।'

‘अरे, रहने दो। उसने मुझे बाहर नहीं निकलने दिया। मैंने उसकी बेटी को बहुत परेशान किया था।’ मकड़ी मुस्कुराई।
सिंदबाद बेचैन महसूस कर रहा था। 'पता नहीं कैसे।'
अनांसी ने सिंदबाद पर अपनी बर्फीली नज़रें गड़ा दीं। ‘उसने तुम्हें नहीं बताया?’ उसने ताना मारा। ‘उसकी बेटी दुनिया की कहानियाँ सुनना चाहती थी क्योंकि उसके माता-पिता, उफ़ उफ़, अनपढ़ थे। “हे भगवान अनांसी, मुझे कहानियाँ सुनाओ! कृपया मुझे कहानियाँ सुनाओ! मैं जानना चाहती हूँ!” वह रोई और मैंने, एक देवता होने के नाते, उस बेचारी बच्ची को आशीर्वाद दिया। मेरे पास कहानियों का एक बक्सा था जो मैंने आकाश देवता न्यामे से चुराया था और उसे दे दिया। लेकिन बात नहीं बनी।’
'क्या हुआ?'
‘कुछ कान दुनिया भर की कहानियाँ सुनने के लिए तैयार नहीं होते। वह सुनना बंद नहीं कर सकी और उसके कान दुखने लगे। वह रोती-चिल्लाती रही, “बस करो, बस करो!”’ अनांसी हँस पड़ी। ‘ओह, मुझे तो बहुत हंसी आई।’
सिंदबाद का खून खौल उठा। वह मार्कस के करीबी नहीं थे, लेकिन अपने कमांडर को पसंद करते थे। लेकिन उससे भी बढ़कर, अनांसी भयानक क्रूरता करने में सक्षम प्रतीत होता था।
‘सच कहूँ तो, तुम बड़े ही बीमार देवता हो,’ सिंदबाद गुस्से से बोला। ‘तुम्हें छलकारी क्यों कहा जाता है? छलकारी तो वो होता है जो सबके सामने छिपकर तुम्हें मूर्ख बनाता है। हानिरहित, कभी-कभी तो अच्छा भी। लेकिन तुम तो बिलकुल घिनौने हो।’
राक्षस फिर हँसा। ‘तुम बहुत बोलते हो, लेकिन तुम्हारा कुछ भी मेरे लिए फायदेमंद नहीं है। अब बताओ, ऐसा कौन सा ठोस कारण है जिससे मैं तुम्हें जीवित रहने दूँ?’ उसने अपने आठ पैरों में से एक पैर सिंदबाद की छाती तक उठाया, वार करने के लिए तैयार।
‘क्योंकि मैं तुम्हें जीने दे सकता हूँ,’ सिंदबाद ने अचानक कहा। ‘मेरा मतलब है, मुझे बाहर निकाल दो?’
जी-जी।
'कैसे?'
‘जार को बाहर से तोड़ो। मतलब, अगर तुम मेरी मदद करोगे तो।’

एक पल के लिए अनांसी लगभग आश्वस्त सा लग रहा था, फिर हँस पड़ा। 'तुम मुझे बेवकूफ समझते हो, है ना? जिस पल मैं तुम्हारी मदद करूँगा, तुम यहाँ से चले जाओगे और उस गंजे आदमी के साथ मुझ पर हँसोगे।'
'में अपनी ज़बान देता हूँ।'
‘शब्द? मैं तो तुम्हें जानता भी नहीं। तुम्हारे शब्द का मेरे लिए कोई महत्व नहीं है, हे मनुष्य!’ उसने दांत पीसते हुए कहा।
तो मैं आपको और कैसे मना सकता हूँ?
अनांसी ने अपनी निगाहें सिकोड़ीं। 'पहले मुझे बताओ, तुम्हें किस तरह की मदद चाहिए? मुझे पूरी कहानी बताओ,' उसने धीमी आवाज़ में कहा।
सिंदबाद ने आह भरी। वह जानता था कि उस धूर्त से झूठ बोलने से कोई फायदा नहीं होगा, इसलिए उसने गायब हुए जादुई पत्थरों की कहानी सुनाई। ‘दिलचस्प,’ देवता ने मन ही मन सोचा। ‘मुझे पता है ये अद्भुत पत्थर कहाँ हैं। मेरे बच्चे मुझे बताते हैं कि इनसे एक खास तरह की ऊर्जा निकलती है। जी हाँ, उन्होंने मुझसे इसके बारे में बात की है। जानकारी मुझे आसानी से मिल जाती है, आप देख रहे हैं ना।’
‘क्या आप मुझे कुछ बताना चाहेंगे?’ सिंदबाद ने हिम्मत करके पूछा।
‘नहीं, ऐसा नहीं है।’ अनांसी हँसी। ‘लेकिन चलिए मज़ा करते हैं, क्या कहते हैं? मैं आपको बता दूँगी कि वंडरस्टोन के पहले दो टुकड़े कहाँ हैं। तीसरे हिस्से के बारे में मैं आपको तब बताऊँगी जब आप मेरी बात मान लेंगे।’ अनांसी को इसमें मज़ा आ रहा था।
सिन्बाद ने अपने जबड़े भींच लिए। 'ठीक है। आगे बढ़ो।'
‘बहुत सुंदर।’ अनांसी ने शरमाते हुए मुस्कुराया। ‘पत्थर का पहला भाग बयान द्वीप पर है। इसे खोजने की हिम्मत बहुत कम लोगों में होती है, और जब वे इसे खोज लेते हैं, तो उन्हें केवल धुंध और कोहरा ही दिखाई देता है। पत्थर की रक्षा करने वाले अजीबोगरीब राक्षस हैं, और इसके चारों ओर अजीबोगरीब कहानियां फैली हुई हैं। उस जादुई पत्थर को वहाँ इसलिए रखा गया था क्योंकि वह किसी तरह द्वीप के स्वामियों के हाथ लग गया था, जिन्होंने इसे अपनी मदद करने का एक जादुई तरीका समझा था। लेकिन इसके बजाय इसने उन्हें शाप दे दिया। मूर्ख!’ अनांसी खिलखिलाकर हँसी।
सिंदबाद ने कुछ नहीं कहा, हालांकि वह और अधिक जानने के लिए उत्सुक था।

वंडरस्टोन का दूसरा टुकड़ा अब आर्कटिक में स्थित एक प्राचीन पंथ के पास है, जो एक और भी प्राचीन सत्ता की रक्षा करता है। यह सत्ता इतनी आदिम और मौलिक है कि यदि कोई गलती से भी इसके वास्तविक रूप को देख ले, तो वह अंधा हो सकता है। यह पंथ वंडरस्टोन को एक ऐसी पट्टिका मानता है जो उनके अनुसार इस प्राचीन सत्ता से जुड़ी हुई है।
‘और तीसरा…’ अनांसी रुका। ‘क्या तुम सौदा करने के लिए तैयार हो, हे मनुष्य?’
'अगर आप चाहते हैं कि मैं आपको भागने में मदद करूं तो मैं कर दूंगा।'
नहीं, नहीं। मुझे जमानत चाहिए।
‘क्या?’ सिंदबाद असहज महसूस करने लगा।
अनांसी मुस्कुराया। ‘मैंने सुना है कि तुम एक औरत से प्यार करते हो। ससफीना, तुम्हारी साथी, है ना?’ वह पास आया और सिंदबाद को मरे हुए चूहों की गंध आने लगी। अचानक, बदबू और भी तेज हो गई। ‘अगर तुम मुझे अपने ऊपर जादू करने की इजाजत दोगे, तो तुम्हें मेरी मदद मिलेगी।’
‘जादू? क-किस तरह का जादू?’ सिंदबाद थोड़ा हैरान रह गया।
'जब तुम्हारा मिशन पूरा हो जाएगा, तो ससफीना तुम्हें भूल जाएगी। उसे तुम्हारी कोई याद नहीं रहेगी। जरा सी भी नहीं।'
सिन्बाद ने आंखें घुमाईं और अपनी बात को टालने की कोशिश की, उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। 'खैर, उसे तो पहले से ही कोई फ़र्क नहीं पड़ता, तो ऐसा नहीं है कि मेरा कुछ नुकसान हो रहा है।' उसने यह दिखाने की कोशिश की कि उसे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, लेकिन इस सोच से ही वह सचमुच डर गया था। वह नहीं चाहता था कि वह उसकी यादों से पूरी तरह मिट जाए, जहाँ उसे यह भी पता न हो कि वह कभी अस्तित्व में था।
लेकिन आपको परवाह है। और यही मेरे लिए मायने रखता है। उसकी याददाश्त वापस लाने का एकमात्र तरीका मुझे रिहा करना है।
सिन्बाद इस बारे में सोचने लगा। वह जानता था कि मिशन के बाद वह उसके बारे में उसकी यादें वापस लाने का कोई न कोई तरीका ढूंढ लेगा। सखर को हमेशा के लिए रोकने के लिए उसे यह जोखिम उठाना ही था।
‘ठीक है। मैं इसकी अनुमति देता हूँ।’
'शाबाश, मेरे दोस्त।'

क्या सिंदबाद को धोखा दिया गया था? उसे पक्का पता नहीं था, लेकिन इतना ज़रूर पता था कि हालात बहुत बिगड़ सकते हैं। चिंताजनक बात यह थी कि जैसे ही सिंदबाद अनांसी के जादू के आगे झुका, देवता के एक पैर के सिरे पर एक अजीब सा जला हुआ निशान दिखाई दिया, जिसका इस्तेमाल उसने सिंदबाद की बांह पर मकड़ी के जालों का टैटू बनाने के लिए किया, जो मकड़ी के पैरों के आकार में लिपटा हुआ था। सिंदबाद दर्द से कराह उठा। लेकिन उसने सोचा कि इससे भी ज़्यादा दर्दनाक होगा इसे अपने साथियों, खासकर मार्कस से छिपाना। एक धोखेबाज़ के साथ सौदा करने से उनमें से किसी को भी तसल्ली नहीं मिलने वाली थी।
जैसे-जैसे सिंदबाद इस बारे में और सोचने लगा, उसे इस सौदे में कोई खामी नज़र नहीं आई। वैसे भी, अगर सफीना मुझे भूल भी जाए तो उसे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। तो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा।
‘तो अब मुझे बताओ,’ सिंदबाद ने आग्रह किया। ‘चमत्कारिक पत्थर का तीसरा भाग।’
'कॉन्स्टेंटिनोपल, बीजान्टिन साम्राज्य का हृदय। एक युवा लड़का अपनी माँ की छत्रछाया में शासन करता है, और उसके मंदिरों में से एक में वह पत्थर है। वे इसे पवित्र मानते हैं, लेकिन वे निश्चित रूप से पत्थर की वास्तविक शक्ति को नहीं जानते।'
तीनों स्थान प्रकट हो गए। सिंदबाद को सखर से पहले वहाँ पहुँचना था। 'धन्यवाद। क्या अब आप मुझे खोल सकते हैं? मैं वापस जाना चाहता हूँ।'
‘मैं इससे भी बेहतर काम करता हूँ,’ अनांसी ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘मैं तुम्हें जगा दूँगा। आशा है कि हम फिर मिलेंगे, प्रिय मित्र। अलविदा।’ मकड़ी के एक पैर ने सिंदबाद के पेट पर ज़ोर से वार किया। उसने पलकें झपकाईं और खुद को अपनी कुटिया की धुंधली रोशनी में पाया, पसीने से तरबतर और हांफता हुआ। कई निगाहें उसे देख रही थीं।
अशरफिया मुस्कुराई। 'तुम जिंदा और सही सलामत बाहर आ गई, प्यारी! यह तो बहुत अच्छी खबर है।'
‘अनांसी ने क्या कहा?’ मार्कस ने धक्का-मुक्की करते हुए समूह के आगे बढ़ते हुए पूछा। ‘क्या उसने तुम्हें धोखा देने की कोशिश की?’
‘नहीं, नहीं, उसने मुझे कुछ बातें बताईं और बदले में मुझे भी उसे कुछ बातें बतानी पड़ीं। वह इस पूरे मामले में काफी दयालु था,’ सिंदबाद ने झूठ बोला।

‘वाह, ये तो अच्छी खबर है, नन्हे आदमी।’ मार्कस हँसा और उसके पेट में एक घूंसा मारा।
सभी लोग खुश हुए और डेक पर जश्न मनाने का फैसला किया, ताकि सिंदबाद को थोड़ा आराम मिल सके। कमरे में केवल हुसैन ही बचे थे, जो बाहर जाने ही वाले थे कि उन्होंने पूछा, 'सिंदबाद, क्या तुम ठीक हो? बिल्कुल?'
‘हां,’ उसने कहा, अभी भी उसे बहुत पसीना आ रहा था, ‘मैं पहले की तरह ही शानदार हूं।’
हुसैन मुस्कुराया। 'ठीक है... शाबाश।' वह धीरे से दरवाजा बंद करते हुए चला गया।
सिंदबाद ने दरवाजे की ओर पीठ कर ली और उसकी नज़र अपनी बांह पर पड़ी, जो उसके कुर्ते की आस्तीन से ढकी हुई थी। उसने उसे ऊपर उठाया और वहाँ वह था... उसकी गलती या उसका उद्धार, वह नहीं जानता था। यह एक अजीब, मकड़ी के जाले जैसा फूल था, जिस पर जाले की तरह क्रॉस-क्रॉस पैटर्न बने हुए थे।
मुझे उम्मीद है कि मुझे इसका पछतावा नहीं होगा।

सोलह
जहाज हिल रहा था और आगे बढ़ रहा था।
जब सिंदबाद बेहोशी से जागा, तो जहाज को रवाना होने का आदेश दिया गया क्योंकि वे बुयान द्वीप तक पहुँचने का रास्ता तलाश रहे थे। वे स्कैंडिनेविया जा रहे थे—कम से कम नक्शों के अनुसार—लेकिन उन समुद्रों में वाइकिंग्स नामक नए जमाने के समुद्री लुटेरे रहते थे। वे निर्दोष लोगों को मारने और कस्बों और गांवों को लूटने के लिए जाने जाते थे। स्कैंडिनेविया पहुँचने में बहुत अधिक समय लगेगा, और यह उन्हें सीधे खतरे के केंद्र में ले जाएगा। हालाँकि वाइकिंग्स के खलीफा के साथ अच्छे संबंध थे, फिर भी वे अपने क्षेत्र में किसी भी अनधिकृत जहाज को नहीं चाहते थे। भूगोल की शौकीन अशरफिया अपने कमरे में बंद होकर द्वीप तक पहुंचने का रास्ता ढूंढ रही थी। तब तक वे फारस की खाड़ी में तैरते-बहते रहे। सिन्बाद दूसरी मंज़िल पर बने भोजनालय में खाना खा रहा था। आज रात के खाने में भुना हुआ मांस और सब्ज़ियाँ थीं। सिन्बाद चुपचाप रोटी का टुकड़ा चबाते हुए सोच रहा था। उसने अनांसी के शपथ चिह्न को छिपाए रखा था, लेकिन उसे यह भी एहसास होने लगा था कि कुछ गड़बड़ हो गई है। क्या उसने सही किया था? उसे यकीन नहीं था। अनांसी ने इसे बहुत आसान बताया था। ज़रूरत से ज़्यादा आसान।
दो बेंच दूर, सफीना भी इसी तरह की खामोशी में बैठकर अपना भोजन कर रही थी। ‘क्या तुम ठीक हो?’ हुसैन अचानक प्रकट हुआ और उसके बगल में बैठ गया। ‘क्या तुमने और सफीना ने मामला सुलझा लिया?’
मुझे नहीं पता। मुझे नहीं लगता कि हम ऐसा करेंगे।
मुझे यह बचकाना लगता है। तो क्या हुआ, उसका कोई और प्रेमी था। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

‘सबसे पहले तो मैं एक बच्चा हूँ,’ सिन्बाद ने बचाव करते हुए कहा। ‘और दूसरी बात, मुझे उस बात पर गुस्सा नहीं है। मुझे इस बात पर गुस्सा है कि उसने हमारे रिश्ते को भुलाने का फैसला किया।’
‘हम सब ऐसा करते हैं।’ हुसैन ने अपने दोस्त की पीठ थपथपाई। ‘बचपन में हम जो करते हैं, उसे अक्सर भूल जाते हैं।’
'खैर, मुझे नहीं लगता कि हमें ऐसा करना चाहिए। मेरा मतलब है, अगर हम वो नहीं हैं जो हम पहले हुआ करते थे, तो हम कौन हैं?'
हम बड़े हो चुके हैं। और जीवन का यही अर्थ है - बड़ा होना। वह बड़ी हो गई है, लेकिन आप बड़ा होना नहीं चुन रहे हैं।
'हुसैन, मेरे दोस्त होने के नाते, तुम्हें मेरा समर्थन करना चाहिए,' सिन्बाद ने थोड़ा आहत होकर कहा।
‘और मैं हूँ। तो जाओ और उससे माफी मांग लो।’
सिंदबाद ने सिर हिलाया। 'मैंने कभी किसी बात के लिए माफी नहीं मांगी।' हुसैन के कुछ कहने से पहले ही सफीना उनके पास आ गई। उसने कुर्सी का पिछला हिस्सा पकड़ा और सिंदबाद की ओर संशय भरी नजरों से देखा।
'कैप्टन, क्या मैं आपसे कुछ बात कर सकता हूँ?'
‘आप इसे यहीं ले लीजिए, महोदया।’ सिंदबाद ने मुंह में रोटी भरे हुए खुशी से मुस्कुराते हुए कहा।
सफीना ने हुसैन की ओर देखा, जो असहज रूप से दूसरी ओर मुड़ गया लेकिन खाना खाता रहा।
मैं बस माफी मांगना चाहता हूं। मैंने आपके साथ बदतमीजी की।
‘ओह? कब से असभ्य?’ सिंदबाद ने पूछा।
सफीना ने उपहास उड़ाते हुए कहा, 'तो तुम इसे ऐसे ही खेलोगे?'
मुझे नहीं पता कि आप क्या कह रहे हैं, और न ही इसका कोई महत्व है।
सफीना ने आंखें घुमाईं। 'तुम ऐसे क्यों हो?'
सिंदबाद बहुत कुछ कहना चाहता था, लेकिन उसने सोच-समझकर शब्द चुने। 'क्योंकि तुम मेरी कैलिप्सो थीं'—वह रुका—'और अब तुम सिर्फ सफीना हो।' उसकी भौंहें तन गईं और होंठ खुल गए। सिंदबाद उसकी आँखों में यादें देख सकता था। 'मैं अब चलती हूँ,' उसने अंत में कहा और चली गई।
'कैलिप्सो क्या है?' हुसैन ने सिंदबाद के विचारों में उलझे रहने के बीच में ही सवाल पूछकर उसे रोक दिया।

‘यह हमारे बीच की बात है।’
‘तुम दोनों तो बिल्कुल ही अजीब हो, अपने इन बेतुके रहस्यों के साथ।’ हुसैन ने सिर हिलाया। ‘मुझे बसरा की याद आ रही है। शायद मुझे वहीं रहना चाहिए था। राक्षसों का शिकार करना और पैसे कमाना। और अब, हम दानवों और न जाने क्या- क्या करने लगे हैं! क्या पता यहाँ आना ही एक गलती थी?’
सिन्बाद ने सिर हिलाया। 'मुझे भी उसकी याद आती है। पुरानी जिंदगी की।'
‘तो फिर आप कप्तान क्यों बने? आपको जहाज की जरूरत नहीं है। आप इसके बिना भी ठीक हैं। इदरीस भी अच्छा कर रहा था। हम पीछे ही रह सकते थे।’
जब आपको पता चलता है कि कोई बड़ी बुराई मानवता के पतन की साजिश रच रही है, तो आप उसके खिलाफ कुछ करने के लिए खुद को जिम्मेदार महसूस करते हैं, है ना? हुसैन हँस पड़ा। 'यह सोचने वाली बात है। अपने दोस्तों को बचाना... लेकिन बार-बार अपनी जान जोखिम में डालना। मुझे नहीं लगता कि हम इसके लिए बने हैं।'
‘हुसैन, मुझे हमेशा से अपनेपन की चाहत रही है,’ सिन्बाद ने विलाप करते हुए कहा। ‘एक ऐसी जगह जहाँ मैं कह सकूँ—यह मेरा इलाका है। यह मेरा घर है। मेरे माता-पिता ने मुझे त्याग दिया, मेरा मालिक कट्टरपंथी था और मैं बिल्कुल अकेला था। कम से कम यहाँ मेरा एक उद्देश्य तो है। मैं यहाँ का हूँ।’
‘सच कहूँ तो, मैं यहाँ उसी वजह से भी हूँ,’ हुसैन ने धीरे से कहा। ‘अपने दिवंगत पिता को यह साबित करने के लिए कि मैं भी उनकी तरह एक योद्धा बन सकता हूँ—उनकी तरह महान बन सकता हूँ। लेकिन मैं अक्सर खुद पर संदेह करता हूँ।’ ‘बाहर तो बहुत से लोग हैं जो तुम पर शक करेंगे, तो क्यों अपनी ऊर्जा इसमें बर्बाद कर रहे हो? उन्हें करने दो।’ दोनों हंसने लगे तभी सिंदबाद ने दरवाजे पर मार्कस को देखा, जिसने उसे बाहर आने का इशारा किया। बाहर निकलते ही मार्कस ने दोनों को अशरफिया के घर की ओर जाने का निर्देश दिया।
'हमारी पिशाच दोस्त ने एक रास्ता ढूंढ लिया है। और वह इसे जल्दी कर सकती है। लेकिन एक समस्या है।'
सिंदबाद ने आह भरी। 'बेशक है।'
उन्होंने अशरफिया के दरवाजे पर दस्तक दी, जिस पर इतनी चेतावनियाँ लिखी हुई थीं कि वह किसी पिशाच के दरवाजे से ज़्यादा किसी किशोर के दरवाजे जैसा लग रहा था। 'अंदर आने से पहले दस्तक दे दो, वरना तुम पर सिर फोड़ने वाला जादू कर दिया जाएगा!' सिंदबाद हँसा।

उन्होंने अंदर प्रवेश किया तो देखा कि अशरफिया हवा में लटकी हुई थी, और उसके चारों ओर किताबें, कलम और स्याही की दवातें तैर रही थीं।
‘तो फिर बड़ी योजना क्या है? क्या हमें फिर से टेलीपोर्ट करना है?’ सिंदबाद ने पूछा।
मैंने काफी शोध किया और पाया कि मेरे पास बयान के सटीक निर्देशांक तो नहीं हैं, लेकिन मैं आप सबको वहाँ यूँ ही नहीं ले जा सकती। पर एक उपाय है।’ वह मुस्कुराई। ‘ऐसा कुछ जिससे हमारा पूरा जहाज वहाँ पहुँच जाएगा।’
'मुझे तो यह तरीका बहुत पसंद है। मैं ध्यान से सुन रहा हूँ। आप किस तरह के टेलीपोर्टेशन मंत्र के बारे में सोच रहे हैं?'
‘हम टेलीपोर्ट नहीं करते।’ वह मुस्कुराई। ‘हम उड़ते हैं।’

सत्रह
'उड़ना?'
'हां, उड़ो,' अशरफिया ने हवा में दीवार के सहारे झुकते हुए कहा।
दोनों अपनी बातचीत को डेक पर ले गए थे। बाकी के क्रू मेंबर भी उनके साथ शामिल हो गए थे।
‘मुझे नहीं लगता कि यह एक समझदारी भरा फैसला है,’ सिन्बाद ने जवाब दिया। ‘मुझे लगता है कि हमें समुद्र में ही रहना चाहिए।’
'समुद्र में कोई मज़ा नहीं है, मेरी जान।'
‘यह मजे की बात नहीं है! यह सुरक्षा की बात है। हमने ऐसा पहले कभी नहीं किया है। अगर... अगर कोई गिर जाए तो क्या होगा?’
अशरफिया ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'यह उनकी गलती है।'
‘यह कोई जवाब नहीं है।’ सिंदबाद ने इदरीस की ओर देखा; वह अधिक जिम्मेदार थी, जबकि सिंदबाद आमतौर पर ऐसा नहीं होता था।
अशरफिया ने उसके कंधों पर हाथ रखा। 'ठीक है, ध्यान से सुनो, प्यारे। भले ही हमारे पास एल्फवुड है, हम इससे ज़्यादा तेज़ी से नहीं चल पाएंगे।'
‘पोर्टल खोलने के बारे में क्या ख्याल है?’ इदरीस ने पूछा।
“मेरी प्यारी महिला, यह पोर्टल कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे मैं अपनी खूबसूरत पीठ से झटपट निकाल सकूँ। इसमें समय लगता है, और हालाँकि हम कम दूरी के लिए ऐसा कर सकते थे, लेकिन हम स्कैंडिनेविया की बात कर रहे हैं। वह ज़मीन बहुत दूर है! और वो भी बिना सटीक निर्देशांकों के। क्या होगा अगर कोई दूसरा पोर्टल खुल जाए और हम फिर से रेगिस्तान में पहुँच जाएँ? मेरे हिसाब से, समुद्र के रास्ते वहाँ पहुँचने में लगभग पच्चीस दिन लगेंगे, जबकि हवाई मार्ग से हम—उसने ताली बजाई—“पाँच दिन” में पहुँच सकते हैं।” वे सब चुप हो गए।

'मुझे पता है, यह बेतुका लगता है, और तुम कप्तान हो, प्यारी, लेकिन मेरी बात मानो—मैंने हर दूसरी संभावना पर विचार करने की कोशिश की है, और केवल यही एक समझ में आती है।'
'मुझे यह पसंद नहीं है,' सिंदबाद ने सिर हिलाते हुए कहा।
'मुझे पता है। लेकिन यही हमारा एकमात्र मौका है। कप्तान होने का मतलब है कठिन निर्णय लेना, वो निर्णय जो इस समय के लिए सही हों।'
सिंदबाद ने कभी सोचा भी नहीं था कि उसकी बचपन की पत्र-सहेली उसे इतनी समझदारी भरी सलाह देगी। पिछले कुछ महीनों में वह तेज़ी से परिपक्व हो गई थी। पहले वह पैसों के लिए कुछ भी कर सकती थी, बिल्कुल भाड़े की सैनिक की तरह। लेकिन अब, हालांकि वह खुलकर दिखाना नहीं चाहती थी, वह अपने साथियों की परवाह करने लगी थी। हालात तब पूरी तरह बदल गए थे जब सिंदबाद और इदरीस ने भाई केन के बड़े धोखे के बाद उसे जान से मारने से बचाया था।
‘मैं भी जहाज पर सवार बाकी सभी लोगों की तरह खलीफा से माफी पाना चाहती हूँ,’ उसने धीमी आवाज़ में कहा ताकि सिर्फ सिंदबाद ही सुन सके। ‘मैं एक आज़ाद औरत की तरह जीना चाहती हूँ। मैं गुलाम, पत्नी, एजेंट या जासूस बनकर थक चुकी हूँ। एक पिशाच होने के नाते, मैं पहले से ही दोषी हूँ, लेकिन यह माफी मुझे एक सामान्य जीवन जीने का मौका दे सकती है—हाँ, जितना एक पिशाच जी सकता है। शायद शादी कर लूँ और बच्चा पैदा कर लूँ।’
सिन्बाद ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। उन सभी के मन में आगे बढ़ने के सपने थे, जबकि वह केवल वर्तमान में ही आनंद लेना चाहता था। उसने इदरीस की ओर देखा। 'यही तुम्हारे पति को बचाने का एकमात्र तरीका है।'
इदरीस ने अपनी मुट्ठी भींच ली। 'ठीक है, लेकिन अगर कोई मर जाता है, तो पिशाच को जादू को वापस लेना होगा।'
अशरफिया ने आंखें घुमाईं लेकिन सिर हिलाया।
‘आगे बढ़ो, शुरू करो,’ सिन्बाद ने निर्देश दिया।
वैम्पायर पीछे हट गया और मंत्र जपने लगा।
उसकी हथेलियों के ऊपर बैंगनी रंग के गोले बनने लगे। 'चलो, चलो...' वह बुदबुदाई।
वे गोले समूह के चारों ओर उड़ने लगे और जहाज के डेक पर उछलने लगे। वे जहाज की लकड़ी के आर-पार निकल गए, मस्तूल से हवा की तरह गुज़रे और अंत में चालक दल के सदस्यों के शरीरों के बीच से निकल गए।

जहाज़ तेज़ी से हिलने लगा और सिंदबाद को मस्तूल को कसकर पकड़ना पड़ा, उसने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं। उसे लहरों के टकराने की आवाज़ सुनाई दे रही थी, लेकिन जब सिंदबाद ने चट्टान के नीचे देखा, तो उसने पाया कि वे हवा में तैर रहे थे और पानी उनसे बहुत नीचे था।
उसने अशरफिया की ओर देखा, जो अब हवा में तैर रही थी। उसका चेहरा विकृत था और आँखें बंद थीं। बैंगनी रंग के गोले तेज़ी से उसके अंदर-बाहर आ-जा रहे थे।
जहाज आसमान में और ऊपर उठता चला गया। जल्द ही वे बादलों से घिर गए। सब लोग खुशी से चिल्लाने लगे, एक-दूसरे की पीठ थपथपाने लगे और हंसने लगे। सिन्बाद मुस्कुराया, यह समझते हुए कि अशरफिया ने अभी-अभी क्या उपलब्धि हासिल की है। 'मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं यह दिन देखूंगा।' अशरफियाह अचानक होश में आई और धीरे-धीरे नीचे उतरने लगी। 'मुझ पर भरोसा करने के लिए धन्यवाद।'
‘कप्तान होने का मतलब है अपने दल पर भरोसा करना। भले ही वे खुद पर भरोसा न कर पाएं या उनमें कमियां हों,’ उन्होंने धीरे से कहा। ‘पाल खोलो और हवा का रुख देखो। हम उत्तर की ओर चल रहे हैं,’ उन्होंने अपने आदमियों को आदेश दिया।
‘कहाँ जाना है?’ नाविकों में से एक ने पूछा।
‘नॉर्डिक द्वीपों के पास स्थित बुयान द्वीप की ओर।’ वह मुस्कुराया। ‘और उम्मीद करते हैं कि हमें वाइकिंग्स से लड़ना न पड़े।’

अठारह
उन्हें द्वीप समझकर वहां पहुंचने में पांच दिन के बजाय चार दिन लगे।
ऊपर से देखने पर, धुंध से ढका द्वीप उनकी कल्पना से कहीं छोटा लग रहा था। सिंदबाद ने पिछले कुछ दिनों में नक्शों का अध्ययन किया था और हर जगह द्वीपों को घने कोहरे से ढका हुआ दिखाया गया था। यहां तक कि अरब यात्रियों और इतिहासकारों के वृत्तांतों में भी यह उल्लेख था कि द्वीप हमेशा एक घने, अलौकिक कोहरे से घिरा रहता था।
अब, सिंदबाद ने जहाज को वापस समुद्र में खड़ा कर दिया था, और सौभाग्य से, वे आसानी से नीचे आ गए थे। अशरफिया का जादू कारगर साबित हुआ था।
वह अपनी झोपड़ी में अपने कागजात देख रहा था और प्रेसा और हुसैन से बात कर रहा था।
हुसैन ने अपनी किताब का पन्ना पलटते हुए कहा, 'मुझे विश्वास नहीं हो रहा। बुयान द्वीप पर कई मौतें और गुमशुदा लोगों के मामले हुए हैं। पड़ोसी द्वीपों के लोगों ने डरावनी आवाज़ें सुनी हैं जो अजीब जानवरों की आवाज़ों जैसी लगती हैं। यहाँ एक अजगर को भी देखा गया है। एक समय था जब व्यापारी यहाँ आकर अपनी दौलत बढ़ाते थे, क्योंकि यहाँ लौह अयस्क के विशाल भंडार थे।' सिंदबाद खिलखिलाकर हँसा। 'यहाँ कोई ड्रैगन नहीं हैं।'
'तो आप यह सोचते है।'
मतलब, बहुत समय पहले हुआ करता था। अब उनका अस्तित्व नहीं है। भगवान निनुर्ता द्वारा उनमें से अधिकांश को मार डालने के बाद वे विलुप्त हो गए। वे उस समय बहुत खतरनाक थे। अंडे देने के लिए भी जाने जाते थे।
हुसैन इस विचार मात्र से ही कांप उठा।
'कैप्टन बॉय, तुम सावधान रहना। मुझे इस बारे में कुछ बुरा महसूस हो रहा है।'

सिंदबाद ने अपनी तलवार और कुछ जेब में रखे चाकू म्यान में रख लिए। उसने अपना कुर्ता पहना, जिस पर सेल्टिक प्रतीक बने हुए थे, जो जादुई हमलों से बचाव का काम करते थे, और अपना थैला कंधे पर टांग लिया।
'क्या आप वाकई नहीं चाहते कि हम आपके साथ चलें?'
नहीं। साखर शायद यहाँ आएगा, और मैं चाहता हूँ कि तुम उसे रोको। या फिर वाइकिंग्स को।
‘मैं वाइकिंग्स को देखना चाहता हूँ।’ प्रेसा उत्साहित लग रहा था। ‘मैंने उनके बारे में कुछ अजीब बातें सुनी हैं। वे लोगों को मारते हैं और राक्षसों की तरह बोलते हैं।’
सिंदबाद हँस पड़ा। 'मुझे नहीं लगता कि यह सच है। वे इंसान हैं। बस लड़ने में माहिर हैं।'
‘अरे, तुम्हें तो हमेशा सब कुछ बिगाड़ना ही होता है।’ प्रेसा ने अपनी बाहों को अपनी छाती के चारों ओर लपेट लिया।
‘क्या आप मुझे थोड़ा बता सकते हैं कि आगे क्या होने वाला है?’ सिंदबाद ने युवा भविष्यवक्ता से पूछा।
मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा। मैं कोशिश कर रहा हूँ, लेकिन अंदर से बिल्कुल खालीपन महसूस हो रहा है। मुझे थोड़ा समय दीजिए। मैं ध्यान करूंगा, खुद को तरोताजा करूंगा और फिर से सक्रिय हो जाऊंगा।
मुझे उम्मीद है कि आप ऐसा करेंगे। आप ही हमारी एकमात्र उम्मीद हैं। आपके बिना, हमें पता ही नहीं चलेगा कि हमारा क्या होगा।
दरवाजे पर दस्तक हुई और सफीना ने अंदर झाँका।
मुझे उम्मीद है कि मैंने आपको परेशान नहीं किया होगा।
'हम निश्चित रूप से इस बारे में बात नहीं कर रहे हैं कि आप दोनों एक दूसरे को नजरअंदाज कर रहे हैं,' प्रेसा ने मुस्कुराते हुए घोषणा की।
सफीना का चेहरा लाल हो गया। सिंदबाद का चेहरा भी लाल हो गया और उसने प्रेसा को गुस्से से घूरना शुरू कर दिया।
सफीना ने जल्दी से कहा, 'मैं दखल नहीं देना चाहती, लेकिन सिंदबाद, तुम्हें यह देखना होगा।'
सिन्बाद डेक की ओर बढ़ा, हुसैन और प्रेसा उसके पीछे-पीछे चल रहे थे, और वहाँ उसने चालक दल को भय से मुंह खोले हुए पाया।

सामने द्वीप था, यह तो निश्चित था। लेकिन वह द्वीप न केवल घने कोहरे से घिरा हुआ था, बल्कि उसके चारों ओर एक दर्जन से अधिक जहाजों का मलबा भी बिखरा हुआ था। पानी मलबे से भरा हुआ था। केवल नाव ही उन्हें सुरक्षित रूप से किनारे तक ले जा सकती थी।
‘यहाँ क्या हुआ?’ सिंदबाद ने बुदबुदाते हुए कहा।
उनके चारों ओर ठंडी हवा चल रही थी, और इसके साथ ही अकेलेपन और निराशा का एहसास भी हो रहा था। सिंदबाद को अंदर से अजीब सा खालीपन महसूस हो रहा था। ‘क्या आप बिल्कुल निश्चित हैं कि आप नहीं चाहते कि मैं आपके साथ जाऊं?’ इदरीस ने चिंतित होकर पूछा।
‘मैं चाहता हूं कि तुम यहीं रहो। सखर अभी तक नहीं पहुंचा है, जो अच्छी बात है।’
'या फिर वह दूसरे वंडरस्टोन हासिल कर रहा होगा,' इदरीस ने सुझाव दिया। 'हां। वही। लेकिन अगर हमें दो वंडरस्टोन भी मिल जाएं, तो वह हमारे लिए जीत होगी।'
‘इसकी चिंता मत करो।’ अशरफिया अब उसके बगल में खड़ी थी। ‘सखर ने किसी भी पत्थर को नहीं छुआ है।’
और आपको कैसे पता चलेगा?
जब आपने मुझे पत्थरों के स्थान के बारे में बताया, तो मैंने उन क्षेत्रों में रहने वाले अपने परिचित शैतानों से संपर्क किया। उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें कहीं देखा नहीं गया है। इसलिए हम एक कदम आगे हैं।
सिंदबाद मुस्कुराया। 'बहुत बढ़िया। तो क्या हम चलें, मेरी महिला?'

सिन्बाद और अशरिफ़ियाह, मार्कुस के दो आदमियों के साथ नाव में बैठे थे, जब नाव को कीचड़ भरे समुद्र में उतारा गया। वे सावधानीपूर्वक चप्पू चलाते हुए द्वीप की ओर बढ़े, टूटे हुए जहाजों के पास से गुज़रते हुए। उन्होंने मलबे में कंकाल और टुकड़े देखे—पानी फूले हुए, सड़ते हुए शवों से भरा हुआ था जो टूटे हुए मस्तूलों और ढाँचों से चिपके हुए थे।

‘मैं आना नहीं चाहती थी,’ अशरफिया ने घबराकर कहा। ‘मुझे नहीं पता कि आप मुझे क्यों ले जा रहे हैं।’
चलो, सब ठीक हो जाएगा।
अशरफिया ने पलकें झपकाईं, वह आश्वस्त नहीं थी।
‘मैं आपसे कुछ पूछना चाहता था,’ सिन्बाद ने कहा। ‘कुछ दिन पहले आपने कहा था कि आपको माफ़ी चाहिए। मैं जिस अशरफ़िया को जानता हूँ, उसे प्यार और शादी जैसी बातों से कोई मतलब नहीं है। वह अपनी शर्तों पर जीना पसंद करती है, हमेशा स्वतंत्र और लोगों से अलग-थलग रहती है। तो फिर माफ़ी किसलिए चाहिए?’ अशरफिया ने अपने होंठ चाटे। 'क्या एक औरत के पास राज़ नहीं हो सकते?'
अरे, मैं बस पूछ रही थी। मुझे लगा कि हम दोस्त हैं।
‘और हम हैं। लेकिन मेरी अपनी निजी जिंदगी भी है।’
‘कैसी जिंदगी? तुम तो महीनों से हमारे साथ हो।’
'और मुझे हर दिन इस बात का अफसोस होता है, मेरे प्यार। कभी-कभी मुझे पैसे के लिए काम करना याद आता है, भावनाओं के लिए नहीं,' उसने कराहते हुए कहा। ‘वाह, आपको हम पसंद हैं,’ सिंदबाद ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘लेकिन मुझे लगता है कि आपको रसोइए की बेटी भी पसंद है।’
उसने भौंहें ऊपर उठाईं और उसका चेहरा लाल हो गया। 'क्या?'
'मैं इस जहाज का कप्तान हूं, मेरी प्रियतमा। मुझे सब कुछ जानने की आदत है।' अशरफिया ने कोई जवाब नहीं दिया। वे चुपचाप किनारे की ओर बढ़े। पुरुष नाव में ही उनके लौटने का इंतज़ार करते रहे, तभी उन दोनों को एक पुल दिखाई दिया। उन्होंने पुल पार किया तो देखा कि पेड़ों के झुरमुटों के पार, दूसरी तरफ किनारे पर एक जर्जर जहाज़ टूटा पड़ा था।
‘हे भगवान, यहाँ क्या हुआ?’ अशरफिया ने कहा। ‘देखो, वहाँ एक झंडा है।’
मुझे लगा कि तुम पिशाच हो और तुम गाली नहीं दे सकते।
‘मैं एक धार्मिक पिशाच हूँ।’ उसने आँखें घुमाईं।
क्या ऐसा भी कुछ होता है?
अशरफिया ने कंधे उचका दिए।
सिंदबाद ने झंडे को देखा। उस पर कौवे का चिन्ह बना हुआ था। और उसका डंडा सरकंडे का बना था। यह कोई बहुत उन्नत नौसैनिक प्रणाली नहीं थी क्योंकि यह...

‘वाइकिंग्स।’ अशरफिया ने सिंदबाद के विचार को पूरा किया। ‘उनके नेता के पास यह झंडा है। लेकिन वे यहाँ क्या कर रहे थे?’
‘मुझे लगता है कि तुम पत्थर की तलाश कर रहे हो,’ सिंदबाद ने कहा। ‘मुझे उम्मीद है कि समय के साथ पत्थरों का रूप नहीं बदला होगा। नहीं तो उन्हें ढूंढना बहुत मुश्किल होगा।’
‘सिनबाद,’ अशरफिया ने धीमी आवाज़ में कहा। ‘इस मामले में मैं भी तुम्हारी ही तरह नासमझ हूँ, और मुझे यह पसंद नहीं है। लेकिन... लेकिन मुझे यहाँ किसी बड़ी त्रासदी का आभास हो रहा है। कुछ हुआ है, और मुझे नहीं पता क्या—’
एक तीखी चीख ने उसकी बात काट दी।
सिन्बाद और अशरफिया ने एक-दूसरे को देखा और फिर तलवारें निकालकर शोर की ओर दौड़ पड़े, पिशाच की उंगलियां ऊर्जा से चटक रही थीं। वे घनी झाड़ियों से होते हुए भागे और उनकी नज़र तीन बौनों जैसे जीवों पर पड़ी जो एक नाविक जैसे दिखने वाले व्यक्ति पर हमला कर रहे थे। सिन्बाद ने देखा कि बौनों के सिर गंजे थे और पेट फूले हुए थे। उनके पैर पीछे की ओर मुड़े हुए थे और यह भी सबसे भयानक बात नहीं थी। सबसे भयानक तो उनके असामान्य रूप से बड़े जबड़े और विशाल दांत थे।
नाविक अपनी पूरी ताकत से उन जीवों से लड़ रहा था, लेकिन उसकी आँखों में डर साफ झलक रहा था। वह रोया और उनसे दया की भीख माँगी, पर वे जीव बस हँसते रहे। ऐसा लग रहा था मानो वे अपने शिकार के साथ मज़ा ले रहे हों। अंत में, पेट पर एक ज़ोरदार वार से उसकी मौके पर ही मौत हो गई।
‘यहाँ भूत-प्रेत क्या कर रहे हैं? इन्हें तो आम तौर पर मामूली कामों के लिए गुलाम के रूप में इस्तेमाल किया जाता है,’ अशरफिया ने फुसफुसाते हुए कहा। सिन्बाद ने आगे कुछ नहीं सुना और उनकी ओर दौड़ते हुए अपनी तलवार से एक जिन्न के पैर काट दिए, तभी दूसरा जिन्न अपने नुकीले पंजों के साथ उस पर झपटा। सिन्बाद ने उस पर झपट्टा मारा और उसके पेट पर वार किया, जिससे खून और आंतें ज़मीन पर बिखर गईं। वह वहीं मर गया।
तीसरा जिन्न अचानक रुक गया और कांपते हुए और रोते हुए हार मानकर सिंदबाद के सामने घुटने टेक दिए।
‘मैं जानना चाहता हूँ कि तुम यहाँ क्यों हो,’ सिंदबाद चिल्लाया।

‘वे...वे वाइकिंग्स...वे पत्थर लेने के लिए हमारा इस्तेमाल करते हैं। वे हमें गुलामों की तरह मानते हैं। हम उनके लिए कोई खतरा नहीं हैं। हम उनसे बदला लेंगे,’ गोब्लिन चिल्लाया।
‘वह पत्थर? कौन सा पत्थर?’
‘इलाज। उनका दुष्ट राजा। उसे पत्थर चाहिए। वह अभी भी यहीं है। सब पर राज करने के लिए।’
'राजा?'
जब उस जिन्न ने सिंदबाद को बताया कि वह कौन है - एक ऐसा नाम जो नरसंहार, रक्तपात और हर प्रकार की हिंसा का पर्याय है - तो सिंदबाद की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई।
मुझे खेद है, मैंने तुम्हारे दोस्तों को मार डाला। मुझे लगा कि तुम... मैं गलत था। मेरे पास यहाँ एक नाव है। मेरे आदमी तुम्हें निकटतम द्वीप पर छोड़ देंगे। जब तक मौका है, यहाँ से निकल जाओ।
गोब्लिन ने सिर हिलाया। उसने अपने थैले में अपने दोस्तों के अवशेष उठाने शुरू किए। ऐसा करते समय, कटा हुआ सिर बाहर निकला और उसे देखकर मुस्कुराया। सिंदबाद को लगभग उल्टी आ गई। गोब्लिन को हराना मुश्किल था, लेकिन उनके अंगों को काटकर उन्हें वश में किया जा सकता था, हालांकि बाद में यह एक भयानक दृश्य होता था।
जब सिन्बाद वापस अशरफिया के पास आया तो उसने उससे पूछा, 'क्या हुआ?' सिन्बाद ने जवाब दिया, 'तुम्हारा चेहरा पीला पड़ गया है।'
खैर, वाइकिंग्स हमसे पहले यहाँ पहुँच गए थे।
'हां, मुझे पता है। हमने जहाज़ का मलबा और झंडा देखा। और इसमें क्या समस्या है?'
‘नहीं। यह सिर्फ एक समस्या नहीं है। हमारे सामने एक बहुत बड़ी विपत्ति है क्योंकि उनका नेता यहाँ है। मुझे यकीन है कि आपने उसके बारे में सुना होगा,’ सिंदबाद ने कहा। ‘रग्नार लोथब्रोक।’

उन्नीस
यह द्वीप सिंदबाद की उम्मीद से कहीं अधिक एकांत साबित हो रहा था। जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, वे मानव जीवन से और भी दूर होते चले गए। ऐसा लग रहा था मानो वे किसी दूसरी दुनिया में आ गए हों और सिंदबाद एक अजीब सी अनुभूति से उबर नहीं पा रहा था जो उसे जकड़ रही थी। उन्हें यह भी नहीं पता था कि वे कहाँ जा रहे हैं, बस इतना पता था कि उन्हें वह पत्थर ढूंढना है।
वे द्वीप के केंद्र में पहुंचे, जहां मलबे के बीच टूटे हुए टावर खड़े थे।
सिन्बाद टेढ़ी-मेढ़ी शाखाओं वाले आपस में लिपटे पेड़ों के नीचे खड़ा था।
कोहरा घना होता जा रहा था, रात ठंडी होती जा रही थी। 'हमें कुछ समय के लिए आराम करना चाहिए। हालात बिगड़ते जा रहे हैं,' सिन्बाद ने कहा।
तभी दूर से एक अजीब जानवर की दहाड़ सुनाई दी।
अशरफिया ने घूंट भरा और सिर हिलाया।
‘हमें और लोगों की मदद लेनी चाहिए थी।’ सिंदबाद ने अफसोस जताया।
नहीं, सिंदबाद। इससे इस शापित द्वीप पर मौजूद किसी भी चीज़ का ध्यान और अधिक आकर्षित हो जाता।
वे एक मीनार में शरण लेने ही वाले थे कि तभी उनके सामने के जंगल से एक ज़ोरदार सरसराहट की आवाज़ आई और कोई चीज़ उनकी ओर तेज़ी से बढ़ी। सिंदबाद ने अशरफिया को खतरे से बचा लिया।
सिंदबाद लड़खड़ाते हुए उठा और देखने लगा कि उन पर हमला किसने किया था। वह स्तब्ध था और उसकी आँखों में पानी आ गया था।
एक अजगर!
किंवदंती में वर्णित जितने विशाल तो नहीं थे, लेकिन फिर भी एक अजगर थे।
उनके शरीर पर कठोर शल्क थे और मुँह के पास लंबी मूंछें थीं। उनका जबड़ा अपेक्षाकृत लंबा था, कान दांतेदार थे और पंजे बड़े थे। लेकिन बड़े, पूर्ण विकसित अजगरों के विपरीत, उनके पंख उड़ने के लिए पर्याप्त बड़े नहीं थे।

और भले ही वह प्राणी एक छोटे बच्चे जैसा लग रहा था, लेकिन वह इतना बड़ा था कि सिंदबाद को एहसास हो गया कि उन्हें अपनी जान बचाने के लिए भागना होगा। ‘यह क्या बकवास है?’ अशरफिया चिल्लाई।
‘जो भी हो, यह हमारी ओर बढ़ रहा है। और इसे आगंतुक पसंद नहीं हैं। तो क्या हम अब टावर पर जा सकते हैं?’
लेकिन जैसे ही उन्होंने भागने की कोशिश की, अजगर उनकी ओर दौड़ा और अपनी पूंछ को तेज़ी से घुमाते हुए सिंदबाद की छाती पर ज़ोर से वार किया। वह दूर जा गिरा और लगभग एक पेड़ के तने से टकराकर बेहोश हो गया।
सिन्बाद ने होश संभाला और देखा कि अशरफियाह जादू करने लगी है। उसकी उंगलियों से बैंगनी रंग की ऊर्जा निकली। उस प्राणी ने अपनी लंबी पूंछ से उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन जादू उस पर लगातार बरस रहा था। अजगर चीखा और दहाड़ा। और अचानक उसके मुंह से आग की लपटें निकलने लगीं।
अशरफिया बच निकली, लेकिन उसके बाल और वस्त्र झुलस गए। सिंदबाद चुपचाप अजगर के पीछे चला गया, धीरे-धीरे उसके पैरों के नीचे सरकते हुए, उसकी नज़रों से ओझल हो गया। जैसे ही वह अशरफिया के पास पहुँचा, उसने झट से उसका हाथ पकड़ लिया।
हम यह मैच नहीं जीत सकते। अंदर जाओ!
वे टावर में घुस गए और खुद को अजगर से बचाने के लिए अंदर बंद कर लिया। ‘उसने मेरे खूबसूरत बाल जला दिए! मैं उसे तड़पा-तड़पा कर मार डालूंगी,’ वह चीखी।
'हाँ, ठीक है, इससे मेरी रीढ़ की हड्डी टूट गई। तो मुझे लगता है कि हम दोनों को बराबर नुकसान हुआ है,' उसने आँखें घुमाते हुए कहा।
उन्होंने उस प्राणी की चीखें और दहाड़ें सुनीं, फिर वह शांत हो गया। ऐसा लगा जैसे अजगर चला गया हो।
‘अजगर ने मीनार पर हमला क्यों नहीं किया?’ सिंदबाद ने मन ही मन सोचा। ‘हमारे लिए शुभकामनाएँ।’
नहीं। एक बात तो मैं जानती हूँ, हम इतने भाग्यशाली नहीं हैं।
अशरफियाह ने कुछ सुनने की बजाय सीढ़ियाँ चढ़ना शुरू कर दिया। सिंदबाद भी उसके पीछे-पीछे मीनार की सबसे ऊपरी मंजिल तक गया, जहाँ एक शानदार पुस्तकालय ने उनका स्वागत किया। चिमनी के ऊपर एक चित्र टंगा हुआ था।

घुंघराले बालों और लाल दाढ़ी वाले आदमी के चित्र के नीचे खुदी हुई लिखावट को पढ़ते हुए अशरफिया ने कहा, 'गराफेना। बड़ा आकर्षक... तुम्हें पता है, सिंदबाद। इस जगह में बहुत सारी त्रासदी समाई हुई है। यहाँ की दीवारों और ज़मीन में बहुत सारा इतिहास समाया हुआ है। मैं इसे अपनी रग-रग में महसूस कर सकती हूँ।' वह मेज की ओर बढ़ी और दराजों में रखे पत्रों को देखने लगी। 'वह नोवोगोराड का एक जागीरदार था। वह अपने राज्य से इस द्वीप पर लौह अयस्क की आपूर्ति की देखरेख करने आया था, और वह अकेला नहीं था। वह अपने एक मित्र, एक अन्य जागीरदार - गगाना के साथ आया था।'
‘दिलचस्प है, अशरफिया,’ सिन्बाद ने उसे खुश करने के लिए कहा। उसने टेक लगाने के लिए एक कोना ढूँढा। ‘मुझे इसके बारे में और बताओ।’ उसने आँखें बंद कर लीं, सोने के लिए तैयार।
‘आप मेरी बात को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं, है ना? यहाँ बहुत दुख है। मैं आपको बता रहा हूँ।’
अगर तुम मुझे आराम नहीं करने दोगे तो तुम्हें और भी ज्यादा दुख झेलना पड़ेगा।
‘तुम तो हमेशा की तरह आकर्षक हो। और रसोइए की बेटी के बारे में तुम्हारी बात बिल्कुल सही थी।’
सिंदबाद की आंखें झट से खुल गईं। 'मुझे और बताओ।'
‘तुम्हें देखो। अब तो तुम्हें जानकारी की सख्त जरूरत है।’
'अच्छा, खैर, यह एक ऐसा विषय है जिसमें मेरी रुचि है।'
‘अभी तो रसोइया मुझे पसंद नहीं करता, क्योंकि मैं एक औरत हूँ और उसकी बेटी भी। उसे हमारे बीच का प्यार मंज़ूर नहीं है। उसे लगता है कि यह स्वाभाविक नहीं है।’ उसने कंधे उचकाते हुए कहा, ‘मुझे परवाह नहीं। मैं उसके साथ भाग जाना चाहती हूँ। इसीलिए तो मुझे माफ़ी चाहिए। खलीफ़ा की कृपा से मैं बिना किसी सवाल के कहीं भी जा सकूँगी। उसके साथ आरामदेह और खुशहाल ज़िंदगी जी सकूँगी।’
सिंदबाद मुस्कुराया। 'मुझे तुम्हारे लिए खुशी है... लेकिन इसका मतलब है कि तुम चले जाओगे।'
'बेशक, मेरी जान। तुमने क्या सोचा था? कि हम हमेशा साथ रहेंगे? अंत में, बस तुम और जहाज ही होंगे।'

सिन्बाद जानता था कि वह मज़ाक कर रही है, लेकिन उसे धीरे-धीरे यह एहसास होने लगा था कि जिस परिवार से वह जुड़ा हुआ था, वह हमेशा उसके साथ नहीं रहेगा। दिन के अंत में हर किसी को एक सहारे की ज़रूरत होती है। हर कोई एक ऐसे साथी को चाहता है जिससे वह बातें कर सके, हँस सके, अपने राज़ बाँट सके। दुर्भाग्य से, उसके लिए, वह साथी अब उसे पसंद नहीं करता था।
अशरफिया ने दीवारों के किनारे लगी अलमारियों की ओर रुख किया और उनमें से किताबें निकालने लगी।
‘यहाँ कुछ है,’ उसने अचानक कहा। ‘अलमारियों के पीछे एक दरवाजा है। क्या आप देखना चाहेंगे?’
सिंदबाद जानता था कि वह उसे रूठने या सोने नहीं देगी, इसलिए उसने अलमारियों से और किताबें हटाने में उसकी मदद की, ताकि छिपा हुआ कमरा पूरी तरह से दिखाई दे। वे दरवाज़े से अंदर चले गए। वहाँ एक आरामदायक पलंग और ठंडा संगमरमर का फर्श था।
‘इस कमरे में प्यार की महक फैली हुई है। यह इस शांत वातावरण में अलग ही नज़र आता है। क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता, सिंदबाद? कमरे में सब कुछ सरल लगता है, फिर भी... किसी तरह से नहीं।’
अशरफिया अध्ययन के लिए कुछ पत्रिकाओं और दस्तावेजों को गुप्त कमरे में ले गई, जबकि सिंदबाद एक आरामदायक बिस्तर पर लेट गया।
'उसके साथ रहने का फैसला करना, क्या आपको डराता है?'
अशरफिया ने नोट्स से नज़रें नहीं हटाईं। “बिल्कुल। मुझे तो यह भी नहीं पता कि मैं उससे हमेशा प्यार कर पाऊँगी या नहीं... वह भी नश्वर है, इसलिए एक दिन उसकी भी मृत्यु होगी। तो हाँ, यह मुझे डराता है। कभी-कभी तो मैं बिल्कुल असहाय महसूस करती हूँ।” उसने कंधे उचकाते हुए कहा, “शायद एकपत्नीत्व मेरे लिए नहीं बना है।”
‘क्या आपको प्रतिबद्धता संबंधी समस्याएं हैं?’
'लगता तो यही है, है ना? सिंदबाद, मुझे जन्म से ही त्याग दिया गया है और प्यार नहीं मिला। मेरे सौतेले पिता क्रूर थे, मेरे जन्मदाता पिता ने मुझे त्याग दिया... इस लंबे जीवन में मुझे कभी कोई ऐसा प्यार या दोस्ती नहीं मिली जो कायम रखने लायक हो। यहाँ सब कुछ समस्याओं से भरा है।'
‘वाह! इसके लिए धन्यवाद!’ उसने आँखें घुमाईं। ‘अरे! बच्चों जैसी हरकतें मत करो। लोग किसी न किसी कारण से एक साथ आते हैं,’ उसने नरमी से कहा। ‘जीवन के

इस दौर में हम सभी को एक-दूसरे की ज़रूरत है, इसीलिए हम सब यहाँ साथ हैं। हर कोई आखिरकार चला जाता है।’ अशरफ़िया ने उदास मुस्कान दी। ‘कभी-कभी मुझे लगता है कि इस दुनिया में प्यार जैसी कोई चीज़ नहीं है। उसका अस्तित्व ही नहीं है। शायद इसीलिए एकपत्नीत्व ही एकमात्र रास्ता है—मज़े के लिए नहीं, बल्कि डर के कारण।’
कमरे में काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा।
‘यह दिलचस्प है,’ अशरफिया ने पढ़ते हुए कहा। ‘ऐसा लगता है कि जब वे यहाँ आए, तो उन्हें एक पत्थर मिला जिसे उन्होंने अलयत्र पत्थर कहा, जिसका नाम गगाना की दिवंगत बेटी के नाम पर रखा गया था, जिसकी मृत्यु एक आनुवंशिक विकार से हुई थी।’
‘अलायत्र?’ सिन्बाद ने उठते हुए कहा।
'हां। यहां तक कि उस जगह का नक्शा भी है जहां से इसे खोजा गया था। शायद यह वंडरस्टोन है?'
'हां, हो सकता है।'
‘और उन्हें लगा कि यह एक उपचार करने वाला पत्थर है क्योंकि यह प्राचीन दिखता था और इसके चारों ओर एक जादुई आभा प्रतीत होती थी। हालाँकि, उन्होंने इसके बारे में ज़्यादा कुछ नहीं बताया। खैर, इसमें लिखा है कि उन्हें इसकी सख्त ज़रूरत थी, और उनकी मान्यताएँ तथ्यों पर आधारित नहीं थीं बल्कि हताशा पर। गगाना भी उसी चीज़ से पीड़ित था जिससे उसकी बेटी पीड़ित थी।’ अशरफिया ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। ‘और अगर वह पत्थर न होता तो वह मर जाता। यहाँ लिखा है कि उन्होंने किसी तरह इसका इस्तेमाल अपने फायदे के लिए करना शुरू कर दिया था... इससे जादू निकालने लगे थे, जब तक कि उनके सेनापति ने उन्हें पकड़ नहीं लिया।’
'फिर क्या हुआ?'
‘कोई जानकारी नहीं। डायरी यहीं समाप्त होती है। लेकिन कमांडर के बारे में कुछ लिखा है। वह काला जादू करता था और उसके साथ चुड़ैलें रहती थीं। उससे पंगा लेना ठीक नहीं था।’
‘उन दो जागीरदारों का क्या हुआ? मुझे लगता है कि हम कभी नहीं जान पाएंगे।’ 'हम कर सकते हैं अगर मैं जुटा सकूं—'
‘नहीं, ऐश।’ सिंदबाद खड़ा हो गया। ‘हमारा एक मिशन है। हमें पत्थर लेकर यहाँ से निकलना है। कोई बाधा नहीं होनी चाहिए।’

लेकिन अगर मैं उन्हें शांति दे सकूँ, तो क्या यह अच्छा नहीं होगा? यह कोहरा, यह धुंध... ये तब होते हैं जब दुख खुद को प्रकट करता है। इस द्वीप को उसके पुराने स्वरूप में वापस लाया जा सकता है। बस इसे ठीक करने की ज़रूरत है।
लेकिन यह हमारा काम नहीं है। आपको इसमें इतनी दिलचस्पी क्यों है?
मुझे नहीं पता। शायद वैम्पायर चुड़ैलें कभी-कभी बहुत सहानुभूतिशील हो सकती हैं। मैं अब भी उस उड़ने वाले कालीन के बारे में सोचती हूँ। मुझे तुमसे नफरत है कि तुमने उसे जाने दिया। मुझे कभी पता नहीं चलेगा कि अब वह कैसा है...
सिन्बाद नक्शे का अध्ययन कर रहा था। 'यह पास ही है। मुझे लगता है कि हम जल्दी पहुँच सकते हैं, तो... चलें?'
उसके साथी ने अनिच्छा से सिर हिलाया।

बीस
वे जल्दी नहीं पहुंचे।
लंबी यात्रा के बाद, उन्हें पता चला कि पत्थर अपनी सही जगह पर नहीं था। अब वे एक अंधेरी जगह पर खड़े थे, जो घने पेड़ों से घिरी हुई थी और झरनों से घिरी हुई थी। झरनों के ऊपर कई धुंधली गुफाएँ दिखाई दे रही थीं।
सिंदबाद का अभी तक किसी जीव से सामना नहीं हुआ था, लेकिन उसने गौर किया कि जैसे-जैसे वे अपने लक्ष्य के करीब पहुँचते गए, कोहरा और घना होता गया। दूर से हानिरहित दिखने वाले झरने भी काले थे और ज़ोरदार गर्जना के साथ नीचे गिर रहे थे। उनसे एक उदास वातावरण का आभास हो रहा था।
‘यह यहीं होना चाहिए था,’ उसने खोदी हुई ज़मीन की ओर देखते हुए कहा। ‘लेकिन इसे कुछ समय पहले निकाल लिया गया होगा... पर ज़्यादा समय भी नहीं हुआ है...’ अशरफिया ने अपनी बात बीच में ही काटते हुए कहा, 'हमें वापस मीनार पर चले जाना चाहिए और इस काम को यहीं खत्म कर देना चाहिए। सुबह हम पिछड़ी हुई स्थिति की भरपाई कर लेंगे। मुझे यकीन है कि कोहरा छंट जाएगा।'
सिंदबाद ने सिर हिलाया। 'मैं खोज जारी रखना चाहता हूँ। पत्थर यहीं कहीं आस-पास होना चाहिए।'
‘ठीक है, बैठ जाइए। आप सारा काम कर लीजिए, मैं यहीं बैठ जाऊंगी।’ वह एक बड़े पत्थर पर बैठ गई। ‘मैं आपको हौसला दूंगी,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा।
ठीक उसी समय जब सिंदबाद यह बताने ही वाला था कि उसका काम उसकी मदद करना था, तभी उन्होंने यह सुन लिया।
एक तेज चीख।
एक मानवीय चीख।
‘यहाँ कोई और भी है।’ सिंदबाद ने अपनी तलवार निकाली और अशरफिया उछल पड़ी।

वे उस आवाज़ की तलाश में निकल पड़े। जब वे एक और झरने के पास पहुँचे तो चीखें और रोने की आवाज़ें तेज़ हो गईं। यहाँ की ज़मीन ज़्यादा धुंधली थी और इलाका ऊबड़-खाबड़ था। और फिर उन्होंने उसे देखा:
लगभग बीस फीट लंबा एक विशालकाय सर्प, जिसके दाँत उसकी पूंछ जितने बड़े थे, एक आदमी और उसकी तलवार से लड़ रहा था। उस आदमी की दाढ़ी चमकदार सफेद थी और उसकी आँखें गहरे नीले रंग की थीं। उसके सिर के किनारों से बाल बहुत छोटे कटे हुए थे और एक मोटे जूड़े में बंधे थे। उसके हाथों और पैरों पर टैटू बने हुए थे। वह घायल था और छटपटा रहा था, लेकिन स्पष्ट रूप से अपनी आखिरी सांस तक सर्प से लड़ने के लिए तैयार था।
'क्या हमें उसके दर्दनाक मौत मरने तक इंतजार करना चाहिए?' उसने उस विशालकाय सांप को देखते हुए पूछा।
‘थोड़ी इंसानियत दिखाओ,’ सिंदबाद ने गुस्से से कहा। ‘साथ ही, हो सकता है उसे पता हो कि पत्थर कहाँ है।’
‘आप कितने ख्याल रखने वाले हैं।’ उसने आंखें घुमाईं।
एक और तेज चीख सुनाई दी।
‘ठीक है, अब मदद करने का समय है,’ सिन्बाद ने अशरफिया से कहा। ‘तुम पीछे जाओ, मैं ध्यान भटकाता हूँ।’
वह अपनी तलवार हवा में लहराते हुए आगे बढ़ा और बोला, 'अरे, तुम आलसी दिखने वाले राक्षस!'
सांप मुड़ा और अपने दांत दिखाए, उसकी उभरी हुई हरी आंखें सिंदबाद पर टिक गईं। यहां तक कि वह आदमी भी देखने के लिए मुड़ा। स्पष्ट रूप से, दोनों को लगा कि सिंदबाद उन्हें बुला रहा है।
‘मैं तुमसे सिर्फ स्पष्टीकरण के लिए बात कर रहा हूँ,’ सिंदबाद ने साँप से कहा।
वह रेंगता हुआ सिंदबाद की ओर बढ़ा और उस पर झपटा, उसे अनदेखा करते हुए, जो ज़मीन पर गिर पड़ा। अब साँप ने बेरहमी से हमला किया, उसके दाँत बाहर निकले हुए थे, लेकिन सिंदबाद हवा में उछला, अपनी तलवार से आसपास के घने कोहरे को चीरते हुए साँप की त्वचा को भेद दिया—तलवार चीरती हुई साँप की खाल को चीरती हुई निकल गई। साँप ने एक लंबी और तेज़ फुफकार मारी।
‘अशरफिया,’ वह चिल्लाया, ‘निकलने का समय आ गया है।’

लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। सांप घूमकर अपनी पूंछ से सिंदबाद के चेहरे पर वार किया। वह धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा।
वह लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ, अपने मुंह से खून पोंछते हुए उसने फिर से सांप की खाल पर वार किया। इस बार सांप ने अपने दांतों से हमला करने की कोशिश की, जिसे उसने अपनी तलवार से रोक दिया। उसने तलवार को सांप के शरीर में गहराई तक घुसा दिया, जिससे सांप फुफकारने लगा और बुरी तरह छटपटाने लगा। सिंदबाद को पूरा यकीन था कि वह उस जीव को हरा देगा, लेकिन तभी...
सांप सिंदबाद के शरीर के चारों ओर लिपट गया। सिंदबाद को लगा जैसे उसकी हड्डियां दब रही हों और पसलियां चूर-चूर हो जाएंगी, तभी सांप के बीच से प्रकाश की एक किरण गुजरी।
सांप ने फुफकारा और सिंदबाद पर अपनी पकड़ ढीली कर दी, जिससे वह नीचे गिर पड़ा। हांफते हुए उसने अपनी तलवार पकड़ने की कोशिश की।
अशरफिया प्रकट हुई और एक के बाद एक मंत्रों का जाप करते हुए सांप को अंधा कर दिया। सांप घबराकर पीछे की ओर रेंगने लगा और गुस्से से फुफकारने लगा। अंत में, वह जंगल में गायब हो गया।
‘यह मनहूस द्वीप।’ सिंदबाद ने माथे से पसीना पोंछते हुए कहा। ‘तुम काफी जल्दी आ गए। मैं तो बस मरने ही वाला था।’
"माफ़ कीजिए! मैं सही मंत्र याद करने की कोशिश कर रहा था। पिशाच होने का यही नुकसान है कि आपकी याददाश्त बहुत खराब होती है।"
'हं? मैंने कभी नहीं सोचा था कि पिशाचों को भी याददाश्त की समस्या होती है।'
'तुम्हें कोई अंदाजा नहीं है।'
बातचीत के दौरान अचानक उसे यह बात समझ में आई—दोनों राक्षस स्वभाव में अजीब तरह से एक जैसे थे। न केवल वे आकार में बड़े थे, बल्कि उनकी आँखों में भी कुछ विचित्रता थी।
शोर से उनकी तल्लीनता भंग हो गई।
जमीन पर पड़ा दाढ़ी वाला आदमी धीरे से कराह उठा।
'मुझे लगता है हमें उसे कहीं ले जाना चाहिए,' सिन्बाद ने कहा।
‘वापस टावर पर?’
'काफी रात हो चुकी है। कोहरा बहुत घना हो रहा है। और कोई भी हमला कर सकता है। आखिर ये सारे खूंखार जीव एक छोटे से द्वीप पर कैसे मौजूद हैं?'

'तो इसीलिए—वापस टावर पर चलते हैं।'
‘हम कहीं नहीं जा रहे हैं। मुझे लगता है मैंने झरने के पीछे एक गुफा देखी है। हम वहां छिप जाएंगे।’
अशरफिया ने मुंह बनाया लेकिन पानी में रास्ता दिखाते हुए आगे बढ़ी, जबकि सिन्बाद उस आदमी को अपनी पीठ पर लादकर ले गया। उसने गौर किया कि हालांकि वह आदमी बूढ़ा था, फिर भी काफी बड़ा और मजबूत था।
‘तुम्हें पता है, तुम एक पिशाच हो। तुम्हारे पास मुझसे ज्यादा ताकत है।’ ‘लेकिन जरूरतमंदों की मदद करने में आप कहीं ज्यादा नेक हैं। यह एक ऐसा गुण है जिसे हम पिशाच भूल जाते हैं,’ वह हंसते हुए बोली। ‘इससे पहले कि आप पूछें, हां, हम निर्जीव चीजों के लिए ज्यादा सहानुभूति रखते हैं, जैसे मेरा उड़ने वाला कालीन।’
वे गुफा में दाखिल हुए और सिंदबाद ने उस आदमी को लिटा दिया। उसने फर्श से थोड़ा पानी हथेलियों में भरकर उस आदमी के चेहरे पर छिड़का और फिर चारों ओर देखा।
जमीन पर हड्डियां और कंकाल के अवशेष बिखरे पड़े थे। यह किसी डाकू का ठिकाना लग रहा था।
वह उस आदमी की ओर मुड़ा। 'हेलो, क्या आप ठीक हैं?' सिंदबाद ने उस आदमी के हाथों और पैरों पर घाव देखे। 'क्या आपको सांप ने काटा?'
वह आदमी कांप रहा था और खुद से कुछ बुदबुदा रहा था। वह बेहोश सा लग रहा था। ‘उनमें से दो हैं। वे-वे-वे दो हैं...’ आदमी ने फुसफुसाते हुए कहा। उसका माथा जल रहा था और उसे पसीना आ रहा था।
‘लगता है इसके खून में जहर है,’ सिंदबाद ने अपने थैले से कुछ मरहम निकालते हुए कहा। ‘बौने का खून।’ सिंदबाद ने उसे आदमी के घावों पर मल दिया। ‘इससे तुम तुरंत ठीक हो जाओगे।’
वह आदमी काफी देर तक बेतुकी बातें करता रहा और खाली निगाहों से इधर-उधर देखता रहा।
उन्होंने अशरफिया से कहा, 'जब तक वह ठीक नहीं हो जाता, हमें यहीं रहना होगा।'
‘उसे देखो। वह एक वाइकिंग है। क्यों परेशान होना? वे अपराधी हैं। समुद्री डाकू हैं। सबसे बुरे किस्म के,’ उसने कहा।

‘और हम क्या हैं? हम भी तो समुद्री डाकू थे, है ना? हमें अपने भाइयों की मदद करनी चाहिए...’
अशरफिया ने जवाब देने की जहमत नहीं उठाई और गुफा की चित्रित दीवारों को ध्यान से देखने लगी। अंत में उसने कहा, 'देखो ये सब लिखावट। यहाँ बहुत समय पहले लोग रहते थे।'
'ऐसा लग रहा था जैसे वे छिप गए हों।'
‘हाँ। यहाँ एक कहानी है। यह आदमी’—उसने एक हिस्से की ओर इशारा करते हुए कहा—‘कह रहा है कि वह यहाँ कई दिनों तक रुका रहा। वह खुद को उन जीवों से, एक श्राप से बचा रहा था। वहाँ और भी लोग थे... किसान, ऐसा लगता है। वे सब यहाँ छिपे हुए थे। हालाँकि यह स्पष्ट नहीं है... वे किसी ऐसी चीज़ का हिस्सा थे जिसमें भाग लेने पर उन्हें बाद में पछतावा हुआ... ऐसा लगता है कि उन्होंने एक भीड़ की तरह काम किया... ऐसा लगता है कि किसान किसी को नुकसान पहुँचाना चाहते थे लेकिन यह उल्टा पड़ गया...’
'इस द्वीप में आपकी दिलचस्पी कुछ अजीब सी है, है ना? मैंने आपको पहले कभी इस तरह नहीं देखा।'
जब मैंने गुप्त रूप से जादू-टोना की कक्षाएं लीं, तब मैंने सीखा कि जहां कोहरा होता है, वहां त्रासदी होती है। और जब से मैं यहां आई हूं, तब से मुझे इस नुकसान का एहसास हो रहा है। अब हम कुछ करने जा रहे हैं, और मैं नहीं चाहती कि तुम मना करो।
‘क्या? गुप्त रूप से कक्षाएं?’ सिंदबाद को हंसी आ गई।
‘हाँ,’ अशरफिया ने जवाब दिया। ‘एक समय था जब गिल्ड ने चुड़ैलों को प्रशिक्षित करने का फैसला किया था—प्रतिभाशाली युवतियाँ जो समय, पदार्थ और ऊर्जा को नियंत्रित कर सकें। लेकिन इसे गुप्त रखा गया था। मैंने सफाईकर्मी के रूप में अपना नाम दर्ज करवा लिया था ताकि मैं छुपकर बातें सुन सकूँ।’
‘आपने दाखिला क्यों नहीं लिया?’
‘क्योंकि मैं एक पिशाच हूँ,’ अशरफिया ने आह भरते हुए कहा। ‘हमें आम समाजों में आसानी से जगह नहीं मिलती। लेकिन ज़रा सोचो, भला कौन इस गिरोह में रहना चाहेगा? कुछ समय पहले तक तो उन्होंने चुड़ैलों को दबाया, सताया और यहाँ तक कि उनकी हत्या भी कर दी। पुरुष उन्हें खतरा समझते थे क्योंकि वे बहुत बुद्धिमान और प्रतिभाशाली थीं। समय के साथ-साथ वे सचमुच एक दमनकारी

संस्था बन गई हैं। ऐसा लगता है कि सब लोग शुरुआत में तो ठीक रहते हैं, लेकिन अंत में सब भ्रष्ट हो जाते हैं। और अब, मैं कुछ करने जा रही हूँ। चिंता मत करो।’
‘और वह क्या होगा?’ सिंदबाद ने उत्सुकता से पूछा।
उसने एक खोपड़ी उठाई और उस पर अपनी मनमोहक मुस्कान बिखेरी। यह एक ऐसी मुस्कान थी जो हजारों लोगों को मार सकती थी, मानो तीरों की एक चमक हो। यह एक ऐसी मुस्कान थी जिसमें शरारत के साथ-साथ द्वेष की झलक भी थी।
‘हम मृतकों से बात करने जा रहे हैं।’ उसने खोपड़ी की ओर मुड़कर कहा, ‘देखते हैं तुम क्या कहना चाहते हो।’

इक्कीस
सिंदबाद जानता था कि यह बहुत गलत हो सकता है जब उसकी दोस्त आंखें बंद करके किसी अलौकिक भाषा में मंत्रोच्चार करने लगी।
‘ठीक है, तुम आखिर कर क्या रहे हो?’
‘चुप रहो!’ उसने गुस्से से कहा।
बगल में लेटे व्यक्ति के दर्द से कराहने पर सिंदबाद ने अपनी नाक के नथुने फुला लिए।
‘तुम मुर्दों को जगा रहे हो! हमें ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है। यह समय नहीं है,’ उसने फुफकारते हुए कहा।
मुझे परेशान मत करो वरना मैं तुम्हारा मुंह सिल दूंगी।
‘यह तो असंभव है,’ उसने पलटवार किया।
कुछ बोली नहीं।
‘…है ना?’ उसने उलझन भरी नजरों से उसकी ओर देखा।
वह मंत्रोच्चार करती रही, और खोपड़ी, जिसे वापस जमीन पर रख दिया गया था, कांपने लगी। उसमें से हरे धुएं की एक पतली रेखा निकलने लगी। एक ऐसी रेखा जिसने जल्द ही एक व्यक्ति का आकार ले लिया।
एक ऐसा व्यक्ति जिसके चेहरे पर कोई भाव-भंगिमा न हो।
यह किसी प्रकार का प्रेत था, एक भूत, लेकिन ऐसा भूत जो चिराग से निकले जिन्न की तरह प्रकट हुआ। यह किसी बच्चों की कहानी से निकला हुआ सा लग रहा था।
'अपनी पहचान बताओ,' अशरफिया ने आंखें खोलते हुए कहा।
‘मैं किसान स्का हूं,’ एक आत्मा की गहरी आवाज आई।
‘स्का, तुम यहाँ क्यों हो?’
‘क्यों? मैं तो—’

‘हां, हां। मैं तुम्हें परलोक से लेकर आई हूं।’ अशरफिया ने बस कंधे उचका दिए।
‘क्या तुमने गिल्ड द्वारा स्थापित कानून तोड़ा है? मृतकों से संपर्क करना मना है!’ सिंदबाद ने तीखे स्वर में कहा।
‘तो क्या हुआ? जब तक तुम उन्हें नहीं बताओगे, गिल्ड को पता नहीं चलेगा!’ अशरफिया ने फुफकारते हुए उसे जवाब दिया।
‘लेकिन अगर तुम्हारी इस बेवकूफी भरी कहानी की वजह से परलोक और हमारी दुनिया ढह गई, तो समय और स्थान का ताना-बाना टूट सकता है!’ सिंदबाद चिल्लाया।
‘ओह, और आपकी सुविधा के लिए पोर्टल खोलने से ऐसा नहीं होगा!’ उसने आंखें घुमाईं।
जब वे आपस में झगड़ रहे थे, तब हरी आत्मा उन्हें घूर रही थी और अपना पैर थपथपा रही थी।
'वह जीवन और मृत्यु का मामला था। यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें आप उत्सुक हो जाते हैं,' सिन्बाद ने कहा।
“यह जगह मुझे दुखद लगती है, और मैं जानना चाहती हूं कि ऐसा क्यों है,” उसने गुस्से में कहा।
स्का ने बीच में टोकने का फैसला किया। 'क्या आप दोनों शादीशुदा हैं?'
‘काश वह इतना भाग्यशाली होता,’ अशरफिया ने झट से कहा।
क्या मुझे मृतकों में से बुलाकर तुम दोनों को बच्चों की तरह झगड़ते सुनने के लिए बुलाया गया है? मैं थक गया हूँ। इसलिए, अगर हो सके तो कृपया मुझे बताएँ कि आपने मुझे यहाँ क्यों बुलाया है और मैं अब चलता हूँ।
अशरफिया गंभीर हो गई। 'मुझे बताओ यहाँ क्या हुआ। पत्थर के साथ। गराफेना और गगाना के साथ।'
आत्मा कांप उठी। 'उन नामों का उच्चारण मत करो। नीच। व्यभिचारी। गंदे।' ‘और ऐसा क्यों है? उन्होंने क्या किया?’
उन्होंने किसी अजीब जादू का इस्तेमाल किया।
‘क्या?’ सिंदबाद ने हैरानी से कहा। ‘यह अजीब कैसे है?’
‘वे लोगों पर अपनी तांत्रिक शक्तियों का परीक्षण कर रहे थे। गगाना को बचाने के लिए प्रयोग कर रहे थे। वे दोनों क्रूर हत्यारे थे। अपने जीवनकाल में उन्होंने कई किसानों को लूटा और प्रताड़ित किया। घिनौने। दुष्ट हृदय

वाले,’ आत्मा ने थूकते हुए कहा। ‘जब हमें उनके कारनामों का पता चला, तो हम सब एकजुट हो गए और उन्हें और पत्थर को नष्ट करने के लिए एक चुड़ैल को द्वीप पर ले आए। वे धनी जमींदार थे, आप जानते हैं। उनके पास एक बड़ी सेना थी और किसान होने के नाते हम शारीरिक रूप से उनसे लड़ नहीं सकते थे।’
सिंदबाद ने आंखें घुमाईं। चुड़ैलें शायद ही कभी अच्छी चीज़ होती हैं। 'उसने उन पर जो श्राप दिया था, वह गलत हो गया, सही कहा ना?'
स्का ने सिर हिलाया। 'इसने उन्हें दो खूनी राक्षसों में बदल दिया... इस द्वीप पर मंडराने वाले जीव। अब पत्थर ही एकमात्र ऐसी चीज है जो उन्हें मार सकती है। गगाना की बस यही इच्छा थी कि वह मर रहा हो, और अब वह जी रहा है— लेकिन इस भयानक रूप में। जिस चीज को वे अपना उद्धार समझते थे, वही उनके लिए अभिशाप बन गई...'
‘इसलिए वे पत्थर की रक्षा करते हैं। उन्हें डर है कि कोई इसका इस्तेमाल उन्हें मारने के लिए करेगा,’ अशरफिया ने कहा।
“हाँ,” स्का ने कहा। “हम डर के मारे छिप गए थे। हममें से कई उनके हाथों मारे गए, जिंदा ही खा लिए गए। ऐसा लगता था जैसे उन्हें हमारा मांस खाने में मजा आता था। हममें से कई लोग यहाँ छिपे रहे। हम सोचते रहे कि जब वे अपने मानव रूप में वापस आ सकते थे, तो क्यों नहीं आए।”
'उन्होंने ऐसा क्यों नहीं किया?' सिंदबाद ने उत्सुकता से पूछा।
‘अगर उनमें से एक मर जाता तो श्राप टूट जाता—दूसरा फिर से इंसान बन जाता। वे आसानी से एक-दूसरे को मार सकते थे। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। जानबूझकर। सैकड़ों लोगों को मारने के बावजूद। राक्षस नोवोग्राद में मिलकर आतंक फैलाते रहे।’
सिन्बाद और अशरफिया को यकीन नहीं हुआ। कुछ तो गड़बड़ थी।
‘क्या वाकई प्रयोगों की वजह से ही तुम उस चुड़ैल को यहाँ लाए थे? या कोई और वजह थी? मुझसे झूठ मत बोलो,’ अशरफिया ने सख्ती से कहा।
‘मेरा मतलब है...उम...’ आत्मा को देखकर ऐसा लग रहा था मानो उसे अचानक किसी मुश्किल स्थिति में डाल दिया गया हो। ‘हमें लगा कि यही कारण था। हमारे गाँव के मुखिया ने ही हम सबको ऐसा करने के लिए राजी किया था। और हमने उनकी बात मान ली। हमने वही किया जो हमें कहा गया था।’
सिंदबाद को लगा कि गांव का मुखिया ही वह गुमशुदा कड़ी है, तभी उसे कुछ बुदबुदाहट सुनाई दी।

‘मैं ओडिन की आंख के पास कहां हूं?’ यह सवाल दाढ़ी वाले आदमी ने भारी डेनिश लहजे में पूछा।
जैसे ही अशरफिया ने उसे हाथ हिलाकर विदा किया, वह आकृति गायब हो गई, और वह और सिन्बाद उस आदमी की ओर मुड़े, जो लड़खड़ाते हुए अपने पैरों पर खड़ा हो गया था। वह अभी भी भ्रमित लग रहा था, उसकी आँखें बेसुध थीं।
‘हमने तुम्हें बचाया।’ सिंदबाद ने अपनी बाहों को अपनी छाती के चारों ओर बांध लिया। ‘मुझे लगता है कि कुछ आभार व्यक्त करना तो बनता है।’
‘तुम अरब हो। तुम काले चमड़ी वाले खच्चर हो!’ उस आदमी ने ताना मारा। सिन्बाद ने धीमी सी सीटी बजाई। 'ठीक है, यह तो अप्रत्याशित था।'
‘क्या मुझे उसे अभी मार देना चाहिए?’ अशरफिया ने सीधे-सादे अंदाज में पूछा। ‘तुम मुझे मार नहीं सकते!’ उस आदमी ने गुस्से से कहा। ‘क्योंकि मैं राग्नार लोथब्रोक हूँ।’
‘क्या?’ सिंदबाद ने उस आदमी को घूरते हुए कहा। ‘तुम रैग्नार हो? मुझे लगा था कि तुम और बड़े होगे।’
‘और व्यापक स्तर पर,’ अशरफिया ने आगे कहा।
और शायद उनके बाल भी ज्यादा हों।
‘और आपकी भुजाएँ भी बहुत मजबूत हैं। मतलब, हमने अफवाहें सुनी थीं कि आपकी तीन आँखें हैं और आपकी मांसपेशियां थोर के म्योल्निर जैसी हैं,’ अशरफिया ने मजाक उड़ाते हुए कहा। ‘मुझे तो थोर के पैर के नाखून जैसे लगते हैं।’ राग्नार ने हैरानी से अपनी निगाहें सिकोड़ीं। 'तुम मूर्ख लोग किस बारे में बात कर रहे हो?'
‘हमारा कहना यह है कि हमने तुम्हें बचाया है, इसलिए शुक्रगुजार रहो और कुछ समय के लिए अपने खून में बसी नस्लवादी सोच से दूर रहो। वरना हम तुम्हें उस घिनौने साँप के हवाले कर देंगे,’ सिंदबाद ने उस आदमी पर झुंझलाते हुए कहा। ‘अब। हम एक पत्थर ढूंढ रहे हैं। वह चमकीला है और उस पर अक्षर खुदे हुए हैं।
शायद तुमने उसे देखा हो?’
राग्नार हंसने लगा। उसने अपने थैले से एक छोटा सा टूटा हुआ पत्थर निकाला।
वह चमक रहा था।
मुझे लगता है कि आप यही ढूंढ रहे हैं।
उन्हें वंडरस्टोन का पहला टुकड़ा मिल गया था।

बाईस
वहाँ था।
वे इसी चीज की तलाश कर रहे थे।
‘ठीक है,’ सिन्बाद ने चौड़ी मुस्कान के साथ कहा, ‘तुम्हारी जान बचाने के लिए, हम इसे लेना चाहेंगे, मेरे प्यारे दोस्त।’
राग्नार लोथब्रोक ने अपना सिर हिलाया। ‘एक बचाव नौका मेरा इंतज़ार कर रही है, इसलिए मैं जल्द ही चला जाऊंगा। मुझे रोकने की कोशिश करोगे तो मेरे क्रोध का सामना करना पड़ेगा। तुम्हें देखते ही मैं तुम्हें मार डालता,’ उसने तिरस्कारपूर्वक कहा, ‘इसलिए शुक्रगुजार रहो कि तुम अभी भी जीवित हो। इसे मेरी जान बचाने के लिए मेरी ओर से एक उपहार समझो।’
अशरफिया का सब्र टूट चुका था। 'मुझे लगता है कि मुझे सिंदबाद को बिजली का झटका देकर पत्थर ले लेना चाहिए।' उसकी उंगलियों से बैंगनी रंग की छोटी- छोटी चिंगारियां निकलने लगीं।
‘नहीं, नहीं,’ सिंदबाद ने जल्दी से कहा। ‘बिजली नहीं चलानी है। मैं तुम लोगों से बार-बार कह रहा हूँ, चलो शब्दों का इस्तेमाल करें। बात करें। शब्द शक्तिशाली होते हैं, मंत्रों और तलवारों से कहीं अधिक शक्तिशाली—’
बात करते-करते सिंदबाद के सिर पर एक पत्थर लगा। 'ये क्या...'
राग्नार उनसे दूर भाग रहा था।
‘शब्दों का तो कोई मतलब ही नहीं रहा…’ अशरफिया हंस पड़ी।
‘ठीक है, योजना के मुताबिक नहीं हुआ। ‘हाँ, मैंने जो कहा उसे भूल जाओ। चलो उसका पीछा करते हैं और उसे पीटते हैं, इस थोर के बेटे को...’
वे राग्नार के पीछे दौड़ने लगे, जो दिमागी तौर पर थोड़ा भ्रमित लग रहा था, क्योंकि वह भागते समय खिलखिला रहा था और हंस रहा था।
अशरफिया ने गुस्से में कहा, 'काश हमने उसे इतना अच्छा ठीक न किया होता।'

‘कोई बात नहीं, मेरी जान,’ सिंदबाद मुस्कुराया। ‘गलतियों से ही सीखते हैं। कभी-कभी सही काम करना हमेशा हमारे लिए फायदेमंद नहीं होता।’
वे घनी झाड़ियों में दाखिल हुए और तुरंत ही ऊंचे पेड़ों, झाड़ियों, चट्टानों और टूटी हुई टहनियों से घिर गए। घना कोहरा उन्हें घेर लिया। उनके पैर गीली मिट्टी पर ज़ोर से धंस रहे थे और मिट्टी की महक उनके फेफड़ों में भर रही थी।
‘तुम मुझे कभी नहीं पकड़ पाओगे!’ राग्नार ने धुंध की दीवार के उस पार से चिल्लाकर कहा।
‘लेकिन दुनिया को बचाने के लिए हमें उस पत्थर की जरूरत है,’ सिंदबाद ने हताशा से चिल्लाकर जवाब दिया।
‘क्या सच में?’ बूढ़े आदमी ने हंसते हुए कहा। ‘यह सबसे घटिया बहाना है जो किसी को कभी नहीं देना चाहिए।’
'क्यों?'
'क्योंकि दुनिया को बचाना अब संभव नहीं है, बेटा।'
कोहरा घना होने के कारण अशरफिया फिसलकर रुक गई। उसने अपनी हथेली के ऊपर एक गोला प्रकट किया जो तैरने लगा। जैसे ही वे राग्नार की दिशा में आगे बढ़े, वह गोला कोहरे को छंटने लगा। राग्नार द्वीप के पूर्वी हिस्से की ओर बढ़ रहा था।
‘दुनिया चाहे जो भी हो जाए,’ रैग्नार की आवाज पिछली बार से थोड़ी ऊंची थी। ‘मैं बस अपने बेटे को बचाना चाहता हूं।’
अचानक, कहीं से एक विशाल तलवार प्रकट हुई। सिंदबाद ने फुर्ती से अपनी थोकचा तलवार निकाली और उसे रोक दिया, जिससे दोनों तलवारें आपस में टकरा गईं।
‘बेटा?’ सिंदबाद ने अविश्वास से पूछा।
‘वह बीमार है,’ राग्नार ने हांफते हुए कहा, उसकी सांसें फूल रही थीं और उसने अपनी तलवार सिंदबाद की तलवार पर रख दी। ‘बहुत बीमार है। मुझे तांत्रिक को पत्थर देना होगा ताकि वह सही काम कर सके।’
सिंदबाद ने पलटवार किया। ‘पत्थर जादुई नहीं है,’ उसने गुस्से से कहा। ‘क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा? इसी वजह से तो लोग मुसीबत में पड़े थे। पत्थर में कोई जादू नहीं है। उन्होंने बस ऐसा सोचा था।’
‘तुम झूठ बोल रहे हो!’ वाइकिंग गरज उठा। ‘यह ऊर्जा उत्सर्जित करता है।’

‘बिल्कुल! क्योंकि यह एक महत्वपूर्ण प्राचीन जादुई पत्थर का हिस्सा है!’ सिंदबाद ने समझाने की कोशिश करते हुए कहा। ‘कृपया, यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है।’
अचानक, सिन्बाद को लगा कि उसकी तलवार ढीली पड़ गई है। राग्नार कोहरे में गायब हो गया था। अशरफिया और सिन्बाद ने घबराकर चारों ओर देखा। एक-दूसरे की पीठ से पीठ सटाकर वे चारों ओर चक्कर लगाने लगे, उनकी निगाहें हर तरफ दौड़ रही थीं।
‘क्या इस परेशान करने वाले कोहरे को हटाने का कोई तरीका है?’ सिंदबाद ने गरजते हुए कहा।
‘मैंने तुमसे कहा था—इस जगह से श्राप हटाना ही एकमात्र उपाय है,’ अशरफिया ने कहा। ‘अब हमें पता चल गया है कि यहाँ कोहरा क्यों है। जहाँ भी काला जादू होता है, यह कोहरा छाया रहता है।’
‘ओह, बढ़िया। तो कोई मदद नहीं—’
लेकिन इससे पहले कि वह अपनी बात पूरी कर पाता, एक और हमला हुआ। तलवार सिंदबाद के चेहरे से कुछ इंच दूर से गुज़री। उसने गुस्से में हमले की दिशा में लात मारी और रैग्नार के पेट पर जा लगी। वाइकिंग दर्द से कराह उठा। ‘तेज प्रतिक्रिया! लेकिन कोहरा तुम्हारा दुश्मन है...’
वह फिर गायब हो गया।
‘अरे यार! वो तो मुझे बस परेशान कर रहा है,’ अशरफिया ने फुफकारते हुए अपनी हथेलियों के ऊपर और गोले बनाए। ‘मैं अभी उसे बिजली का झटका दूंगी और हिम्मत है तो मुझे रोक कर दिखाओ। अच्छा बनने का सारा श्रेय धराशायी!’
नहीं, कृपया, आपका स्वागत है। मैंने जो कहा उसे भूल जाइए। पत्थर के लिए कुछ भी।
अगली बार जब राग्नार की तलवार उन पर चमकी, तो अशरफिया ने उन गोलों को उसकी ओर फेंक दिया। राग्नार पीछे की ओर गिर पड़ा और धुंध में गायब हो गया।
‘आखिरकार! अब बस यह देखना बाकी है कि वह कहाँ गिरा।’
घने कोहरे में आगे बढ़ते हुए दोनों ने अपनी आंखें सिकोड़ीं।
‘क्या वह फिर से भाग गया?’ अशरफिया गुस्से से उबल पड़ी।
“संदेहजनक,” सिन्बाद ने धीरे से कहा।
उन्होंने कुछ फुसफुसाहटें सुनीं।
सिंदबाद ने फुसफुसाते हुए कहा, 'वह हमला करने वाला है। तैयार हो जाओ।'

वे मुड़े और वाइकिंग्स के आने वाले हमले का सामना करने के लिए तैयार हो गए।
लेकिन वहां एक सर्प और एक अजगर की ठंडी आंखें खड़ी थीं।
‘हाँ,’ सिन्बाद ने मुश्किल से निगलते हुए कहा, ‘यह रैग्नार जैसा नहीं दिखता।’

तेईस
सिंदबाद को भाग जाना चाहिए था।
दरअसल, उसे अपने जीवनकाल में अब तक की सबसे तेज गति से दौड़ना चाहिए था।
उन्हें ऐसा करना चाहिए था, लेकिन उन्होंने नहीं किया।
वह वहीं जम गया और देखता रहा कि सांप वह कर रहा है जो वह खुद नहीं कर सकता था: हमेशा गायब होते रहने वाले रैग्नार को ढूंढना। सांप ने खुद को उस आदमी के चारों ओर कसकर लपेट लिया।
‘तो अब हमें बस यही करना है…’ सिंदबाद रुका।
‘कोई योजना बनाओ,’ अशरफिया ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘वे बस हमें घूर रहे हैं।
यह डरावना है।’
‘मुझे लगता है हमें...’ सिंदबाद को कुछ समझ नहीं आ रहा था।
‘अच्छा, तो मैं कुछ कोशिश करती हूँ। बस थोड़ा धैर्य रखिए और अपनी आँखें बंद कर लीजिए,’ अशरफिया ने कहा।
मुझे यह पसंद नहीं है।
'न ही मैं।'
उसने ताली बजाई और उससे सफेद गोले चमक उठे। चारों ओर चकाचौंध कर देने वाली सफेद रोशनी फैल गई।
ऐसा प्रतीत हुआ कि वे दोनों प्राणी अब भ्रमित हो गए थे।
सिन्बाद तलवार हाथ में लिए सांप की ओर झपटा और उसकी पूंछ पर वार कर दिया। इस हमले से चौंककर सांप ने राग्नार को ज़मीन पर पटक दिया। राग्नार लुढ़क गया और उसके थैले से पत्थर गिर पड़ा। सिन्बाद ने उसे उठाया और जान बचाकर भागा। भागते हुए वह चिल्लाया, 'अशरफिया! नाव की ओर!'
दोनों तेजी से भागे, वे भयानक जीव उनकी गर्दन पर सांसें फूंक रहे थे और उनके पीछे झपट रहे थे। 'पीछे मुड़कर मत देखना,' वह चिल्लाई।
‘मैं ऐसा क्यों करूंगा?’ उसने चिल्लाकर जवाब दिया।

ऐसा लग रहा था मानो घंटों और सालों तक वे भागते रहे। लेकिन सांप और अजगर भी जानलेवा गति से उनका पीछा कर रहे थे।
मुझे लगता है मुझे उनसे बात करनी चाहिए। उन्हें समझाना चाहिए—’
‘तुम्हें क्या हो गया है?’ वह चिल्लाया। ‘तुम्हें बात करना पसंद नहीं है। तो नहीं। हम भाग रहे हैं। मुझे परवाह नहीं कि यह द्वीप कितना उदास है... हमें यहाँ से निकलना होगा! सबसे गहरे नरक में हमारी नाव कहाँ है?’ सिंदबाद दहाड़ा।
‘रुको!’ अशरफिया ने उंगलियां चटकाईं और उसकी हथेली से एक सफेद गोला उठा। वह उनके ऊपर से उड़ता हुआ जंगल के पार चला गया। ‘यह हमें सबसे छोटा रास्ता दिखाएगा।’
अंततः उन दो जीवों से छुटकारा पाने के बाद, वे एक जर्जर, टेढ़े-मेढ़े रस्सी के पुल पर रुक गए।
सिन्बाद ने अविश्वास भरी निगाहों से अशरफिया की ओर देखा। 'अरे,' उसने कहा, 'मैंने कभी नहीं कहा कि यह सबसे सुरक्षित रास्ता होगा। मैंने तो बस इतना कहा था कि यह सबसे छोटा रास्ता होगा।' वह रस्सियों को कसकर पकड़े हुए झूलते हुए उस पर चढ़ गई।
इसीलिए तो कहते हैं, कभी शॉर्टकट मत चुनो। इसमें हमेशा कमियां होती हैं।’ सिंदबाद ने संभलकर कदम रखा। उसने पीछे मुड़कर देखा और दूर से राक्षसों की एक झलक देखी—वे आ रहे थे। उसने नीचे देखा: ज़मीन तक पचास फीट की गहरी खाई थी। उनके नीचे चट्टानों और कंकालों का ढेर बिछा था। ‘लगता है ये दर्दनाक मौत का शॉर्टकट है,’ वह चिल्लाया।
‘जल्दी करो!’ वह चिल्लाई।
सिन्बाद धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था, जबकि अशरफिया लगभग अंत तक पहुँच चुकी थी। तभी एक साँप प्रकट हुआ और उसके पीछे बंधी एक रस्सी को काटता हुआ निकल आया। लेकिन अजगर का कोई निशान नहीं था। अशरफिया दूसरी तरफ कूद गई। 'लगता है अजगर गायब हो गया है! जल्दी करो!' वह चिल्लाई।
‘मैं कोशिश कर रहा हूँ!’ सिंदबाद चिल्लाया, क्योंकि पुल बेतहाशा हिल रहा था।
एक रस्सी टूट गई, जिससे सिंदबाद एक तरफ गिर पड़ा। उसने रस्सी को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन उसके हाथों पर जलने के निशान पड़ गए। सांप उसके करीब रेंगता हुआ आया और पुल से जुड़ी रस्सी पर कुंडली मारकर उस तक पहुंचने की

कोशिश करने लगा, और अपना मुंह खोलकर उस पर हमला करने और उसे खाने के लिए तैयार हो गया।
‘मुझसे दूर हो जा, बदबूदार राक्षस!’ सिंदबाद चिल्लाया, एक हाथ से पुल से लटकते हुए और दूसरे हाथ से तलवार चलाते हुए। सांप रेंगकर पास आ गया। तलवार निशाने पर लगी; रस्सी फट गई, और सांप ने दिल दहला देने वाली फुफकार मारी। वह नीचे चट्टानों पर जा गिरा। अब सिंदबाद रस्सी से झूलता हुआ चट्टान के किनारे पर था।
वह ऊपर चढ़ गया और जैसे ही वह सतह के करीब पहुंचा, उसने सबसे पहले अपना थैला सुरक्षा के लिए ऊपर फेंक दिया।
जैसे ही वह चट्टान के किनारे से ऊपर चढ़ने वाला था, अचानक राग्नार प्रकट हो गया। चट्टान को पकड़े हुए ही सिंदबाद ने पूछा, 'तुम यहाँ कैसे आए?'
‘एक और रास्ता था। एक ज़्यादा मज़बूत पुल।’ राग्नार ने अपना थैला पकड़े हुए मुस्कुराते हुए कहा। ‘इसके लिए धन्यवाद। अब यहाँ से जाओ।’ उसने सिंदबाद के हाथ पर बेरहमी से लात मारी। ‘मर जाओ, मैंने कहा!’
सिन्बाद दहाड़ते हुए अपने साथी को बेतहाशा ढूंढने लगा। राग्नार ने फिर से उसके हाथ पर लात मारी। सिन्बाद की उंगलियों के घावों से खून बहने लगा। दर्द से कराहते हुए सिन्बाद ने एक हाथ से खुद को ऊपर खींचने की कोशिश की और दूसरे हाथ से राग्नार के पैर पर घूंसा मारा। लेकिन सिन्बाद की पकड़ ढीली पड़ रही थी और वह गिरने ही वाला था कि तभी एक तीखी चीख हवा में गूंज उठी। राग्नार को अजगर के पंजे ने पकड़ लिया।
उसे हवा में उछाल दिया गया, मानो खाने के लिए तैयार हो। सिंदबाद की निगाहें अशरफिया को ढूंढ रही थीं: वह वहीं ढेर हो गई थी। ऐसा लग रहा था कि अजगर ने रैग्नार का ही रास्ता अपनाया था।
आश्चर्य की बात यह थी कि रैग्नार न तो विचलित लग रहा था और न ही डरा हुआ। इसके बजाय, उसने अपने थैले से पत्थर निकाला और चिल्लाया, 'हुर्रे!'
‘ये तो बिल्कुल पागल है!’ सिन्बाद ने मन ही मन कहा। उसने अपनी तलवार से अजगर का पंजा काट दिया। ऐसा करते ही उस जीव का मांस जलने लगा। राक्षस दर्द से चिल्लाया और वाइकिंग पर अपनी पकड़ ढीली कर दी। राग्नार जमीन पर गिर पड़ा और खुशी से चिल्लाने लगा।
‘तुम्हें क्या हो गया है, मूर्ख? अब पत्थर नीचे रखो,’ सिंदबाद चिल्लाया। ‘इससे उनकी जान जा सकती है!’

‘ये दुष्ट आत्माएं मेरे जीवनकाल में ही प्रलय लाने वाली थीं। मैं इन्हें नष्ट कर दूंगा, और अगर इस जादुई पत्थर से ऐसा हो पाता है, तो ठीक है,’ राग्नार ने कहा।
राग्नार ने अकल्पनीय कर दिखाया। उसने घायल पंजे के सहारे आराम कर रहे अजगर पर वार कर दिया। वह प्राणी चीखा-चिल्लाया और ज़मीन पर गिर पड़ा। मर गया। ‘नहीं!’ अशरफिया ने होश में आते ही चीख मारी।
अचानक उन्हें पीछे से एक फुफकार सुनाई दी। सब मुड़ गए। सांप रैग्नार के दूसरे रास्ते से प्रकट हुआ था। अब वह सीधे आगे देख रहा था, अजगर के बेजान शरीर को घूर रहा था। जैसे-जैसे वह करीब आता गया, वह ज़ोर से कांपने लगा, उसका शरीर मरोड़ रहा था। सांप को समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। लेकिन फिर, एक बेहद अनोखी बात हुई: उसकी आँखों से एक आंसू गिर गया... इससे पहले कि यह एक नग्न मानव में परिवर्तित हो जाए।

चौबीस
वह आदमी बूढ़ा था। बहुत बूढ़ा।
झुर्रियों वाला चेहरा। पैरों पर लड़खड़ाता हुआ। थका हुआ। और नंगा।
गराफेना कुछ देर तक मृत अजगर के पास वहीं पड़ी रही, पत्थर अभी भी उसमें धंसा हुआ था।
राग्नार असमंजस में था, उसने इधर-उधर देखा। लेकिन बाकी सब चुप रहे। ‘क्या हुआ?’ रग्नार ने आखिरकार पूछा, और अजगर के शरीर से पत्थर निकाला। ‘यह सब क्या था?’
‘तुमने उनका श्राप तोड़ दिया।’ अशरफिया अपने पेट को पकड़े हुए खड़ी हो गई, जिस पर गहरा घाव था। ‘वे ऐसा नहीं चाहते थे, बेवकूफ।’
सिन्बाद आगे बढ़ा और अपनी कमीज़ उतारकर नंगे गराफेना को ढकने लगा। गराफेना एकदम चुप था। लेकिन फिर उसने उसे रोकने के लिए अपने हाथ उठा लिए। ‘तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा।
'क्या?'
‘तुम... तुम लोग। तुम यहाँ लालच के लिए आते हो, लेकिन हमारे द्वीप को रौंदते हो और हमसे उम्मीद करते हो कि हम इसे सह लें।’ गराफेना की आवाज़ अब स्पष्ट और कठोर थी। ‘यह हमारा घर है। अगर कहीं से भी हथियारबंद अजनबी प्रकट होकर हमें धमकाएँ तो तुम्हें कैसा लगेगा?’
‘हम यहां सही काम करने आए हैं,’ सिंदबाद ने विरोध जताया।
‘तुमने गगाना को मार डाला।’ गराफेना ने सिर हिलाया। ‘मैंने इतने लंबे समय तक उसकी रक्षा की, और तुमने उसे मार डाला।’ उसकी आवाज़ दर्द से कांप रही थी।
‘मैं… मैं…’ सिंदबाद हड़बड़ाया हुआ सा लग रहा था।
अशरफिया आगे आईं। उन्होंने कहा, 'हम माफी मांगते हैं। हमें पता नहीं था।'

‘अज्ञानता पुरुषों की मूर्खता है, महिलाओं की नहीं।’ उसने उसे तीखी निगाहों से देखा। ‘तुमने उसे क्यों नहीं रोका?’
मुझे पूरी कहानी नहीं पता थी... और अब भी नहीं पता। तुम एक अच्छा जीवन जी सकते थे, लेकिन तुमने एक राक्षस के शरीर में फँसे रहना चुना। क्यों? ‘प्यार की वजह से।’ गराफेना दुख से कांप उठी। ‘मैं गगाना से प्यार करती थी... हम प्रेमी थे।’
सिंदबाद की रीढ़ की हड्डी में एक झनझनाहट सी दौड़ गई।
‘गांव के मुखिया को हमारे बारे में पता चल गया और उसने हमारे बारे में झूठी कहानियां फैलाकर हमारी इज्जत मिट्टी में मिलाने की धमकी दी। हम दोनों जानते थे कि गगाना मर रहा है। मैं उसकी मदद करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन सब व्यर्थ था। यह हमारे बस से बाहर था... यह श्राप... इसने हमें भले ही इन घिनौने जीवों में बदल दिया, लेकिन इसने हमें अमर बना दिया।’ उसकी झुर्रीदार चेहरे से आंसू बहने लगे। ‘और अब वह... वह मर गया है।’
इसीलिए उन्होंने एक-दूसरे को नहीं मारा। क्योंकि अगर वे ऐसा कर लेते, तो उनके पास जीने के लिए एक-दूसरे का साथ नहीं बचता।
बूढ़े ने दर्द से ऊपर देखा। 'मुझे बताओ। अपने प्रियजन के बिना जीवन क्या है?' 'कुछ नहीं। इसलिए, हमने राक्षसों की तरह जीना चुना... जब तक हम एक-दूसरे के साथ रहे।'
अशरफिया ने अपने जबड़े भींच लिए। 'जो कुछ हमने किया है, उसके लिए मुझे बहुत खेद है।'
राग्नार चुप रहा, उसका सिर नीचे झुका हुआ था।
‘अब मेरा कोई मकसद नहीं है। बिलकुल भी नहीं,’ बूढ़े आदमी ने फूट-फूटकर रोते हुए कहा। ‘मुझे नहीं पता कि मैं किसके बिना रहूंगा... मुझे नहीं पता कि इसके बाद मैं अपना जीवन कैसे जीऊंगा। यह बात मुझे हमेशा सताती रहेगी... कि मैंने उसे मरने दिया...’
इसके बाद काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा।
दूर देखते हुए गराफेना ने अंत में कहा, 'मैं आशा करती हूं कि आपको अपने प्यार को खुद से दूर जाते हुए न देखना पड़े। खासकर उन सबके बाद जो आपने उनके जीवन के लिए किया। सच्चा प्यार ही हमें इस जीवन में आगे बढ़ने में मदद करता है।'

बूढ़ा आदमी सीधा खड़ा हुआ और धीरे-धीरे चट्टान की ओर बढ़ा। और इससे पहले कि अशरफिया उसे समझ पाती या पकड़ पाती, वह चट्टान के किनारे तक पहुँच गया। इससे पहले कि वह चट्टानों से टकराता, अशरफिया तुरंत आगे की ओर झुकी और उसका हाथ पकड़ लिया।
‘मुझे जाने दो, बच्चे। मुझे शांति से रहने दो। अब मेरा भी समय आ गया है।’ ‘तुम्हारे पास जीने के लिए बहुत कुछ है,’ अशरफिया ने भयभीत होकर चिल्लाते हुए कहा।
सिन्बाद उनकी ओर दौड़ा और उसने भी अपना हाथ आगे बढ़ाया। उसने पीछे मुड़कर देखा तो राग्नार पत्थर हाथ में लिए जंगल की ओर खिसक रहा था।
‘तुम क्यों नहीं जा रहे? उसका पीछा करो,’ अशरफिया ने कहा।
‘नहीं, मुझे यहीं होना चाहिए। तुम्हारे साथ।’ सिंदबाद ने फीकी मुस्कान के साथ कहा।
अशरफिया को एहसास हुआ कि उस पल वह उसका मित्र बन रहा था, कप्तान नहीं। वह गराफेना की ओर मुड़ी, जो अपने कमजोर बूढ़े शरीर के बावजूद अजीब तरह से भारी लग रहा था। 'कृपया उठ खड़े हो जाइए,' उसने विनती की।
नहीं। मुझे बचाने की कोशिश करने के लिए धन्यवाद। लेकिन नहीं। अब समय आ गया है।
उसने झटककर अपना हाथ उसके हाथ से छुड़ा लिया। वह आदमी गिरकर मर गया।
सिंदबाद भयभीत होकर नीचे देखने लगा।
दोनों चुपचाप चट्टान की ओर पीठ करके खड़े रहे, उस व्यक्ति के जीवन को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए। अशरफिया ने अपना सिर उसके कंधे पर टिका दिया, और सिन्बाद ने उसकी दबी हुई सिसकियाँ सुनीं।
उस दर्दनाक क्षण में, उसे सचमुच यह एहसास हुआ कि शायद इस दुनिया में प्यार का अस्तित्व है।
‘तुम्हें चले जाना चाहिए,’ उसने सिसकते हुए कहा। ‘वह ज्यादा दूर नहीं है। मैं तुम्हारे पीछे आ जाऊंगी।’
सिन्बाद ने सिर हिलाया। उसने अपनी कमरबंद पकड़ी और उस दिशा में दौड़ पड़ा जिधर राग्नार गया था। उसे कीचड़ में पैरों के निशान और टूटी हुई लताएँ दिखाई दे रही थीं जिन पर वाइकिंग चला था।

राग्नार तब तक दौड़ता रहा जब तक उसकी सांसें जवाब देने लगीं। उसका शरीर थक चुका था, लेकिन उसके विचार दौड़ते रहे। वह अपने जीवन के सभी महत्वपूर्ण पलों के बारे में सोच रहा था: जिन्हें उसने खो दिया था, जिन्हें उसने प्यार किया था, जिन्हें वह कभी पा नहीं सका, और जिन्होंने बलिदान दिया...
उसकी दृष्टि धुंधली होने लगी और उसकी सांसें और भी ज्यादा अनियमित हो गईं, लेकिन वह लगभग तट पर पहुंच चुका था।
राग्नार बेहोश हो गया।
उसके मन में भ्रम छा गया। जैसे ही वह गिरा, उसने देखा कि संगमरमर जैसी त्वचा और गंजे सिर वाले लबादेधारी नेफिलिम उसे घेर रहे हैं, उनकी तलवारें चमक रही हैं।
‘अरे!’ सिंदबाद ने अपनी तलवार निकालते हुए चिल्लाया। राक्षसों की सेना को देखकर वह भ्रमित और भयभीत लग रहा था।
इससे पहले कि वह उछलकर हमला कर पाता, उसे अपने सिर के पिछले हिस्से पर एक जोरदार प्रहार महसूस हुआ। वह गिर पड़ा और पीठ के बल लुढ़क गया। उसकी आँखें झपकीं; दो आकृतियाँ उसके ऊपर खड़ी थीं। लाल बालों वाली महिला और एक छड़ी लिए हुए व्यक्ति...
Sakhr.
‘वह हमसे पहले पहुँच गया। यह अच्छा नहीं है।’ आवाज़ कर्कश और डरावनी थी। उसमें एक घातक बोध था।
'हां। हमारे आदमियों ने उसके साथी को भी देखा था।' लाल बालों वाली महिला के शब्दों में चिंता झलक रही थी। वह थोड़ी डरी हुई लग रही थी।
‘उस दोस्त को ढूंढो और लड़के को उठाओ।’ और फिर उस आदमी ने आग, क्रोध और घोर अंधकार से भरी आँखों से उसकी ओर देखा। ‘मुझे लगता है कि अब उससे बात करने का समय आ गया है।’

पच्चीस
जब सिंदबाद जागा तो उसे गंधक की गंध आई।
इसका मतलब था कि राक्षस आस-पास ही थे।
यह एक अंधेरा कमरा था, जिसमें काली जादू की गंध फैली हुई थी। सिंदबाद को यहाँ कुछ अजीब सा महसूस हुआ। उसे तुरंत एहसास हुआ कि कुछ गड़बड़ है और कोई जादुई शक्ति अपना काम कर रही है।
'तुम्हारे बारे में कुछ ऐसा है जो मुझे हमेशा से ही मनोरंजक लगता है, मेरी प्रियतमा।'
सिंदबाद यह नहीं देख सका कि वह पतली आवाज कहाँ से आ रही थी, लेकिन उसने बेंत की थपथपाहट सुनी।
'क्या आप एक गिलास मीड लेना चाहेंगे?'
मैं नाबालिग हूँ।
और फिर भी आपमें अपनी उम्र से दोगुने उम्र के व्यक्ति जैसा साहस है। ‘तुम कौन हो?’ सिन्बाद ने दांत पीसते हुए पूछा। ‘और अशरफिया कहाँ है?’ ‘आपका मित्र यहीं मेरे जहाज पर है।’ हाथ में प्याला लिए वह आदमी आगे बढ़ा। वह लंबा था, लगभग सिंदबाद की लंबाई से दोगुना, उसकी त्वचा हल्के नीले रंग की थी और चेहरा बेहद आकर्षक था। उसने लंबा कोट पहना था और बालों की चोटी बनाई हुई थी। वह मुस्कुराया, उसकी आँखों में एक चमक थी। ‘और आपको खुश होना चाहिए कि हम आपको आपके जहाज तक छोड़ रहे हैं। आखिर हम नहीं चाहते कि आपके दल को चिंता हो।’
‘रग्नार कहाँ है?’
'ओह, वह अभी भी द्वीप पर है। जब वह जागेगा तो ठीक हो जाएगा।'
‘तुमने उसे नहीं मारा?’
मैं ऐसा क्यों करूंगा? मैं निरर्थक मृत्यु में विश्वास नहीं करता। मुझे वे... खैर... निरर्थक लगती हैं।

अजीब बात है। लगता है वह बर्बर या क्रूर नहीं है।
एडमिरल एक कुर्सी पर बैठे थे, उनकी छड़ी उनकी जांघ पर टिकी हुई थी।
उन्होंने अपने एक पैर को दूसरे के ऊपर घुमाते हुए हल्की सी आह भरी। फिर उन्होंने अपनी शराब की चुस्की ली, उनके चेहरे पर मुस्कान अभी भी बरकरार थी।
‘सिंदबाद... तुम्हारा चेहरा कितना प्यारा है, मेरे दोस्त!’
अगर उसके हाथ-पैर बंधे न होते, तो सिंदबाद एडमिरल को बुरी तरह पीट देता। उसने शैतान को दृढ़ता से देखा।
लेकिन सखर शांत था। सिंदबाद ने देखा कि उसकी आँखों में असामान्य रूप से दयालुता झलक रही थी। अगर वह दानव वंश का न होता, तो सिंदबाद उससे दोस्ती करने के बारे में सोच भी सकता था। वह दानव होने के बावजूद दिखने में भी अजीब तरह से अलग था... कम से कम अज़राएल से तो अलग ही था। अज़राएल के चेहरे पर तो किसी खलनायक जैसी भाव-भंगिमा थी।
‘और तुम्हारी कहानी कितनी प्यारी है,’ उन्होंने आगे कहा। ‘एक नौजवान, जो महान बनने के लिए पैदा हुआ था, शैतान की बेटी से प्यार कर बैठता है और सातों समुद्रों पर विजय प्राप्त करता है। बिलकुल वैसी ही कहानी है जैसी तुमने बचपन में पढ़ी थी, है ना? तुम्हें पता है, जब मुझे इस मिशन का नेतृत्व करने के लिए कहा गया था, तो मेरे आका ने कहा था कि तुम एक समस्या बनोगे।’ वे सहजता से आगे झुके, मानो किसी दोस्त से पुरानी बातें याद कर रहे हों। ‘लेकिन जैसे-जैसे मैंने तुम्हारे बारे में और जाना, मैं और भी प्रभावित हुआ। तुम एक गंभीर लड़के हो। सतर्क, जिज्ञासु, बुद्धिमान।’ वे रुके। ‘तुम्हें मेरे साथ आना चाहिए था। मैं तुम्हारा सम्मान करता हूँ।’
‘मैं तुम्हें जानता हूँ, सखर। तुम मुझसे दोस्ती करने की कोशिश कर रहे हो ताकि बाद में मेरा इस्तेमाल कर सको। लेकिन यह जान लो, मैं कभी इब्लिस का साथ नहीं दूंगा।’
सखर ने सिर हिलाया। 'मुझे तुम्हें मारने के कई मौके मिले। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया क्योंकि मुझे लगता है कि तुम आखिरकार हमारे साथ जुड़ जाओगे। तुम्हें बस सच्चाई जानने की जरूरत है।'
‘और वो क्या है?’ सिंदबाद ने दिमागी खेल से चिढ़कर गुस्से से पूछा।
‘यह दुनिया भ्रष्ट है। इस पर उस गिरोह का राज है जिसे आप सब इतना पसंद करते हैं। और हमें बदलाव की जरूरत है। इब्लिस ही वह बदलाव है।’

इब्लिस सभी मनुष्यों का सफाया करना चाहता है।
“मैं भी कभी इंसान था, मेरे दोस्त। और मुझे इंसान होना बहुत पसंद था। अपने कर्मों के कारण मैं दानव बन गया, लेकिन मुझे इंसान होने की बहुत याद आती है। इब्लिस बिल्कुल हमारे जैसा है। उसे मार्गदर्शन की ज़रूरत है, और मैंने उससे कहा कि नश्वर प्राणी उपयोगी होते हैं। दानव और नश्वर प्राणी एक-दूसरे का शिकार करने के बजाय साथ रह सकते हैं। उस संगठन ने सब कुछ भ्रष्ट कर दिया है। हम इसे खत्म कर सकते हैं। इब्लिस अब यह बात समझ गया है।”
सिन्बाद ने अपने जबड़े भींच लिए। ज़ाहिर है, सखर झूठ बोल रहा था। इब्लिस को कोई परवाह नहीं थी। वह निर्दयी था। वह सब कुछ नष्ट करके अपने जैसे लोगों के साथ एक नई दुनिया बनाना चाहता था। लेकिन कहीं न कहीं, सिन्बाद के भीतर, सखर के शब्द सच साबित हो रहे थे। वह जानता था कि गिल्ड में फैले भ्रष्टाचार के बारे में सखर सही कह रहा था।
उन्होंने कहा, 'आप सही हो सकते हैं, लेकिन मुझे इब्लिस पर भरोसा नहीं है।' सखर ने सिर हिलाया। 'मैं समझ गया। तुम्हें भरोसे की समस्या है। क्यों न हो? तुमने पूरी ज़िंदगी धोखे झेले हैं। तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हें छोड़ दिया। तुम्हारे मालिक ने तुम्हें धोखा दिया। और अब तुम्हारा एकमात्र परिवार तुम्हारा दल है। तुम उनसे चिपके रहते हो। सोचो अगर वे उतने नेक न होते जितना तुम उन्हें समझते हो। सोचो अगर उनके भी अपने राज़ होते।' उसने अपने प्याले से एक घूंट लिया।
‘तुम किस बारे में बात कर रहे हो?’ सिंदबाद ने ऊपर देखा।
सखर ने मीठी मुस्कान दी, हालांकि उसकी मुस्कान उसकी आंखों तक नहीं पहुंची। 'मेरे जासूस हर जगह हैं। इसलिए मुझे विश्वसनीय सूत्रों से पता चला है कि आपके दल के अधिकांश सदस्य जाना चाहते हैं। यह उनका आखिरी मिशन है।'
‘तुम झूठ बोल रहे हो। तुम—’
‘नहीं, मैं सच बोल रहा हूँ,’ सखर ने शांत भाव से उत्तर दिया। ‘मेरा आपसे झूठ बोलने का कोई इरादा नहीं है। वे इसलिए जाना चाहते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि लंबे समय तक आपके साथ रहना उनके लिए फायदेमंद नहीं होगा। उनकी अपनी जिंदगी है। इस रिश्ते से परे।’
सिन्बाद जानता था कि वे ऐसा करते थे। अशरफिया दुनिया घूमना चाहती थी। मार्कस अपने परिवार के पास लौटना चाहता था। यहाँ तक कि सफीना का भी एक पुराना प्रेमी था।

लेकिन सबसे अहम बात, आप अपने सबसे करीबी सहयोगी—हुसैन को नहीं जानते, है ना? उन्होंने खिलाफत के राजरक्षक बल में भर्ती हो गए हैं।’ सखर ने अपने कोट की जेब में हाथ डाला और एक कागज़ निकाला। ‘उनका निवेदन पत्र। वे भी आगे बढ़ना चाहते हैं। लगता है हर कोई आपको बताने से डर रहा है।’
सिंदबाद ने पलकें झपकाईं। उसे समझ नहीं आ रहा था कि किस पर विश्वास करे। वह तुम्हारे दिमाग से खेल रहा है। उसकी बातों पर ध्यान मत दो।
एडमिरल ने मानो उसके मन की बात पढ़ ली। ‘मेरे पास दल के सभी सदस्यों के पत्र और कागजात हैं। प्रेसा चीन जाकर नई पाक कला सीखना चाहती है। इदरीस अपने पति के साथ रहना चाहती है... आप समझ ही गए होंगे। मैं आपके पूरे दल को जानता हूँ, सिंदबाद। लगता है, आपसे भी ज़्यादा।’
सखर ने उसे दया भरी निगाहों से देखा। ‘अपने दुश्मन के साथ सबसे पहले जो काम करना चाहिए, वह है शोध करना। देखो कि उनके दिमाग में क्या चल रहा है। लोग हमला करते हैं। वे चलते हैं। वे कूदते हैं। लेकिन किसी भी लड़ाई को जीतने के लिए अवलोकन ही कुंजी है। और मैंने यही किया, और मुझे पता चला कि तुमसे लड़ने के लिए कोई लड़ाई नहीं है। तुम पहले ही हार रहे हो। मान लो कि तुम्हें वंडरस्टोन मिल भी जाए, जो अब हमारे पास है, तब भी तुम्हारे पास तुम्हारा दल नहीं होगा। वे बस चले जाएंगे। ठीक वैसे ही जैसे तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हें छोड़ा था। तुम्हें एक बार फिर अकेला छोड़ दिया जाएगा।’
सिन्बाद ने आंसू भरी आंखों से सखर की ओर देखा। उसे इतना ठगा हुआ और आहत पहले कभी महसूस नहीं हुआ था। उसे ऐसा लगा जैसे उसका दिल डूब गया हो और किसी ने उसे नोच कर निकाल लिया हो और बुरी तरह पीटा हो। "तुम सच में बहुत बुरे इंसान हो," उसने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा।
सखर खड़ा हुआ। वह कोने में रखी एक मेज के पास गया और एक मोमबत्ती जलाई। उसकी सुगंध पूरे कमरे में फैल गई और सिंदबाद को चक्कर आने लगे। राक्षस लंगड़ाते हुए उसके पास आया और उसका कंधा थपथपाया। सखर ने कहा, ‘यह जलती हुई मोमबत्ती तुम्हें गहरी नींद में सुला देगी। तुम अपने मित्र के साथ अपनी नाव में जागोगे। नाव तुम्हारे जहाज के पास होगी। वंडरस्टोन मेरे पास है। अपने अगले लक्ष्य का पीछा करने से पहले तुम्हें अपनी टीम से बात करनी होगी। मुझे आशा है कि तुम अपने मतभेद सुलझा लोगे।’

सिंदबाद ने नींद में कहा, 'तुम्हारा पैर। जब कोई इंसान दानव बनता है, तो वह परिपूर्ण हो जाता है। अमर। अजेय। उसे नया जीवन मिलता है। फिर भी, तुम्हारा पैर घायल है। क्यों?'
एक पल का सन्नाटा छा गया, मानो अनिश्चितता की एक झलक दिखाई दी हो, मानो इस सवाल ने राक्षस के ठंडे आवरण को भेद दिया हो। सखर की परिपूर्ण मुस्कान एक पल के लिए फीकी पड़ गई। 'मेरे मित्र, जब तुम जीवन में आगे बढ़ते हो, तो तुम्हें एहसास होता है कि कुछ घाव ऐसे होते हैं जिन्हें हमेशा बोझ बनकर ढोना पड़ता है।' वह रुका। 'यह उन्हें विनम्र रहने की याद दिलाता है, अहंकार को खुद पर हावी न होने देने की। अच्छी नींद लो। मुझे उम्मीद है कि जल्द ही तुमसे मुलाकात होगी और अगली बार तुम मीठे पेय का आनंद लोगे।'
कुछ ही शब्द बचे थे, लेकिन सिंदबाद पहले ही अंधेरे की चादर में लिपटता जा रहा था।

छब्बीस
अपने जहाज पर वापस लौटते समय सिंदबाद चुप रहा था।
वह अपनी नाव में अशरफिया के साथ अकेले जागा था। उसके पास पानी का एक घड़ा और गेहूं की रोटियाँ थीं। सखर ने यह सुनिश्चित किया था कि वह आराम से रहे। सखर ने अपने दुश्मन के साथ भी इतना अच्छा व्यवहार नहीं किया होता जितना उसने किया। अशरफिया भी नींद से जागा था, और वे दोनों नाव चलाकर वापस लौट आए। सखर की नाव गायब हो चुकी थी।
‘उन्होंने तुमसे क्या पूछा?’ अशरफिया ने पूछा। वह उलझन और उदासी से भरी हुई लग रही थी। ऐसा लग रहा था मानो लाल बालों वाली महिला के साथ उसका समय काफी उतार-चढ़ाव भरा रहा हो।
कुछ नहीं। वह बस मेरे दिमाग से खेल रहा था। मुझे परेशान करने की कोशिश कर रहा था।
‘वह हमें मार सकता था। उसने हमारी गर्दन पकड़ रखी थी और वह हमें खत्म कर सकता था, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।’
मुझे लगता है कि उसे यह पसंद है।
'क्या?'
'किसी को जान से मारने की क्षमता होने के बावजूद ऐसा न करने की शक्ति।' वह पागल है।
हालांकि, वह ऐसा प्रतीत नहीं होता था।
'क्यों?'
‘क्योंकि वह दयालु था। मेरे जीवन में मिले अधिकांश लोगों से कहीं अधिक दयालु। इसका सबसे बड़ा सबूत।’ उसने पानी के घड़े की ओर इशारा करते हुए उसमें से एक घूंट पानी पिया।
'यह जहरीला हो सकता है।'
नहीं, उनका तरीका नहीं था। उन्होंने आपसे क्या पूछा?

‘मैं उससे नहीं मिली। मेरे लिए तो वो लाल बालों वाली औरत थी। वो तो सच में सिरदर्द है।’ अशरफिया ने मुंह बनाया। ‘मैंने इसके लिए हामी नहीं भरी थी। अजराइल एक खतरा था, लेकिन ये पागल... मुझे लगता है कि वो चाहता है कि हम उसका पीछा करें। ये एक खेल जैसा है।’
‘तो तुम जाना चाहते हो?’ सिंदबाद अपनी झुंझलाहट छिपा नहीं सका। ‘आगे बढ़ना चाहते हो?’
उसने अपने जबड़े भींच लिए। ‘तुम क्या कहना चाह रही हो, प्रिय? अगर मैं ‘आगे बढ़ना’ चाहती तो बहुत पहले ही कर चुकी होती।’ वह थोड़ी देर रुकी। ‘द्वीप के उन खूनी जीवों ने मुझे यह एहसास दिलाया कि लोग प्यार और अपनेपन का एहसास पा सकते हैं... ये सब सच में मौजूद है। मुझे तुम्हारे साथ दोस्ती मिली है।’ मुझे पता है। और मुझे भी एक बार प्यार हुआ था।
वे लगभग जहाज के पास ही पहुँच गए थे कि उसने कहा, 'धन्यवाद।'
'किस लिए?'
‘पीछे रुकने के लिए धन्यवाद। तुम रैग्नार के पीछे जा सकते थे, लेकिन तुमने ऐसा नहीं किया। इसलिए पीछे रुकने के लिए धन्यवाद। मेरे साथ रहने के लिए धन्यवाद। इससे मुझे सोचने पर मजबूर होना पड़ता है... तुम बड़े हो गए हो, सिंदबाद। मेरी उम्मीद से कहीं ज्यादा तेजी से परिपक्व हो गए। तुमने एक सच्चे नेता की तरह व्यवहार किया।’
सिन्बाद ने बस सिर हिलाया और अपने साथी द्वारा फेंके गए हुकों को पकड़ लिया। उसने उन्हें नाव से बांध दिया और उसकी टीम ने उन्हें ऊपर खींच लिया। घावों और चोटों के बावजूद, वह सुरक्षित अपने डेक पर वापस आ गया।
चालक दल के सदस्य उसे चारों ओर से घेरकर सवाल पूछने के लिए तैयार थे। ‘चलिए बात करते हैं। मेरे लॉज में।’
जब वह लॉज पहुंचा, तो उसने अपनी जैकेट उतारकर कोने में फेंक दी। फिर उसने अपना चेहरा पोंछा और अपनी कुर्सी पर बैठ गया, बस अपने साथियों को अंदर आते हुए देखता रहा।
मार्कस, अशरफिया, हुसैन, प्रेसा, सफीना और इदरीस। वे सभी चुपचाप खड़े थे। जब वे सब अंदर आ गए, तो इदरीस ने कहा, 'तुम दोनों के खाली हाथों को देखकर मुझे लगता है कि मिशन बुरी तरह विफल रहा।'
'भयानक कहना ज्यादा सटीक होगा,' अशरफिया ने कहा।

जब सिंदबाद ने उनकी कहानी सुनाई, तो इदरीस ने कहा, 'सखर को देखकर लगता है कि उसे पता है कि वह क्या कर रहा है। मुझे यकीन है कि उसने तुम्हें और अशरफिया को जाने देने का कोई कारण जरूर निकाला होगा।'
‘या शायद वो मुझे पसंद करता है?’ सिंदबाद ने अपने ही मजाक पर हल्की सी हंसी हंस दी, हालांकि बाकी कोई नहीं हंसा। ‘या शायद वो मुझसे कुछ चाहता है।’ ‘जैसे क्या?’ हुसैन ने पूछा।
सिन्बाद ने कोई जवाब नहीं दिया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि हुसैन— उसका भरोसेमंद दोस्त—शाही रक्षक दल में शामिल हो गया है या उसने उसे बिना बताए आवेदन कर दिया है। वह मुश्किल से उसकी आँखों में देख पा रहा था। उसे अंदर से खालीपन महसूस हो रहा था।
सिन्बाद सखर की कही बातों के बारे में बोलना चाहता था—लोगों पर भरोसा न करने और अपने दोस्तों से पूछताछ करने के बारे में—लेकिन वह चुप रहा। अब वह उन सभी को संदेह भरी निगाहों से देख रहा था।
“उसके पास पहला वंडरस्टोन है, लेकिन वह धीमा है,” उसने सखर के बारे में कहा। “और वह अपना समय ले रहा है। हमें जहाज को आर्कटिक ले जाकर उन पंथवादियों की तलाश करनी चाहिए जिनके बारे में अनांसी ने हमें बताया था। वंडरस्टोन के तीन भाग हैं और वह सिर्फ एक भाग से टैबलेट को पूरा नहीं कर सकता। इसलिए हम अभी हारे नहीं हैं।”
'मैं पाल की दिशा तय करूंगा,' मार्कस ने जल्दी से कमरे से निकलते हुए कहा। ‘मुझे अगली बार जाना चाहिए,’ इदरीस ने कहा। ‘सखर एक सनकी आदमी लगता है।’ 'तुम्हें मेरी देखभाल करने की ज़रूरत नहीं है,' सिन्बाद ने सबको चौंकाते हुए गुस्से से कहा। 'मैं ठीक हूँ। मुझे लगता है अगली बार मैं प्रेसा को ले जाऊँगा। वह इतनी शिकायत नहीं करती।'
‘क्या तुम मेरे बारे में सब कुछ भूल गए हो, कप्तान साहब?’ उसने आश्चर्यचकित होकर पूछा।
'मैं तो बस मजाक कर रहा था, लेकिन हां, अगले मैच के लिए और भी टीमें मैदान पर उतरेंगी। इस बार हमें बैकअप की जरूरत है।'
वे सभी कमरे से बाहर निकलने लगे।
केवल सफीना ही बची थी।
जब उसने बात की, तब सिन्बाद अपने डेस्क पर बिखरे हुए कागजों, चार्टों और किताबों को समेटने में व्यस्त था।

‘आपकी आवाज आपके जैसी नहीं लग रही है।’
‘हम्म? ओह, तुम नहीं गए और तुम्हें परवाह भी है? ये दो बातें मुझे हैरान करती हैं।’
‘तुम्हें क्या हो गया है? तुम पहले हंसमुख, प्यारी और मिलनसार थीं। और अचानक तुम. . . गुस्से और निराशा से भरी हुई हो। क्या हुआ?’
सिन्बाद ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'मैंने सोचा था कि मुझे अपने साथियों के सामने खुश रहने का दिखावा करना चाहिए। उन्हें आश्वस्त करना चाहिए। लेकिन मैं गलत था। मुझे परवाह नहीं करनी चाहिए थी। मुझे बस सबको वह दिखाना चाहिए था जो मैं सच में महसूस करता हूँ।'
मेज से टेक लगाकर वह फीकी मुस्कान के साथ बोली, 'सिंदबाद, नेता होने का मतलब यह नहीं है कि आपको हर समय बहादुर रहना पड़े। इसका मतलब यह भी है कि अपने डर को गले लगाने का साहस होना चाहिए।'
‘इतनी कम उम्र और जीवन के अनुभवहीन व्यक्ति से ज्ञान की बातें। एक ऐसा व्यक्ति जो कभी नेता नहीं रहा। या रहा है? मुझे तो पता भी नहीं था कि तुम प्यार में हो, तो...’
‘सिंदबाद. . .’
‘नहीं, कोई बात नहीं। मुझे माफ़ करना, मैं नखरे कर रहा हूँ। बेहतर होगा कि हम एक-दूसरे से दूर रहें।’ वह अपनी एक डायरी पढ़ने में वापस लग गया। लेकिन वह वहीं खड़ी रही। ‘जब मैं उनसे मिली थी, तब मैं जवान थी। मैं अभी भी जवान हूँ, लेकिन नासमझ थी। उन्होंने मुझे जीवन के बारे में बहुत कुछ सिखाया। मैं उनसे तब मिली थी जब मैं तुरही की तलाश में एक शहर में तैनात थी। वह भी जवान थे, बेफिक्र। मुझे यह बहुत अच्छा लगा। उनका स्वभाव बहुत ही मनमौजी था। एक ऐसा व्यक्ति जो खुद को ज्यादा गंभीरता से नहीं लेता था।’ 'मैं उसके बारे में कुछ नहीं सुनना चाहता, सफीना। मुझे पता है कि वह तुम्हारे लिए बहुत मायने रखता होगा, लेकिन मैं उसके बारे में सुनना नहीं चाहता,' सिंदबाद ने गुस्से से भरे स्वर में कहा।
‘तुम्हें जानना चाहिए, सिंदबाद,’ उसने दृढ़ता से कहा। ‘तुम्हें जानना चाहिए क्योंकि तुम्हें पता होना चाहिए कि उसके साथ क्या हुआ था।’
उसने उपहास उड़ाते हुए कहा, 'मुझे परवाह नहीं है।'
‘तुम्हें जाना चाहिए।’ उसकी आँखों से आँसू बहने ही वाले थे। ‘क्योंकि उसकी मृत्यु हो गई।’

सिंदबाद ने ऊपर देखा। 'कैसे?'
‘मेरी वजह से।’
वह गुस्से में कमरे से बाहर निकल गई।

सत्ताईस
वह टीम से दूर रहने की पूरी कोशिश कर रहा था।
उसने उन्हें तैनात कर दिया था और उन्हें निर्देश दे दिए थे कि क्या करना है, फिर वह अपने कमरे में चला गया। चिंतन करता रहा। निहारता रहा। सब कुछ खामोशी में। वह छत को देखता रहता और अपने जहाज की हल्की-हल्की हलचल के साथ झूमता रहता। वह अकेला था। खालीपन महसूस कर रहा था। दुनिया से कटा हुआ। जिन लोगों को वह अपना परिवार मानता था, उनसे इतना अलग-थलग महसूस करना अजीब था। ऐसा लग रहा था कि भविष्य में भी, जहाँ वह हर तरह के साहसिक कारनामे कर सकता है, उसे कोई ऐसा नहीं मिलेगा जो उसे पूर्णता का एहसास करा सके।
जिस एक व्यक्ति ने ऐसा किया... वह अब उसका नहीं रहा।
सफीना के शब्द उसके दिमाग में बार-बार गूंज रहे थे। उसका मतलब क्या था कि उसके प्रेमी की मौत उसकी वजह से हुई? क्या गिल्ड के लोग उसके बारे में शुरू से ही सही थे? अब जब उसने ये सब बता दिया था, तो उसके विचार रुक ही नहीं रहे थे। क्या वह सच में दुष्ट थी? अंदर से बुरी? उसने उसे ठीक से बताया भी नहीं। क्यों? उसके मन का एक हिस्सा उससे बात करना चाहता था, लेकिन वह बहुत दूर और ठंडी लग रही थी।
सिंदबाद को अचानक ठंड लगने लगी। उसने कंबल को अपने पास कसकर लपेट लिया। वे अब उत्तर में थे, और यहाँ ठंड हड्डियों तक जम जाती थी।
सिंदबाद को सर्दी से नफरत थी। नाक बंद हो जाती थी। गले में खराश हो जाती थी। सर्दियों में तरह-तरह की छोटी-मोटी और बेतुकी स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती थीं।
अब उन्होंने अपना ध्यान मुख्य समस्या यानी सखर पर केंद्रित किया।
शायद सखर सही था। शायद मुझे उसके साथ हो जाना चाहिए था। कम से कम मैं जीतने वाली तरफ तो होता।

सिंदबाद खुद को घिरा हुआ महसूस कर रहा था। इस समय, केवल बगदाद का दृढ़ निश्चयी खलीफा ही भरोसेमंद प्रतीत हो रहा था।
जब वह सोच रहा था, तो उबड़-खाबड़ समुद्री लहरों पर नाव आगे की ओर हिलने लगी। अब वे उत्तर की ओर और आगे बढ़ रहे थे। जैसे-जैसे वे आर्कटिक के करीब पहुँच रहे थे, हवा और ठंडी होती जा रही थी, जो उनके पालों को ज़ोर से फड़फड़ा रही थी। वे जानते थे कि अगर वे उड़ान भरेंगे तो यह आंधी उन्हें उनके मार्ग से भटका देगी, इसलिए वे वापस पानी में उतर आए और उस क्षेत्र में उड़ान भरने की अपनी योजना को स्थगित कर दिया।
दरवाजे पर दस्तक ने सिंदबाद के विचारों को बाधित कर दिया। 'अंदर आओ!' हुसैन ने दरवाजे से अपना सिर बाहर निकाला। 'उसे कुछ दिख रहा है।'
'आपको यकीन है?'
'पक्का यकीन है।' जिस तरह से उसने यह कहा, कुछ गड़बड़ सी लगी।
सिन्बाद ने जल्दी से अपना कोट, स्कार्फ और बूट पहने, अपना कंबल साथ लिया और डेक की ओर भागा, जहाँ भीड़ जमा थी। पानी उफान पर था और हवा ज़ोर से चल रही थी। प्रेसा का शरीर काँप रहा था और उसकी आँखें ऊपर की ओर चढ़ गई थीं। उसका चेहरा पीला पड़ गया था।
‘मुझे दिख रहा है। उस द्वीपसमूह में कुछ अजीब है।’ उसने बर्फीले द्वीपों के समूह की ओर इशारा किया, जिसके पहाड़ नौ हज़ार फीट ऊँचे थे। ‘अजीब से भी ज़्यादा, मुझे लगता है कि यहाँ कुछ प्राचीन है। कुछ ऐसा जो यहाँ का नहीं है। कुछ पराया। मुझे दिख रहा है... मुझे दिख रहा है... खून, एक भूमिगत गुफा और खतरा।’ उसने पलकें झपकाईं, उसकी आँखें सामान्य हो गईं, और उसने अपनी नाक से खून पोंछा। कपड़ों की कई परतें पहने होने के बावजूद वह काँप रही थी। सिन्बाद ने उसे उस नई जगह की जाँच करने के लिए कहा था जहाँ वे जा रहे थे। उसने देखा कि अनांसी की जानकारी बहुत अस्पष्ट थी, इसलिए उसने प्रेसा से द्वीपसमूह के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए यह अनोखा तरीका अपनाने का फैसला किया। लेकिन जिस तरह से उसने इसका वर्णन किया था, उससे सभी भयभीत हो गए थे।
‘तुम सबने उसकी बात सुन ली,’ सिन्बाद ने कहा। ‘जहाज को किनारे पर रोको और नीचे उतरो। दस मील का दायरा बनाओ और अशरफिया के बनाए हुए बमों को दोनों तरफ तैनात करो। अगर कोई हमारे जहाज के पास आया तो ये फट जाएँगे। अब से सभी लोग डेक पर तैयार रहें।’

सिंदबाद के कठोर व्यवहार को देखकर वे सभी थोड़ा अचंभित होकर गंभीरता से सिर हिलाने लगे।
वह प्रेसा के पास गया और अपना कंबल उसके कंधों पर डाल दिया। 'मुझे लगता है तुम्हें एक गर्म कप कोको की जरूरत है।'
उसने हल्की सी मुस्कान दी।
लॉज की ओर वापस जाते समय सिंदबाद ने अपना हाथ उसके कंधे पर रख दिया। 'मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैं तुम्हारे लिए यह सब बकवास कर रहा हूँ, बेटा।'
क्या मैं इतना बुरा हूँ?
‘मुझे नहीं लगता कि मैं आपकी चापलूसी करने वाली हूँ।’ उसने गहरी साँस ली। सिंदबाद ने एक कप में शहद मिला हुआ कोको का दूध डाला और उसे दे दिया। ‘तो, सब ठीक है?’
प्रेसा ने अपने कप से नज़रें ऊपर उठाईं। 'मुझे इस बारे में अच्छा महसूस नहीं हो रहा है, सिंदबाद।'
उसने उसका नाम लिया था—इसका मतलब था कि वह डरी हुई थी। और प्रेसा, अपने छोटे कद के बावजूद, ज़्यादातर चीज़ों से डरती नहीं थी।
'आप ऐसा क्यों कह रहे हो?'
'यहाँ कुछ ऐसा है जिसे मैं छू नहीं सकता। महसूस नहीं कर सकता। यहाँ कुछ जमा हुआ सा है। कुछ ऐसा जो इंसान नहीं है।'
‘प्रेसा, हम काफी समय से अमानवीय चीजों से निपट रहे हैं, इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए।’
‘नहीं।’ वह तनावग्रस्त हो गई। ‘यह ऐसी चीज है जिसका इस दुनिया से कोई लेना- देना नहीं है।’
‘क्या आपको लगता है कि यह किसी दूसरी आकाशगंगा से आया है?’
उसने अपने होंठ चाटे। उसने उसकी कही हुई बातों को अनसुना करते हुए कहा, 'मुझे तो बस अपनी माँ और भाई के साथ जाकर समय बिताना चाहिए था।'
सिंदबाद ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'क्या हुआ?'
‘मैं उनसे बगदाद में मिला था, आपको पता है। वे खुश थे। वे संतुष्ट थे। और जब आप लोग मौज-मस्ती कर रहे थे, तब मैंने उनके साथ अच्छा लंच किया और हालचाल पूछा।’

उन्होंने व्यंग्यपूर्वक कहा, 'यह जानकर अच्छा लगा कि तुम मेरा साथ दे रहे हो।'
उसने इसे नजरअंदाज कर दिया। 'मुझे एहसास हुआ कि परिवार कितना महत्वपूर्ण है। मेरा एक परिवार है, लेकिन मैं उनसे दूर भागती रहती हूं।'
सिंदबाद ने अपने होंठ काट लिए। उसे अचानक बहुत अकेलापन महसूस हुआ, मानो दुनिया में उसका कोई भी न हो।
‘तुम ऐसा क्यों करते हो? क्या तुम हमेशा भागते रहते हो?’
‘मुझे नहीं पता। शायद इसलिए कि मैं बेवकूफ हूँ।’ उसने कंधे उचकाते हुए कहा। ‘मैंने बसरा में काम करना इसलिए शुरू किया क्योंकि मैं बगदाद की नीरसता से दूर रहना चाहती थी। बगदाद सबसे सुरक्षित शहर था। बसरा अजीब लोगों और अजीबोगरीब हालातों से भरा था। जैसे कि तुम और हुसैन। इससे भी बढ़कर, यह अज्ञात को जानने का मौका था। मैं उस बेतुके शराबखाने से इतना पैसा कमाना चाहती थी कि सातों समुद्रों की यात्रा करके अनजानी दुनियाओं की खोज कर सकूँ। अपने परिवार को भूल जाओ। तुम मेरे पिता के साथ मेरे इतिहास को जानते हो। और मैं अपने भाई और माँ को पैसे भेजती रह सकती थी।’
‘और इसीलिए आप यहाँ आए हैं?’
'हां। बगदाद में मैं कुछ पल के लिए भटक गया था, लेकिन मुझे विश्वास है... कि मैं यहीं का हूं।'
सिन्बाद मुस्कुराया। 'मुझे डर था कि लोग मुझे और जहाज को छोड़कर चले जाएंगे।'
उसने उदास मुस्कान के साथ उसकी ओर देखा। 'तुम इतनी जल्दी मुझसे बचकर नहीं निकल पाओगे, कप्तान साहब। लेकिन मेरा इरादा आखिरकार अपना खुद का जहाज रखने का है। अब तक के सबसे खूंखार समुद्री डाकू बनो!'
‘मुझे यकीन है,’ सिंदबाद ने हंसते हुए कहा। ‘क्या आपको पता है कि हुसैन ने रॉयल गार्ड में शामिल होने की कोशिश की थी?’
‘अरे बाप रे! सच में? वो गद्दार कमीना।’
'हाँ, ठीक है।'
'शायद वह अपने पिता के नक्शेकदम पर चलना चाहता है।'
सिन्बाद लगभग यह भूल ही गया था कि हुसैन के पिता सेना में थे और ज़ब की लड़ाई में वीरगति को प्राप्त हुए थे। वह अपने आप में इतना मग्न था कि हुसैन और उसके पिछले जीवन के बारे में भूल ही गया था।

‘क्या हमें उससे इस बारे में बात करनी चाहिए?’ उसने पूछा।
नहीं, नहीं। मैं इसे खुद कर लूंगा।
दरवाजे पर दस्तक हुई। यह मार्कस के आदमियों में से एक था। 'कैप्टन, हमें कुछ मिला है।'
मुझे पूरी उम्मीद है कि यह वंडरस्टोन ही होगा।
'ऐसा बिल्कुल नहीं है।'
सिन्बाद ने आह भरी और प्रेसा के साथ डेक की ओर चल पड़ा। उसके आदमियों ने जहाज को सुरक्षित रूप से किनारे पर ला दिया था। रस्सियाँ बाँध दी गई थीं, तख्ते बिछा दिए गए थे, और चालक दल के कुछ सदस्य जहाज की सुरक्षा के लिए उसके चारों ओर घेरा बनाकर खड़े हो गए थे।
सिन्बाद और प्रेसा उस आदमी के पीछे-पीछे जहाज से उतर गए। कुछ मिनट चलने के बाद प्रेसा ने पूछा: 'आखिर किसने सोचा होगा कि इस चमत्कारिक पत्थर को यहाँ गिराएगा?'
'हो सकता है यह एक दुर्घटना हो। इन चीजों का पता लगाना काफी मुश्किल काम हो सकता है।'
जल्द ही उन्होंने मार्कस, इदरीस, हुसैन और अन्य लोगों को एक साथ huddled हुए पाया। वे सीधे अपने सामने देख रहे थे।
सिंदबाद ने उनकी निगाहों का पीछा किया और उसकी रीढ़ की हड्डी में एक सिहरन दौड़ गई।
जमीन पर दर्जनों लाशें बिखरी पड़ी थीं—इंसानों, खच्चरों और कुत्तों की— सभी जली हुई, कटी-फटी और क्षत-विक्षत थीं। ऐसा लग रहा था मानो वे किसी अभियान दल की हों। उसने नारंगी और पीले रंग के झंडे के झुलसे हुए अवशेष देखे। वह जाना-पहचाना लग रहा था।
‘तांग राजवंश,’ प्रेसा ने फुसफुसाते हुए कहा, चीनी साम्राज्य का जिक्र करते हुए। ‘वे यहाँ क्या कर रहे थे?’
'शायद वे भी वही चीज खोज रहे हैं जो हम खोज रहे हैं,' इदरीस ने कहा।
'और उनका अंत अच्छा नहीं हुआ, प्यारे दोस्तों,' अशरफिया ने आगे कहा।
हुसैन ने पूछा, 'हमें ऐसा क्यों लगता है कि इसका अंत हमारे लिए अच्छा होगा?' सिन्बाद चुप रहा। उसे अचानक डर लग गया। प्रेसा उसकी ओर मुड़ी। 'मुझे तुम्हें बता देना चाहिए था।'
‘क्या?’ ठंड से हर सांस धुंध में तब्दील हो गई।

जब मैंने कहा कि मुझे जो महसूस हुआ वह इस दुनिया से परे था, तो मेरा मतलब था कि यह उस दुनिया का हिस्सा नहीं है जिसमें हम रहते हैं। यह प्राचीन है। 'मुझे पता है, तुमने मुझे बताया था।'
'नहीं।' उसने सिर हिलाया। 'जब मैंने परग्रही और प्राचीन कहा, तो मेरा मतलब था कि यहाँ जो कुछ भी मौजूद है, वह तब पैदा हुआ था जब दुनिया की रचना अभी- अभी हुई थी।'

अट्ठाईस
'सब लोग इकट्ठा हो जाओ,' सिंदबाद ने आदेश दिया।
दल के सदस्य सिंदबाद को इतनी उम्मीद भरी निगाहों से देख रहे थे कि वह लगभग अपने शब्दों पर लड़खड़ा गया, उसकी जुबान लड़खड़ा गई।
शांत हो जाओ। वे अभी तुमसे भाग नहीं रहे हैं।
वह घबराया हुआ था। पहले तो उसकी असुरक्षाएँ उसके भीतर उबल रही थीं और अब वहाँ पड़े दर्जनों चीनी शवों का दृश्य। प्रेसा के पीले चेहरे ने बिना शब्दों के ही बहुत कुछ कह दिया था। अगर यह प्राचीन वस्तु समय की कसौटी पर खरी उतर सकती है, तो आखिर यह किस चीज से बनी है?
यहां तक कि उसकी संहिता भी काम नहीं आई। बचपन में उसने उन सभी जीवों का रिकॉर्ड रखा था जिनसे उसे सावधान किया गया था, परियों से सुनी सभी कहानियों का, और सेइड को सिखाए गए सभी मंत्रों का। उसने इसे संहिता कहा था, और इसमें कई पन्ने थे।
“चलिए इस पूरे द्वीपसमूह की घेराबंदी कर लेते हैं। इदरीस, तुम उत्तर की ओर जाओ। अपने साथ कुछ लोगों को ले जाओ। मार्कस और अशरफिया, तुम पूर्व की ओर का इलाका संभालो। मैं प्रेसा के साथ दक्षिण की ओर का इलाका संभालूंगा। चलिए कुछ शिविर लगाते हैं और पता लगाते हैं कि आखिर चल क्या रहा है।”
वे सब चुपचाप अपने थैले और हथियार उठाने लगे। जब सिंदबाद ने भी ऐसा ही किया, तो उसने देखा कि उसका दुबला-पतला दोस्त हुसैन उसके पास आ रहा है। वह भी साथ चलने को तैयार था।
‘तुम्हें क्या लगता है कि तुम कहाँ जा रहे हो?’ सिंदबाद ने पूछा।
'बेशक, आपके साथ।'
'ओह, उम, मुझे लगता है कि इदरीस को आपकी मदद की ज़रूरत होगी। मेरे पास प्रेसा है, इसलिए सब ठीक है।'

हुसैन ने असमंजस में अपनी भौंहें सिकोड़ीं। उसे आभास हो गया कि सिंदबाद को कोई बात परेशान कर रही है। 'लेकिन प्रेसा उसके साथ जा सकती है।'
‘प्रेस्सा परेशान है, हुसैन। मुझे लगता है मुझे उसके साथ रहना चाहिए।’ युवती एक चट्टान पर बैठी थी, सिंदबाद का कंबल उसके चारों ओर लिपटा हुआ था। हुसैन और भी कुछ कहना चाहता था। सिंदबाद से पूछना चाहता था कि उसके साथ क्या चल रहा है। लेकिन उसने बस कंधे उचका दिए और कुछ नहीं कहा; सिंदबाद लौटने के बाद से ही हमेशा सख्त और उदासीन रहा था। उसके चेहरे पर शिकन आ गई और वह इदरीस के साथ चला गया।
सिन्बाद प्रेसा के पास गया, जिसने संयोगवश उनकी बातचीत सुन ली थी।
‘अरे, क्या हुआ, बेटा?’
‘कुछ नहीं,’ सिंदबाद ने कंधे उचकाते हुए अपने थैले से एक खंजर निकाला। ‘ये लो, तुम्हारे लिए।’
मैं हथियारों का शौकीन नहीं हूं। असल में, मुझे तो जाना ही नहीं चाहिए।' ‘अरे, चुप रहो।’
'नहीं, तुम चुप रहो। मैं यहीं रहना चाहता हूँ।'
‘मुझे तुम्हारी वहाँ ज़रूरत है, प्रेसा। केवल तुम ही इस जगह की ऊर्जाओं को महसूस कर सकती हो।’
मुझे नहीं पता कैसे। मैं तब खुश थी जब मैं सिर्फ भविष्य देख सकती थी। ‘शक्तिशाली द्रष्टा ऊर्जाओं का भी पता लगा सकते हैं। हालांकि, ऐसे लोग बहुत कम हैं। क्या आप भविष्य देख सकते हैं और मुझे बता सकते हैं कि हमारे साथ क्या होने वाला है?’
मुझसे ऐसा करने को मत कहो।
‘क्यों?’ उसने चिढ़कर पूछा।
‘क्योंकि मुझे ऐसा लग रहा है कि हम मर जाएंगे। हम यहीं सड़ जाएंगे, सिंदबाद।’ वह कांप उठी। ‘मैं डरी हुई हूँ। इसलिए मैं तुम्हारे लिए कोई भविष्य नहीं देख पा रही हूँ। तुम अपनी विनती अपने पास रखो। तुम्हें खुश होना चाहिए कि मैं तुम्हारे साथ जा रही हूँ।’
सिन्बाद ने इतनी बहादुर लड़की को इतना डरा हुआ कभी नहीं देखा था, लेकिन उसने उदास होकर सिर हिलाया। वे मार्कस के कुछ आदमियों के साथ दक्षिण की ओर बढ़ने लगे, तेज़ हवाओं का सामना करते हुए। उसे लगातार ऐसा लग रहा था जैसे कोई आँखें उन्हें देख रही हों, जैसे कोई परछाई उनका पीछा कर रही हो, लेकिन

जब वह पीछे मुड़कर देखता, तो यह एहसास गायब हो जाता। सिन्बाद के पीछे परछाइयाँ झिलमिला रही थीं और उसे लग रहा था जैसे वे उससे बात कर रही हों।
अब सब कुछ बहुत उलझन भरा और डरावना होता जा रहा था।
जब वे एक जमी हुई झील पर पहुँचे तो उन्होंने कुछ देर आराम किया। वहाँ बर्फ के टुकड़े जानलेवा ठंडे पानी में बेपरवाही से तैर रहे थे।
ऐसा लग रहा था मानो सब मानसिक रूप से थक चुके हों। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। सब चुपचाप दूर तक देखते रहे। सिंदबाद गर्म कोको की बोतल से पानी पीते हुए जमे हुए बंजर इलाके को निहार रहा था। ऊपर आसमान में हरे, बैंगनी और नीले रंग की ऑरोरा बोरेलिस (उत्तरी रोशनी) नाच रही थी। उसके आसपास जीवन का कोई संकेत नहीं दिख रहा था, बस पहाड़ियाँ थीं जिन पर रंगों का मिश्रण प्रतिबिंबित हो रहा था। इन सबने उस जगह को बेहद रहस्यमय बना दिया था। उसने झील के दूसरे छोर पर किसी को देखा। वह जाना-पहचाना लग रहा था। सिंदबाद ने अपनी आँखें गड़ा दीं। वह निश्चित रूप से एक आदमी था। लंबा। हल्की नीली आँखें। सिर के पीछे बंधे हुए चांदी जैसे भूरे बाल। एक हाथ में छड़ी। सिंदबाद के कान में एक आवाज फुसफुसाई, 'मेरे साथ आ जाओ।'
वह आकृति गायब हो गई।
बस करो! वह ज़रूरत से ज़्यादा सोच रहा था। उसने सिर हिलाया और आँखें कसकर बंद कर लीं।
लेकिन जब सिंदबाद ने अपनी आँखें खोलीं तो दूर से दो नई आकृतियाँ दिखाई दीं। लंबे नुकीले दांतों वाली, हुड वाले लबादे और अजीब मुखौटे पहने आकृतियाँ एक मरे हुए घोड़े को खा रही थीं।
‘क्या तुम वही देख रहे हो जो मैं देख रहा हूँ?’ सिंदबाद ने पूछा।
प्रेसा ने अपनी आँखें गड़ा लीं। 'हे भगवान, क्या ये वही हैं जो मैं सोच रही हूँ?'
वे भेड़िये नहीं हैं।
‘हाँ। नरभक्षी।’ उसने मुश्किल से अपनी बात कही।
दोनों व्यक्ति खड़े हो गए और अपने भालों से निशाना साधा। ‘हमें...हमें यहाँ से चले जाना चाहिए।’ सिंदबाद ने जल्दी से कहा। ‘भागो,’ उसने आदेश दिया।
सभी लोग इधर-उधर भागने लगे। लेकिन और भी नकाबपोश जीव घात लगाकर बैठे थे।
उनमें से कई ध्रुवीय भालुओं पर सवार थे और उनके हाथों में बड़े-बड़े भाले थे, जिन्हें उन्होंने अब दल पर फेंकना शुरू कर दिया।

सिन्बाद बच निकला, लेकिन एक भाला उसके एक साथी की छाती में जा लगा, जिससे उसकी तुरंत मौत हो गई। बाकी लोग भालों की बौछार से बचने के लिए इधर-उधर भागने लगे। प्रेसा जोर-जोर से चिल्लाई, सिन्बाद ने उसका हाथ पकड़ा और दूसरी तरफ चला गया।
‘इस तरफ पानी है। हम मरने वाले हैं!’ प्रेसा चिल्लाई।
सिंदबाद ने उसके रुकने का इंतज़ार नहीं किया। उसने उसका हाथ पकड़ा और बर्फ के एक टुकड़े पर कूद गया। एक नकाबपोश आकृति अपने भालू पर सवार होकर तेज़ी से पास आई और भालू से कूदकर बर्फ से ढकी ज़मीन पर आ गई। भालू ज़ोर से चीखने लगा, मानो पानी में जाने से डर रहा हो, जबकि नकाबपोश आकृति निडर होकर नीचे उतर गई। उसकी नज़रें सिंदबाद की आँखों से मिलीं और वह बर्फ के एक और टुकड़े पर कूदकर उन दोनों की ओर बढ़ गया।
'अपना वजन आगे की ओर डालें और उसे तट के दूसरे छोर की ओर निर्देशित करने का प्रयास करें,' सिन्बाद ने प्रेसा को बताया।
‘हम मरने वाले हैं! ठंड से जम गए!’ वह चिल्लाई।
अगर तुम इसी तरह चिल्लाते रहे तो मैं पहले बहरा हो जाऊंगा और फिर मर जाऊंगा। सावधान रहो—’
वह आकृति बर्फ के टुकड़े पर कूद पड़ी, और सिंदबाद ने तुरंत अपनी तलवार निकाल ली। दोनों में द्वंद्वयुद्ध शुरू हो गया, सिंदबाद आकृति के हमलों को रोक रहा था। उसने फटा हुआ मुखौटा और उसके पीछे जला हुआ चेहरा देखा। यह एक प्रतीक था—एक क्रॉस का चिन्ह जिसके बीच से अनंत का चिन्ह गुजर रहा था। सिंदबाद ने ऐसा पहले कभी नहीं देखा था। वह एक पल के लिए हिचकिचाया और आकृति ने उस पर विजय प्राप्त कर उसके पैरों पर एक तेज़ प्रहार किया। सिंदबाद कठोर बर्फ पर गिर पड़ा। आकृति ने एक पल भी गंवाए बिना सिंदबाद पर फिर से प्रहार किया, जिसने अब आकृति के पैरों पर ज़ोरदार लात मारी। फिर अपनी तलवार के मूठ का उपयोग करके, उसने आकृति को धक्का दिया, जिससे वह बर्फीले पानी में गिर गया। आकृति लहरों से जूझती हुई ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाई। उसने आसपास की बर्फ की चट्टानों को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन लहरें इतनी तेज़ थीं कि वे उसे पानी के नीचे खींच ले गईं।
'खैर, बाल-बाल बच गए,' सिन्बाद ने नीचे देखते हुए कहा।
प्रेसा ने कहा, 'मैं तो यही कहता कि अब और ऐसे लोग नहीं होने चाहिए।' 'लेकिन मुझे लगता है कि अगर मैंने ऐसा कहा होता तो हमें निराशा ही हाथ लगती।'

'आपका क्या मतलब है?'
'कोहरे की वजह से मैं पहले ठीक से देख नहीं पा रहा था, लेकिन मुझे लगता है कि कोई हमारा इंतजार कर रहा है।'
सिंदबाद किनारे की ओर मुड़ गया।
एक समूह इकट्ठा होकर उन दोनों को ऐसे देख रहा था मानो वे कोई भव्य तमाशा हों। सिंदबाद ने उनके नारंगी और पीले झंडे देखे। ये उसी दल के झंडे थे जिनसे वे बाहर मिले थे—लाशों के समूह के। चीनी लोग। बीच में एक लंबी महिला फर जैकेट पहने खड़ी थी, उसके लाल बाल छोटे-छोटे कटे हुए थे और बाईं आंख पर काली पट्टी बंधी थी। उसके दोनों ओर सैनिकों की फौज थी।
‘ओह, हमारे पास मेहमान आए हैं,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा जब सिंदबाद और प्रेसा बर्फ के टुकड़े से लड़खड़ाते हुए उतरे। ‘आपसे मिलकर अच्छा लगा। मेरा नाम डॉ. फांग है। मैं तांग साम्राज्य की दूत हूँ।’
वह उससे कहीं बढ़कर थीं; सिंदबाद ने डॉ. फांग के बारे में सुना था। वह एक किंवदंती थीं। एक बेहद निडर खोजकर्ता, एक विलक्षण विलक्षण प्रतिभा वाली, एक बुद्धिमान रसायनज्ञ। वह एक ऐसी महिला थीं जिन्होंने कई लोगों के लिए 'साहसिक कार्य' की परिभाषा तय की थी। यह सर्वविदित था कि उन्होंने कई चीनी सम्राटों के लिए शोध कार्य किया था।
लेकिन सबसे बढ़कर—वह अमर थी।

उनतीस
पौराणिक, महान, डॉ. फांग।
अब सिन्बाद उसके साथ-साथ चलने लगा। वे फर से ढके घोड़ों से उतरे और डॉ. फांग ने अपने घोड़े को सहलाया। वह सिर ऊंचा करके सीधी चलने लगी। उसके चेहरे पर एक ऐसा आत्मविश्वास था, जिसकी सिन्बाद सिर्फ कल्पना ही कर सकता था। वह स्त्री एक देवी थी, एक योद्धा थी, जिसने समय की कसौटी पर खरा उतरा था।
चीनी सैनिकों ने अपना झंडा फहराकर एक छोटा सा शिविर बना लिया था। वे वहाँ बैठकर तलवारें तेज़ कर रहे थे, आग पर हाथ सेंक रहे थे और अपने लिए खाना भून रहे थे। प्रेसा मुस्कुरा रही थी; अपने देश के इतने सारे लोगों को देखकर वह विस्मय में थी। डॉ. फांग रुकीं और अपने सैनिकों की ओर मुड़ीं, उनसे मंदारिन में बात करने लगीं—सिनबाद समझ गया कि वह अभियान के बारे में बात कर रही थीं। हालाँकि वह भाषा नहीं समझता था, लेकिन उनकी बातें और सैनिकों की प्रतिक्रिया देखकर वह एक सच्ची नेता लग रही थीं।
सिन्बाद ने सुना था कि डॉ. फांग का व्यक्तित्व बेहद जीवंत था। कहानियों के अनुसार, उनका अतीत भी रोमांचक रहा था। उन्होंने रसायन विद्या के माध्यम से अमरता प्राप्त की थी—वह भी एक विचित्र दुर्घटना के कारण। कहानी यह थी कि रसायन विद्या का अभ्यास करते समय उन्होंने एक औषधि बनाई थी, जिसका परीक्षण उन्होंने स्वयं पर किया था। इससे उनकी युवावस्था हमेशा के लिए बनी रही। यह सोचकर कि उनके पास दुनिया का सारा समय है, उन्होंने अपना ध्यान उन रहस्यों की ओर लगाया जिनमें उनकी लंबे समय से रुचि थी और अब वे ब्रह्मांड के रहस्यों को उजागर करना चाहती थीं। उन्होंने बगदाद के निनुर्ता गिल्ड की भी मदद की थी; हारुन अल-रशीद के पूर्ववर्ती ने उन्हें राजदूत के रूप में तब बुलाया था जब तांग राजवंश और अब्बासिद खिलाफत के बीच संबंध सौहार्दपूर्ण थे। अब, शीत युद्ध की स्थिति बन रही थी।

चीनी सैनिकों ने सिंदबाद पर खंजर फेंके।
मुझे यहां घर जैसा महसूस नहीं हो रहा है। इतना गर्मजोशी से स्वागत न मिलने के बावजूद भी।
उसने जोर से कहा, 'यहां लोग मुझे पसंद नहीं करते।'
‘हाँ, उन्हें नहीं करना चाहिए। तुम देशद्रोहियों के खून से लथपथ हो। वे तुम्हें क्यों पसंद करेंगे?’ डॉ. फांग ने मुस्कुराते हुए उसकी पीठ थपथपाई। ‘चिंता मत करो, बेटा। आग के सामने आराम करो,’ उसने उसे खुली आग के पास धकेलते हुए कहा। ‘क्या तुम थोड़ी बीयर पीना चाहोगे?’
'नहीं, धन्यवाद,' सिंदबाद ने विनम्रता से कहा।
‘मुझे कुछ चाहिए, कृपया,’ प्रेसा ने भी उतनी ही विनम्रता से कहा।
‘नहीं, वह ऐसा नहीं करेगी,’ सिंदबाद ने बीच में ही टोकते हुए कहा। ‘वह बस बेहोशी की हालत में है।’
प्रेसा ने सिन्बाद की ओर देखा तो डॉ. फांग हंस पड़ीं। ऐसा लग रहा था कि प्रेसा उस महान अन्वेषक से पूरी तरह प्रभावित हो गई थीं। डॉ. फांग जब अपने सैनिकों को संबोधित कर रही थीं, तब सिन्बाद ने जल्दी से प्रेसा को डॉ. फांग के महान कारनामों के बारे में बता दिया था।
‘वो कितनी शानदार है!’ प्रेसा ने हैरानी से आँखें फाड़ते हुए कहा। ‘और उसकी एक आँख पर पट्टी भी है। ये कितना बढ़िया है!’
डॉ. फांग एक लकड़ी के लट्ठे पर बैठे थे, उनका मुख सिंदबाद और धधकती आग की ओर था। 'और एक नौजवान अरब यहाँ ठंड में क्या कर रहा है? क्या तुम दोनों अपनी पसंद से ज़्यादा उत्तर में नहीं आ गए हो?'
सिंदबाद ने अपने होंठ सिकोड़ लिए। वह कुछ भी प्रकट नहीं करना चाहता था। प्रेसा ने अचानक कहा, 'हमें बगदाद के खलीफा ने एक गुमशुदा पट्टिका की तलाश करने के लिए एक मिशन पर भेजा है।'
सिंदबाद ने उसे झुंझलाहट भरी नजरों से देखा।
‘अरे, वो पत्थर!’ डॉ. फांग मुस्कुराए। ‘मैंने इसके बारे में सुना है। वे इसकी पूजा करते हैं।’
‘कौन?’ सिंदबाद ने पूछा।
“हाँ, वही पंथवादी। जिनसे आप बर्फ के उस टुकड़े पर निपट रही थीं। हम उन्हें मारने निकले थे और आपने हमारी मदद की, इसलिए धन्यवाद।” उसने अपनी बीयर की चुस्की ली। “वे पुराने देवता की पूजा करते हैं।”

'पुराना एक?'
“उनका चिन्ह किसी प्राचीन और... बुरी चीज़ का प्रतीक है। जी हाँ, यही सही शब्द है—बुराई। मुझे सम्राट ने यहाँ कुछ गड़बड़ पता लगाने के लिए भेजा है। हमें चिंता थी कि इस सब में जो दिख रहा है उससे कहीं ज़्यादा कुछ हो सकता है, कुछ ऐसा जो राष्ट्र के लिए खतरा बन सकता है, शायद दुनिया के अंत का कारण भी बन सकता है। और इसलिए, मैं यहाँ हूँ,” उसने प्रसन्नता से कहा।
ठीक है, यह बहुत ज़्यादा जानकारी है। बिना माँगे, स्वेच्छा से दी गई जानकारी। सिंदबाद ने सोचा।
‘वह बूढ़ा कौन है?’ उसने जोर से पूछा।
उसने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'काश मैं तुम्हें बता पाती। ये पंथवादी, उत्तर में मछुआरे थे, यहाँ तक कि समुद्री डाकू और कबाड़ बीनने वाले भी थे। जब उन्होंने उस पत्थर को देखा, तो उन सभी ने खुद को जला दिया, और जिस ज़मीन पर हम बैठे हैं, उसके नीचे एक तरह का मंदिर बना लिया। प्राचीन देवता उन्हें मांस खाने का आदेश देते हैं—जानवरों और इंसानों का—मुझे लगता है कि तुमने यही देखा है। वे अपने देवता के आदेश पर स्वेच्छा से ऐसा करते हैं।' ‘वह पुराना प्राणी... अगर वह इतना शक्तिशाली और दुष्ट है, तो वह इस जगह को क्यों नहीं छोड़ देता?’ प्रेसा ने पूछा।
डॉ. फांग ने उसे तीखी नजरों से देखा। 'तुम भविष्यवक्ता हो, है ना?' ‘तुम्हें कैसे पता चला?’ प्रेसा ने उत्साह से पूछा।
‘मैं इतनी लंबी जिंदगी जी चुकी हूं कि इन चीजों को देख पाती हूं। मेरी नजर इन चीजों को पहचानने की काबिलियत है,’ उसने अपनी आंख की ओर इशारा करते हुए हंसते हुए कहा। ‘काश हमारे साथ कोई भविष्यवक्ता होता।’
प्रेसा खिलखिलाकर हंस पड़ी। उसने सिंदबाद की ओर मुड़कर कहा, 'तुम्हें पता है उसने वहां क्या किया? वो आंखों वाली हरकत? उसे इसमें महारत हासिल है। वो बहुत ही मजेदार है!'
डॉ. फांग ने प्रेसा की ओर मुस्कुराते हुए सिन्बाद की ओर रुख किया। “काफी समय हो गया जब मैं तुम्हारे देश, शानदार पूरब में आया था। युवा खलीफा कैसे हैं? बढ़िया हैं? एक बात सुनो। मैं वहाँ जाऊँगा, देखूँगा कि उन्हें किसी चीज़ की ज़रूरत है या नहीं। मैंने गिल्ड के लिए खुदाई में मिली इतनी सारी कलाकृतियाँ लाई हैं कि मुझे यकीन है कि वे मुझे प्यार से याद करते होंगे।

मैंने गिल्ड के लिए अपनी जान तक जोखिम में डाली है। आह, गिल्ड—पुरानी यादों का सफर, वो तो!’
सिंदबाद ने विनम्रतापूर्वक मुस्कुराया।
डॉक्टर फांग बहुत बातें कर रही थीं। यह बात उन्हें ठीक नहीं लगी। उन्होंने सोचा, शायद वह बातूनी थीं और गपशप करना उन्हें पसंद था। आखिर वह एक विश्व प्रसिद्ध खोजकर्ता थीं और उनके पास सुनाने के लिए बहुत सी कहानियां थीं। सिन्बाद का मन एक बात की ओर चला गया—किंवदंती के अनुसार, वह प्रेम में विश्वास नहीं करती थी। वह इसे समय की बर्बादी समझती थी। लेकिन फिर कुछ ऐसा हुआ। यह उस समय की बात है जब वह सैकड़ों वर्ष पूर्व, हान राजवंश में सम्राट हान वू टी के दरबार में एक सेविका के रूप में काम कर रही थी और उनकी एक पत्नी की मित्र थी। डॉ. फांग तब एक साधारण युवती थीं, जिन्होंने अपने खाली समय में रसायन विद्या के रहस्य सीखे थे और पुस्तकालय के उस गुप्त स्थान का पता लगाया था जहाँ गुप्त सामग्री रखी थी। जहाँ लोग रसायन विद्या से डरते थे, वहीं उन्होंने इसे अपनाया और जोखिम उठाया, अंततः अमरता प्राप्त की। कहते हैं कि उन्हें प्रेम भी हुआ था और यहाँ तक पहुँचने के लिए उन्हें बहुत कुछ सहना पड़ा था।
‘जी हाँ, बिलकुल। आपको अवश्य आना चाहिए,’ सिंदबाद ने कहा।
‘सुनो,’ उसने अपने घुटनों पर हाथ पटका और खड़ी हो गई, ‘मंदिर में मौजूद इन खूनी पंथवादियों से छुटकारा पाने में मेरी मदद करो और जब हमें किताब मिल जाएगी तो वह तुम्हारी होगी।’
किताब? ‘यह किताब नहीं है। यह एक पत्थर है... शिला है... रुको। मंदिर कहाँ है? पत्थर कहाँ है? वे यहाँ हैं?’ सिंदबाद उलझन में दिख रहा था।
“ओह हाँ, मेरे बेटे। हमने इसे पहचान लिया है,” उसने उत्साह से कहा। “हमें पता लगाना होगा कि इसमें क्या रहस्य छिपे हैं। कैसा रहेगा अगर प्रेसा मेरे साथ अंदर आ जाए और तुम यहीं रहकर पहरा दो? तुम हमारी रक्षा कर सकते हो!” सिंदबाद ने अपनी निगाहें सिकोड़ लीं।
कुछ तो गड़बड़ है। जब खतरा मंदिर के अंदर है, तो वह मेरे जैसे शक्तिशाली सेइड को बाहर क्यों रखना चाहेगी?
‘प्रेसा ऐसा नहीं करेगा—’
‘मुझे बहुत खुशी होगी, महोदया।’ प्रेसा उछलकर खड़ी हो गई और थोड़ा झुककर अभिवादन किया। ‘आप जैसी शख्सियत से सीखना हमेशा अच्छा लगता है। आपने

चीनियों को गौरवान्वित किया है। आपकी सहायता करना मेरे लिए सौभाग्य की बात होगी… आपको मेरा सम्मान प्राप्त होगा।’
डॉ. फांग मुस्कुराईं, लेकिन उनकी मुस्कान उनकी आंखों तक नहीं पहुंची। ‘तुम्हें हमारी ज़रूरत क्यों है?’ सिंदबाद ने रूखेपन से पूछा। ‘तुम्हारे पास पहले से ही इतनी बड़ी टीम है जो इस पूरे इलाके को तबाह कर सकती है।’ उसने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मेरी टीम में कोई जादूगर बनने की चाह रखने वाला और कोई भविष्यवक्ता तो नहीं है, है ना? यह तो हमेशा मददगार होता है।' ‘मेरे पास एक बड़ी टीम है, आप जानते हैं। चलिए उनका इंतजार करते हैं। और मदद मिलेगी, आप समझ रहे हैं ना।’
उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया। ‘यह प्रस्ताव केवल तुम दोनों के लिए है। मैं नहीं चाहती कि तुम्हारे दल के और लोग आकर मेरे सैनिकों को डराएँ। वे मेरी तरह खुले विचारों वाले नहीं हैं। उन्हें दोष मत देना, मेरे बेटे। तुम्हें पता है, मैंने इतना लंबा जीवन जी लिया है कि मुझे यह एहसास हो गया है कि कट्टरता मनुष्य की सबसे बड़ी मूर्खता है।’
यह बात पक्की हो गई थी। सिंदबाद जानता था कि वह उनका इस्तेमाल कर रही है। लेकिन उसे मंदिर जाने वाले अभियान में शामिल होने की इजाज़त मिल गई थी, और यही उसके लिए काफी था। वहाँ पहुँचकर वह डॉ. फांग के आदेश का उल्लंघन करते हुए अंदर चला जाएगा। साथ ही, वह एक बुद्धिमान महिला थी जिसके पास एक मजबूत सेना थी, और मुश्किल हालात में ऐसे लोगों के साथ मिलकर काम करना हमेशा अच्छा होता है, उसने सोचा। और जब पंथवादियों का खतरा टल जाएगा, तो वह अपनी टीम के लिए वह पट्टिका ले आएगा।
‘ठीक है,’ उसने कहा, ‘हम कब शुरू करेंगे?’

तीस
सिंदबाद शिविर के दूसरे छोर से आ रही चीख-पुकार और विलाप की आवाज़ों से जाग उठा। मंदिर जाने की तैयारियाँ चल रही थीं, इस दौरान सिंदबाद ने खाना खा लिया था, खूब गर्म पानी पिया था और सो गया था।
प्रेसा अब उसके बगल में थी, हांफते हुए बोली, 'तुम जाग गए, बेटा? डॉक्टर फांग को एक जासूस मिला है जो शिविर की जासूसी कर रहा था। वह अब उसके साथ मजे कर रही है, उसे अपनी तलवार से छेड़ रही है।' प्रेसा मुस्कुराई, तभी और भी चीखें सुनाई दीं।
सिन्बाद ने अपना सिर हिलाया। उसे इस तरह की हिंसा में कभी आनंद नहीं आता था। वह शिविर की उत्तरी सीमा की ओर चला, जहाँ उस पंथ के अनुयायी को, नग्न अवस्था में, एक बड़े क्रॉस से बाँधा गया था। उसके शरीर पर घाव, ज़ख्म और जलने के निशान थे। जैसे ही उस पर कोड़ों की बौछार हुई, वह चीखने लगा। शिविर में मौजूद सभी सैनिक अपने बीयर से भरे गिलास आपस में टकरा रहे थे और उस पर हंस रहे थे।
'क्या तुम्हारे देश के सभी लोग क्रूर हैं?' सिंदबाद ने प्रेसा से पूछा, उसकी आवाज घृणा से भरी हुई थी।
‘ऐसा तो वो कह रहा है जिसका इतिहास रक्तपात पर आधारित है,’ प्रेसा ने पलटवार किया। ‘और वो इसके लायक ही था। वो एक जासूस है।’
डॉ. फांग ने सिंदबाद को देखकर मुस्कुराया। उसके हाथ में एक चाकू था। 'इन्हें मारना मुश्किल है, लड़के। यह एक चुनौती है, लेकिन मुझे इसमें मज़ा आ रहा है।'
‘तुम उसे यहाँ लाए हो, इसलिए उसके दोस्त भी पीछे-पीछे आएंगे।’
‘आप मुझसे क्या करवाना चाहते थे?’
‘शिविर हटाओ,’ सिंदबाद ने बेचैनी से कहा। उसे यहाँ बहुत असहज महसूस होने लगा था।

‘हम तो जा ही रहे हैं। खच्चरों को भी तैयार कर लिया गया है।’ वह सिंदबाद के करीब आई। ‘लगता है तुम्हें इन पागलों से हमदर्दी है। क्या तुम्हें पता है ये रात के जीव हैं? ये इंसानी मांस का शिकार करते हैं और एक ऐसे पागल देवता की पूजा करते हैं जो दुनिया को तबाह कर सकता है। तुम्हें अपनी चिंता ज्यादा करनी चाहिए और इन नास्तिकों की चिंता कम।’
सिंदबाद ने उसे तीखी निगाहों से देखा। 'और तुम्हें यह जानकारी कहाँ से मिली? कि वे निर्दोषों को नुकसान पहुँचा रहे हैं और दुनिया का अंत कर रहे हैं?'
उसने भी पलटकर देखा। ‘ऐसे सूत्रों से, जिनका तुमसे कोई लेना-देना नहीं है, वे इस देवता... इस राक्षस को रिहा करने की योजना बना रहे हैं। और हमें उन्हें रोकना होगा।’
'आप यह कैसे जानते हैं?'
मुझे बताया गया था। इन पंथवादियों द्वारा।
सिन्बाद ने अपना सिर हिलाया। वह खुद उन पंथवादियों से पूछना चाहता था, लेकिन उसने देखा कि बंधा हुआ आदमी मर चुका था, उसके मुंह से खून की एक पतली धार बह रही थी। एक धीमी और दर्दनाक मौत। डॉ. फांग ने लाश को देखा और मुस्कुराई। उसकी आंखों पर बंधी पट्टी चमक रही थी। 'ओह, चलो कोई बात नहीं।
बहुत बुरा हुआ।' उसने चाकू सिन्बाद की छाती पर मारा। 'इसे अपने पास रखो। मैं इसे तुमसे जल्द ही वापस ले लूंगी। मेरे लिए इसे पोंछ दोगे, बेटा?' उसने प्रेसा की ओर देखा। 'इस बारे में सोचो,' उसने कहा और इठलाते हुए चली गई।
सिंदबाद एक मिनट तक जम सा गया।
प्रेसा ने सिंदबाद से कहा, 'तुम्हें वह पसंद नहीं है।' 'क्यों?'
मुझे नहीं लगा था कि वह इतनी आत्ममुग्ध होगी।
'आत्ममुग्ध लोग आमतौर पर बहुत मजबूत होते हैं,' प्रेसा ने सहज भाव से कहा।
‘मुझे लगता है कि आपको इसका ठीक उल्टा मिला है। वे सबसे बुरे हैं।’ वह अभी भी दूर कहीं देख रहा था। ‘और जब उसने कहा कि इसके बारे में सोचो, तो उसका क्या मतलब था?’
प्रेसा ने उसकी बात अनसुनी कर दी और चलने लगी।
सिंदबाद पीछे-पीछे गया। 'चलो बताओ।'
उसने मुझे अपने साथ आने के लिए कहा।
‘उसके साथ जुड़ने का क्या मतलब है?’

‘जैसे कि उसकी टीम का हिस्सा बन जाओ। उसे एक भविष्यवक्ता की जरूरत है। इसलिए उसने मुझसे पूछा कि क्या मुझे इस काम में दिलचस्पी है। बात इतनी ही सरल है।’
‘इसके बारे में सोचना भी मत।’ उसने गुस्से से कहा।
‘और ऐसा क्यों, सिंदबाद?’ वह उसकी ओर मुड़ी। ‘क्या तुम मेरे मालिक हो?’ सिंदबाद चुप रहा।
‘मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे चुनाव करना है, और अभी मुझे लगता है कि उसके साथ रहना बेहतर है,’ उसने गुस्से में कहा। ‘मेरे जैसे लोगों के बीच। मेरी माँ खुश होंगी। भविष्य में मुझे कोई अच्छा चीनी लड़का भी मिल सकता है। या इससे भी बेहतर, उसकी तरह एक महान खोजकर्ता बनूँ, रोमांच का हिस्सा बनूँ। कल्पना कीजिए कि यह कितना अद्भुत होगा?’
लेकिन... लेकिन वह तुम्हारा इस्तेमाल कर रही है। उसे बस एक भविष्यवक्ता चाहिए, इसलिए वह तुम्हारा इस्तेमाल कर रही है—'
‘और क्या आप नहीं हैं? सिर्फ इसलिए कि उसने सीधे तौर पर ऐसा कहा, वह गलत है? आप भी तो वही चीजें चाहते हैं।’
‘मुझे पता है, लेकिन हम अच्छे लोग हैं।’ सिंदबाद ने आह भरी।
और आपको इस तरह से किसने बदनाम किया है? उसे बुरा क्या बनाता है? वह एक साहसी महिला है और इसी वजह से आप डरते हैं। कप्तान, आप साहसी महिलाओं को बर्दाश्त नहीं कर सकते। मुझे लगता है कि मैं अपने फैसले को लेकर पूरी तरह आश्वस्त हूं।
नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। मैं इसका इस्तेमाल नहीं करता...
लेकिन वह पहले ही आगे बढ़ चुकी थी।
सिन्बाद का सिर दर्द कर रहा था। उसे पिंजरे में बंद और बेबस महसूस होने लगा। क्या यह सच हो सकता है कि वह एक महिला नेता से डरता है? उसने इदरीस की जगह भी ले ली है, कप्तान बन गया है जबकि वह इससे कहीं अधिक सक्षम थी। और अब यह डॉ. फांग, जिसे वह बिल्कुल पसंद नहीं करता था। उसके गुरु, रीस ने भी हत्याएं की थीं, लेकिन उसने बहुत देर तक उसे उस नजरिए से नहीं देखा था। नहीं! नहीं! सोचना बंद करो! उसने अपने विचारों को थोपा है। इसे अपने दिमाग पर हावी मत होने दो। डॉ. फांग अलग है; उसने निर्दोषों को मारा है और हमारा इस्तेमाल कर रही है। समस्या उसका व्यक्तित्व है, न कि उसका लिंग।

सिन्बाद धीरे-धीरे आगे बढ़ा, प्रेसा के शब्द उसके कानों में गूंज रहे थे। आखिरकार वह शिविर के किनारे पर उससे मिला। वह सीधे आगे देख रही थी, उसकी बाहें बगल में थीं और उसकी पीठ सिन्बाद की ओर थी। किसी से बहस करने के बावजूद वह असामान्य रूप से शांत लग रही थी।
‘मुझे माफ करना, प्रेसा। मुझे बस तुम सबको खोने का डर है। कृपया मुझसे बात करो।’ उसने धीरे से उसके कंधे हिलाए। प्रेसा मुड़ी। उसका चेहरा...
उसके पूरे चेहरे को एक छोटे, स्क्विड जैसे जीव ने ढक रखा था। उसकी तंतुओं ने उसके पूरे छोटे से चेहरे को जकड़ रखा था।
'क्या-'
सिन्बाद लड़खड़ाकर पीछे हट गया। उसने घबराकर चारों ओर देखा और चीनी सैनिकों के चेहरों से चिपके हुए वैसे ही जीव देखे। वे बर्फीली ज़मीन पर मक्खियों की तरह गिर रहे थे, बेहोश। वे बर्फ पर ऐसे गिर रहे थे जैसे किसी भयानक नींद में ऊंघ रहे हों। वह दूसरी दिशा में भागा और उसने देखा कि डॉ. फांग चारों हाथों-पैरों के बल रेंगते हुए उस स्क्विड से बचने की कोशिश कर रही थीं जो उनकी ओर बढ़ रहा था, उन पर झपटने ही वाला था कि सिन्बाद ने डॉ. फांग का चाकू स्क्विड पर फेंक दिया। स्क्विड फट गया।
‘धन्यवाद,’ डॉ. फांग हांफते हुए बोले।
‘ये सब क्या चीजें हैं?’ सिंदबाद चिल्लाते हुए उसकी ओर बढ़ा।
‘ये जो भी हों, बेहद घिनौने हैं,’ उसने हांफते हुए कहा। ‘मैंने जिन पंथवादियों से पूछताछ की थी, उनमें से एक ने कहा था... कि जब भी उस बूढ़े प्राणी को परेशान किया जाता था... जब भी वह हिलता-डुलता था, तो वह अपनी त्वचा से स्क्विड जैसी चीजें निकालता था।’
'मेरा मानना है कि जिस स्काउट को आपने मारा, उसकी मौत सही कारणों से हुई।' ‘तुम्हारा क्या मतलब है?’ उसने सख्ती से कहा।
‘वह अपनी टीम को यहाँ लेकर आया है! इन अजीबोगरीब जीवों के साथ। और वे सबको सोने के लिए मजबूर कर रहे हैं। हमें भागना होगा। अभी।’
‘तुम्हें मुझे यह बताने की ज़रूरत नहीं है, लड़के।’ वह खड़ी हुई और शिविर से बाहर जाने लगी।
सिन्बाद ने प्रेसा को देखा और उसे पकड़ लिया। उसने चाकू निकालकर उसके चेहरे से स्क्विड को खुरचने की कोशिश की। सिन्बाद थोड़ा पीछे हट गया; यह बहुत भयानक था। स्क्विड के गोलाकार चूषण कप उसकी त्वचा में गहराई तक धंसे

हुए थे। वह इस तरह से चिपका हुआ था कि अगर वह चाकू को और अंदर धकेलता, तो उसकी त्वचा फट जाती, शायद उसकी जान भी चली जाती। सिन्बाद ने प्रेसा को अपनी पीठ पर उठाया और डॉ. फांग के पीछे-पीछे चलने लगा।
अचानक, एक स्क्विड बर्फ पर उछलता हुआ आया और डॉ. फांग की बांह से चिपक गया। डॉ. फांग चिल्लाईं, "सावधान!" जैसे ही उन्होंने एक और स्क्विड को अपनी ओर आते देखा। इससे पहले कि सिन्बाद हमला कर पाता, वह उस पर झपटा। वे अचानक, बड़ी संख्या में प्रकट हो रहे थे।
सिंदबाद और प्रेसा ज़मीन पर गिर पड़े। उसने उस चिपचिपे जीव को दूर धकेलने की कोशिश की, लेकिन वह तेज़ी से ऊपर की ओर बढ़ने लगा। वह कठोर बर्फीली ज़मीन पर रेंगता हुआ ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगा। वे ज़मीन पर हर जगह फैले हुए थे, धीरे-धीरे उसके करीब आते जा रहे थे। सिंदबाद ने अपने हाथ-पैर पटके, कुछ को दूर भगाया, लेकिन उससे चिपका हुआ जीव उसके हाथ के करीब रेंगता हुआ उसके चेहरे तक पहुँच गया। सिंदबाद छटपटाया, लेकिन उसने उसे पकड़ लिया था। वह सिंदबाद के मुंह के पास आकर उसकी सांसें खींचने लगा। उसकी आँखें पीछे की ओर घूम गईं, और वह बेहोश हो गया।

इकतीस
जब सिंदबाद को कोठरी में डाला गया तब वह अधमरा था।
जब वह पूरी तरह जागा, तो उसके सिर में तेज़ दर्द हो रहा था। उसके नीचे की ज़मीन ठंडी, सख्त और नम लग रही थी। उसकी आँखें थकी हुई थीं। उसने आँखें खोलने की कोशिश की, लेकिन सब कुछ धुंधला दिख रहा था। वह दीवार से टिक गया और सामने प्रेसा को कुछ बुदबुदाते हुए देखा।
वो अजीबोगरीब स्क्विड जैसे जीव जो भी थे, उन्होंने उनकी सारी ऊर्जा चूस ली थी। लेकिन उन्होंने उन्हें मारा नहीं था। सिंदबाद कमजोरी महसूस कर रहा था। उसने अपनी आँखें गड़ा लीं; जेल की सलाखें मोटी बर्फ से ढकी हुई थीं और सामने एक लंबी गैलरी थी जिससे कई गलियाँ निकल रही थीं। वह ऐसी जगह पर था जहाँ वह नहीं रहना चाहता था। कोई भी समझदार इंसान वहाँ नहीं रहना चाहेगा। ‘क्या तुम ठीक हो?’ उसने कमजोर आवाज में उससे पूछा।
मुझे घिन आ रही है। क्या यह ठीक रहेगा?
'हाँ, बिलकुल तुम्हारी ही तरह लगता है।'
‘हमारे साथ क्या हुआ?’ उसने अब नरम स्वर में कहा।
'उनके आत्मा चूसने वाले जीवों ने हम पर हमला किया, यही हुआ।'
क्या आपने उनके बारे में अपनी किसी पौराणिक कथा या लोककथा में पढ़ा है? वह हँस पड़ा। 'तुम एक बात में सही थे। यह बूढ़ा जो भी है, वह इस दुनिया का नहीं है। इस संस्कृति का नहीं है।'
प्रेसा चुप रही।
‘मुझे लगता है कि हमें भाग निकलना चाहिए।’ उसने मुस्कुराने की कोशिश की। प्रेसा खड़ी हो गई। 'सच में! मुझे बताओ। उन्होंने हमें नहीं मारा। क्यों?' 'शायद उन्हें हमसे कुछ चाहिए। लेकिन हमारे पास उन्हें देने के लिए कुछ नहीं है। अच्छी बात सिर्फ यह है कि हम उनके ठिकाने में हैं। इसका मतलब है कि टैबलेट यहीं है और हम इसे हासिल कर सकते हैं।'

उसने सिर हिलाया।
दोनों ने भागने की योजना बनाना शुरू कर दिया, कोठरी के किनारों और कोनों की जाँच करते हुए। वे चिल्लाए और चीखे, लेकिन उनकी आवाज़ें केवल गूँजती रहीं। कोठरी की सलाखों के पार एक लंबा, बर्फीला गलियारा था, जो पूरी तरह से खाली था।
‘यहां कोई नहीं है,’ प्रेसा ने कहा। ‘यह जगह... निर्जीव है।’
‘अब हार नहीं माननी चाहिए।’ सिंदबाद ने सलाखों का और करीब से निरीक्षण किया। ‘इतनी बर्फ कैसे हो सकती है... रुको!’ वह अचानक रुक गया। ‘ये बर्फ से बनी हैं!’
अगर उसके पास उन्हें पिघलाने के लिए कुछ होता, तो इस मुश्किल परिस्थिति में वह बहुत मददगार साबित होता।
‘मैंने तुम्हारी बात भी सुनी,’ प्रेसा ने कहा। वह अब थककर फर्श पर लेटी हुई थी।
'क्या?'
‘तुम्हें हम सबको खोने का डर है।’
सिन्बाद ने अपने जबड़े भींच लिए। 'हाँ, ठीक है। यह बेवकूफी थी... मुझे पता है कि हर कोई चला जाता है।'
‘हाँ, ऐसा होता है। एक तरह से। यही तो वयस्क जीवन है।’ उसने अपने होंठ सिकोड़े। ‘लेकिन जो तुमसे प्यार करते हैं, वे ऐसा नहीं करते। वे तुम्हारे दिल में रहते हैं। सुनो, मैं तो बस तुमसे मज़ाक कर रही थी। मैं तुम्हें इसलिए नहीं छोड़ रही क्योंकि मैं तुम्हें पसंद नहीं करती। बल्कि इसलिए छोड़ रही हूँ क्योंकि मैं उससे बहुत कुछ सीखूँगी।’
सिन्बाद मुस्कुराए बिना नहीं रह सका। 'मैं समझता हूँ। मुझे लगता है कि मैं थोड़ा असुरक्षित महसूस कर रहा हूँ। मुझे आखिरकार अपनापन मिला था और अब वह मुझसे छीना जा रहा है।'
'सिर्फ इसलिए कि कोई आपके सामने मौजूद नहीं है, इसका मतलब यह नहीं है कि वह वास्तव में मौजूद नहीं है।'
इससे पहले कि वह कुछ जवाब दे पाता, सिन्बाद ने देखा कि एक पंथवादी गलियारे से उनकी ओर आ रहा है। दो और लोग उसके पीछे-पीछे आ रहे थे। उन्होंने कोठरी का ताला खोला और सिन्बाद और प्रेसा को अपने साथ आने का इशारा करते हुए उनकी पीठ में भाले चुभो दिए।

'वे काफी नाराज लग रहे हैं,' सिन्बाद ने कहा।
'बहुत ज्यादा तो।'
पास से देखने पर सिंदबाद ने महसूस किया कि उनसे खून, आंतें और सड़ते हुए मांस की दुर्गंध आ रही थी। गहरे बैंगनी रंग के हुड पहने एक पहरेदार को सिंदबाद ने देखा कि वह उसकी लोहे की तलवार लिए हुए था। किसी और को अपना हथियार संभालते देखकर उसका खून खौल उठा।
वे बर्फ से ढकी ज़मीन पर चलते रहे। सिंदबाद को धीरे-धीरे एहसास होने लगा कि वे एक गुफा में हैं, और वो भी ज़मीन के नीचे बनी गुफा में। उसे ऐसा ही महसूस हो रहा था।
वह गलियारा एक विशाल खुले मैदान में खुलता था, जिसके केंद्र में एक गोलाकार पत्थर का चबूतरा था, और उससे कई और रास्ते निकलते थे, जो एक विशाल, भयानक बर्फ की मूर्ति के सामने जाकर मिलते थे—एक ऐसा जीव जो आधा स्क्विड, आधा ड्रैगन और आधा मकड़ी था। मूर्ति कम से कम पचास फीट ऊंची लग रही थी, शायद उससे भी अधिक, और लगभग छत को छू रही थी। उसका हर रूप डरावना था। उसकी सौ आंखें, टेंटेकल्स, नुकीले दांत और बड़े-बड़े कान थे।
क्या यह किसी प्राचीन देवता की प्रतिकृति है, या शायद उसका अवशेष? क्या वे इसी की पूजा करते हैं?
सिंदबाद की नज़र पत्थर के चबूतरे पर पड़ी। ठीक बीचोंबीच। वहीं वह पट्टिका पड़ी थी। चबूतरे से कई रास्ते जुड़े हुए प्रतीत हो रहे थे, जो गुफा के अंधेरे कोनों तक जाते थे। उसके मन में विचारों की दौड़ शुरू हो गई। वह पट्टिका चुराकर कैसे भाग सकता था?
जब उसने डॉ. फांग को खून से लथपथ और चोटों से ग्रस्त होकर मूर्ति के सामने घुटनों के बल बैठे देखा, तो उसके सारे विचार धराशायी हो गए। ऐसा लग रहा था मानो वह हमेशा से वहीं थी, लेकिन सिंदबाद ने उस विशाल मूर्ति के सामने सब कुछ फीका पड़ने के कारण उसे देखा ही नहीं।
सिन्बाद और प्रेसा को धक्का देकर उसके बगल में घुटने टेकने को मजबूर किया गया। लगभग एक दर्जन अनुयायियों ने उन्हें घेर लिया। वे गुनगुनाने लगे और अपनी छाती पीटने लगे। चिल्लाने और शोर मचाने लगे।
‘वे क्या कर रहे हैं?’ सिंदबाद ने फुसफुसाते हुए फांग से पूछा।
‘पूछो भी मत।’ उसने खून थूका। ‘उनकी बात बिल्कुल मत सुनो। वे पागलों की तरह व्यवहार कर रहे हैं, और तुम्हें सावधान रहने की जरूरत है—’

बीच में खड़े पंथ के अनुयायी ने कहा, “जानते हो, चिल्लाना आसान है, लेकिन फुसफुसाना मुश्किल। हाँ, मैं तुम्हारी भाषा जानता हूँ, नीचों। तुम्हारी सारी भाषा। और मुझे इस बात से कोई आपत्ति नहीं है कि तुम चिड़ियों की तरह फुसफुसाते रहो। लेकिन तुम हमारे घर आए हो, हमारी संपत्ति पर अतिक्रमण किया है, और तुम्हें अपने किए गए पापों का फल भुगतना पड़ेगा।”
सिंदबाद की आंखें चौड़ी हो गईं। 'मैं माफी चाहता हूं। हमें पता नहीं था कि आप यहां हैं।'
‘कोई नहीं। तुमने हमें मारा है, हमें अपंग किया है, हमें यातनाएं दी हैं। इसके लिए तुम मरोगे,’ उसने थूकते हुए कहा। ‘हम उस देवता की पूजा करते हैं, और उसकी नजरों में तुम जैसे लोगों के लिए क्षमा की कोई गुंजाइश नहीं है।’ ‘हमारा आपको नुकसान पहुंचाने का कोई इरादा नहीं था। हमें लगा कि आप हमें मारने आए हैं…’ सिंदबाद की आवाज़ धीमी हो गई। वह डॉ. फांग पर बहुत गुस्सा था। उन्हीं की वजह से और उनकी अंधाधुंध हत्याओं के कारण वे इस स्थिति में थे।
‘अरे, सच में?’ पंथ के अनुयायी ने क्रोधित होकर कहा। ‘हम जानते हैं कि आपकी मित्र, डॉक्टर, यहाँ नेक इरादों से नहीं आई हैं। वह हमारे लोगों से पूछताछ कर रही हैं ताकि उन्हें उस पुराने देवता और उसके ठिकाने के बारे में पता चल सके, ताकि वह उसे जीवित कर सकें और फिर उसे एक जानवर, एक कुत्ते की तरह वश में कर सकें। हमारे देवता के साथ ऐसा व्यवहार कभी नहीं किया जा सकता।’ ‘क्या!’ सिंदबाद और प्रेसा ने फांग की ओर देखा।
उसने बस कंधे उचका दिए। 'ठीक है, तो मैंने झूठ बोला। तांग राजवंश उस जानवर को काबू में करना चाहता है, और उन्होंने मुझे ऐसा करने का तरीका खोजने के लिए बहुत सारा पैसा दिया है। मैं उस पहले शोध दल का हिस्सा थी जिसे बाकी दस्ते के आने से पहले जानकारी इकट्ठा करने के लिए यहाँ भेजा गया था।' सिन्बाद का गुस्सा बढ़ता जा रहा था। उसका अंतर्ज्ञान सही था; फांग में कुछ गड़बड़ थी और उन्हें धोखा दिया गया था। सिन्बाद ने प्रेसा की आँखों में दर्द देखा।
‘वह कोई राक्षस नहीं है, स्त्री। वह हमारा देवता है,’ पंथ के अनुयायी ने क्रोधित होकर कहा। ‘हमें इस द्वीप पर निर्वासित कर दिया गया था—अछूतों की तरह, सब फंसे हुए! उनकी उपस्थिति ने हमें इस कठोर जलवायु में गर्माहट दी। उन्होंने हमें यह एहसास दिलाया कि वह हमारे साथ हैं। उन्होंने हमें आश्रय

दिया। हमें घर दिया।’ उस व्यक्ति ने मूर्ति की ओर देखा, और वे सब फिर से गुनगुनाने लगे।
‘वह तो अजगर है, बेवकूफ,’ सिंदबाद गुर्राया। जवाब में उस आदमी ने उसके पेट में एक घूंसा मार दिया।
‘हम उसे लेविथान कहते हैं,’ पंथ के अनुयायी ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘उसका जन्म ऐसे समय में हुआ था जब प्रकृति के सिवा कुछ नहीं था। सभ्यता से पहले। सदियों पहले, समय के आरंभ में, वह स्वतंत्र रूप से विचरण करता था जब तक कि अन्य प्रजातियाँ उभरने लगीं और हत्या और हिंसा का चक्र शुरू हो गया। लेविथान, वह प्राचीन प्राणी, शांति चाहता था, लेकिन परजीवियों ने उसे काट लिया जिन्होंने उसकी आत्मा को चूस लिया और उसे पागल कर दिया। वह प्राचीन दिव्य प्राणी केवल शांति से रहना चाहता था, लेकिन कोई रास्ता नहीं था। इसलिए वह अत्यधिक ठंडे क्षेत्रों में चला गया, इससे पहले कि धूमकेतु पृथ्वी से टकराएँ और दुनिया के अधिकांश हिस्से को नष्ट कर दें। परजीवियों ने उसे कमजोर कर दिया, और वह सो गया। लेकिन वह हमारे सपनों में एक संदेश लेकर आया कि वह सोए रहना चाहता है। जो उसके अभिशाप के रूप में शुरू हुआ था, वही उसकी मुक्ति बन गया - इस अवांछित दुनिया का यह हिस्सा।’
वह रुका और मूर्ति से नज़र हटाकर सिंदबाद की ओर देखा। ‘जानते हो, हमने उसे अपने सपनों में सुना... उसकी बड़बड़ाहट।’ वह आदमी फुसफुसाया मानो इस बारे में बात करना ईशनिंदा हो। ‘हमें अंततः एहसास हुआ कि अगर वह जाग गया, तो वह दुनिया को नष्ट कर देगा।’ वह आदमी थोड़ा कांप उठा। ‘यहाँ उसे वह शांति पसंद थी जो उसे कभी नहीं मिली। हमें उसकी सोई हुई देह के पास वह पट्टिका मिली।’ वह रुका। ‘चूंकि उसने हमें घर दिया... हमें सब कुछ दिया, इसलिए हम उस महान देवता के सदा ऋणी रहेंगे। हमारा कर्तव्य है कि उसे शांति से सोने दें, और यहीं पर तुम सब आते हो—अतिक्रमणकारी—जिनसे लेविथान घृणा करता है। और अब, हम तुम सबके लिए अपनी अंतिम विदाई प्रार्थना करेंगे।’
यह बात सही नहीं लगी।
सिंदबाद ने अब मूर्ति पर चूहे जैसे दिखने वाले खून चूसने वाले जीवों को देखा। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि इतने बड़े जीव को इतने छोटे जीव वश में कर सकते हैं।
‘परजीवी गलफड़ों पर थे, है ना?’ फांग ने पूछा। ‘तुम्हारी मूर्ति में वे हैं, इसीलिए ऐसा है।’

उस व्यक्ति ने कोई जवाब नहीं दिया।
अब फैंग ने प्रेसा और सिन्बाद की ओर रुख किया। “सुनो तुम दोनों, अब एकजुट होने का समय है, अगर तुम जीना चाहते हो,” फैंग ने फुसफुसाते हुए कहा। “लेविथान के जागने पर उसका ध्यान भटकाने के लिए मुझे प्रेसा की मदद चाहिए। इन पागलों के वर्णन के अनुसार, उसके जैसा शक्तिशाली प्राणी टेलीपैथी को ग्रहण कर सकता है। अब हमें किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो उसके दिमाग में घुस सके, और वो है प्रेसा... जबकि मैं भागने का रास्ता ढूंढता हूँ।” ‘नहीं, यहाँ कोई दिमागी नियंत्रण नहीं हो रहा है,’ सिंदबाद ने तीखे स्वर में कहा। ‘तुमने अभी-अभी जो कहा, वो तो सुन ही लिया। जो लोग सचमुच उसकी पूजा करते हैं, वे भी उसे रिहा करने से डरते हैं। इससे हमें पता चलता है कि हम किससे निपट रहे हैं।’
फैंग ने कंधे उचका दिए।
‘अरे, मूर्ख!’ सिंदबाद ने उस पंथवादी को पुकारा। ‘जिस शिला को तुम पवित्र ग्रंथ समझ रहे हो, वह वास्तव में चमत्कारी पत्थर का एक खोया हुआ टुकड़ा है, और इसका कोई धार्मिक महत्व नहीं है। किसी चीज के प्राचीन और रहस्यमय दिखने से वह धार्मिक नहीं हो जाती। समझे? अब जब यह बात स्पष्ट हो गई है, तो मुझे वह चाहिए और तुम ये सारे मंत्र और प्रार्थनाएँ करते रहो।’
उस पंथ के अनुयायी ने हंसते हुए कहा, 'हम तुम्हें उसके हवाले कर रहे हैं, क्योंकि उसने हमें ऐसा करने को कहा है। इसलिए तुम कहीं नहीं जा रहे हो।' ‘वह तो जम गया है, मूर्खों!’ प्रेसा ने मूर्ति की ओर इशारा करते हुए चिल्लाकर कहा। ‘तुम्हें क्या लगता है कि वह हमें कैसे खाएगा?’
उनसे बात करने वाला व्यक्ति उनके करीब आया। वह हँस पड़ा। 'यह तो बस एक मूर्ति है, मेरे प्यारे। यह हमारा महान लेविथान नहीं है।'
फैंग और प्रेसा असमंजस में दिख रहे थे।
‘तो फिर वो कहाँ है?’ सिंदबाद ने थोड़ा घबराते हुए पूछा।
‘जिस द्वीप पर आप हैं... वह वही है।’

बत्तीस
सिंदबाद फर्श की ओर घूरता रहा। वह खुद को रोक नहीं सका।
प्रेसा ने भी ऐसा ही किया।
यह लेविथान है।
जब उसे याद आया कि उसने पहली बार जब इस द्वीपसमूह को देखा था तो वह कितना विशाल लग रहा था, तो उसके गले में एक गांठ सी बन गई।
यह लेविथान की पीठ थी।
सिंदबाद ज़मीन पर छटपटाने लगा। यह जीव कितना विशाल था? द्वीप अंतहीन थे।
और फिर यह रहस्य कि इतना विशाल जीव परजीवियों का शिकार कैसे हो गया। इसमें एक तरह की विडंबना थी।
‘अब तुम लेविथान की ज्वालाओं से मरोगे,’ उस व्यक्ति ने कहा। ‘अतिक्रमण करने वालों के लिए कोई दया नहीं है।’
'तुम्हें बढ़त नहीं मिली,' फांग ने कहा।
उसकी बात अनसुनी करते हुए, उस पंथवादी ने एक भाला निकाला जिसके सिरे पर तेल लगा कपड़ा बंधा हुआ था। उसने पास ही जल रहे दीपक की लौ से उसे प्रज्वलित किया।
फैंग खिलखिलाकर हंस पड़ी। 'तुम्हें लगा कि मैंने तुम्हारे उस घिनौने दोस्त से घंटों पूछताछ करके तुम्हें हम पर हमला करने दिया? नहीं। मैंने ही तुम्हें हमारे पास पहुंचाया।' वह पागलों की तरह हंस पड़ी।
‘तुम क्या कर रहे हो? चुप रहो,’ सिंदबाद फुफकारा। उसे लगा जैसे उसके पैरों तले ज़मीन कांप रही हो। एक धीमी सी फुसफुसाहट करीब आती सुनाई दे रही थी। फैंग ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'अरे मूर्ख, मैं तो ठिकाना देखना चाहती थी, पर मुझे मिला ही नहीं। उसे ढूंढने में बहुत समय लग रहा था। भला कौन इस बर्फीली ज़मीन में हमेशा के लिए फंसा रहना चाहेगा? तो मैंने सोचा, चलो, उन्हें हमारे पास आने देते हैं। देखो, मुझे पता है कि तुम घुसपैठियों को नहीं

खाते। तुम्हारे आदमी से पूछताछ करके मुझे पता चला। तुम उन्हें बलि चढ़ा देते हो। इसलिए मुझे बस तुम्हारे हमले का इंतज़ार करना था। शिविर चारा था। मैंने नाटक रचा और तुम्हारा दोस्त... खैर, बस बदकिस्मत था। तुमने खुद हमें फंसा लिया।' वह मुस्कुराई।
जैसे ही उसने बोलना समाप्त किया, आवाज़ तेज़ हो गई। अचानक, फांग के सैनिकों ने गलियारों को भर दिया। आक्रमण के कारण अनुयायी चीखने-चिल्लाने लगे और जहाँ वे खड़े थे, वहाँ से उन्हें फेंक दिया गया। देखते ही देखते चबूतरा युद्ध का मैदान बन गया क्योंकि अनुयायियों ने फांग की सेना से लड़ना शुरू कर दिया, जो अचानक कहीं से प्रकट हुई थी।
फैंग ने जलते हुए भाले को पकड़ा और उसे ले जाने वाले पंथवादी के दिल में गहराई तक घोंप दिया। वह जोर से हंसी।
सिन्बाद लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ। संतुलन बनाते हुए, उसने अपने बगल में खड़े उस रक्षक पर झपट्टा मारा जिसने उसकी तलवार चुरा ली थी और उसे छीन लिया, जबकि प्रेसा ने उसे पकड़े हुए पंथवादी की बांह पर काट लिया।
बर्फ की छत से बारिश शुरू हो गई। ठंडी हवा चारों ओर चलने लगी। सिंदबाद की निगाहें अपने लक्ष्य, पत्थर पर टिकी थीं। तलवारों की खड़खड़ाहट के बीच, सिंदबाद का ध्यान अपने लक्ष्य पर केंद्रित था—पत्थर पर। वह चबूतरे की ओर बढ़ने ही वाला था कि तभी एक और अनुयायी उसके सामने आ गया। उसने उस आदमी को लात-घूंसे मारे, जिससे वह धड़ाम से गिर पड़ा। एक और रक्षक भाला लिए उनकी ओर दौड़ा। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कर पाता, वह भी ज़मीन पर गिर पड़ा। प्रेसा उसके पीछे से निकली; उसने पत्थर छीन लिया था और उसे अनुयायी के सिर पर दे मारा।
‘हमें चलना चाहिए,’ सिन्बाद ने प्रेसा की ओर कृतज्ञतापूर्वक देखते हुए कहा।
‘तुम भाग सकते हो, लेकिन कहीं नहीं जा पाओगे,’ फांग चिल्लाई और उसने एक अनुयायी को लात मारकर गिरा दिया और उसका दोधारी भाला छीन लिया। उसने भाले को आसानी से तोड़ दिया और उसके दोनों हिस्सों को जुड़वां तलवारों की तरह पकड़ लिया। ‘मुझे प्रेसा की ज़रूरत है। उसके जैसी साथी मिलना दुर्लभ है।’ सिन्बाद ने प्रेसा की ओर देखा।
‘मेरे साथ आओ, नन्ही बच्ची। यह एक नाकाम मिशन है, और तुम जानती हो। मुझे यकीन है कि तुमने इसे पहले ही देख लिया होगा। वे लेविथान को जगा नहीं

पाएंगे। वह तो पूरा द्वीप ही है। सोचो, अगर वे उसे जगाने में कामयाब भी हो गए, तो उससे लड़ना कितना मुश्किल होगा।’
‘तुम अपने लिए बोलो,’ प्रेसा ने गुस्से से कहा। ‘मेरे लिए नहीं।’
लेकिन मैं डॉ. फांग हूं। सबसे साहसी यात्री।
‘और मैं हूं सिंदबाद नाविक।’ सिंदबाद ने आंखें घुमाईं।
‘क्या तुम दोनों अपना नाम इस तरह बोलना बंद कर सकते हो जैसे कि उससे कोई मतलब निकलता हो?’ प्रेसा चिल्लाई। ‘इससे किसी को भी यकीन नहीं हो रहा है।’ 'एक बात जान लो, फैंग। अगर वो चाहे तो तुम्हारे साथ जा सकती है। हम शायद तुम्हारी तरह रोमांचक कारनामों पर न जाएं, लेकिन मैं तुमसे कभी झूठ नहीं बोलूंगी।'
प्रेसा ने अपने जबड़े भींच लिए।
‘अरे, प्रेसा, बच्चों जैसी हरकतें मत करो,’ फांग ने झुंझलाहट में चिल्लाते हुए कहा। ‘वह सिर्फ भावनात्मक ब्लैकमेल कर रहा है। मैंने झूठ इसलिए बोला क्योंकि तुम दोनों अजनबी थे। यह तो स्वाभाविक है।’
‘अगर तांग राजवंश को लेविथान तक पहुंच मिल जाती, तो वे दुनिया पर राज कर सकते थे, है ना?’ प्रेसा ने पूछा।
फैंग मुस्कुराया। 'और क्या तुम यही नहीं चाहते? कि हमारे लोग राज करें? इस दौड़ में सबसे आगे हों। हम नायक बनेंगे। हम पूरी दुनिया की सबसे शक्तिशाली सेना होंगे।'
उनके बीच सन्नाटा छा गया।
प्रेसा उसे घूरती रही। अंत में उसने कहा, 'मेरी माँ हमेशा मुझसे कहती थी कि नायक भय के माध्यम से शक्ति प्राप्त नहीं करते। वे प्रेम के माध्यम से शक्ति प्राप्त करते हैं।'
‘अच्छा। तो तुम बेवकूफ हो। उसे पकड़ो!’ फांग अपने आदमियों पर गुर्राई। लेकिन इससे पहले कि कोई सैनिक कुछ कर पाता, सिंदबाद ने प्रेसा का हाथ पकड़ा और एक गली में भाग गया। अब पीछे धमाकों की आवाजें आ रही थीं, और सब कुछ बिखरता हुआ सा लग रहा था। दोनों भागने लगे और बाहर निकलने का रास्ता बनाने लगे, जबकि फांग और उसके आदमी उनके पीछे-पीछे चल रहे थे।
सिंदबाद ने सोचा, यह यहीं कहीं होना चाहिए।
‘क्या आपको पता है कि आप कहाँ जा रहे हैं?’ प्रेसा ने पूछा।
मुझे कोई अंदाजा नहीं है। हमें रास्ते में ही पता चल जाएगा।

वे गलियों को पार करते हुए एक अपेक्षाकृत अंधेरे, कम सुगम रास्ते पर दौड़ रहे थे। अचानक, सिंदबाद एक पल के लिए रुक गया। 'रुको... कुछ गड़बड़ है।' उसकी अंतरात्मा ने उसे बताया कि इस अंधेरे रास्ते में कुछ तो गड़बड़ है। उसने सावधानी से एक और कदम बढ़ाया और तभी नीचे से एक तीर उसके पास से तेज़ी से, सीधे ऊपर की ओर निकला।
‘वाह! ये तो जाल बिछे हैं। हम सही रास्ते पर जा रहे हैं। निकास द्वार यहीं पास में होगा,’ सिंदबाद ने कहा। ‘ध्यान से चलो।’
सिन्बाद और प्रेसा सावधानीपूर्वक धीरे-धीरे आगे बढ़े।
‘चलो, चलो…’ सिन्बाद ने देखा कि उसके सामने का फर्श सूखी बर्फ का बना हुआ लग रहा था। ‘इसके ऊपर से कूद जाओ। यह नकली है।’ वे लगभग निकास द्वार पर पहुँच ही गए थे कि फांग और उसके दो सैनिक उनके पास पहुँच गए।
‘उन्हें पकड़ो! मुझे वह चाहिए। उसे मार डालो।’
सैनिक सिंदबाद और प्रेसा की ओर दौड़े, लेकिन दीवार से तीर और नुकीली चीजें निकलकर सैनिकों को भेद गईं और उनके शरीर को चकनाचूर कर दिया। वे मौके पर ही मर गए।
फैंग चौंक गई, लेकिन वह धीरे-धीरे आगे बढ़ी और सिंदबाद और प्रेसा के करीब पहुंच गई।
‘मुझे लगता है हमें निकल जाना चाहिए। चलो भागते हैं, लड़के। किस बात का इंतजार कर रहे हो?’ प्रेसा ने आग्रह किया।
'मुझे लेविथान के रहस्य को यहीं खत्म होने देना होगा,' सिंदबाद ने कहा। ‘क्या तुम उससे लड़ने जा रहे हो? भगवान के लिए, वह अमर है!’ प्रेसा ने अविश्वास से चिल्लाते हुए उससे कहा।
सिंदबाद ने अपनी आकाश-लोहे की तलवार निकाली। 'यह यहीं समाप्त होता है, डॉक्टर। आप और मैं। चलिए चलते हैं।'
फैंग खिलखिला उठी। वह किसी भी जाल को सक्रिय किए बिना रास्ते पर चलने में कामयाब हो गई थी। 'छोटे बच्चे, मेरे पास सैकड़ों वर्षों का तलवारबाज़ी का प्रशिक्षण है।' उसने अपनी दोनों तलवारों को आपस में टकराया। 'तुम्हारे पास क्या है?' वह लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ी, उसे सूखी बर्फ के उस ढेर का पता ही नहीं चला जिस पर सिंदबाद ने अभी-अभी कदम रखा था। वह सौ नुकीले कांटों के गड्ढे में गिर पड़ी। वह आश्चर्य से चिल्लाई, यह देखकर हैरान थी कि दो बच्चों ने उसे मात दे दी।

सिंदबाद ने नीचे देखा। एक पल के लिए, उसकी चीखें और गालियाँ सुनकर उसे उस पर दया आ गई। साथ ही, खलीफा को यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगता कि एक दूत, वह भी एक अमर और विश्वप्रसिद्ध साहसी, अंततः मरने के लिए छोड़ दिया जाए।
‘मेरे पास शायद बहुत सी चीजें न हों। लेकिन मैं हमेशा यह सुनिश्चित करता हूं कि मेरा पलड़ा भारी रहे,’ उसने उससे कहा।
जब वह विलाप कर रही थी, तब वे उससे मुंह फेरकर बाहर निकलने की ओर बढ़ गए। वे लेविथान की जमी हुई पीठ पर कदम रख चुके थे। सिंदबाद के हाथ में वह तख्ती थी।
‘माफ़ करना, दोस्त।’ उसने ज़मीन पर हाथ फेरते हुए कहा। ‘तुम सोते रहो। तुम्हें जगाने कोई नहीं आएगा। और सारी परेशानी के लिए माफ़ी चाहता हूँ।’ 'क्या हमें चले जाना चाहिए, या तुम खुद को अच्छा महसूस करते रहना चाहती हो?' प्रेसा ने आंखें घुमाते हुए पूछा।
सिंदबाद हँसा। 'बस मुझे कुछ और पल दे दीजिए, कृपया।'
जब सिंदबाद ने अपनी बाहों को प्रेसा के कंधे के चारों ओर लपेटा तो प्रेसा खिलखिलाकर हंस पड़ी।

तैंतीस
सिन्बाद जहाज़ तक पहुँच गया था और वह बहुत थका हुआ था। वह जानता था कि उन्हें जल्दी निकलना चाहिए, इसलिए उसने सबको वापस बुलाने के लिए सींग बजाए। वह जानता था कि अगर उन्हें क्रोधित चीनी सेना से बचना है तो उन्हें जल्दी निकलना होगा।
जब टीम लाल गालों और कड़ाके की ठंड से ठिठुरते हुए वापस लौटी, तो उसने तुरंत अपने दल को जहाज रवाना करने का आदेश दिया।
'हमें दिखाओ,' इदरीस ने कहा।
सिन्बाद ने तख्ती को कंबल से ढक रखा था। वह उसे छोड़ने से लगभग डर रहा था, लेकिन जब इदरीस मुस्कुराते हुए आगे आई, तो उसने उसे तख्ती दिखा दी। ‘हमने अब तक की सबसे भयानक मछलियाँ देखीं,’ अशरफिया ने आँखें घुमाते हुए कहा। ‘आपने तो टैबलेट का मज़ा लिया, जबकि हमने सारा कठिन काम किया।’
‘खैर, हमें भी अपनी परेशानियों का सामना करना पड़ा था,’ प्रेसा ने टिप्पणी की।
'पसंद करना?'
‘यह द्वीप, द्वीप नहीं है। बस इतना ही काफी है।’
वे सब उसे और सिंदबाद को हैरानी से देखने लगे, लेकिन सिंदबाद बस मुस्कुराया। 'बस यहीं बात खत्म करते हैं! चलो अब भागते हैं, चलें? अहोय!' सिंदबाद टैबलेट वापस ले जाने ही वाला था कि तभी उसने पानी पर कुछ देखा। एक विशालकाय आकृति की हल्की सी झलक।
मैंने इसे कहीं देखा है...
एक जहाज। एक पुराना जहाज, जो खोपड़ियों और हड्डियों से बना है। उन्होंने कहा, 'सखर।'
हुसैन ने कहा, 'तुम मजाक कर रहे हो क्या? उसे इस बार कैसे पता चला?'

‘वाह!’ अशरफिया ने भी उनके साथ शामिल होते हुए कहा। ‘मुझे उसका लोगों का पीछा करने का तरीका बहुत पसंद है।’
इदरीस ने कहा, 'मुझे लगता है कि वह हमारा पीछा कर रहा है। हमें ट्रैक कर रहा है। हमसे गंदा काम करवा रहा है। ताकि हम सारा कठिन काम कर सकें—'
‘और वो तो हद ही पार कर देता है,’ सिंदबाद ने उदास स्वर में कहा।
‘चेरी। यह टेक द केक नहीं है। यह टेक द चेरी है।’ इदरीस ने जवाब दिया। ‘क्या? नहीं, ऐसा नहीं है। और क्या यह इस बारे में बात करने का समय है?’ सिंदबाद ने उस पर झल्लाते हुए कहा।
‘मैं माहौल को हल्का करने की कोशिश कर रही थी। आपको क्या लगता है हमें क्या करना चाहिए?’ उसने पूछा।
हम उसे दोबारा गोली नहीं लेने दे सकते। उसके पास पहले से ही दूसरी गोली है।
सखर का जहाज करीब आ रहा था।
‘तो क्या तुम इसके लिए लड़ना चाहते हो?’ हुसैन ने विनम्रता से पूछा।
‘उनके जहाज पर नेफिलिम और ड्रॉगर सवार हैं। मुझे लगता है कि हमारे पास कोई मौका नहीं है।’ सिंदबाद ने कहा। ‘और वो लाल बालों वाली सनकी भी, जिसके पास कुछ अजीब जादू-टोना और जादुई शक्तियां हैं।’ वह सोच में डूबा हुआ था, और सभी उससे कप्तानी की उम्मीद कर रहे थे। सिंदबाद दबाव महसूस कर रहा था और उसे ये हालात बिल्कुल पसंद नहीं थे जब उसके पास कोई जवाब या अपने दल के बाकी सदस्यों के लिए कोई स्पष्ट आदेश नहीं होता था। सभी उम्मीद भरी निगाहों से उसकी ओर देख रहे थे। ‘ठीक है, चलो उन पर हमला करते हैं।’ ‘क्या?’ मार्कस ने पूछा।
'हां, हमारे पास कोई मौका नहीं है, मेरी जान,' अशरफिया ने कहा।
सिंदबाद ने सफीना की ओर देखा, जो इस पूरे समय चुप रही थी।
'देखते हैं। बस वही करो जो मैं कहता हूं।'
‘तुम क्या करने की कोशिश कर रहे हो?’ इदरीस ने पूछा।
'शरारत।'
सिन्बाद जहाज के पतवार पर कूद गया और मस्तूलों से बंधी सबसे नज़दीकी रस्सी को पकड़ लिया। 'ग्रीक आग तैयार करो। विस्फोटकों से उनका सब कुछ नष्ट हो जाना चाहिए! तीर तैयार रखो।'
गुलेलें तैयार किए जाने के दौरान जहाज तेजी से आगे बढ़ा।

सिंदबाद ने दूरबीन से देखा कि सखर हैरान था। अपने जहाज से दोगुने बड़े जहाज पर इस तरह हमला करना वाकई मूर्खतापूर्ण था। खासकर ऐसे पानी में जो आधा बर्फ से ढका था और जहाँ खुला बहता पानी बहुत कम था। इन परिस्थितियों में तेज़ी से आगे बढ़ना मतलब जहाज को बर्फ के टुकड़ों से टकराकर दर्दनाक, जमा देने वाली मौत मर जाना था।
भाग्य और संयोग से, वह खोपड़ियों और हड्डियों से बने जहाज के और करीब पहुँच गया। अब दोनों के बीच बहुत कम दूरी बची थी।
‘जब तीर सिर के ऊपर से उड़ें, तो खुद को बचा लो,’ सिंदबाद ने गरजते हुए कहा। ग्रीक आग दूसरे जहाज पर बरस रही थी, लेकिन फिर भी वह बाय फेट एंड फॉर्च्यून की ओर बढ़ रहा था, मानो अपने पतवार से उस पर हमला करने की कोशिश कर रहा हो। वह जलकर क्षतिग्रस्त हो रहा था, लेकिन जाहिर तौर पर एडमिरल को इसकी परवाह नहीं थी; प्राचीन जहाज सीधे उनकी ओर बढ़ रहा था। सखर का जहाज अब कुछ ही इंच दूर था, लेकिन वह रुका नहीं। वह और करीब आता गया, सिंदबाद के जहाज की ओर धक्के मारता और टकराता रहा।
और सिंदबाद यही चाहता था।
क्योंकि जैसे ही यह घटना घटी, सिंदबाद ने अशरफिया से चिल्लाकर कहा: 'इसे हवा में उठाओ!'
'क्या?'
‘इस जहाज को हवा में उठाओ!’
अशरफिया ने मंत्र पढ़ना शुरू किया और उन्हें पानी से ऊपर उठा लिया। भाग्य और किस्मत से वे हवा में उछले और आकाश की ओर तेजी से बढ़ने लगे। सखर का जहाज एक हिमखंड से टकरा गया और बर्फ के टुकड़ों में फंस गया।
सिन्बाद मुस्कुराया। उसने डेक पर अपने बगल में खड़े इदरीस से कहा, 'उम्मीद है उसने इसकी उम्मीद नहीं की होगी। कि मैं भाग जाऊंगा। मैं हमले से उसे भ्रमित और क्रोधित करना चाहता था। हम पर हमला करना एक मूर्खतापूर्ण गलती थी। अब वे फंस गए हैं, और हम आगे बढ़ रहे हैं!'
इदरीस ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'शानदार।'
सिन्बाद ने अपनी दूरबीन से नीचे जहाज को देखा, जो अचानक रुक गया था। सखर ने मुस्कुराते हुए उसकी ओर देखा। सिन्बाद की रीढ़ में सिहरन दौड़ गई; उसे एक क्रोधित राक्षस की उम्मीद थी, न कि मुस्कुराते हुए शांत राक्षस की।

किसी कारणवश, सिंदबाद को ऐसा लगा कि सखर चाहता है कि वह इस दौर में जीत हासिल करे।

चौंतीस
सिन्बाद भोजनालय में बैठा था और जो कुछ भी उसके हाथ लगता, उसे चट कर जाता था। रोमांचक कारनामों ने उसे भूखा कर दिया था। बाकी के दल के सदस्य चुपचाप खाना खा रहे थे।
चिकन सूप खत्म करने के बाद इदरीस बोली, “हम सखर से बाल-बाल बच गए, लेकिन वह अभी भी खतरा बना हुआ है। आपको क्या लगता है हमें उसके बारे में क्या करना चाहिए?”
‘मुझे नहीं पता। मुझे लगता है कि मैं बस उदासीन हूँ,’ उसने सूप पीते हुए कहा।
‘ऐसा क्यों?’ सफीना ने बीच में ही पूछा।
‘हमारा लक्ष्य वंडरस्टोन हासिल करना है, सखर को हराना नहीं,’ सिंदबाद ने खाना खाते हुए कहा। ‘क्या हम उस पर भरोसा कर सकते हैं? यह एक अलग सवाल है। मुझे लगता है कि हमें बस खलीफा तक पत्थर पहुँचाने का लक्ष्य रखना चाहिए, जो एक उदार दाता रहे हैं।’
एक मिनट का मौन रखा गया।
‘मेरा कहना है कि हमें सखर को मार डालना चाहिए। और इब्लिस के इस पागलपन का अंत करना चाहिए,’ सफीना ने दांत पीसते हुए कहा। ‘वह अभी भी मेरे सपनों में आता है... मेरे पिता। वह कुछ बुरा करने की साजिश रच रहे हैं और सखर उसमें एक बड़ा हिस्सा है, मुझे ऐसा महसूस हो रहा है।’
और जिस तरह से उसने यह कहा, उससे हर कोई कांप गया।
सिंदबाद ने सिर हिलाया। 'ठीक है। तो चलिए पहले तीसरे वंडरस्टोन को निशाना बनाते हैं।'
‘और वो कहाँ था, जान?’ अशरफिया ने चॉकलेट में डूबी स्ट्रॉबेरी को खाते हुए पूछा।
‘कॉन्स्टेंटिनोपल, बीजान्टिन साम्राज्य की राजधानी,’ इदरीस ने कहा।

‘एक बार हमें वह पत्थर मिल जाए, तो हम सखर के पास मौजूद पत्थर को हासिल करने की योजना बना सकते हैं,’ सिन्बाद ने कहा। ‘मैं बीजान्टिन साम्राज्य के बारे में पढ़ रहा था। उन पर वर्तमान में कॉन्स्टेंटाइन छठे का शासन है।’
‘वह तो बच्चा है, बस यही है,’ मार्कस ने झट से कहा। ‘लेकिन अतार्किक और उसमें हास्यबोध की कमी है। मैं कभी वहाँ भाड़े का सैनिक था, और उसका शासन सरासर अन्यायपूर्ण है। मुझे वह पसंद नहीं है। बाकी सब की तरह।’
‘बाकी कौन हैं?’
‘कुछ लोग उसका और उसके शासन का विरोध करते हैं, यह सोचकर कि वह अयोग्य है। लेकिन वह एक संपन्न परिवार से आता है। उसके कई जनरलों ने उसके खिलाफ चुनाव लड़ा है। अगर उसे अपनी सेना का समर्थन नहीं मिलता, तो वह दूसरे देशों से सेनाएँ किराए पर लेता है। एक चिड़चिड़ा, बिगड़ा हुआ बच्चा, जो अपनी अति उत्साही माँ के नियंत्रण में है।’
इदरीस ने भावहीनता से कहा, 'मुझे लगता है कि हम एक रोमांचक सफर पर निकलने वाले हैं। वी-ही।'
सिन्बाद खुश था कि उसके पास खलीफा का दस्तावेज़ था, जिससे उसे राजधानी में घूमने-फिरने की छूट मिल गई थी। अरबों और बीजान्टिनों के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध थे। बहुत अच्छे तो नहीं, लेकिन इतने काफी थे कि पहली नज़र में ही एक-दूसरे को मार न डालें। और हारून अल-रशीद की तरह ही, छठे कॉन्स्टेंटाइन भी गलतियों को सुधारने में विश्वास रखते थे।
मार्कस ने समझाया, ‘हम मरमारा सागर में उतरेंगे और थियोडोसियस के बंदरगाह पर लंगर डालेंगे। मैं अपने आदमियों को निर्देश दूंगा।’
वे सब उठकर जाने लगे—हुसैन को छोड़कर बाकी सभी लोग सिंदबाद के साथ मेज पर ही बैठे रहे।
उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि हमें अपने संचार में एक समस्या का सामना करना पड़ रहा है।'
‘और वो क्या है?’ सिंदबाद ने चिढ़कर पूछा।
‘हमारा संवाद नहीं हो रहा है। तो फिर क्या बात है? क्या चल रहा है? क्या आप इस सब के बारे में दोबारा सोच रहे हैं? क्या मैं अब आपको उबाऊ लगने लगा हूँ? आखिर बात क्या है?’
सिंदबाद ने आह भरी। वह यह बातचीत नहीं करना चाहता था। 'कुछ नहीं है। सब ठीक है। मुझे नहीं पता कि तुम किस बारे में बात कर रहे हो।'

हम कई सालों से दोस्त हैं। मुझे पता चल जाता है जब हमारे बीच कुछ गड़बड़ होती है।
‘क्या तुम मुझसे कुछ छिपा रहे हो?’ सिंदबाद ने कुछ देर रुककर पूछा। हुसैन आश्चर्य से पलकें झपकाईं। 'मुझे ऐसा नहीं लगता।'
'ओह समझा।'
‘एडमिरल के जहाज से लौटने के बाद से ही तुम ऐसे हो। मुझे लगता है कि उसने तुम्हारा ब्रेनवाश कर दिया है या कुछ और।’
सिन्बाद खड़ा हो गया। 'हुसैन, मेरे दोस्त, मैं ठीक हूँ। तुम निश्चिंत हो जाओ।'
‘पिछली बार भी तुमने मुझसे दूरी बनाए रखी थी,’ यह कहते हुए हुसैन भी उठ खड़ा हुआ।
‘तो शायद आप इसमें मेरे साथ चल सकते हैं।’ बोलते ही सिंदबाद को पछतावा हुआ।
वह हुसैन के साथ समय बिताना नहीं चाहता था। इससे और टकराव पैदा हो सकता था।
लेकिन हुसैन मुस्कुराया, मानो उसे कुछ पता ही न हो।
सिंदबाद मेस और हुसैन को पीछे छोड़कर जहाज के निचले डेक की ओर चला गया, तभी उसने कोने में अंधेरे में छिपी हुई सफीना को देखा।
आपको बस उसे सच बता देना चाहिए।
'क्या?'
‘तुम उससे नाराज हो। यह तुम्हारे चेहरे पर साफ दिख रहा है।’
सिंदबाद उससे बहुत कुछ कहना चाहता था। अपने व्यवहार के लिए माफी मांगना चाहता था। उसे अपने दिल की बात बताना चाहता था। लेकिन इसके बजाय, उसने बस इतना कहा, 'मुझे नहीं लगता कि तुम्हें याद है कि मैं पहले कैसा था। मैं बिल्कुल ठीक हूँ।'
‘कोई नहीं बदलता।’
‘तुमने किया,’ उसने झल्लाकर कहा।
‘इसका क्या मतलब है?’ धीरे-धीरे उसे समझ में आया कि उसका क्या मतलब था। ‘मैंने अपने प्रिय को अपनी मर्ज़ी से नहीं मारा। मैंने उसे इसलिए मारा क्योंकि…’ उसने कंधे उचका दिए। ‘मैंने क्या किया, इससे तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए। ज़रूरी बात यह है कि तुम सखर को क्यों नज़रअंदाज़ कर रहे हो? तुम तो हमेशा दुश्मन से डटकर लड़ते हो, और यहाँ तुम भाग रहे हो। ऐसा क्यों?’

सिंदबाद ने अपने होंठ सिकोड़ लिए। 'क्योंकि मैं आमतौर पर दुश्मन को समझ लेता हूँ। और यहाँ, मुझे नहीं पता कि वह कौन है, वह क्या चाहता है और सबसे बढ़कर, वह अपनी योजना को कैसे अंजाम देने की योजना बना रहा है।'
'उसके जैसे सभी दुष्टों में एक बात समान होती है—वे सोचते हैं कि दुनिया उतनी ही विकृत है जितने वे खुद हैं।'
वह सिंदबाद को अंधेरे में छोड़कर गुस्से में वहां से चली गई।

पैंतीस
नश्वर संसार में, सिंदबाद ने कॉन्स्टेंटिनोपल जैसी खूबसूरत सभ्यता कभी नहीं देखी थी।
कॉन्स्टेंटाइन द्वारा खंडहरों पर निर्मित यह राजधानी, रोमन नियमों को चुनौती देने वाली और ईसाई धर्म की एक नई लहर लाने वाली राजधानी थी, जो एक शक्तिशाली सीमांत के रूप में विकसित हुई। आसमान से वह गुंबदनुमा संरचनाएं, ऊंचे टावर और मोज़ेक देख सकता था, जो बगदाद की वास्तुकला से काफी मिलते-जुलते थे।
‘मुझे यह पसंद नहीं है,’ सिंदबाद बड़बड़ाया जब अशरफिया और प्रेसा ने उसके चमकीले लाल चोगे को ओढ़ाया। उसे नंगापन महसूस हो रहा था। ‘यह बहुत... खुला है।’
‘अरे, बस करो। तुम बहुत सुंदर दिख रहे हो, मेरे प्यारे। बड़े आकर्षक हो।’ अशरफिया मुस्कुराई। ‘तुम्हें नियम तो पता ही हैं। यहाँ के राजा कपड़ों को लेकर थोड़े सनकी हैं। वो चाहते हैं कि सब लोग बीजान्टाइन शैली अपनाएँ।’ सिन्बाद ने गहरी सांस ली। यह तो मार्कस का विचार था। हुसैन को भी बैंगनी रंग के कपड़े पहनाए जा रहे थे।
'मुझे उम्मीद है कि वह मुझे बेवकूफ नहीं बना रहा होगा,' सिंदबाद ने आह भरी।

जहाज बंदरगाह से दूर समुद्र की ओर बहने लगा, ताकि कॉन्स्टेंटिनोपल के लोगों को उनके जादू के बारे में पता न चले।
अरबों और रोमनों के बीच कई तरह की समस्याएं थीं; सीमाओं पर झड़पें, शीत युद्ध जो अंततः राजनयिक वार्ता में परिणत हुए। लेकिन समय-समय पर उनके बीच

अच्छे संबंध भी रहे। एक बार सेइड्स ने क्रैकन से लोगों को बचाकर देश की मदद की थी। उन्होंने उस जीव को गहरी नींद में सुला दिया था। लोगों ने खुशी मनाई और तत्कालीन शासक, कॉन्स्टेंटाइन छठे ने बगदाद के साथ शांति समझौता कर लिया। हालांकि, सभी जानते थे कि यह शांति अस्थायी थी।
सिन्बाद डेक से बाहर आया और उसने हुसैन को बैंगनी रंग के चोगे में देखा। उसने उसकी ओर देखा, जो चमकीला लाल रंग का था।
हुसैन ने चहकते हुए कहा, 'यह बहुत मजेदार होने वाला है।'
सिंदबाद डेक पर उतरा, उसके पीछे-पीछे बाकी लोग भी आ गए। दूर होने के बावजूद, उसे शहर की खूबसूरती पहले से ही दिखाई दे रही थी।
‘तुम दोनों को सावधान रहना होगा,’ इदरीस ने कहा। ‘हम सब इसलिए नहीं जा रहे हैं क्योंकि अगर हम गए तो राजा को खतरा महसूस होगा। इसलिए सुरक्षित रहना। अगर हमारी जरूरत हो तो सबको बता देना।’
सिन्बाद ने सिर हिलाया। 'जी हां, मां।'
इदरीस ने अपनी आँखें घुमाईं।
वे लगभग तट पर पहुँच चुके थे। जहाज़, व्यापारी, सौदागर और कुली चारों ओर फैले हुए थे। लोग जल्दी-जल्दी बाज़ार में सामान खरीद रहे थे या टेढ़ी- मेढ़ी सड़कों पर चढ़ रहे थे, जहाँ सैनिक पहरा दे रहे थे। इस सारी भागदौड़ में, ऐसा लग रहा था कि किसी ने भी बाय फेट एंड फॉर्च्यून को बिना किसी कागज़ात के चुपके से अंदर आते हुए नहीं देखा।
हुसैन ने अभिशाप व्यक्त किया, 'यह सब हलचल देखकर मुझे नहीं लगता कि राजा के पास हमारे लिए समय होगा।'
‘मुझे लगता है कि इसमें कोई समस्या नहीं होगी।’ सिंदबाद ने चोगे और कांसे के हेलमेट पहने सैनिकों की कतार की ओर इशारा किया जो उनके बाहर निकलने का इंतजार कर रहे थे। ‘वे विदेशी जहाज को पहचानते हैं।’
सिंदबाद आत्मविश्वास से भरे स्वर में तख्ते पर चलने लगा। उसने खलीफा का पत्र प्रस्तुत किया। बीच में खड़े सेनापति ने पत्र पढ़ा और अपनी निगाहें सिकोड़ लीं।
‘तुम बच्चे हो,’ वह चिल्लाया। ‘तुम इसे खुद भी बना सकते थे।’
‘यह उसका चिन्ह है। उसके खून से बना हुआ। अगर आप चाहें तो पुष्टि के लिए एक कौआ भेज सकते हैं।’

कमांडर ने सिर हिलाया। 'हमारे पीछे आओ।' वह अपने कुछ आदमियों की ओर मुड़ा। 'और जहाज पर नज़र रखना, तुम सब। मैं नहीं चाहता कि उनमें से कोई भी तुम्हारी नज़र से ओझल हो।'
सिंदबाद ने इस व्यवहार पर बेपरवाही दिखाते हुए कंधे उचका दिए। उसे इसकी उम्मीद थी। वे शहर में चलने लगे, रंग-बिरंगे वस्त्र पहने लोगों के बीच से गुज़रते हुए। वहाँ अनेक ऊँचे-ऊँचे टावर और घुमावदार रास्ते थे जो दीपों से जगमगा रहे थे। हवा में रोटी, पीतल और समुद्र की महक फैली हुई थी।
सेनापति ने कहा, ‘आप भाग्यशाली हैं कि राजा इस समय स्वतंत्र हैं। और खलीफा का कोई भी मित्र हमारा मित्र है... फिलहाल के लिए।’
सिंदबाद को यह धमकी पसंद नहीं आई, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। वे गिरजाघरों, एक एक्रोपोलिस और एक हिप्पोड्रोम से गुज़रे। यह जगह उसे ओमान के पिशाचों के साथ हुए अपने साहसिक कारनामों की याद दिला रही थी। वहाँ की दुनिया अलग थी, लेकिन यहाँ जैसी ही थी।
हुसैन ने कहा, 'मुझे इस यात्रा में यही बात पसंद है। यात्रा करने से आपको दुनिया की बारीकियों को जानने का मौका मिलता है।'
‘और फिर भी आप बगदाद में ही रहना चाहते हैं?’
‘किसने कहा कि मैंने किया?’
सिंदबाद ने अपने होंठ काट लिए।
‘तुम्हें क्या पता है?’ हुसैन ने संदेह भरी निगाहों से पूछा।
मुझे पता है कि आपने रॉयल गार्ड में एक पद के लिए आवेदन किया था।
हुसैन चुप रहे। अंत में उन्होंने कहा, 'आह, और आपको यह किसने बताया?'
मेरे पास अपने सूत्र हैं।
‘सखर।’ हुसैन ने सिर हिलाया। ‘तुम उसे अपने दिमाग पर हावी नहीं होने दे सकते, यार। वह पागल है।’
‘लेकिन आपने किया था, है ना?’
मैंने ऐसा किया, और मेरे पास इसके कारण थे। और उनका इस खूनी जहाज को छोड़ने से या सबसे बढ़कर, तुम्हें छोड़ने से कोई लेना-देना नहीं था।
तो फिर वे क्या थे?
हुसैन इससे ज़्यादा कुछ नहीं कह सके क्योंकि वे राजमहल के नज़दीक थे। रंग-बिरंगे रंगों, संगमरमर के स्तंभों और ट्यूलिप से भरे बगीचों के साथ वह महल किसी रत्न की तरह चमक रहा था। वहाँ तैनात पहरेदार सिंदबाद के कद से दोगुने

थे। सिंदबाद ने देखा कि वहाँ लोगों की एक लंबी कतार लगी हुई थी, जो शायद राजा से मिलने की प्रतीक्षा कर रहे थे। नुकीले बैरिकेड्स के कारण महल अभेद्य प्रतीत होता था, लेकिन उसमें मेहराबदार द्वार और अनगिनत फूलों के गुलदस्ते जैसी सुंदर विशेषताएं भी थीं।
सिंदबाद और हुसैन सीढ़ियों से ऊपर चढ़े, उनके बीच सन्नाटा पसरा हुआ था। वे मंडप में पहुँचे, जहाँ सफेद चोगा और लॉरेल की माला पहने एक युवक खड़ा था। लड़के का शरीर गठीला था, उसकी आँखें हल्के भूरे रंग की थीं और उसके चेहरे पर एक भयावह मुस्कान थी। उसके पीछे दो हट्टे-कट्टे पहरेदार खड़े थे। भीतरी दीवारों के पास और भी पहरेदार कतार में खड़े थे—सिंदबाद के अनुसार, उनकी संख्या बहुत अधिक थी।
‘स्वागत है। मैं तो बस टहलने के लिए निकल रहा था, लेकिन देखो हम कहाँ हैं... अरब लोग।’ लड़के की मुस्कान और चौड़ी हो गई।
सिंदबाद के साथ आए पहरेदारों ने उन्हें प्रणाम किया। सेनापति ने कहा, 'महाराज, वे अभी-अभी आए हैं। वे आपसे मिलना चाहते हैं।' उन्होंने लड़के को वह दस्तावेज़ दिखाया।
सिंदबाद ने गौर किया कि कॉन्स्टेंटाइन छठा अपेक्षाकृत कम उम्र का शासक था। आठ वर्ष की आयु में उसकी धूर्त माँ, आइरीन, ने उसका राज्याभिषेक किया था, जो सारी सत्ता अपने हाथ में रखती थी। लेकिन जैसे-जैसे कॉन्स्टेंटाइन बड़ा होता गया, उसकी माँ के प्रति उसकी नफरत भी बढ़ती गई। वह शक्तिहीन और नियंत्रित होने से तंग आ चुका था, इसलिए उसने अपनी माँ से राज-प्रतिनिधित्व छीन लिया और स्वयं एकमात्र शासक बन गया। वह धूर्त और क्रूरता में भी सक्षम था।
'हारुन! वह इतना अच्छा दोस्त नहीं है! मुझे बताओ, मैं तुम्हें इस हालत में अंदर कैसे आने दे सकता हूँ? और खासकर तब जब वह हमारे व्यापारिक जहाजों को निशाना बना रहा है।'
ठीक है, तो हालात खराब हैं, सिंदबाद ने सोचा। 'हम यहां शांति वार्ता के लिए नहीं आए हैं,' उसने कहा।
‘तो फिर तुम यहाँ किसलिए आए हो? जल्दी करो, मुझे टहलने जाना है,’ राजा ने आदेश दिया।

‘हम जानते हैं कि आपके पास वह अद्भुत वस्तु है—मेरा मतलब है, एक प्राचीन शिलालेख जो सिकंदर की कब्र से जुड़ा हुआ है। हम बस उसे लेना चाहते हैं और अपने रास्ते जाना चाहते हैं। कोई परेशानी नहीं।’
राजा मुस्कुराया। ‘तुम्हारा मतलब उस रहस्यमयी पट्टिका से है जो एकमात्र बची हुई निशानी है, जिसे मेरे पूर्वज कॉन्स्टेंटाइन प्रथम यहाँ लाए थे? वही पट्टिका जिसका मैसेडोनिया के महान नेता से दूर-दूर तक संबंध था? तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें वह अवशेष केवल तुम्हारे कहने मात्र से ही सौंप दूँ? वाह! मुझे ऐसा करना चाहिए। यह तो बहुत आसान है। इस बारे में तुम्हारा क्या विचार है, थियोस?’ वह एक भूरे बालों वाले और छोटे कद के व्यक्ति की ओर मुड़ा जो अभी-अभी उनके पास आया था।
सिंदबाद ने सोचा, शायद कोई मंत्री होगा।
‘मुझे लगता है मुझे ही यह करना चाहिए,’ राजा ने कहा। ‘मेरे रास्ते से हट जाओ।’ वह सिर ऊंचा करके सीढ़ियों से नीचे उतरने के लिए तैयार होकर उठ खड़ा हुआ।
हुसैन ने सिंदबाद से फुसफुसाते हुए कहा, 'क्या तुम वही सोच रहे हो जो मैं सोच रहा हूँ?'
‘और आप क्या सोच रहे हैं?’
'एक डकैती। हमें एक डकैती को अंजाम देना होगा और उससे वह चीज चुरा लेनी होगी।'
‘क्या? क्या तुमने यहाँ की सुरक्षा का स्तर देखा है? किला अभेद्य है। इतनी बड़ी सेना के सामने जादू भी काम नहीं आता,’ सिंदबाद ने चिंता से कहा। जैसे ही उसके मन में विचारों का तांता लग गया, अचानक कुछ अप्रत्याशित घटित हुआ। राजा के पास ही एक विशालकाय, चट्टान जैसी आकृति वाला प्राणी प्रकट हुआ, जिसका चेहरा मनुष्य जैसा था। वह सबसे लंबे रक्षक से तीन गुना लंबा था, उसकी आँखें छोटी-छोटी थीं और वह मिट्टी, रेत और मानव मांस व हड्डियों से बेतरतीब ढंग से बना हुआ प्रतीत होता था।
राजा ने तीखी चीख मारी। 'फिर से तुम!' वह पीछे हट गया। 'हमला करो! हमला करो!' पहरेदारों ने उस प्राणी पर तीर चलाने शुरू कर दिए, लेकिन वह अविचलित रहा। तीर ऐसे उछल रहे थे मानो वे रबर के बने हों। दो पहरेदार तलवार और भाले लेकर उस प्राणी पर हमला करने के लिए आगे आए, लेकिन उसने उन्हें हाथ से झटक कर दूर कर दिया।

सिन्बाद ने प्राणी के सिर पर लिखे शब्द 'एमेट' को देखकर आगे की ओर छलांग लगाई, जिसका हिब्रू भाषा में अर्थ 'सत्य' होता है।
उस प्राणी ने सिंदबाद पर हमला करने के लिए अपना हाथ उठाया, लेकिन सिंदबाद अपनी आकाश-लोहे की तलवार के साथ तैयार था। उसने तलवार को प्राणी के हाथ में मारा, लेकिन वह तुरंत चूर-चूर हो गई और फिर से बन गई। सिंदबाद प्राणी के सिर पर कूद गया और उसने उसके माथे पर खुदे हुए शब्द का पहला अक्षर तेज़ी से मिटा दिया। जैसे ही उसने ऐसा किया, प्राणी रुक गया, मानो वह उसके वश में हो, और फिर धूल और रेत के बादल में बदल गया।
‘क्या तुमने अभी-अभी... क्या तुमने अभी-अभी उसे मार डाला? क्या तुमने अभी- अभी...’ राजा ने सिंदबाद को एक नए नजरिए से देखा। ‘क्या तुमने अभी-अभी... तुमने यह कैसे किया? वह चीज मुझे इतने लंबे समय से परेशान कर रही थी!’ सिन्बाद मुस्कुराया और अपने बालों को संवारा। 'ज्ञान ही शक्ति है। क्रूर बल का प्रयोग करने के बजाय, यह जानना कि इसे कैसे नष्ट किया जाए, यही मेरा तरीका था। वह अभी के लिए चला गया है, लेकिन वह एक गोलेम है। वह वापस आएगा।' राजा का चेहरा पीला पड़ गया। 'नहीं...'
'मुद्दा यह है, महाराज, आपने ऐसा क्या किया जिससे कोई इतना क्रोधित हो गया कि उसने आपके पीछे एक गोलेम को भेज दिया?'

छत्तीस
सिंदबाद पार्टी के बीचोंबीच था।
कॉन्स्टेंटाइन ने सिंदबाद को धन्यवाद देने के लिए महल में एक समारोह का आयोजन किया था। शहर के सबसे महत्वपूर्ण लोग वहाँ एकत्रित हुए थे, और सभी ने बातचीत की, पेय पदार्थ का सेवन किया और भोजन किया। उनके सामने भुने हुए मटन और चिकन, लज़ीज़ स्टू और फलों से भरी थालियाँ परोसी गईं। सिंदबाद और हुसैन बालक राजा के बगल में बैठे थे।
सिंदबाद को पता चला था कि गोलेम काफी समय से शहर में परेशानी पैदा कर रहा था और बार-बार राजा पर हमला करने की कोशिश कर रहा था। हर बार, कॉन्स्टेंटाइन महल में भाग जाता था, जहाँ गोलेम प्रवेश नहीं कर पाता था। राजा और उसकी प्रजा को यह भी नहीं पता था कि वह किस प्रकार का प्राणी था। उन्होंने दुनिया भर के कई जादूगर संगठनों को पूछताछ भेजी, लेकिन कोई भी जवाब संतोषजनक नहीं था। कॉन्स्टेंटाइन जादू के इस्तेमाल में विश्वास नहीं करता था, क्योंकि वह इसे दमन का साधन मानता था, लेकिन सिंदबाद के कारनामों के बाद राजा को एहसास हुआ कि उसे अपने साम्राज्य में एक शक्तिशाली जादूगर संगठन बनाना होगा।
‘तुम्हें पता है, मैं तो चर्च भी जाने लगा था। बिशप से गुहार लगाता था कि मुझे बचा लें। अब मुझे नहीं पता कि मैं बेवकूफ था या फिर मुझमें अक्ल ही नहीं थी।’ उसने अपने बीयर का मग गटक लिया, यह उसका तीसरा मग था।
‘यह लगभग एक ही बात है।’ सिंदबाद ने कंधे उचका दिए।
राजा हँसा और सिंदबाद की पीठ थपथपाई। 'अच्छा, अब तुम मेरे दोस्त हो। मैं तुम्हारा जीवनदान देता हूँ।'
लेकिन आपकी जान अभी भी खतरे में है। वह गोलेम मर चुका है। और भी आएंगे।
मैं संशयवादियों से घिरा नहीं रहना चाहता, लेकिन मुझे आपकी बात सुननी चाहिए। आप इस चीज़ को क्या कहते हैं? गोलेम? कितना अजीब नाम है।

'हां। क्या आपने हाल ही में किसी यहूदी को नाराज किया है?'
कॉन्स्टेंटाइन को हल्की हंसी आ गई, लेकिन उसे यकीन नहीं था कि सिंदबाद मजाक कर रहा है या नहीं। 'मैंने बहुत से लोगों को नाराज किया है, लेकिन किसी यहूदी को नहीं। गोलेम कैसे काम करते हैं?'
‘वे मूलतः बिना दिमाग वाले जीव हैं। वे मरे हुए लोगों से बने हैं।’
‘अरे, इसीलिए तो यह जाना-पहचाना लग रहा था!’ वह उत्सुकता से अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ। ‘उसने मुझे उस रसोइए की याद दिला दी जिसकी आँखें मैंने इसलिए निकाल दी थीं क्योंकि उसने मुझे ठंडा स्टू परोसा था।’
सिन्बाद अचरज से आँखें चौड़ी कर बैठा। वह लगभग उस लड़के को बचाना ही नहीं चाहता था। "उम, हाँ। तो गोलेम उन मरे हुए लोगों की हड्डियों और फटे-पुराने मांस से बने होते हैं जिन्हें तुमने नाराज़ किया है, साथ में थोड़ी मिट्टी, रेत और जादुई मंत्र भी मिलाए जाते हैं। ये सब मिलकर एक अजेय राक्षस का निर्माण करते हैं। कोई हथियार उन्हें चोट नहीं पहुँचा सकता। कोई जादू उन्हें वश में नहीं कर सकता। उन्हें इसलिए बनाया गया था क्योंकि रब्बियों को अपनी जान का खतरा था और उन्हें सुरक्षा की ज़रूरत थी।"
‘हर चीज को हराया जा सकता है। तुमने उस एक को हरा दिया,’ राजा ने कहा।
'हां, लेकिन बिल्कुल नहीं। वे तभी पूरी तरह गायब होते हैं जब आपको पता चलता है कि आपको किसने शाप दिया है। कोई आपको मारना चाहता है, और उन्होंने इसके लिए गोलेम का इस्तेमाल किया है।'
‘और उस पर वे कौन से प्रतीक थे?’
‘ये एक शेम है—पवित्र हिब्रू शब्द। मैंने एमेट से अलेफ हटा दिया। इससे इसका अर्थ ‘मृत’ हो गया। तो यह मर गया। इसके सिर पर जो लिखा होगा, यह वही करेगा। यह पहले सत्य की खोज कर रहा था। वह सत्य क्या है? हमें नहीं पता।’ ‘सच?’ कॉन्स्टेंटाइन ने आंखें घुमाईं। ‘यह अजीब है। मैं एक ईमानदार और खुले दिल का इंसान हूं।’
'हाँ, आप तो... शानदार लग रहे हैं।'
उसने अपनी आंखें सिकोड़ लीं, यह समझने की कोशिश करते हुए कि क्या सिंदबाद व्यंग्य कर रहा था।
“‘आप उस व्यक्ति को कैसे ढूंढेंगे जो आपको मारना चाहता है या सच्चाई की तलाश करना चाहता है या जो भी हो?’

‘तुम नहीं कर सकते। वे सबके सामने छिपे रहते हैं। लेकिन आमतौर पर, जब गोलेम अपना मिशन पूरा करने में असमर्थ होता है, तो वह उस व्यक्ति के पास वापस चला जाता है जिसने उस पर जादू किया होता है। इसलिए मुझे लगता है कि हम कर सकते हैं—’
'मुझे यह मत कहो कि मुझे फिर से बाहर जाने की जरूरत है!'
अगर आप जानना चाहते हैं कि आपकी हत्या की योजना कौन बना रहा है...
‘हम जानते हैं कि यह कौन है,’ छुपकर बातें सुन रहे थियोस ने बीच में दखल देते हुए कहा। ‘यह जनरल एलेक्सियोस है। उसने शहर के बाहरी इलाके में सेना तैनात कर रखी है और हमारे राजा के खिलाफ युद्ध छेड़ रखा है। वह राजा को नापसंद करता है, क्योंकि यहाँ लोगों की राय राजा के बारे में अच्छी नहीं है,’ उसने नशे में धुत कॉन्स्टेंटाइन की ओर तिरछी नज़र से देखते हुए कहा। वह पास आकर सिंदबाद के कान में फुसफुसाया, ‘देखो, उसे ज़्यादा लोग पसंद नहीं करते। उसे एक दुष्ट के रूप में देखा जाता है।’
‘और वह मेरा सेनापति था! वह एक दिन यूं ही चला गया,’ कॉन्स्टेंटाइन ने आक्रामक ढंग से चिल्लाते हुए कहा, जो स्पष्ट रूप से नशे में था।
‘जनरल ने पद क्यों छोड़ा?’ हुसैन ने पूछा।
‘मैंने उसकी पत्नी से शादी की और उसे कैद कर दिया। लेकिन मुझे समझ नहीं आता कि वह इतना गुस्सा क्यों है। इसमें व्यक्तिगत मामला कुछ भी नहीं है।’ राजा ने कंधे उचका दिए।
सिन्बाद और हुसैन ने एक-दूसरे को देखा। दोनों को इस बात पर यकीन नहीं हो रहा था कि इतना कुलीन व्यक्ति, वह भी एक शासक, अपनी प्रजा के वास्तविक जीवन के प्रति इतना उदासीन कैसे हो सकता है।
'तो अगर एलेक्सियोस ने ही यह किया है, तो क्या वह किसी चीज की तलाश कर रहा है? सच्चाई की?'
‘हाँ, शायद वहीं जहाँ मैंने उसकी पत्नी को छिपाया था।’ कॉन्स्टेंटाइन उदास दिख रहा था। ‘हे भगवान, अब मैं उसे कैसे बताऊँ? मैंने उसे भी मार डाला है।’ ‘तुम्हारी समस्या क्या है? तुम सबको क्यों मारते रहते हो?’ सिंदबाद ने तीखे स्वर में कहा।
कॉन्स्टेंटाइन ने कंधे उचकाए। 'मैं चाहता हूं कि तुम मुझे बचाओ, अरब जादूगर।'
‘मैं कोई जादूगर नहीं हूँ। मैं एक सेइड हूँ।’

‘तुम एक बीज बन सकते हो, मुझे कोई आपत्ति नहीं है, हालांकि खुद को ऐसा कहना थोड़ा अजीब है। क्या तुम अंकुरित होकर कुछ बनते हो? खैर, मुझे बचा लो और मैं तुम्हें वह सब कुछ दूंगा जिसकी तुम्हें आवश्यकता है।’
सिंदबाद ने ऊपर देखा।
‘वो क्या था?’
कॉन्स्टेंटाइन उठे और उन्हें अपने पीछे आने को कहा। सिंदबाद और हुसैन ने थियोस और कुछ पहरेदारों के साथ उनका अनुसरण किया, ढोल और तुरही की आवाज़ पीछे छूटती जा रही थी। वे महल के गलियारों से होते हुए मशालों से रोशन सीढ़ियों से नीचे उतरने लगे। वे एक नम तहखाने में दाखिल हुए, जो केवल चाँदनी से रोशन था।
‘मुझे यहाँ नशे में नहीं आना चाहिए। इससे इस जगह का अपमान होता है,’ कॉन्स्टेंटाइन ने वंडरस्टोन की ओर इशारा करते हुए कहा। बाकी दोनों पत्थरों के विपरीत, यह पत्थर पॉलिश किया हुआ और चमकदार था।
‘तुम इसे रख लो। मुझे इसकी जरूरत नहीं है।’
‘महामहिम,’ थियोस ने जल्दी से कहा, ‘यह हमारा इतिहास और संस्कृति है।’
और मैं इस पर पेशाब करूँगा। मुझे अपनी जान की परवाह किसी और से ज़्यादा है...
राजा ने अपना कुर्ता ऊपर उठाना शुरू किया, तभी सिंदबाद ने कहा, “आपको कुछ साबित करने की ज़रूरत नहीं है। मैं आपकी मदद करूँगा और आपको मुझे वचन देना होगा कि आप यह मुझे दे देंगे। मैं उस व्यक्ति को ढूँढ़ लूँगा जो आपको मारने की कोशिश कर रहा है। लेकिन बस एक बात याद रखना, वह कोई भी हो सकता है।” कॉन्स्टेंटाइन खर्राटे ले रहा था। वह ज़मीन पर गिर पड़ा था और बच्चे की तरह सो रहा था। सिंदबाद ने हुसैन और थियोस की ओर देखा, जो राजा को निराशा से देख रहे थे।
‘यह एक चुनौती होने वाली है,’ सिन्बाद ने कहा। ‘और उन कारणों से नहीं जो मैंने सोचे थे। कई बार, जीव-जंतुओं से ज्यादा परेशानी पैदा करने वाले इंसान होते हैं।’

सैंतीस
सिंदबाद जानता था कि यह योजना बुरी तरह विफल हो सकती है। लेकिन फिर भी उसने इसे अंजाम देने का फैसला किया।
‘क्या आपको यकीन है कि यह काम करेगा?’ कॉन्स्टेंटाइन ने घबराकर पूछा। उन्होंने आम नागरिकों के कपड़े पहने हुए थे और उनका चेहरा एक छोटी सी टोपी से ढका हुआ था। कोई भी उन्हें राजा के रूप में नहीं पहचान सकता था। वे एक खुले मैदान में थे, जो रात में खाली था, जिसका मतलब था कि हताहतों की संख्या कम या न के बराबर होगी।
उन्होंने कहा, 'मुझे अपने गार्ड लाने चाहिए थे।'
‘और तुम्हारे और भी आदमियों को मार डाला,’ सिंदबाद ने जवाब दिया। ‘नहीं। गोलेम तब तक नहीं रुकेगा जब तक वह तुम्हें मार न डाले।’
तो आप मुझे यूं ही सौंप देंगे? यह तो ठीक नहीं है।
'महाराज, यह आपको मारना नहीं चाहता। यह आपसे पूछताछ करना चाहता है। सच, याद है ना? इसलिए सबसे बुरा जो हो सकता है वह है कुछ हड्डियां टूटना।'
‘यह तो बिलकुल भी तसल्ली देने वाली बात नहीं है!’ कॉन्स्टेंटाइन ने गुस्से से कहा।
सिंदबाद ने उनके ऊपर कुछ देखा, जो एक इमारत से दूसरी इमारत पर कूद रहा था। ‘बस योजना के अनुसार चलो। जब मैं गोलेम को रोकूंगा और फिर गायब हो जाऊंगा, तब तक तुम्हारे पास भागने के लिए मुश्किल से कुछ ही पल होंगे। अगर तुमने ऐसा नहीं किया, तो वह तुम्हें पकड़ लेगा।’
‘मुझे पता है, मुझे पता है। क्या तुम इसे रोक पाओगे?’ उसने रूखेपन से पूछा। ‘मेरे पास कुछ तरकीबें हैं।’ उसने हुसैन और उसके हाथ में पकड़े पानी की दो बाल्टियों की ओर देखा। ‘और जैसे ही यह देखेगा कि तुम चले गए हो, मैं इसका पीछा करते हुए इसके मालिक तक पहुँच जाऊँगा।’
उन्होंने अपने ऊपर एक जोरदार धमाके की आवाज सुनी।

'यह पास ही है। यह तुम्हारी उपस्थिति को महसूस कर सकता है,' सिन्बाद ने ऊपर देखते हुए कहा।
‘कैसे? मैं तो खुद जैसी दिख ही नहीं रही।’
‘गोलेम के पास आपके बाल या आपके शरीर का कोई ऐसा हिस्सा होता है जिससे वह पहचान सके कि यह आप ही हैं। इसी तरह श्राप दिया जाता है। उन्हें आपकी कोई न कोई चीज चाहिए होती है,’ सिंदबाद ने समझाया।
‘अगर तुमने मुझे मरने दिया, तो मैं तुम्हें मरवा दूंगा, तुम्हें पता है!’ राजा ने गरजते हुए कहा।
'अगर तुम मर गए, तो तुम अपने गार्डों को मुझे मारने का आदेश नहीं दे पाओगे।' उस तर्क का सामना करते ही कॉन्स्टेंटाइन चुप हो गया। उसने बुदबुदाते हुए कहा, 'मैं एक बुरा लड़का हूँ। मैं अपनी माँ के लिए भी मुसीबत हूँ।' जिन्हें तुमने कैद भी कर लिया था...
'सचमुच जेल में बंद नहीं किया गया था। बस नौकरी से निकाल दिया गया था। वह दफ्तर के मामलों में बहुत ज्यादा दखल देती थी, और मैं सिर्फ एक कठपुतली राजा था। मैं और कुछ बनना चाहता था। मैंने उससे कहा कि उसकी मौजूदगी मुझे चिड़चिड़ा बना रही है।'
‘हाँ, यह आपके लिए कैसा चल रहा है?’ सिंदबाद ने आँखें घुमाईं।
राजा को व्यंग्य समझ नहीं आया। 'वह मुझसे नाराज़ है, बिल्कुल। उसे लगता है कि मैं बेवकूफी कर रहा हूँ, उसे खुद से दूर धकेल रहा हूँ, और मुझे इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।'
हुसैन ने आगे कहा, 'महामहिम, मुझे याद है कि मेरे पिता के साथ भी मेरी इसी तरह की बातचीत हुई थी। वे चाहते थे कि मैं एक सैनिक बनूँ, उनके जीवन का हिस्सा बनूँ, लेकिन मैं इतना नखरे वाला था कि सैनिक बनना मेरे लिए नामुमकिन था। और फिर, खैर, उन्होंने एक वीर की तरह अपनी जान दे दी। अगर मैंने उन्हें अपने जीवन में जगह दी होती, तो आज हालात कुछ और होते।' सिंदबाद ने हुसैन का यह रूप पहले कभी नहीं देखा था।
“खैर, तुम्हारे पिता तो बहुत अच्छे लगते हैं। मेरे पिता तो एक जादूगर हैं जिन्हें सिंहासन के सिवा कुछ नहीं चाहिए। मैं हर तरह के मूर्ख लोगों से घिरी हुई हूँ। यहाँ तक कि थियोस भी। मुझे लगता है कि उसे भी सिंहासन चाहिए। वह मुझे ऐसे देखता है जैसे मैं कोई नासमझ बच्ची हूँ। मुझे हर किसी पर शक

है। लेकिन सबसे ज़्यादा मुझे उस जनरल पर शक है। मुझे उसे मरा हुआ देखना है, और मैं उस खूनी गोलेम को उलट-पलट कर उसे वापस भेज दूँगी।”
सिंदबाद ने आह भरी। 'यह इस तरह काम नहीं करता।'
कॉन्स्टेंटाइन ने सिंदबाद को घूरकर देखा। ‘मुझे लगता है कि तुम मुझे डराना चाहते हो। तुम्हें पता है, मैं शहर के हर रब्बी को मारने का आदेश दे सकता था।’ ‘निर्दोषों को मारना? सुनो, अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारी मदद करूं, तो यह मेरी शर्तों पर होगा,’ सिंदबाद ने गुस्से से जवाब दिया।
जब उन्होंने अपने नीचे सड़क को हिलते हुए महसूस किया तो वे सब चुप हो गए। गोलेम इमारत से कूदकर ज़मीन पर आ गिरा था। वह विशालकाय दानव, अपने विकृत शरीर के साथ, उनकी ओर बढ़ने लगा। उसकी आँखें गुस्से से भरी हुई थीं। वह भयावह लग रहा था।
‘ठीक है, तुम्हें पता है क्या करना है,’ सिंदबाद चिल्लाया।
कॉन्स्टेंटाइन ने धुआं छोड़ने वाले बमों की ओर हाथ बढ़ाते हुए सिर हिलाया। उसने उन्हें नीचे फेंक दिया।
लेकिन वे धुएं से भरी आग में नहीं तब्दील हुए।
‘ये क्या बकवास है?’ कॉन्स्टेंटाइन चिल्लाया। ‘तुमने कहा था कि ये काम करेगा!’
‘ये तुम्हारे स्मोक बम हैं। मेरे नहीं।’
'अरे हां!'
‘भागो,’ सिंदबाद ने आदेश दिया। ‘जितनी जल्दी हो सके भागो।’
कॉन्स्टेंटाइन लड़खड़ाते हुए वहां से चला गया।
‘हुसैन! जाओ!’ सिंदबाद चिल्लाया।
हुसैन ने गोलेम पर पानी की बाल्टी फेंक दी। उसका रेतीला कवच पिघलने लगा और हाथ चूर-चूर हो गए। गोलेम ने उन्हें घूरकर देखा और उसके हाथ फिर से बनने लगे। हुसैन ने दूसरी बाल्टी भी उस पर फेंक दी।
दोनों भागने लगे। गोलेम पर हमले का कोई असर नहीं हुआ। वह उनके ऊपर से कूदकर घुड़दौड़ के मैदान की ओर बढ़ गया।
'कहीं वो बेवकूफ लड़का अखाड़े में तो नहीं चला गया,' सिंदबाद गुर्राया।
‘वह ऐसा क्यों करेगा?’ हुसैन ने पूछा।
क्योंकि यह पास है। वह बेवकूफ ठीक से दौड़ भी नहीं सकता।

सिन्बाद और हुसैन तेज़ी से बंद क्षेत्र की ओर दौड़े, जहाँ उन्होंने देखा कि गोलेम पहले ही घुस चुका था—इस प्रक्रिया में कुछ पहरेदार कुचले गए थे। सिन्बाद गोलाकार बैठने की व्यवस्था वाले रंगमंच में दाखिल हुआ। केंद्र में, उसने गोलेम को कॉन्स्टेंटाइन की ओर हाथ बढ़ाते हुए देखा, जो भय से घुटनों के बल बैठा मुक्ति की भीख मांग रहा था।
सिंदबाद ने अपनी आकाश-लोहे की तलवार से हमला किया और उस प्राणी की एक कीचड़ से सनी भुजा पर वार किया, जिससे वह प्राणी भय और आश्चर्य से चिल्ला उठा। ‘हुसैन! इसे उस खूनी महल में ले जाओ।’
हुसैन रोते हुए राजा का हाथ थामे उस इलाके से बाहर भाग गया, जबकि सिंदबाद गोलेम के चारों ओर चक्कर लगाने लगा।
जैसे ही वह हमला करने वाला था, सिंदबाद लुढ़क कर उसके पैरों के बीच से कूदकर पीछे से उस पर हमला करने लगा। लेकिन गोलेम ने उसे पहले ही लात मार दी, जिससे वह स्टेडियम से उड़ता हुआ जमीन पर जा गिरा।
सिन्बाद हांफते हुए खड़ा हुआ, जब उसने देखा कि गोलेम उस पर हमला करने के लिए पूरी तरह तैयार होकर उसकी ओर बढ़ रहा है। लेकिन सिन्बाद ने अपनी पूरी ताकत लगाकर हवा में कलाबाजी मारी और अपनी तलवार उस राक्षस के सिर में घोंप दी।
गोलेम जरा भी नहीं हिला।
उसने गुस्से से सिंदबाद को चारों ओर देखा। उसे सिंदबाद के अपने सिर पर बैठे होने का एहसास नहीं हुआ। एक पल पहले गोलेम बहुत उत्तेजित था, लेकिन अगले ही पल वह एकदम शांत हो गया। मानो उसका कर्तव्य अचानक समाप्त हो गया हो।
सिंदबाद ने अनुमान लगाया कि राजा अपने महल में प्रवेश कर चुका होगा, इसलिए गोलेम जानता था कि वह कुछ नहीं कर सकता।
उसे पता था कि गोलेम अब उसे अपने निर्माता के पास ले जाएगा। जैसे ही वह उछल-कूद करने लगा, वह उसके सिर से लिपट गया। उसे अपने बालों में हवा का तेज झोंका महसूस हो रहा था।
गोलेम एक्रोपोलिस के पास एक घर के पास रुक गया।
सिंदबाद ने अपनी तलवार निकाली और उस प्राणी के सिर से पीछे की ओर गिर पड़ा, और उसने देखा कि दाढ़ी वाला एक बूढ़ा आदमी घर से फुफकारते हुए बाहर आ रहा है:

मैंने तुम्हें कितनी बार चुप रहने के लिए कहा है? इससे पड़ोसियों को परेशानी होगी और मुझे जवाब देना पड़ेगा।
उस आदमी ने ताली बजाई और गोलेम रेत में बदल गया। सिंदबाद लहर पर सवार होकर प्रकट हुआ और अपनी तलवार लहराने लगा। उसने बूढ़े आदमी का गला पकड़कर उसे ज़मीन पर गिरा दिया। आदमी का चश्मा और काली टोपी लुढ़क कर एक तरफ गिर पड़ी। 'तुम्हें अब यह समझाना शुरू करना होगा कि मैं एक दिमाग से खाली राक्षस के ऊपर बैठकर शहर में क्यों उछल-कूद कर रहा था।'
‘क्या?’ तलवार को देखकर वह आदमी सिसकते हुए बोला। ‘क्या? मुझे नहीं पता।’ सिंदबाद ने अपनी पकड़ और कस ली। 'मुझे बताओ! मैंने तुम्हें सचमुच उस चीज़ को चूर-चूर करते देखा।'
मुझे पैसे मिल गए! मुझे पैसे मिल गए।
'किसके द्वारा?'
‘स्वयं राजा द्वारा,’ उसने कहा। ‘कॉन्स्टेंटाइन छठे द्वारा।’

अड़तीस
सिंदबाद जानता था कि उसे क्या करना है। लेकिन उसके बगल में एक घबराया हुआ, विनम्र सज्जन था जो शाही दरबार में प्रवेश करते समय उसे बार-बार टोक रहा था। सिंदबाद ने वहाँ राजा कॉन्स्टेंटाइन से मिलने की अनुमति मांगी थी— वही व्यक्ति जो एक गोलेम की मदद से आत्महत्या करना चाहता था।
‘क्या आप वाकई ऐसा करना चाहते हैं? हम अपनी गर्दन कटवा सकते हैं,’ हुसैन ने कहा।
‘सब ठीक है,’ सिन्बाद ने आश्वस्त करते हुए कहा।
‘कौन सा हिस्सा सही है? जब हमारे सिर काट दिए जाएंगे? या जब तुम सब कुछ मिटा दोगे?’ हुसैन ने फुफकारते हुए कहा।
‘आपको पता है लोग कैसे कहते हैं कि कोई रास्ता नहीं है?’
'हाँ?'
सिन्बाद रुका और उसकी तरफ देखा। 'हर समस्या का कोई न कोई हल होता है। लोग बस हार मान लेते हैं।'
हुसैन मुस्कुराया।
‘मुझे माफ कर दो, हुसैन,’ सिंदबाद ने अचानक कहा।
'किस बारे मेँ?'
‘बच्चा होने के बारे में। मुझे पता होना चाहिए था कि तुम अपने पिता की विरासत को आगे बढ़ाना चाहते थे। और मैं यहाँ यह सोच रही थी कि तुम इसलिए जा रहे हो क्योंकि तुम मुझसे आगे बढ़ना चाहते हो...’
हुसैन ने गर्मजोशी से मुस्कुराते हुए कहा, 'मैं बहुत कुछ करना चाहता हूँ, सिंदबाद। लेकिन मेरे पिता ने यह भी कहा था, 'अपने साथी को कभी भी खतरे में अकेला मत छोड़ना। चाहे कुछ भी हो जाए, हमेशा उसके साथ रहना।'

सिन्बाद ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया और दोनों गले मिले। 'मैं बस थोड़ा असुरक्षित महसूस कर रहा था, आप जानते हैं। मैं अपने इस छोटे से परिवार को खोना नहीं चाहता।'
'मेरे दोस्त, परिवार कभी दूर नहीं जाते। वे शायद अपने कुछ काम करने के लिए कहीं चले जाएं, लेकिन वे हमेशा लौट आते हैं।'
‘बहुत बढ़िया,’ सिन्बाद ने थोड़े और आत्मविश्वास से कहा। ‘अब बस यही प्रार्थना करते हैं कि कहीं हमारी गर्दन न कट जाए।’
जैसे-जैसे कॉन्स्टेंटाइन अपने सिंहासन पर बैठकर अपने अंगरक्षकों और थियोस से बात कर रहे थे, कमरा लोगों से भरने लगा। उनकी माँ, आइरीन, कोने में उदास खड़ी थीं। वह सुनहरे बालों वाली और बेहद सजी-धजी एक आकर्षक महिला थीं।
सिंदबाद और हुसैन आगे बढ़े।
“ओह, और ये रहे! जिन्होंने मुझे उस कपटी गोलेम से बचाया, जो शहर में आतंक मचा रहा था और मुझ पर हमला कर रहा था,” कॉन्स्टेंटाइन ने ज़ोर से कहा। “सेइड के अनुसार, गोलेम को मुझे मारने के लिए बनाया गया था, और मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि इन हत्या के प्रयासों के पीछे कौन है, इसका पता लगाऊँ। इस बीच,”—वह अपने मेहमानों की ओर मुड़ा—“आपकी सेवाओं के लिए धन्यवाद। आपको इसके लिए पुरस्कृत किया जाएगा।”
शाही अंगरक्षकों ने सिंदबाद को सोने और गहनों से भरे थैले सौंप दिए। ‘क्या आप मुझे वह तख्ती नहीं देंगे?’ सिंदबाद ने राजा से फुसफुसाते हुए कहा।
कॉन्स्टेंटाइन ने उसे बनावटी मुस्कान दी। 'क्या तुम्हें सच में लगा था कि मैं अपना पूरा इतिहास एक अरब को सौंप दूंगा? तुम्हें अच्छा इनाम मिल चुका है, अब तुम जाओ।'
'सौदा तो सौदा होता है।'
‘तुमने गोलेम को मार डाला। तुम्हें हत्यारा नहीं मिला।’
सिंदबाद मुस्कुराया। 'मुझे पता है कि यह तुम ही हो।'
‘क्या?’ राजा ने उपहास व्यक्त किया। लेकिन थियोस और इरेन सुनने के लिए आगे बढ़े।
‘मुझे चिल्लाने पर मजबूर मत करो, मेरे दोस्त। मैं जानता हूँ कि यह तुम ही हो,’ सिंदबाद ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘तुम अपने पीछे एक गोलेम इसलिए छोड़ना

चाहते थे ताकि तुम्हारी प्रजा तुमसे सहानुभूति रखे। कोई तुम्हें पसंद नहीं करता। कोई तुम्हें अपना राजा नहीं बनाना चाहता। तुमने सोचा कि खुद को पीड़ित दिखाना ही एकमात्र विकल्प है। और इसी से तुम्हारी दूसरी योजना बनी — गोलेम का इस्तेमाल करके अपने आस-पास के लोगों पर दोष मढ़ना और उन्हें मार डालना।’ सिंदबाद ने थियोस और आइरीन को आँख मारी। ‘लेकिन मैंने तुम्हारी योजना बिगाड़ दी। मैं यहाँ आया और तुम्हें बचाया और मुझे गोलेम के बारे में सब पता था। मैं एक सेइड था, और तुम जानते थे कि इसका क्या मतलब है, चाहे तुम कितना भी बेवकूफ बनने का नाटक करो। तुम जानते थे कि मैं जल्दी ही समझ जाऊँगा, इसलिए तुमने दूसरों पर दोष मढ़ दिया। तुम्हें इसे विश्वसनीय बनाना था, इसलिए तुमने योजना बनाई कि मैं तुम्हें खुले में ले जाऊँगा और अपनी जान के लिए डरने का नाटक किया, जबकि तुम जानते थे कि इससे तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ेगा। इसीलिए तुम महल के बजाय घुड़दौड़ के मैदान में भागे।’ तुम चाहते थे कि मैं तुम्हें पीड़ित के रूप में देखूँ। लेकिन मैं गोलेम का पीछा करते हुए उसके घर तक गया और वहाँ मेरी मुलाकात उस रब्बी से हुई जिसे तुमने नियुक्त किया था। बेचारा यह सब अपने परिवार की खातिर कर रहा था। तुमने उन्हें कैद कर लिया था, है ना?
कॉन्स्टेंटाइन अपनी जगह पर जम गया, उसकी पुतलियाँ फैल गईं। उसके मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला।
‘अब सोचो अगर मैं यह सब अभी बता दूं। तुम्हारी लोकप्रियता और भी तेजी से गिर जाएगी। लोग तुम्हें झूठा ही समझेंगे।’
‘मैं खुद गोलेम को हराना चाहता था! पहले हार दिखाऊं, फिर दृढ़ता। मैं हीरो बन जाता,’ कॉन्स्टेंटाइन ने अंत में कहा। ‘लेकिन तुमने सब बिगाड़ दिया। मैं इतना डर गया था कि मैंने शराब पी ली। और फिर नशे में मैंने तुम्हें वो पट्टिका देने का वादा कर दिया।’
‘अरे वाह, सारी बातें कैसे जुड़ गईं!’ सिंदबाद मुस्कुराया। ‘तो आप मुझे टैबलेट दे देंगे और मैं चला जाऊंगा?’
'तुम खुशकिस्मत हो कि मैं तुम्हें मार नहीं रहा हूँ। यहाँ से चले जाओ और इस बारे में फिर कभी बात मत करना। याद रखना, मुझे पता है कि तुम कहाँ से आए हो।'
सिन्बाद बाल राजा से तंग आ चुका था। 'मेरी बात ध्यान से सुनो। गोलेम का शेम जनरल एलेक्सियोस को दिया जा रहा है। एक बार जब उसे यह और गोलेम बनाने की

विधि वाला पत्र मिल जाएगा, तो मज़ा आएगा। और इस बार वही तुम्हें ऐसा गोलेम भेजेगा जो तुम्हें खुशी-खुशी मार डालेगा।'
कॉन्स्टेंटाइन के चेहरे का रंग उड़ गया। 'तुम झूठ बोल रहे हो।'
‘क्या मैं? मुझे गोली दे दो और मैं चलता हूँ। बदले में मैं तुम्हें शेम का स्थान बता दूँगा। तुम एलेक्सियोस के पहुँचने से पहले उसे ले सकते हो। तुम्हारे पास अभी भी समय है।’
कॉन्स्टेंटाइन गुस्से से आग बबूला था, उसकी आँखों से दहकती आग बरस रही थी। असहाय, मूक बच्चे की तरह व्यवहार करने का सारा दिखावा धराशायी हो गया था। ‘ठीक है। यह पट्टिका आपके बेड़े तक गुप्त रूप से पहुँचा दी जाएगी,’ कॉन्स्टेंटाइन ने दाँत पीसते हुए कहा।
सिंदबाद ने एक हाथ में सोने की थैली थामे हुए दूसरे हाथ से राजा का हाथ पकड़ लिया और उसे दोनों के सिर के ऊपर उठा लिया। 'राजा अमर रहें!'
जवाब में दरबारियों ने जोर से कहा, 'राजा अमर रहें!'
सिन्बाद ने आइरीन की ओर देखा। 'मुझे यकीन है कि जल्द ही तुम्हारा धैर्य उससे टूट जाएगा। अलविदा।'
सिंदबाद और हुसैन अपने जहाज के लिए रवाना हो गए। हुसैन, उस समय घबराहट और उत्साह से भरे हुए थे, उन्होंने पूछा, 'क्या आपने सचमुच सेनापति को शेम भेजा था?'
उस बेवकूफ ने मुझसे यह भी नहीं पूछा कि मुझे कैसे पता चला कि भगोड़ा जनरल कहाँ छिपा है।
दोनों दोस्त जोर-जोर से हंसने लगे।

उनतीस
सिंदबाद कप्तान के कमरे में था। दोनों चमत्कारी पत्थर पूरी तरह से एक दूसरे में फिट हो गए। केवल एक ही बचा था।
मुझे इसे प्राप्त करना होगा।
उसके साथी भी कमरे में मौजूद थे, और वे सब एक-दूसरे को विस्मय से देखने लगे। अब वे खुले पानी में थे। सिंदबाद ने आखिरकार उन तीनों जगहों को पार कर लिया था जिनके बारे में अनांसी ने उसे बताया था। वह जानता था कि पहेली के आखिरी टुकड़े को ढूंढना उसे खुद ही सीखना होगा।
‘तो हमने यह कर लिया,’ सिन्बाद ने कहा। ‘बस आखिरी बचा है, हालांकि हमें पता नहीं है कि उसे कहाँ ढूँढना है।’
‘मैं पता लगा सकता हूँ,’ प्रेसा ने स्वेच्छा से कहा।
‘तुम्हें आराम करना चाहिए,’ सिंदबाद ने मुस्कुराते हुए उससे कहा। ‘हम सबको आराम करना चाहिए। कल हम नए सिरे से शुरुआत करेंगे और सब कुछ समझेंगे। लेकिन इस शानदार सफर के लिए आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।’
वे सब मुस्कुराए और एक दूसरे की पीठ थपथपाई।
वे सब बातें करते और हंसते हुए कमरे से बाहर चले गए। सिवाय एक के। वह वहीं दरवाजे से टेक लगाकर खड़ी रही।
'क्या हुआ?'
‘मुझे नहीं पता,’ उसने कहा।
‘तुम ठीक नहीं लग रही हो।’ उसका चेहरा सामान्य से अधिक पीला पड़ गया था और उसकी बिल्ली जैसी आंखें सूजी हुई और फूली हुई थीं।
‘क्या आपको कैलिप्सो की कहानी याद है?’ उसने हिम्मत करके पूछा।
‘बिल्कुल करता हूँ।’ उन्होंने स्नेह भरी मुस्कान के साथ कहा।

‘मुझे हमेशा जहाज में वो दिन याद आता है जब आपने मुझे द्वीप से बचाया था। मुझे पता था कि मैं सुरक्षित रहना चाहती हूँ।’ वह मुस्कुराई। ‘और आपने ही मुझे ऐसा महसूस कराया।’
‘अरे, कोई बात नहीं। अच्छी यादें हैं।’ सिंदबाद ने आह भरी। ‘मुझे अपने बुरे बर्ताव के लिए माफ़ करना। मुझे ज़्यादा समझदार होना चाहिए था। आख़िरकार, तुम भी एक इंसान हो। तुम हर समय मेरे पीछे नहीं पड़ी रह सकती।’
सफीना ने सिर हिलाया। उसने उदास हंसी हंसी।
मुझे यह बात समझ लेनी चाहिए थी कि मुझे अपनी जिंदगी के अलावा भी एक जिंदगी जीनी चाहिए। मुझे लगता है कि इस पूरी यात्रा के दौरान मैं सिर्फ अपने बारे में ही सोच रही थी। मुझे दूसरों के बारे में ज्यादा सोचना चाहिए था। उसने उसकी तरफ एक नज़र डाली, उसकी नज़रें मिलते ही उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा। उसके जीवन का प्यार। उसके सपनों की औरत।
मैं भी माफी मांगती हूं। मैं आसान नहीं रही हूं। और इसके मेरे पास कारण हैं। वास्तव में, बहुत मजबूत कारण हैं।'
उन्होंने कहा, 'जब आप इसके बारे में बात करना चाहें, तो मुझे सुनना अच्छा लगेगा। अपने प्रियजन को खोना बहुत कठिन रहा होगा।'
‘वह मेरा दोस्त था। मेरा सहारा। मेरी शांति।’ वह हल्की सी सिसकी भरते हुए बोली। ‘इब्लिस को पता चल गया। इसलिए उसने एक दिन अपने गुंडों को भेजा। फिर दूसरे दिन। फिर तीसरे दिन। मैंने उन्हें रोका और कई बार उसे बचाया। एक दिन मुझे बुरा सपना आया। मैं जाग गई तो देखा कि मेरे सामने एक राक्षस खड़ा है, मुझ पर हमला करने, मुझे सताने, मुझे मेरे भाग्य से भागने की सज़ा देने के लिए तैयार। तो मैंने उसे मार डाला... लेकिन तभी मेरा भ्रम टूट गया। वह तो मेरा प्रेमी ही था।’ उसने एक आंसू पोंछा, लेकिन और आंसू बहते रहे। ‘अब मैं इब्लिस के भ्रम में अंधी हो गई थी, और इसने मुझे भयभीत कर दिया था। अगर शैतान के पास पृथ्वी पर न होते हुए भी इतनी शक्ति है, तो अगर वह यहाँ होता तो क्या होता? इसलिए मैंने चुपचाप उसकी बात मानी। मैंने वही किया जो उसने मुझसे कहा क्योंकि मैं नहीं चाहती थी कि मेरे आस-पास किसी को चोट पहुँचे। मुझे लगा कि मैं उससे ज़्यादा समझदार हो सकती हूँ, लेकिन आप कभी नहीं हो सकते। वह हमेशा आपसे एक कदम आगे रहता है।’
सिन्बाद ने अपने जबड़े भींच लिए। 'मैं समझ गया।'

‘और जब तुमने मुझे बचाया।’ सफीना अब खुलकर रो रही थी, आँसू उसके चेहरे पर बह रहे थे। ‘मैंने सोचा था कि इस दुनिया के देवताओं ने मुझे एक खुशहाल जीवन जीने का दूसरा मौका दिया है। लेकिन मुझे एहसास हुआ कि अगर मैं तुम्हारे बहुत करीब आई, तो शायद मैं तुम्हें भी उसी तरह चोट पहुँचाऊँगी जैसे मैंने अतीत में लोगों को पहुँचाई है। मैं फिर कभी किसी के करीब नहीं आना चाहती थी, इसलिए मैंने खुद को सबसे अलग कर लिया। कोशिश कर रही थी कि मैं किसी के लिए परेशानी या बाधा न बनूँ। मैं फिर से चोट नहीं खाना चाहती।’ वह काँप रही थी और सिसक रही थी। सिंदबाद उसे दिलासा देना चाहता था, लेकिन वह वहीं खड़ा रहा। वह आत्मनिर्भर थी—वह जानती थी कि अपने आँसू कैसे पोंछने हैं। और उसे उसकी ज़रूरत नहीं थी।
‘तुम मुझे यह बात पहले बता सकते थे।’
'यह बहुत कठिन रहा है, सिंदबाद। मुझे नहीं पता कि क्या करना है और क्या नहीं। मैं बस इतना जानता हूँ कि इब्लिस को यह समझना होगा कि वह अपने घर से भाग नहीं सकता। या तो उसे वहीं रहना होगा या उसे हराना होगा।'
‘मुझे पता है।’ सिंदबाद ने सिर हिलाया। ‘और हम ऐसा ही करेंगे। मैं सखर से भागता रहा हूँ। अब पलटवार करने का समय आ गया है।’
‘यह तो अच्छी योजना लग रही है। लेकिन क्या आपको पता है कि शुरुआत कहाँ से करनी है?’
सिन्बाद को कुछ कहने की ज़रूरत नहीं पड़ी, क्योंकि जहाज़ बेकाबू होकर हिलने लगा। वे दोनों हैरानी से एक-दूसरे को देखने लगे। बिगुल बजने लगे और हर कोई चिल्लाने लगा। सिन्बाद और सफ़ीना तुरंत जहाज़ से बाहर कूद पड़े, सिन्बाद ने अपना ओवरकोट कसकर पकड़ा और डेक की ओर चल दिए।
प्रेसा आगे देखते हुए चिल्ला रही थी।
समुद्र से विशालकाय तंतु उठ रहे थे। उन्होंने उसके जहाज को जकड़ लिया था, उसे अपने घेरे में ले लिया था और उन्हें फंसा लिया था।
'क्या हमने अभी-अभी उस शापित क्रैकन को जगा दिया?' सिंदबाद ने कांपते हुए पूछा।
किसी के कुछ कहने से पहले ही, उसने अंधेरे में एक जहाज को उनकी ओर आते हुए देखा। खोपड़ियों और हड्डियों से बना एक प्राचीन जहाज।
और इसके अलावा, सखर खुशी से हाथ हिला रहा था।
‘मुझे आश्चर्य क्यों नहीं हो रहा?’ सिंदबाद ने बुदबुदाते हुए कहा।

चालीस
सखर ने अपने लिए थोड़ी शराब डाली।
‘मैं तुम्हारी तारीफ करता हूँ। तुमने कर दिखाया, मेरे दोस्त,’ राक्षस मुस्कुराया। ‘क्या तुम्हें भी चाहिए?’
मैंने पिछली बार तुम्हें अस्वीकार कर दिया था।
सिन्बाद कुछ नहीं कर सका। स्क्विड ने अपने टेंटेकल्स में उनके जहाज को जकड़ लिया था। लड़ाई व्यर्थ थी। इस बार सिन्बाद बंधा हुआ नहीं था। वह एक बार फिर कप्तान के लॉज में था, उसके अधिकांश क्रू मेंबर बंधे हुए थे और लाल बालों वाली महिला उन पर नज़र रख रही थी।
‘तुम तो बिल्कुल मजा किरकिरा कर देते हो। तुम्हें अपनी जीत का आनंद लेना चाहिए। जीत का मजा तो उसी में है,’ सखर ने कहा।
‘आपको कैसे पता चलता है कि हम कब जीतेंगे?’
‘हमारे पास एक जासूस है।’
वह अपने रुख पर अडिग रहा। 'नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते।'
‘सच है।’ सखर ने कंधे उचकाते हुए कहा। ‘मुझे लगा था कि तुम अपने दोस्तों पर भरोसा नहीं करोगे, लेकिन तुमने नहीं किया। मुझे निराशा हुई। वे लोग तुम्हारा साथ नहीं दे सकते। मौका मिलते ही वे तुम्हें धोखा दे सकते हैं।’ ‘ओह, तुम यही चाहोगे, है ना?’ सिंदबाद ने गुस्से से कहा।
एडमिरल ने शराब की चुस्की लेते हुए सिर हिलाया। 'तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हारा बुरा चाहता हूँ। लेकिन ऐसा नहीं है। मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ।'
'मुझे ये सब बकवास मत सुनाओ। तुमने मुझे एक बार भ्रमित करने की कोशिश की थी, लेकिन अब नहीं कर सकते।'

कप्तान की कुर्सी पर बैठते हुए उसने सिर हिलाया। 'वाह, कुछ समय के लिए तुम्हारी जगह होना अच्छा लगता है, है ना? सबको आदेश देना। कागज़ों को पलटना। मज़ा आता है।'
'आप क्या चाहते हैं?'
‘क्रैकन सो रहा था, लेकिन मैंने उसे जगा दिया—उस पर मेरा एक एहसान था।’ सखर मुस्कुराया। ‘उसने मेरी मदद की है। लेकिन तुम्हारे बारे में मुझे पता चलने का तरीका बहुत आसान था। तुम्हारे दोस्त ने जिन शैतानों को पीछे छोड़ा था, मैंने उन्हें तड़पाकर तुम्हारा पीछा करवाया। और वे मुझे तुम्हारे पास ले आए। तो तुमने मेहनत की, और मैंने उसका फल पाया। अब अगर तुम पत्थर नहीं ले पाते, तो मुझे महल पर हमला करना पड़ता। सैकड़ों लोगों को मारना पड़ता। आह, कितना बड़ा नुकसान होता। बीजान्टिन साम्राज्य का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। मैं कोई राक्षस नहीं हूँ, तुम्हें पता है ना,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा। ‘मैंने सोचा कि तुम्हारे समझदारी से काम लेने का इंतज़ार करना ही सबसे अच्छा होगा। इसलिए भले ही तुम मेरी टीम का हिस्सा नहीं बन सके, लेकिन एक तरह से तुम थे।’
सिन्बाद का गुस्सा बढ़ता जा रहा था, लेकिन वह जानता था कि कोई भी भावना दिखाने से सखर को वही मिलेगा जो वह चाहता है। 'इब्लिस तुम्हें क्या वादा कर रहा है? मैं तुम्हें वह दे सकता हूँ।'
‘मुझे नहीं लगता कि तुम कर सकते हो।’ सखर हँस पड़ा।
'मुझे बताओ।'
सखर ने अपने होंठ सिकोड़े। 'चूंकि तुम अच्छे कुत्ते रहे हो, इसलिए मैं तुम्हें एक राज़ बताता हूँ। मैं बुरा आदमी नहीं हूँ। असल में, मैं अच्छे लोगों में से एक हूँ। मुझे अभी-अभी अपनी बेटी के साथ कुछ समय बिताने का वादा मिला है।'
'अच्छा ऐसा है।'
‘हाँ। एडमिरल होने के नाते मैं हमेशा व्यस्त रहता था। मैं बेड़ों को जीतने में इतना व्यस्त था कि उसके साथ समय बिताने का समय ही नहीं मिलता था। उसे बड़ा होते देखने का मौका ही नहीं मिला। बेचारी बच्ची एक साधारण जीवन चाहती थी, ऐसा जीवन जहाँ उसके माता-पिता शाम को घर लौटकर उसके साथ खाना खाएँ, हँसें, उसे प्यार करें। लेकिन वह मर गई और उसके साथ-साथ बाकी सब भी।’ उसकी आँखें नम हो गईं। ‘जानते हो उसकी मौत कैसे हुई? लोगों की हत्यारी। इंसान।

उन्होंने एक मामूली सी बहस पर मेरे परिवार को ज़िंदा जला दिया। मैं भी वहाँ था, एक लंबे साहसिक अभियान के बाद घर आया हुआ था। हम सब जल गए। वे सब मर गए और दूसरी दुनिया में चले गए। सिवाय मेरे।’
‘तुम्हारे कर्मों की वजह से?’
‘हाँ।’ सखर ने सिर हिलाया। ‘मैंने कुछ संदिग्ध कर्म किए थे, इसलिए मुझे परलोक में उनके साथ रहने का सौभाग्य नहीं मिला। मुझे अस्वीकार कर दिया गया और अलग कर दिया गया। मैं एक राक्षस बन गया। एक जीवित राक्षस।’ उसने अपना कोट हटाकर सिंदबाद को अपना जला हुआ, मुरझाया हुआ पैर दिखाया। ‘यह इस बात का प्रमाण है कि क्या हुआ, और मुझे अपनी इच्छा पूरी करने के लिए क्या करना होगा।’
'तुम मौत चाहते हो। तुम राक्षस बनना बंद करना चाहते हो।'
सखर ने सिर हिलाया। ‘इब्लिस ने मुझे मेरे अस्तित्व से मुक्ति का वादा किया है, और मैं फिर से अपने परिवार के साथ हो सकता हूँ। मैं भाग्य की धारा को पलटना और उन्हें वापस लाना नहीं चाहता। मैं बस उसी तरह लेटना चाहता हूँ जैसे वे लेटे थे, और इस भयानक अस्तित्व की लहरों में अकेले कष्ट नहीं सहना चाहता।’
‘मुझे लगता है कि तुम गलत समझ रहे हो। वह अपने सबसे अच्छे एडमिरल को कभी जाने नहीं देगा।’ सिंदबाद ने राक्षस की आँखों में आँखें डालकर देखा। 'शायद। या हो सकता है, वो करेगा। इब्लिस के साथ हमेशा कोई न कोई पेंच होता है। और यहाँ पेंच ये है कि मैं उसकी बेटी या तुममें से किसी को न मारूँ। नहीं तो मैं तुम्हें बहुत पहले ही खत्म कर देता।'
मुझे समझ नहीं आ रहा। हम ही तो हैं जो उसे रिहा होने से रोक रहे हैं, तो वह हमारी मदद क्यों करना चाहेगा?
उसने सिर हिलाया। ‘मुझे समझ नहीं आ रहा। मैं पहली बार में ही तुम सबको डुबो सकता था। लेकिन मुझे मना किया गया था। मैं सोचता रहा कि ऐसा क्यों हुआ।’ वह पास आया और सिंदबाद के बगल में खड़ा हो गया। ‘उसे किसी काम के लिए तुम्हारी ज़रूरत है। उसे तुम्हारी टीम की ज़रूरत है। वह जानता है कि तुम सब कुछ कर सकते हो। वह क्षमता देखता है, हाँ। और वह क्या है, यह शायद हमें उसके बाहर आने के बाद पता चलेगा।’
‘आप ऐसा करने की योजना कैसे बना रहे हैं?’

‘जीवन का जल ढूंढकर, बिल्कुल।’ उसकी आँखों में एक चमक थी जब वह वापस मेज की ओर बढ़ा और पहला चमत्कारी पत्थर निकाला। उसने उसे बाकी दो पत्थरों के बगल में रख दिया। ‘यह बिल्कुल सही बैठता है। और जैसे ही मैं इसे बाकी पत्थरों के साथ जोड़ दूंगा, मुझे सिकंदर की कब्र का स्थान पता चल जाएगा।’ सिंदबाद चिंतित दिख रहा था। 'थोड़ा सा पानी उसे कैसे बचा सकता है?'
‘यह मनोकामना पूरी करने वाला पेय है। बस एक घूंट पीकर कुछ मांगना है। बहुत आसान है। मुझे बस इसे पीना है और अपने स्वामी को वापस लाना है।’
‘या आप अपने परिवार को बुला सकते हैं?’ सिंदबाद ने सावधानी से पूछा।
उसकी आँखें चमक उठीं, लेकिन उसकी आवाज़ स्थिर रही। 'अरे, मेरी ही चाल का इस्तेमाल मेरे ही खिलाफ कर रहे हो। दिलचस्प। लेकिन मैं अपने स्वामी के प्रति वफादार हूँ, और मैं पीछे नहीं हटूँगा। क्या तुम यात्रा के लिए तैयार हो?'
सिन्बाद ने आह भरी। उसे एडमिरल को भ्रमित करने के लिए कुछ करना ही था। 'अलेक्जेंडर चाहता तो उसे जीवन का जल मिल सकता था। वह दुनिया को जीत सकता था। निर्विवाद शासक बन सकता था। लेकिन वह जानता था कि जल बेकार है। एक धोखा है। इसीलिए उसने वास्तव में जल नहीं पिया। तुम समय बर्बाद कर रहे हो।' ‘मैं जानता हूँ कि तुम क्या करने की कोशिश कर रहे हो, सिंदबाद। सिकंदर अच्छे लोगों में से एक था,’ सखर मुस्कुराते हुए बोला। ‘उसने जीवन का जल छिपा दिया था, जो उसे स्वयं इब्लिस ने उपहार में दिया था।’ दानव ने सिंदबाद के हैरान चेहरे को देखा। ‘हाँ, वही था, अंधकार का स्वामी। लेकिन सिकंदर को एहसास हुआ कि दुनिया को जीतना सार्थक नहीं है। प्रेम को जीतना... या कुछ इसी तरह का घिसा-पिटा वाक्य। खैर, उसने अपना अभियान छोड़ दिया, और इब्लिस क्रोधित हो गया। वह सिकंदर को अपना सेनापति बनाना चाहता था, इसलिए उसने उसे जहर दे दिया। उसकी मौके पर ही मृत्यु हो गई। लेकिन सिकंदर इतना चतुर था कि मरने से पहले उसने जल छिपा लिया। इब्लिस फिर इसके बारे में भूल गया, उसे लगा कि उसे इसकी ज़रूरत नहीं है, जब तक कि तुमने कुछ महीने पहले उसकी योजना बिगाड़ नहीं दी।’
एडमिरल ने अब और समय बर्बाद नहीं किया। उन्होंने सभी पत्थरों को आपस में जोड़ दिया। एक पल के लिए कमरे में चकाचौंध कर देने वाली रोशनी फैल गई, फिर उन पट्टियों पर कुछ लिखावट उभरने लगी। ये किसी प्रकार के निर्देशांक थे।

सखर ने प्रसन्नता से मुस्कुराते हुए कहा, 'बिल्कुल। मुझे पता है यह कहाँ है। यह यहीं होना चाहिए था। एक सभ्यता का केंद्र जो अपने पापों के कारण भयानक अंत को प्राप्त हुई।'
‘कहाँ?’ सिंदबाद ने पूछे बिना नहीं रह सका।
‘अरे, क्या तुम जानना नहीं चाहोगे? चिंता मत करो, मेरे दोस्त। जब ऐसा होगा, तुम और सफीना मेरे साथ होगे। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी जीत को अपनी आँखों के सामने देखो।’ सखर झोपड़ी से बाहर निकला और अपने आदमियों को चिल्लाकर कहा, ‘स्तंभों के इराम के लिए द्वार तैयार करो।’ वह सिंदबाद की ओर मुड़ा। ‘या जैसा कि इसे भी कहा जाता है... रेत का अटलांटिस।’

इकतालीस
सिंदबाद को अकेलापन महसूस हुआ।
हालांकि वह सफीना के बगल में बंधा हुआ था और सिंदबाद काफी समय बाद उसके इतने करीब आया था। आखिरकार, उन्होंने सुलह कर ली थी और वह अनांसी के साथ हुई घटना के बारे में सफीना को बताने की हिम्मत जुटा रहा था। आखिरकार, उसे मकड़ी जैसे राक्षस द्वारा कही गई बातों से बचने का कोई न कोई रास्ता तो निकालना ही था।
अगर उसका मिशन सफल हो गया, तो सफीना उसे भूल जाएगी। उसके लिए उसका कोई अस्तित्व नहीं रहेगा।
जब रेत के अटलांटिस के लिए पोर्टल खुला, तो सिंदबाद ने अपने दल के किसी और सदस्य को नहीं देखा।
उसने उस जगह के बारे में सुना था। कभी वह एक समृद्ध और खुशहाल राष्ट्र था, लेकिन उसके नागरिकों के पापों के कारण उसका पतन हो गया। किसी को नहीं पता था कि कैसे एक पूरी सभ्यता एक दिन अचानक गायब हो गई और जल्द ही वह मिथकों और किंवदंतियों का हिस्सा बन गई।
सिंदबाद ने सोचा, शायद सिकंदर की कब्र ही इसके विनाश का कारण बनी। उन्होंने इसे ज़रूरत से ज़्यादा बार खोलने की कोशिश की होगी।
‘मुझे तुम्हें कुछ बताना है,’ उसने सफीना से कहा।
उनके सामने सखर खड़ा था। बगल में नेफिलिम, ड्रौगर और लाल बालों वाली स्त्री खड़ी थी, जिसने उसके पेट में घुटने से वार किया। 'चुप रहो। वरना मैं इसे और यातना दूंगी।'
सिंदबाद असहाय महसूस कर रहा था।
लाल और चांदी के रंग का द्वार खुल गया था और सखर उसमें से होकर गुजर रहा था।

‘कम से कम मुझे यह तो बता दो कि मेरा दल कहाँ है?’ सिंदबाद ने उदास होकर आह भरी।
‘मैंने तुमसे कहा था। उन्होंने तुम्हें छोड़ दिया,’ एडमिरल ने कहा। ‘उन्हें या तो हमारे साथ रहने या चले जाने के लिए कहा गया था, और उन्होंने तुम्हें और सफीना को पीछे छोड़ने का विकल्प चुना। शायद वे उन सपनों को पूरा करने के लिए भाग गए जो उन्हें लगता था कि वे तुम्हारे बिना हासिल कर सकते हैं।’ सिन्बाद को यकीन नहीं हो रहा था। उसका दल उसे इस हालत में कभी नहीं छोड़ेगा। उसने सफीना की ओर देखा, लेकिन उसकी आँखें भावहीन थीं, क्योंकि उसे जिन बंधनों से बांधा गया था, उन पर ऐसे जादू किए गए थे जो उसकी जादुई शक्तियों को निष्क्रिय कर देते थे।
‘क्या यह सच नहीं है, मेरी प्यारी, या मैं झूठ बोल रहा हूँ?’ सखर ने सफीना से पूछा। उसने उदास होकर सिर हिलाया, मानो वह अचंभित थी।
सिन्बाद ने अपने जबड़े भींच लिए। परिवारों को एक-दूसरे के साथ रहना चाहिए।
उसका दिल बैठ गया।
‘चलो चलते हैं। इससे पहले कि बहुत देर हो जाए। हम एक नई भूमि की खोज में निकल रहे हैं। यह रोमांच वाकई अद्भुत होगा,’ सखर ने खुशी से कहा।
वह पोर्टल से होकर गुजरा।
सिंदबाद और सफीना को तलवारों से उकसाकर उसके पीछे चलने को कहा गया। 'बस चलते रहो। और गपशप करने की कोशिश भी मत करना।'
सिंदबाद के प्रवेश करते ही उसका पेट मरोड़ उठा। मंज़िल पर पहुँचते ही उसे उल्टी आने लगी।
वे एक रेगिस्तान के बिल्कुल बीचोंबीच थे। तेज़ हवाएँ और रेत उनके चारों ओर उड़ रही थीं। वह मुश्किल से कुछ देख पा रहा था, लेकिन धक्के खाते हुए आगे बढ़ता जा रहा था, जबकि सखर लंगड़ाते हुए शांत भाव से, बिना रुके आगे बढ़ रहा था।
'हम अभी जिस समय बात कर रहे हैं, उस समय हम सभ्यता के अंत की ओर बढ़ रहे हैं,' उसने लंगड़ाते हुए आगे बढ़ते हुए कहा।
सिंदबाद और सफीना किसी सार्थक चीज़ की तलाश में उसके पीछे-पीछे गए, लेकिन उन्हें केवल रेत और टीले ही दिखाई दिए, तभी सिंदबाद की नज़र टूटी-फूटी इमारतों, गुंबदों और खंभों पर पड़ी। ऐसा लग रहा था मानो किसी भयानक रेत के तूफान ने यह तबाही मचाई हो। पूरा शहर चकनाचूर हो गया था। किसी भी जीवित

प्राणी का कोई निशान नहीं था। कोई आत्मा नहीं। कोई इंसान नहीं। बस सन्नाटा। एक भयावह दृश्य।
“सभ्यता के कगार पर,” सखर ने कहा। “हमें अब एक नई भूमि, एक नई दुनिया अपनानी चाहिए। अब समय आ गया है कि हम पुराने समय को पीछे छोड़कर भविष्य का सामना करें। हम उस भूमि के नहीं हैं जो हमें दी गई थी। हम अजीब राक्षसों की संतान और संकर हैं। हमने खुद को भ्रष्ट कर लिया है, सुधार का कोई संकेत नहीं दिखा रहे हैं।”
सखर रेत में आधे दबे एक छोटे गुंबदनुमा खंडहर की ओर बढ़ा, जो किसी गुफा के प्रवेश द्वार जैसा लग रहा था।
सिंदबाद सखर के साथ हुई बातचीत पर विचार करने लगा।
सिकंदर जीवन के जल से छुटकारा पाना चाहता था... वह इसे कभी पीना नहीं चाहता था। वह जानता था कि अगर वह इसे पी लेता तो क्या कर सकता था। क्योंकि शक्ति के साथ उसकी जुड़वां बहन - जिम्मेदारी भी आती है। और यह जानना महत्वपूर्ण है कि किसी को कितनी शक्ति का प्रयोग करना चाहिए।
वे गुफा में दाखिल हुए, सखर आगे-आगे चमकते हुए चमत्कारी पत्थरों को पकड़े हुए था। जल्द ही वे एक खुले मैदान में पहुँच गए। वहाँ से कई गलियाँ निकल रही थीं, सिंदबाद ने अनुमान लगाया कि ये अन्य प्रवेश द्वार हैं। और वह गुफा ठीक बीचोंबीच, खुले मैदान के केंद्र में स्थित थी।
सिकंदर का मकबरा।
वह वहीं पड़ा हुआ था।
सिंदबाद को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि यह कितना साधारण था। जैसा उसने सोचा था, यह उतना अलंकृत नहीं था। यहाँ न तो कोई रत्न जड़े थे और न ही कोई भव्य लेख जो यह दर्शाते हों कि यहाँ किसी प्रसिद्ध विजेता का शव रखा गया है।
किसी को भी यह संदेह नहीं हो सकता था कि यह किसी महान राजा का अंतिम विश्राम स्थल है।
सिंदबाद ने सोचा, शायद यही मकसद था। किसी को पता न चले कि इसके अंदर क्या है।
‘और हमने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया है।’ सखर मुस्कुराया। राक्षस ने न तो इंतज़ार किया और न ही अपना उबाऊ भाषण दिया। उसने बस उसे खोल दिया। बिना किसी औपचारिकता के। सिंदबाद देखना चाहता था कि उसमें क्या है, लेकिन जहाँ

वह खड़ा था, वहाँ से उसे केवल एक कंकालनुमा हाथ दिखाई दिया। उस हाथ में एक बोतल थी। सखर ने उसे छीन लिया और सिकंदर का उपहास उड़ाया।
‘बेवकूफी का कैसा महारथी है!’ उसने हंसते हुए कहा। ‘अब तक तो वह भगवान बन चुका होता, लेकिन उसने ऐसा नहीं चुना। पता नहीं क्यों।’
'शायद इसलिए क्योंकि उसे इसमें कोई फायदा नहीं दिखा,' सिन्बाद ने कहा।
सखर ने शव के पास पड़ी एक पांडुलिपि उठाई। 'या शायद इसलिए कि वह प्रेम में था।'
'क्या?'
सखर लाल बालों वाली महिला के पास गया और उसे वह पत्र सौंप दिया। ‘जाहिर है, उसकी प्रेमिका मर रही थी। एक यूनानी दासी। अगर वह अमरता चुनता, तो उसे अपनी प्रेमिका के बिना जीना पड़ता। उसने प्रेम को चुना, शक्ति को नहीं। यह आखिरी पत्र था जो उसने इस बात के प्रमाण के रूप में लिखा था कि उसने यह चुनाव क्यों किया।’
‘तुम्हारे जैसा कोई,’ सिंदबाद ने फुसफुसाते हुए कहा।
सखर ने सिर हिलाया। 'वह उतना भी बेवकूफ नहीं लगता जितना सोचा था।' ‘तुम्हारे पास दुनिया की सारी ताकत हो सकती है, लेकिन अगर तुम्हारे पास उसे बांटने वाला कोई न हो तो उसका क्या फायदा?’ सिंदबाद ने सफीना की तरफ देखते हुए कहा, जिसने हल्की सी मुस्कान के साथ जवाब दिया। वह उसे भूली नहीं थी। उसके पास अभी भी उसे बताने का समय था।
‘हो सकता है तुम सही हो। लेकिन अफसोस, मेरी मृत्यु निकट है, और मुझे मुक्ति मिल जाएगी। इसलिए धन्यवाद, फातिमा।’ उसने लाल बालों वाली महिला की ओर देखा। ‘मेरे लिए यह करने के लिए धन्यवाद। तुम शैतान की सच्ची सेविका रही हो।’
बोतल उसके हाथ में थी। उसने उसे अपने मुंह के पास लाया।
सिन्बाद चिल्लाना चाहता था, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, एक भाला हवा में तेज़ी से आया और सखर की छाती में जा लगा। उसने नीचे देखा तो उसके हाथ से बोतल छूटकर ज़मीन पर गिर पड़ी। जीवन का जल रखने वाली वह बोतल वहीं पड़ी रही।
‘यह सब क्या है...?’
और प्रत्येक गलियारे के प्रवेश द्वार पर अशरफिया, प्रेसा, इदरीस, मरकुस और हुसैन प्रकट हुए।

‘अरे वाह, बारह दुष्ट लोग आ गए!’ सखर ने अनमने ढंग से अपनी छाती से भाला निकाला। ‘तुम्हें पता है, इब्लिस ने मुझे तुम सबको मारने का विकल्प दिया था। यह वास्तव में तुम्हें जीवित छोड़ने का आदेश नहीं था। इसलिए तकनीकी रूप से मैं तुमसे छुटकारा पा सकता हूँ।’ उसने अपनी सेना की ओर देखा। ‘उन पर हमला करो।’
सिन्बाद ने ड्रौगर और नेफिलिम को अपने मित्रों की ओर बढ़ते देखा। जैसे ही उन्होंने एक-दूसरे से लड़ना शुरू किया, प्रेसा उनकी ओर दौड़ी और उनके बंधन तोड़ने लगी। उसने सिन्बाद से शुरुआत की और फिर सफीना की ओर बढ़ी।
‘मैंने तुम्हें ढूंढने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी। सौभाग्य से, मेरे पास तुम्हारा वो कंबल था जो तुमने मुझे पहले दिया था, जिससे मुझे तुम्हारा पता लगाने में मदद मिली। उस पर तुम्हारा स्पर्श था, इसलिए तुम्हें ढूंढना मेरे लिए आसान हो गया। हमने उन्हें यह सोचने पर मजबूर करने के लिए तुम्हें छोड़ दिया कि हमने तुम्हें त्याग दिया है और फिर अचानक हमला करने के लिए वापस आ गए।’
‘शाबाश!’ सिंदबाद ने मुस्कुराते हुए कहा जैसे ही उसे छोड़ा गया। उसने देखा कि सखर अपनी बोतल लेने के लिए आगे बढ़ रहा है। सिंदबाद झट से आगे बढ़ा और बोतल छीन ली।
सखर ने अपनी छड़ी को हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हुए सिंदबाद पर हमला किया, जिसने सखर के घुटने पर लात मारी। वह दर्द से कराहते हुए गिर पड़ा। ‘तू दरिंदा... तू नीच...’ वह गुर्राया। सिंदबाद ने उसे पहली बार इस कदर आपा खोते देखा था।
‘संदिग्ध रहो, सिंदबाद!’ सफीना ने पुकारा। वह अभी भी बंधी हुई थी—प्रेसा का पीछा एक नेफिलिम कर रहा था।
सिंदबाद ने मुड़कर देखा तो उसकी ओर दोधारी तलवार और धधकते लाल बालों का गुच्छा आ रहा था। उसने उस भाले को पकड़ लिया जिसे सखर ने उसके शरीर से निकाला था। अब सिंदबाद और फातिमा के बीच द्वंद्वयुद्ध शुरू हो गया। यह मृत्यु तक का युद्ध था। फातिमा ने तुरंत उसका हाथ पकड़कर उस पर वार किया।
बोतल गिर गई।
सखर लड़खड़ाते हुए उसे पकड़ने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन इससे पहले कि वह ऐसा कर पाता, सिंदबाद ने मुट्ठी भर रेत पकड़ी और फातिमा के चेहरे पर फेंक दी।

बारीक रेत से उसकी आंखों में चहलकदमी होने के कारण वह चीख पड़ी। सिंदबाद ने उसे जमीन पर धकेल दिया और भाला उसकी आंखों के बिल्कुल करीब ले आया।
'उसे मारने के बारे में सोचना भी मत,' सखर ने हंसते हुए कहा, और उसने बोतल पकड़ी और सबसे दूर चला गया।
‘और क्यों नहीं?’ सिंदबाद चिल्लाया।
सखर ने जीवन का जल पीने के बाद कहा, 'किस तरह का बेटा अपनी ही माँ की हत्या करेगा?'

बयालीस
सिंदबाद सदमे में था।
बातें इतनी जटिल थीं कि उन्हें समझना असंभव था।
क्या यह सच था कि लाल बालों वाली महिला, जो शैतान की सिपाही थी, उसकी माँ थी?
इस समय तक, दल ने अधिकांश नेफिलिम और ड्रॉगरों को मार गिराया था, लेकिन वे सभी बुरी तरह घायल और थके हुए थे। लड़ाई रुक गई क्योंकि अब एडमिरल सफल हो चुका था।
जब सखर बेकाबू होकर हंसने लगा तो फातिमा उसके बगल में खड़ी हो गई।
'क्या तुमने अपनी इच्छा बताई?' फातिमा ने पूछा, नई जानकारी से अप्रभावित दिखते हुए।
सखर को छोड़कर बाकी सभी लोग अब वहां खामोशी से खड़े थे, सखर मुस्कुरा रहा था।
धरती कांपने लगी और गुफा की चट्टानी दीवारें ढहने लगीं। बहुत जल्द वे सभी मलबे में दब जाएंगे।
‘हमें यहाँ से निकलना होगा,’ सिन्बाद ने जल्दबाजी में कहा।
‘क्या—?’ इदरीस ने पूछा।
क्योंकि इब्लिस उठ खड़ा हुआ है। और वह आ रहा है। तुम जानते हो इसका क्या मतलब है, है ना?
उसे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि जैसे ही छत से पत्थर गिरने लगे, एक भयानक काली छाया उनके चारों ओर फैलने लगी। उसने उन्हें घेर लिया। गुफा में घना कोहरा छा गया। ऐसा लग रहा था मानो वह जगह को निगल रहा हो। उनके सामने की छाया अब आकार लेने लगी थी। सफीना भय से घुटनों के बल बैठ गई। एक गंजा सिर, बिना चेहरे वाला, भावहीन।

सिंदबाद की कथित मां अब अंधकार के स्वामी के सामने घुटने टेककर बैठ गई, लेकिन इब्लिस वहां चुपचाप खड़ा रहा।
शैतान ने गहरे काले रंग का लबादा ओढ़ रखा था। हैरानी की बात यह थी कि उसकी लंबाई औसत थी। लेकिन उसकी उपस्थिति, उसका प्रभाव—लोगों को बुरी तरह डराने के लिए काफी था।
‘क्या हम उससे भी लड़ेंगे?’ मार्कस ने कांपते हुए स्वर में पूछा, उसका खून से सना हथौड़ा तैयार था। ‘मैं तो इसके लिए पूरी तरह तैयार हूँ।’ उसने अपने होंठ चाटे।
सिंदबाद ने अपने सेनापति पर गर्व करते हुए आह भरी। लेकिन यह कोई साधारण दानव नहीं था।
यह इब्लिस था।
'मेरे स्वामी, मैंने आपका आदेश मान लिया है। कृपया मुझे रिहा कर दीजिए।' उस आकृति ने सखर की ओर देखा। भावहीन होकर। उसने चुटकी बजाई और सखर गायब हो गया।
‘अभी तुम्हारे जाने का समय नहीं हुआ है।’ ये आवाज़ सबके कानों में गूंजी, लेकिन इब्लिस का मुंह बिल्कुल नहीं हिला। वो तैरते हुए सफीना के पास गया। ‘मेरी बेटी... बहुत समय हो गया।’ सफीना ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। ऐसा लग रहा था जैसे वो सम्मोहित हो गई हो।
उन्होंने फातिमा की ओर देखा। 'मेरी दासी, तुम वफादार रही हो।'
हुसैन ने पूछा, 'क्या हमें इस मिलन समारोह को छोड़कर चले जाना चाहिए? हमें जान से मारा जा सकता है।'
इब्लिस ने सुन लिया था। वह सिंदबाद की ओर मुड़ा। 'सिंदबाद, काफी समय हो गया। आशा है तुमसे जल्द ही फिर मुलाकात होगी।'
सिन्बाद कुछ कहना चाहता था, लेकिन उसकी निगाहें सफीना पर टिकी थीं। 'आओ,' उसने इशारे से कहा।
सफीना जरा भी नहीं हिचकी। उसने उसे अनदेखे नजरों से देखा।
‘वह क्यों नहीं आ रही?’ इदरीस ने पूछा। ‘उसे क्या हो गया है?’
इब्लिस ने अपनी बाहें फैलाईं। फातिमा और सफीना ने उसके हाथ पकड़े और जाने लगीं।
‘ये क्या हो रहा है? सिंदबाद, कुछ करो...’
वह उसके साथ क्यों जा रही है?

क्योंकि उसे मैं याद नहीं हूँ। नहीं...
सिंदबाद घुटनों के बल गिर पड़ा।
‘अरे, तुमने ये क्या कर दिया?’ मार्कस समझ गया कि कुछ गड़बड़ है।
सिंदबाद को शर्मिंदगी महसूस हुई। उसे झूठ नहीं बोलना चाहिए था। उसे सच बताना चाहिए था। उसे...
उसके भीतर क्रोध उबलने लगा, और वह उठकर भाला पकड़कर इब्लिस की ओर दौड़ने लगा, हमले के लिए तैयार।
जब इब्लिस मुड़ा, तो उसकी आँखें लाल चमक उठीं। उसने पलकें झपकाईं। सिंदबाद जहाज के ठंडे, लकड़ी के डेक पर लेटा हुआ था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि अभी-अभी क्या हुआ है। वह पूरी तरह भीगा हुआ था। उसे सीगल की आवाज़ सुनाई दे रही थी और सूरज की किरणें उसके चेहरे पर पड़ रही थीं। ये किरणें उसकी आँखों को चौंधिया रही थीं। जैसे ही उसने सूरज से अपना चेहरा मोड़ा, उसने देखा कि पूरा दल भी वहीं मौजूद था।
‘क्या हमें अभी-अभी... टेलीपोर्ट किया गया था?’ इदरीस ने पूछा।
‘मुझे लगता है, हाँ। पलक झपकते ही,’ हुसैन ने कहा। ‘यह जानने के लिए किसी सेइड की ज़रूरत नहीं है कि हम जिससे निपट रहे हैं वह अब तक हमारे सामने आए किसी भी व्यक्ति से कहीं ज़्यादा बुरा है।’
सिंदबाद क्रैकन द्वारा क्षतिग्रस्त डेक पर पड़ा था। उसके भीतर भ्रम और पीड़ा बढ़ती जा रही थी। वह सिकुड़कर बैठ जाना चाहता था या भाग जाना चाहता था, क्योंकि सभी उसके पास आकर उससे सवाल पूछने लगे थे। वह बस अकेला रहना चाहता था। वह केवल सीगल की आवाज़ सुनना चाहता था। वह शांति चाहता था। लेकिन बहुत सारे सवाल थे।
सफीना को अब उसकी याद नहीं थी। क्या उसे कभी उसकी याद आएगी?
वह हमेशा यही सोचता था कि उसकी माँ मर चुकी है। लेकिन क्या सच में उसकी माँ मरी थी? क्या वह शैतान की सिपाही थी? बुराई की तरफ थी?
वह इदरीस के पति को भी नहीं बचा पाया था।
और अब...
इब्लिस उठ खड़ा हुआ था।
और सिंदबाद को उसे हराने का कोई तरीका नहीं सूझ रहा था। उसकी चतुराई, जिसने हमेशा उसकी जान बचाई थी, अब किसी काम की नहीं थी।
वह हार गया था।

यात्रा का सिलसिला तीसरे भाग में जारी है...
और भी रोमांचक कहानियों के लिए हमारे साथ बने रहें!

***** *****

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [

[illegible]

[illegible]

([illegible])

[illegible]

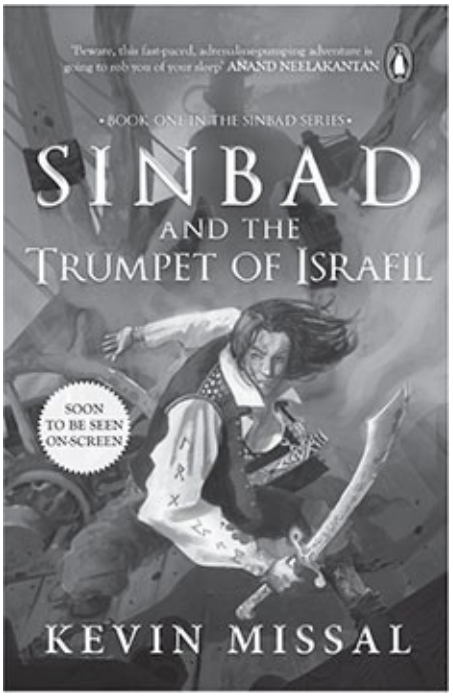
'Beware, this fast-paced, adrenaline-pumping adventure is going to rob you of your sleep' ANAND NEELAKANTAN
• BOOK ONE IN THE SINBAD SERIES •
SINBAD
AND THE
TRUMPET OF ISRAFIL
SOON TO BE SEEN ON-SCREEN
KEVIN MISSAL

[illegible]
[illegible]
[illegible]

मैंने आज तक जिस इकलौती लड़की से प्यार किया है, उसे मारने के लिए मेरे पास सात दिन हैं।
बेस्टसेलिंग लेखक केविन मिसल ने क्लासिक उपन्यास 'वन थाउजेंड एंड वन नाइट्स' के प्रसिद्ध नाविक सिंदबाद की इस रोमांचक पुनर्कल्पना को रचा है, जो भयानक पौराणिक राक्षसों का सामना करता है!

शुरुआत

चलिए बातचीत शुरू करते हैं…
Penguin को Twitter.com@penguinbooks पर फॉलो करें
हमारी सभी कहानियों से अपडेट रहने के लिए YouTube.com/penguinbooks पर जाएं। अपने Pinterest पर ‘Penguin Books’ को पिन करें Facebook.com/penguinbooks पर ‘Penguin Books’ को लाइक करें लेखक के बारे में और अधिक जानने के लिए और Penguin.co.in पर इस तरह की और भी कहानियाँ पढ़ने के लिए यहाँ जाएँ।

[redacted]

[redacted] | [redacted] | [redacted] | [redacted] | [redacted] | [redacted] | [redacted] | [redacted] | [redacted]

[redacted], [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted], [redacted]

global.penguinrandomhouse.com [redacted] [redacted] [redacted]

Penguin Random House India

[redacted] 2022 [redacted]

[redacted] © [redacted] 2022

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

[redacted] [redacted] © [redacted]

[redacted] 2022 [redacted]

[redacted]: 978-9-354-92496-5

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [